श्रीढुण्ढिराज-प्रणीत

जातकाभरण

(सटीक)



प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड,

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

१, त्रिलोकनाथरोड, लखनऊ—१

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा

तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित

द्वितीय बार २०००] सन् १९९५ [मूल्य ५५)००

श्रीढुण्ढिराज-प्रणीत

जातकाभरण सटीक

मूलार्थ-बोधिनी भाषा-टीका-सहित

जिसमें

जन्मपत्री का संपूर्ण फल वर्णित है।

अनुवादक
लखनऊ, तासीनगंज-निवासी

पं० सूर्यनारायण सिद्धान्ती

——:o:——

संपादक—

पं० खूबचन्दशर्मा गौड़

——:o:——

नवीन संशोधित संस्करण

लखनऊ

प्रकाशक—

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा

तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड में मुद्रित

तृतीयावृत्ति } सन् १९६५ ई०

भूमिका ।

—:०:—

प्रस्तुत ग्रन्थ ज्योतिष-शास्त्र का है । ज्योतिष ही एक ऐसा शास्त्र है जिससे भूत, भविष्य और वर्तमान का वृत्तान्त जाना जा सकता है । इसके सत्य होने में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण प्रमाण है । ज्योतिष-शास्त्र में भी फलित-ज्योतिष विशेष महत्त्व का है । यह जातकाभरण नामक ग्रन्थ फलित ही का है ।

इसमें संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, तिथि, वार, नक्षत्र, अयनांश, योग, करण, गण, लग्न, द्वादशभाव, ग्रह-स्वरूप, अनेक प्रकार के योग, अरिष्ट, अरिष्ट-भंग, स्त्री-जातक और निर्याण आदि का फल, विस्तार सहित, उत्तम रीति से वर्णन किया गया है ।

इस एक ग्रन्थ के पास रहने से, ज्योतिषियों को जन्मपत्री बनाने के लिये, अन्य पुस्तकों के देखने की आवश्यकता न होगी । इसीलिये इस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की रचना हुई है ।

इस ग्रंथ के निर्माण करने का प्रयोजन ग्रंथकर्ता ने इस प्रकार लिखा है—

शास्त्रोक्तां यो जन्मपत्रीं करोति
नाना ग्रन्थालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नं स्यात्ततो जातकेऽस्मिन्
कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिं च सर्वाम् ॥

अर्थात् जो शास्त्रों के अनुसार जन्मपत्री बनाया करते हैं उनका चित्त, अनेक ग्रंथों में मतभेद होने पर, व्यग्र हो जाता है इससे वे किं कर्तव्यता विमूढ़ हो जाते हैं । अतएव उनके सन्देह की निवृत्ति के लिये सब जातकों का सारभूत यह ग्रंथ बनाया है ।

इसके प्रणेता हैं श्रीढुण्ढिराजाचार्य । ये गोदावरी नदी के समीपवर्ती पार्थ नामक नगर के रहनेवाले तथा श्रीगणेशजी के उपासक थे । इनके पिता का नाम

दैवज्ञ नृसिंहजी था। इनके वंशज गोल-विद्या के अद्वैत विद्वान् थे। इन्होंने अपना परिचय यों दिया है—

गोदावरीतीरविराजमानं,
पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत्।
सद्गोलविद्यामलकीर्तिभाजां,
मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत्॥
तत्रत्य दैवज्ञनृसिंहसूनु-
र्गंजाननाराधनजाभिमानः।
श्रीढुण्ढिराजो रचयांबभूव,
होरागमेऽनुक्रममादरेण॥

इस ग्रन्थ का अनुवाद तासीनगंज निवासी पं० सूर्यनारायण सिद्धान्ती ने किया था। जिस समय यह अनुवाद हुआ था, उस समय की भाषा-शैली और इस समय की भाषा-शैली में जमीन-आसमान का अन्तर हो गया है। तदनुसार श्रीमान् बाबू हरीरामजी भार्गव, मैनेजर, नवलकिशोर बुकडिपो, की आज्ञा से यह ग्रंथ संशोधित तथा परिवर्द्धित करके बहुत उपादेय बना दिया है। आशा है, इससे ज्योतिषियों को यथार्थ फलादेश कहने में पूर्ण सहायता मिलेगी।

संशोधन-विभाग
नवलकिशोर-प्रेस
हजरतगंज, लखनऊ

खूबचन्दशर्मा गौड़
श्रावण कृ० २, सं० १९८१ वि०

जातकाभरण सटीक का सूचीपत्र।

—:०:—

योगाऽध्याय

योगफल

अन्तर्दशाफल

दानाऽध्याय

चन्द्रकृतनिर्याण

इति।

श्रीगणेशाय नमः

जातकाभरण

सटीक

मङ्गलाचरणम्

श्रीदं सदाहं हृदयारविन्दे पादारविन्दं वरदस्य वन्दे ।
मन्दोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवन्द्योपमतां समेति १

नत्वा गणाधिपं देवं सर्वविघ्नविनाशकम् ।
जातकाभरणस्याहं भाषां कुर्वे हितप्रदाम् १

मैं अपने हृदयरूपी कमल में, सदैव ऋद्धि-सिद्ध के दाता, श्रीगणेशजी के चरणकमल की वन्दना करता हूं; जिनके स्मरण करने से मन्दबुद्धि भी शीघ्र ही बृहस्पतिजी के समान हो जाता है ॥ १ ॥

उदारधीमन्दरभूधरेण प्रमथ्य होरागमसिन्धुराजम् ।
श्रीढुण्ढिराजः कुरुते किलार्यामार्यां सपर्य्याममलोक्तिरत्नैः २

होराशास्त्ररूपी समुद्र को उदारबुद्धिरूप मन्दराचल पर्वत से मथ के श्रीढुण्ढिराजाचार्य महर्षिप्रणीत श्रेष्ठ ग्रन्थों का अवलोकन कर, योगरूपी रत्नों को निकालकर, इस ग्रन्थ की रचना करते हैं ॥ २ ॥

ज्ञानराजगुरुपादपङ्कजं मानसे खलु विचिन्त्य भक्तितः ।
जातकाभरणनामजातकं जातकज्ञसुखदं विधीयते ३

ज्ञानराज श्रीगुरुदेवजी के चरणारविन्दों को अपने मन में भक्तिपूर्वक चिन्तन करके; जातकविदों को सुख देने वाले जातकाभरण नाम ग्रन्थ का विधान करता हूं ॥ ३ ॥

शास्त्रोक्तां यो जन्मपत्रीङ्करोति
नानाग्रन्थालोकनात्तस्य चित्तम् ।
अत्युद्विग्नं स्यात्ततो जातकेस्मिन्
कुर्वे व्यक्तां जातकोक्तिञ्च सर्वाम् ४

जो पण्डितजन शास्त्ररीति से जन्मपत्री बनाते हैं उनका चित्त अनेक ग्रन्थों के देखने से अति उद्विग्न हो जाता है इसलिये इस जातक में, सब जातकों की उक्ति प्रकट करता हूं ॥ ४ ॥

विचित्रपत्रीकरणादराणां श्रमं विनानुक्रमलेखनार्थम् ।
समर्थमेतत्प्रकटार्थमेवात्यर्थन्ततो नाम यथार्थमस्य ५

विचित्र जन्मपत्र बनानेवालों को बिना परिश्रम, क्रमपूर्वक लिखने की जिससे सामर्थ्य हो, उसको यथार्थ प्रकट करता हूं ॥ ५ ॥

सन्मङ्गलाशीर्वचनान्वितानि पद्यानि चाग्रे समुदीरयन्ते ।
तान्येव पत्रीकरणे प्रवीणाः श्रेयस्कराणि प्रथमं लिखन्तु ६

श्रेष्ठ मंगलाचरण और आशीर्वादात्मक श्लोकों को आगे लिखेंगे, उन्हीं शुभकारक श्लोकों को पत्री बनाने वाले चतुर जन लिखें ॥ ६ ॥

शुण्डामण्डलसम्प्रसारकरणैर्मौलिस्थलान्दोलनै-
र्नेत्रोन्मीलनमीलनैरविरलश्रीकर्णतालक्रमैः ।
दानालिध्वनितैर्विलासचरितैरूर्ध्वाननोद्गर्जितै-
र्जातानन्दभरः करीन्द्रवदनो वः श्रेयसे कल्पताम् ७

हस्ती की तुल्य मुखवाले, अपनी शुण्ड को घुमाते, मस्तक को उठाय नेत्रों को खोलते-मूँदते, क्रमपूर्वक निरंतर कर्णतालों से (एवं) गजमद की सुगन्ध से गूँजते भ्रमरवाले, ऊँची शूंड़ कर गर्जते हुये, आनन्दपूरित श्रीगणेशजी तुम्हारा कल्याण करें ॥ ७ ॥

पुनःपुनर्म्मङ्गलमूर्तिस्मरणं प्रत्यूहव्यूहनिवारणपरमेवेति पद्यान्तरम् ।

वारंबार मङ्गलमूर्ति श्रीगणेशजी का स्मरण करने से विघ्नों के समूह दूर होते हैं इसलिये और भी श्लोक लिखते हैं ॥

नानादानविधानयज्ञनिकरैरुग्रैस्तपोभिश्चिरात्
प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलावाप्तिः कथञ्चिद्भवेत् ।
तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः सम्पूर्णकामः पुमान्
सोऽयं वोभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ८

अनेक महादान और यज्ञों के करने से तथा उग्रतप करने से एवं कल्पवृक्ष की प्राप्ति होने से, बहुत समय में किसी तरह पूर्ण मनोरथ की प्राप्ति होती है। परंतु जिनके चरणों के ध्यान करते ही शीघ्रता से सम्पूर्ण कामना वाला मनुष्य होता है वही कल्पवृक्ष के समान श्रीगणेशजी तुमको हमेशा चाहे हुये फल को देवें ॥ ८ ॥

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसी कृतपद्मकोशा ।
तोषादशेषाभिमतं विशेषादेषापि भाषा भवतां ददातु ९

श्रेष्ठ मानस में विलास करनेवाली हंसी, श्रवणविलासिनी, कमलवासिनी शारदा बहुत प्रसन्नता से समस्त मनोरथ की सिद्धि आपको देवें ॥ ९ ॥

कल्याणानि दिवामणिः सुललितां कान्तिं कलानां निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्च बुधतां जीवश्चिरञ्जीविताम् ।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्ब्बहूत्कर्षतां
केतुर्य्यच्छतु तस्य वाञ्छितमियं पत्री यदीयोत्तमा ॥१०॥

श्रीसूर्य्यनारायण समस्त कल्याण को करें, चन्द्रमा कान्ति को बढ़ावें, मंगल लक्ष्मी को देवें, बुध बुद्धि की वृद्धि करें, बृहस्पति दीर्घजीवन करें, शुक्र साम्राज्य सुख को देवें, शनैश्चर विजय करें, राहु सर्व वैभव की वृद्धि करें और केतु उसको मनोवाञ्छित फल देवें जिसकी यह उत्तम पत्री लिखी जाती है ॥ १० ॥

ननु पूर्व्वजन्मोपार्जितानां सदसत्कर्म्मणाम्परिपाकोऽदि

जन्मनि शुभाशुभफलावाप्तिकालादेव व्यक्तोऽस्तीति जातकाग-मोक्तप्रपञ्चेन किम्प्रयोजनमिति चेत् सत्यम् । पूर्व्वोपार्जितकर्म्मपरिपाकः शुभाशुभफलोपलब्धिदर्शनादेव ज्ञायते परमभीष्टकाले ज्ञातुन्न शक्यते । तथा च भाग्यमग्रे खण्डितमखण्डितं रिष्टं रिष्टभङ्गोप्यायुर्म्मानमित्यादिज्ञानार्थे जातकागम एवात्यर्त्थं समर्थस्तदेकशरणत्वात् ॥ तथाहि ॥ दिनरात्रिविभागेन सूक्ष्मकालावयवसाधनोपायैस्तुर्य्यध्रुवभ्रमादि विचित्रयन्त्रैरुपलक्षितातिस्पष्टसमयोपात्तलग्नादिद्वादशराशिचक्रे स्वोच्चादिगतानां ग्रहाणां सदसद्दशानुक्रमेणाभीष्टसमयेऽपिप्राक्कर्म्मपरिपाकोवगम्यते ॥ रिष्टभङ्गः प्रकृष्टन्तु रिष्टस्यापि विनष्टिं विशिनष्टि तद्वदायुर्दायानयनप्रकारेण वयःप्रमाणस्य च निर्णयस्स्यात् ॥ तस्माद्वेदांगत्वेनाधुनिकाभावत्वेन प्रत्ययसिद्धत्वेनाऽपि जातकस्कन्धाङ्गीकरणमुचितमेवेति ॥

यदि पूर्वजन्म के उपार्जित (इकट्ठे किये हुये) अच्छे और निकृष्ट कर्मों का भोग इस जन्म में शुभ और अशुभ फल की प्राप्ति से ही प्रकट है, तो जातक में कथित प्रपंच से क्या प्रयोजन है ? ऐसा है तो सत्य है कि पूर्व के उपार्जि कर्म का परिपाक शुभ अशुभ फल की प्राप्ति के दर्शन से ही मालूम हो जाता है परन्तु अभीष्टकाल में नहीं जाना जा सक्ता है । वैसे ही भाग्य पूर्ण है या खण्डित है, अरिष्ट है या अरिष्टभंग है तथा आयु कितनी है इत्यादि जानने के लिये जातकागम ही पूर्णतया समर्थ है, अतः यही एक शरण्य है । एवं दिन रात्रि के विभाग करके, सूक्ष्म काल (समय) के विभागों के साधन करने का उपाय तूर्य ध्रुव भ्रमादि (घड़ी आदि) विचित्र यन्त्रों से ज्ञात समय के स्पष्ट होने से, लग्नादि द्वादशराशि चक्र में उच्चादिस्थान में प्राप्त ग्रहों की शुभ-अशुभ दशा के क्रम से, अभीष्ट समय में भी पूर्वकर्मों का परिपाक जाना जा सकता है । अरिष्ट का भंग तथा आयुर्दाय के आनयन प्रकार से आयु का निर्णय हो जाता है । इसलिये वेदांग होने से तथा आधुनिक समय में भी सार्थक सिद्ध होने से जातकस्कन्ध अंगीकार करना उचित ही है ।

उपार्ज्जितं यत्सदसद्विमिश्रितं जन्मान्तरे कर्म्म नरैरिदानीम्।
होरागमस्तस्य विपाकमुच्चैर्दशाक्रमेण प्रकटीकरोति ११

मनुष्यों ने पूर्व्व जन्मान्तर में जो श्रेष्ठ वा निषिद्ध अथवा मिश्रित कर्म्म संचित किये हैं होराशास्त्र उसी का भोग इस जन्म में, दशाक्रम से प्रकट करता है ॥ ११ ॥

साक्षाद्भवेद्भाग्यनिरीक्षणाय सुनिर्म्मलादर्शतलञ्चिदम्।
शास्त्रं विपद्वारिनिधिम्प्रतर्त्तुं तरिस्तथार्थार्ज्जनचारु मित्रम् १२

भाग्य के जानने को यह होराशास्त्र साक्षात् निर्मल दर्पण है तथा धनार्जन को सुन्दर मित्र एवं विपत्तिरूपी समुद्र के पार उतरने के लिये नौका है ॥ १२ ॥

आधानकाले कमलोद्भवेन वर्णावलीर्भालतलान्तराले।
या कल्पिता पश्यति दैविदत्तां होरागमज्ञानविलोचनेन १३

गर्भाधान समय में, विधाता ने कपालपट्ट में, जो वर्णावली सुख दुःख की लिख दी है उसको ज्योतिर्व्विद होराशास्त्र के ज्ञानरूपी नेत्रों से देखते हैं ॥ १३ ॥

होरागमव्योमचरानुसारस्तेषां विचारः सुतरामुदारः।
सिद्धान्तरावाकलनन्तदास्याभ्यासो यदा स्याद्गणितद्वयस्य १४

होराशास्त्र ग्रहों के अनुसार है, उन ग्रहों का विचार परम उदार है, वह सिद्धान्त में अभ्यास करने से और गणितस्कन्ध जानने से होता है ॥ १४ ॥

अपारहोरागमपारगामी पाट्याञ्च बीजे सुतराम्प्रगल्भः।
सद्गोलविद्याकुशलः स एव भवेत्फलादेशविधौ समर्थः १५

जिसका वारपार नहीं ऐसे होरा शास्त्र का पारंगत, पाटी और बीजगणित में प्रगल्भ और गोलाध्याय की विद्या में अति कुशल होगा वही (ज्योतिषी) फलादेश के कहने में समर्थ होगा ॥ १५ ॥

श्रीजन्मपत्रीशुभदीपकेन व्यक्तम्भवेद्धाविफलं समस्तम्।
क्षपाप्रदीपेन यथालयस्थं घटादिजातम्प्रकटत्वमेति १६

सम्पूर्ण भावीफल (जो होनेवाले हैं) जन्मपत्र-रूप दीपक से प्रकट होंगे। जैसे अँधियारी रात में दीपक के होने से घर के घटादि सब पदार्थ दिखाई देते हैं ॥ १६ ॥

सा जन्मपत्री विमला न यस्य तज्जीवितं सन्ततमन्धकं स्यात्।
अनल्पमल्पञ्च ततोल्पकं वा न कल्पते भाग्यमतीव हेतोः १७

ऐसी निर्मल जन्मपत्री जिसकी नहीं है उसका जीवन निरन्तर अन्धरूप है। बहुत या थोड़ा या कुछ भी नहीं ऐसे भाग्योदय योग की कल्पना नहीं हो सक्ती है ॥ १७ ॥

जन्मकालतिथिवारतारकाश्चापि योगकरणक्षणाभिधाः।
मंगलाय किल सन्तु पत्रिका यस्य शास्त्रविहिता विरच्यते १८

जन्मसम की तिथि, बार, नक्षत्र तथा योग, करण, लग्न और मुहूर्त्त ये सब मंगल करनेवाले हों जिसकी शास्त्रविधि से जन्मपत्री लिखते हैं ॥ १८ ॥

ये वक्ष्यमाणा इह राजयोगा रश्मिप्रभूता अपि नाभसाश्च।
ये कारकाः पूर्णफले हि पूर्णं यच्छन्तु पत्री क्रियते यदीया १९

जो इसमें कहे हुये राजयोग हैं और किरणों की प्रभा से युक्त नवग्रह जो कि पूर्ण फल में कारक होते हैं वे उसको शीघ्र ही पूर्णफल को देवें जिसकी कि (हम) जन्मपत्री लिखते हैं ॥ १९ ॥

यस्यामलेयं किल जन्मपत्री कुतूहलेन क्रियते यथोक्ता।
तस्यालये सत्कमला सलीलं सुनिश्चला तिष्ठतु दीर्घकालम् २०

जिसकी शुद्ध जन्मपत्री हम कुतूहल से लिखते हैं उसके स्थान में निश्चला लक्ष्मी बहुत कालपर्यन्त स्थिर रहे ॥ २० ॥

कृतम्मया नोदकयन्त्रसाधनं कालेक्षणञ्चापि न शंकुसाधनम्।
परोपदिष्टात्समयात्प्रयत्नतः शुभाशुभं जन्मफलम्मयोच्यते २१

मैंने न तो जलयंत्र का साधन किया है और न समय का ही निरीक्षण किया है तथा शंकुसाधन भी नहीं किया है (केवल) दूसरे के बताये हुये समय से मैं यत्नपूर्वक शुभाशुभ जन्मफल को कहता हूं ॥ २१ ॥

अथ सांहितिकाभिप्रायेण पञ्चाङ्गफलानि निरूप्यन्ते, तत्रादौ संवत्सरफलानि ।

सर्व्ववस्तुपरिसंग्रहे रतः पुत्रसन्ततिरतीव सन्मतिः ।
सर्व्वभोगयुतदीर्घजीवितो जायते प्रभवसम्भवः पुमान् १

संवत्सरों का फल ।

प्रभव संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला पुरुष सर्ववस्तु संग्रह करने में तत्पर, बहुत पुत्रोंवाला, अच्छी बुद्धि तथा समस्त भोगों से युक्त बड़ी आयुवाला होता है ॥ १ ॥

उत्पन्नभोक्ता प्रियदर्शनश्च बलाधिशाली चतुरः कलाज्ञः ।
राजा भवेदात्मकुले सुशीलो विद्वान्मनुष्यो विभवाब्दजन्मा २

जो मनुष्य विभव संवत्सर में उत्पन्न हुआ है वह सुन्दर स्वरूप, उद्यमी, बली, चतुर, कारीगरी की कलाओं में निपुण और राजा होता है तथा अपने कुल में सुशील और विद्या में निपुण होता है ॥ २ ॥

सदा सहर्षोऽतितरामुदारः सत्पुत्रदारो विभवैस्समेतः ।
सद्भाग्यविद्याविनयोपपन्नो नूनं पुमान् शुक्लसमुद्भवः स्यात् ३

जो मनुष्य शुक्लनाम संवत्सर में उत्पन्न होता है वह सदैव प्रसन्न वदन, उदारचित्त, श्रेष्ठ पुत्र तथा श्रेष्ठ स्त्रीसंयुक्त, सम्पूर्ण विभव, उत्तम भाग्य, विद्या और विनय से युक्त होता है ॥ ३ ॥

दाता सुतानन्दयुतोऽतिकान्तः सत्येन नित्यं सहितो गुणी स्यात् ।
दक्षश्च धूर्त्तः परकार्य्यकर्त्ता प्रमोदजन्मा मनुजोऽभिमानी ४

जो प्रमोद संवत्सर में उत्पन्न होता है वह दानशील, पुत्र और आनन्दयुक्त, सुन्दर, सत्यवक्ता, शीलवान्, गुणवान्, सर्वकार्य करने में प्रवीण, धूर्त्त, पराये कार्य का करनेवाला और अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

दाराभिमानः सुतरान्दयालुः कुलानुवृत्तः किल चारु शीलः ।
देवद्विजार्च्चाऽभिरतो विनीतो मर्त्यः प्रजाधीशसमुद्भवः स्यात् २

प्रजापति संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष स्त्रियों का अभिमानी, दयावान्,

अपने कुल के अनुसार चलनेवाला, उत्तम शील स्वभाववाला, देवता तथा ब्राह्मण का पूजनेवाला और सर्वजनों से नम्रतापूर्वक बोलनेवाला होता है ॥ ५ ॥

कान्तः सुखी भोगयुतश्च मानी प्रियप्रवक्ता बहुपुत्रयुक्तः ।
सगुप्तबुद्धिः खलु दीर्घजीवी नरोऽङ्गिरावत्सरसम्भवः स्यात् ६

अंगिरा संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह सुन्दर, सुखी, संपूर्ण भोगों का भोगनेवाला, अभिमानी, प्रियवचनों का बोलनेवाला, बहुत पुत्रोंवाला, गुप्त-बुद्धि और बहुतकाल पर्यन्त जीनेवाला होता है ॥ ६ ॥

श्रीमान् प्रतापी बहुशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियश्चारुमतिर्बलीयान् ।
सत्कीर्त्तियुक्तो नितरामुदारो भवेन्नरः श्रीमुखसम्भवोऽसौ ७

श्रीमुख संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष धनवान्, प्रतापी, बहुत शास्त्रों का जाननेवाला, मित्रों का प्यारा, निर्मलबुद्धि, बली, उत्तम कीर्त्तिवाला और उदार चित्त होता है ॥ ७ ॥

प्रशस्तचेताः सुतरां यशस्वी गुणान्वितो दानरतो विनीतः ।
सदा सहर्षोऽभिमतो बहूनां भावाभिधानोद्भवमानवः स्यात् ८

भाव संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह पुरुष प्रसन्नचित्त, यशस्वी, गुणवान्, दानी, शांतप्रकृति, सदैव हर्षयुक्त और सब जनों का मन प्रसन्न करने वाला होता है ॥ ८ ॥

प्रसन्नमूर्त्तिर्गुणवान् विनीतः शान्तश्च दानाभिरतो नितान्तम् ।
सुधीश्चिरायुर्दृढदेहशाली जातो युवाब्दे पुरुषः सतोषः ९

युवा संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह प्रसन्नमूर्त्ति, गुणी, नम्र, शान्त स्वभाव, दानी, श्रेष्ठबुद्धि, बहुत काल जीनेवाला, पुष्टशरीर और संतोषयुक्त होता है ॥ ९ ॥

सर्व्वलोकगुणगौरवयुक्तः सुन्दरोप्यतितरां गुरुभक्तः ।
शिल्पशास्त्रकुशलश्च सुशीलो धातृवत्सरभवो हि नरः स्यात् १०

धाता संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष सम्पूर्ण गुणों से पूर्ण, सुन्दर शरीर, गुरुभक्त, कारीगरी की विद्या में अतिकुशल और सुशील होता है ॥१०॥

तत्कालसञ्जातमहाप्रकोपो हर्षाभियुक्तो गुणवान् प्रतापी ॥
दक्षः कलाकौशलशीलशाली मर्त्यो भवेदीश्वरजातजन्मा ११

ईश्वर संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष तत्क्षण कोप करनेवाला, सदैव प्रसन्न रहनेवाला, गुणी, प्रतापी, चतुर और शिल्पविद्या में निपुण होता है ॥ ११ ॥

व्यापारदक्षः क्षितिपालमानी दानाभिमानी ननु शास्त्रवेत्ता ॥
बहुप्रकारैर्बहुधान्यवित्तः स्यान्मानवो वै बहुधान्यजन्मा १२

बहुधान्य संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह व्यापार करने में बड़ा चतुर, राजद्वार में मानयुक्त, दान करनेवाला, शास्त्रों का जाननेवाला और अनेक यत्नों से धनधान्य उत्पन्न करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

रथध्वजच्छत्रतुरंगमाद्यैर्युतश्च शास्त्राभिरतोऽरिहन्ता ॥
मन्त्री नरेन्द्रस्य नरः श्रुतज्ञः प्रमाथिसंवत्सरसंभवः स्यात् १३

प्रमाथी संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह रथ, ध्वज, छत्र, घोड़ा आदिकों से युक्त; शास्त्राभ्यासी; शत्रु का नाश करनेवाला और राजा का मन्त्री तथा वेद का ज्ञाता होता है ॥ १३ ॥

अत्युग्रकर्म्माभिरतो नितान्तमरातिचक्राक्रमणेऽतिदक्षः ॥
शूरश्च धीरोऽतितरामुदारः पराक्रमी विक्रमवर्षजातः १४

विक्रम संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष अत्यन्त उग्र कार्य करनेवाला, शत्रु के दबाने में चतुर, शूरवीर, धीर, बहुत उदारचित्त और पराक्रमी होता है ॥१४॥

कार्य्यप्रलापी किल निंद्यशीलः खलानुयातः परकर्म्मकर्त्ता ॥
भर्त्ता बहूनां मलिनोऽलसश्च जातो वृषाब्दे मनुजोऽतिलुब्धः १५

वृष संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष कार्य करने में अधीर, दुष्टस्वभाव, नीचसंगी, पराया काम करनेवाला, बहुतों का पति, मलिन और आलसी होता है ॥ १५ ॥

चित्रवस्त्रकुसुमैकमानसो मानसोद्भवचयान्वितः सदा ॥
चारुशीलविलसत्कलान्वितश्चित्रभानुजजनो हि पूरुषः १६

चित्रभानु संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष विचित्र वस्त्र और सदैव भोग-

विलास में युक्त, विचित्र पुष्पों में मन रखनेवाला, उत्तम शील स्वभाव और कारीगरी में बड़ा निपुण होता है ॥ १६ ॥

अरालकेशः सरलः सुकान्तिर्जातारिपक्षो मतिमान्विनीतः ॥
प्रसन्नमूर्त्तिर्विलसद्विभूतिः सुभानुसंवत्सरजो नरः स्यात् १७

सुभानु संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष उत्तम केश, कोमल स्वभाव, कान्ति वाला, शत्रुओंवाला, बुद्धिमान्, विनययुक्त, प्रसन्न वदन और वैभव से युक्त होता है ॥ १७ ॥

धूर्त्तश्च शूरश्चपलः कलाज्ञः सुनिष्ठुरो गर्हितकर्मकर्त्ता ॥
उत्पन्नभोक्ता द्रविणेन युक्तः स्यात्तारणाब्दोद्भवमानवो यः १८

तारण संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष धूर्त्त, शूरवीर, चपल, कलाओं का ज्ञाता, निर्दयी, नीच कर्म करनेवाला, उद्यमी और धनवान् होता है ॥ १८ ॥

स्वधर्म्मकर्म्माभिरतो नितान्तं सच्छास्त्रपारंगमतामुपेतः ॥
कलाकलापे कुशलो विलासीयः पार्थिवाब्दे कुलपार्थिवः स्यात् १९

जो पार्थिव संवत्सर में उत्पन्न होता है वह निरन्तर अपने धर्म-कर्म में युक्त, उत्तम शास्त्रों के पार जानेवाला, कारीगरी में निपुण और विलास करनेवाला तथा राजवंशी होता है ॥ ११ ॥

सौख्येतिरक्तो व्यसनाभिभूतो भीतो न किंचिद् ग्रहणाद्दणी स्यात् ॥
जातः पुमानस्थिरचित्तवृत्तिर्व्ययाभिधाने व्ययकर्म्मशीलः २०

व्यय संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष सुख का अनुरागी, व्यसनयुक्त, विषयी, भयरहित, ऋणी, चञ्चल चित्त और बहुत खर्च करनेवाला होता है ॥ २० ॥

राजगौरवमहोत्सवः शुचिर्म्मानवः पृथुतनुर्महीपतिः ॥
वैरिवर्गविजयोद्यतः सदा सर्वजिच्छरदि यस्य संभवः २१

सर्वजित्संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला पुरुष राज के गौरव से अधिक उत्सव वाला, पवित्र रहनेवाला, स्थूलशरीर, पृथ्वीनाथ और हमेशा शत्रुओं के जीतने में उद्यत होता है ॥ २१ ॥

भूरिभृत्यबहुभोगसंयुतः सुन्दरश्च मधुरान्नभुक्सदा ॥
धीरतागुणयुतोतिधारणः सर्वधारिणि च यस्य संभवः २२

सर्वधारी संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष बहुत से सेवक और संपूर्ण भोगों से युक्त, सुन्दर स्वरूप, नित्य मधुर भोजन करनेवाला तथा बड़ा धीर-गंभीर होता है ॥ २२ ॥

वक्ता विदेशाटनतां प्रपन्नः कुटुम्बसौख्यापचयोऽतिधूर्त्तः ॥
जनेन साकं गतसख्यवृत्तिर्विरोधिवर्षप्रभवो नरः स्यात् २३

विरोधी संवत्सर में जो उत्पन्न हुआ है। वह वक्ता, देशाटन करनेवाला, कुटुम्बियों के सुख से रहित, बड़ा धूर्त्त और सबसे वैर करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

निर्धनः किल करालतांगतो दीर्घपूर्वबहुगर्वसंयुतः ॥
चारुबुद्धिरहितोप्यसौहृदो मानवो विकृतिवर्षसंभवः २४

विकृत संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह निर्धन, दुष्टप्रकृति, अत्यन्त अहंकारी, अच्छी बुद्धि से हीन तथा सर्वजनों का शत्रु होता है ॥ २४ ॥

कामातुरो धूसरकायकान्तिः कठोरदीर्घस्वरफल्गुवाक्यः ॥
क्लेशी च लज्जाविधिवर्जितः स्यान्नरः खराब्दप्रभवोऽतिदीर्घः २५

खर संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला कामातुर, मलिन वर्ण, कठोरचित्त, दीर्घस्वर और झूठ बोलनेवाला, क्लेशभोग करनेवाला, निर्लज्ज तथा लंबे शरीरवाला होता है ॥ २५ ॥

तडागवापीगृहकूपकर्त्ता सदान्नदानाभिरुचिः शुचिः स्यात् ॥
विलासिनीनन्दनजातहर्षो नरो भवेन्नन्दनवर्षजन्मा २६

नंदन संवत्सर में जो मनुष्य उत्पन्न हुआ है वह तालाब, बावली, कूप और मन्दिरों का बनानेवाला; पवित्र मन, अन्नदान करनेवाला तथा स्त्रीपुत्रों करके सुख पानेवाला होता है ॥ २६ ॥

संग्रामधीरः सुतरांसुशीलो भूपालमान्यो वदतां वरेण्यः ॥
दाता दयालुः किल वैरिहन्ता यस्य प्रसूतिर्विजयाभिधाने २७

विजय संवत्सर में जन्म लेनेवाला संग्राम में बड़ा धीर, श्रेष्ठ स्वभाव और राजाओं में मान पानेवाला, व्याख्यान करने में अति चतुर, दानी, दयायुक्त तथा शत्रुजनों का नाश करनेवाला होता है ॥ २७ ॥

शास्त्रप्रसंगे विदुषां विवादो मान्यो वदान्यो रिपुगर्वहन्ता ॥

जयाभिलाषी विषयानुरक्तो जातो जयाब्दे मनुजो महौजाः २८

जय संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला पुरुष विद्वानों से शास्त्रार्थ में विवाद करनेवाला, माननीय, दानी, शत्रुजनों का बल तोड़नेवाला, जय का अभिलाषी, विषयी और अत्यन्त पराक्रमी होता है ॥ २८ ॥

भूषाविशेषैः सहितश्च योषाविलासशीलोऽमृतवाक्कलाज्ञः ॥
सद्गीतनृत्याभिरतश्च भोक्ता यो मन्मथाब्दे जननं प्रपन्नः २९

मन्मथ संवत्सर में जन्म लेने वाला पुरुष सब भूषणों करके भूषित, स्त्री जनों से हास-विलास करनेवाला, मिष्टभाषी, शिल्पज्ञ, नाचरंग देखनेवाला तथा सुख भोगनेवाला होता है ॥ २९ ॥

क्रूरोद्धतो निंद्यमतिश्च लुब्धो वक्रास्यबाह्वंघ्रिरघप्रियः स्यात् ॥
विरुद्धभावो बहुदुष्टचेष्टो यो हायने दुर्मुखनाम्नि जातः ३०

दुर्मुख संवत्सर में जो उत्पन्न हुआ है वह बड़ा क्रूर, उद्दंड और दुष्टमति, बड़ा लोभी और कठोर मुख-हाथ-पदवाला, पापी, सबसे लड़ाई करनेवाला और खोटी चेष्टावाला होता है ॥ ३० ॥

तुरङ्गहेमाम्बरधान्यरत्नैर्युतो नितान्तं सुतदारसौख्यः ॥
समस्तवस्तुग्रहणैकबुद्धिर्यो हेमलम्बे पुरुषोभिजातः ३१

हेमलम्ब संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष घोड़ा, सुवर्ण, वस्त्र, रत्नाभूषण और धनधान्य से युक्त, निरन्तर स्त्री पुत्रादिकों से सुखी और बहुत से पदार्थों का संग्रह करनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

धूर्त्तोतिलुब्धो लभतां प्रपन्नः श्लेष्माधिकः सत्त्वविवर्जितश्च ॥
प्रारब्धकार्येतितरां प्रलापी विलम्बसंवत्सरसंभवः स्यात् ३२

विलम्ब संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष बड़ा धूर्त्त, अतिलोभी, लोभियों से युक्त, कफप्रकृति, बलहीन और भाग्य के विषय में चिन्तायुक्त रहता है ॥ ३२ ॥

दुराग्रही सर्वकलाप्रवीणः सुसंग्रही चञ्चलधीश्च धूर्त्तः ॥
अनल्पजल्पः ससुहृद्विकल्पो विकारिसंवत्सरजो नरः स्यात् ३३

॥ विकारी संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह हठी, सब कार्यों में प्रवीण,

अच्छा संग्रह करनेवाला, चंचल बुद्धि, धूर्त्त, बहुत बोलनेवाला और मित्रों में अविश्वासी होता है ॥ ३३ ॥

वणिक्क्रियायां कुशलो विलासी नैवानुकूलश्च सुहृज्जनानाम् ॥
अनेकविद्याभ्यसनानुरक्तः सँव्वत्सरे शार्वरिनाम्नि जातः ३४

शर्वरी संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह वाणिज्य में बड़ा चतुर, विलासयुक्त, मित्रों से द्रोह करनेवाला तथा अनेक विद्याओं का अभ्यास करने वाला होता है ॥ ३४ ॥

कामी प्रकामन्धनवांश्च शश्वत् सेवादरो दारहतोऽथ तप्तः ॥
सुगुप्तबुद्धिश्चपलस्स्वभावः प्लवाभिधानाब्दभवो नरः स्यात् ३५

प्लवनाम संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह अत्यन्त कामी, धनी, निरन्तर सेवा से आदर पानेवाला, स्त्री-पक्ष से संताप, दुष्टबुद्धि और चपल स्वभाव वाला होता है ॥ ३५ ॥

सौभाग्यविद्याविनयैस्समेतः पुण्यैरगण्यैरपि दीर्घजीवी ॥
स्यान्मानवः सूनुधनोरुसम्पद्यस्य प्रसूतिः शुभकृत्समासु ३६

शुभकृत् संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष उत्तम भाग्यवाला, विद्या और विनय से युक्त, बड़ा दानी, बड़ी आयुवाला, सब संपदा भोग करनेवाला और पुत्र से सुख पानेवाला होता है ॥ ३६ ॥

सर्वोन्नतश्चारुगुणो दयालुः सत्कर्मकर्त्ता विजयी विशेषात् ॥
कान्तो विनीतःशुभदृक्प्रवीणो यः शोभकृद्वत्सरसम्भवःस्यात ३७

शोभन संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष सब प्रकार से उन्नत, श्रेष्ठगुण, दयावान्, श्रेष्ठ कर्म्म करनेवाला, अत्यन्त विजयी, सुन्दर शरीर, नम्र, अच्छे नेत्रवाला और प्रवीण होता है ॥ ३७ ॥

क्रूरेक्षणः क्रूरतरस्वभावः स्त्रीवल्लभः पर्वततुल्यगर्वः ॥
स्यादन्तरायः परकार्य्यकाले क्रोधी भवेत्क्रोधिशरत्प्रसूतः ३८

क्रोधी संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला क्रूरबुद्धि, क्रूरदृष्टि, बड़ा अभिमानी, स्त्रियों से प्रीति करनेवाला, पराये कार्य्य का बिगाड़नेवाला और क्रोधी होता है ॥ ३८ ॥

सुपुत्रदारः सुतरामुदारो नरः सदाचाररतोऽतिधीरः ॥
मिष्टान्नभुक् सर्वगुणाभिरामो विश्वावसौ यस्य भवेत्प्रसूतिः ३९

विश्वावसु नाम संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष उत्तम पुत्र-स्त्रीवाला, उदार स्वभाव, श्रेष्ठ आचार-विचार युक्त, बड़ा धीर, मिष्टान्नभोगी और सर्वगुणयुक्त होता है ॥ ३९ ॥

धनस्य धान्यस्य च नैव किञ्चित् सुसंग्रहोऽत्यन्तकठोरवाक्यः ॥
आचारताल्पत्वशठत्वयुक्तो पराभवे यस्य भवेत्प्रसूतिः ४०

पराभव संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न हुआ है उसके स्थान में धन-धान्य कुछ भी संग्रह न रहे, कठोर वचन वाला, अल्पाचारी और दुष्ट स्वभाववाला होता है ॥ ४० ॥

भवेदलञ्चञ्चलचित्तवृत्तिर्न्न स्यात्प्रवृत्तः खलु साधुकार्य्ये ॥
धूर्त्तः सदाचारविचारहीनः प्लवङ्गजो वै मनुजः कृशाङ्गः ४१

प्लवंग संवत्सर में उत्पन्न हुआ पुरुष चंचल चित्तवृत्तिवाला, अच्छे कार्य में प्रवृत्त न होनेवाला, छलिया और आचार-विचार-हीन होता है ॥ ४१ ॥

रूपेण मध्यः प्रियवाक् दयालुर्ज्जलाभिलाषी त्वनुवेलमेव ॥
स्थूलांघ्रिसन्मौलिरलम्बलीयान् किलारिकीलःकिलके प्रसूतः ४२

कीलक संवत्सर में जिसका जन्म हुआ है वह रूप में मध्यम, प्रियवाणीवाला, दयालु, हर समय जल का अभिलाषी, मोटे पादवाला, श्रेष्ठ मस्तकवाला, बली और शत्रुओं को दबानेवाला होता है ॥ ४२ ॥

पण्डितो हि धनवान् बहुभोगी देवतातिथिरुचिः शुचिरुच्चैः ॥
सात्त्विकः कृशकलेवरयष्टिः सौम्यवत्सरभवो हि नरः स्यात् ४३

सौम्य नाम संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न हुआ है वह पण्डित और धनी, बहुत सुख करनेवाला, देवता और अतिथि का पूजनेवाला, पवित्र शरीर, सतोगुणी और दुर्बल अंग होता है ॥ ४३ ॥

इतस्ततः सञ्चलनानुरक्तो लिपिक्रियायां कुशलो विवेकी ॥
क्रोधी शुचिर्भोगनिवृत्तचेताःप्राणीति साधारणजःप्रणीतः४४

साधारण संवत्सर में जिसने जन्म लिया है वह इधर उधर चलने फिरने में मन रखनेवाला, लिखने में बड़ा चतुर, विवेकी, क्रोधी, पवित्र और संसार के भोगों में अरुचिवाला होता है ॥ ४४ ॥

महेश्वराराधनतत्परः स्यात् क्रोधी विरोधी सततम्बहूनाम् ॥
पराङ्मुखस्तातवचस्यतीव विरोधकृन्नाम्नि च यस्य जन्म ४५

विरोधी संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न हुआ है वह शिवपूजन में तत्पर, क्रोधी और बहुत मनुष्यों से विरोध रखनेवाला और पिता की आज्ञा भंग करनेवाला होता है ॥ ४५ ॥

विद्वान् सुशीलश्च कलाप्रवीणः सुधीश्च मान्यो वसुधाधिपानाम् ॥
व्यापारसम्प्राप्तमहाप्रतिष्ठः पुमान्भवेद्वै परिधाविजन्मा ४६

परिधावी संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष विद्वान्, सुशील, कलाओं में कुशल, श्रेष्ठ बुद्धि, राजाओं से मान पानेवाला और व्यापार में बड़ी कीर्ति पाने वाला होता है ॥ ४६ ॥

दुष्टोऽभिमानी कलहानुरक्तो लुब्धः कुटुम्बाभिरतश्च दीनः ॥
स्यादल्पधीर्गर्हितकर्म्मकर्त्ता प्रमादिजन्मा मनुजः प्रमादी ४७

प्रमादी संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह दुष्ट, अभिमानी, कलह करनेवाला, लोभी, कुटुम्ब में प्रीति करनेवाला, दुःख पानेवाला, थोड़ी बुद्धि-वाला और नीचकर्म्म करनेवाला होता है ॥ ४७ ॥

स्याद् भूरिदारश्चतुरोऽतिदक्षः शश्वत्सुतानन्दभरप्रपूरः ॥
प्राज्ञः कृतज्ञः सुतरां विनीतोऽप्यानन्दजातो मनुजो वदान्यः ४८

आनन्दी नाम संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है उसके स्त्रियाँ बहुत होती हैं और वह बड़ा चतुर, पुत्रादिकों के आनन्द से पूरित, पण्डित, उपकार मानने वाला और बहुत नम्र स्वभाववाला होता है ॥ ४८ ॥

क्रूरस्वकर्म्मा कलहानुरक्तः सन्त्यक्तसत्कर्म्मविचारसारः ॥
दयाविहीनश्च ससाहसोऽपि भवेन्नरो राक्षसजातजन्मा ४९

राक्षस संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष क्रूरस्वभाव, नीचकर्म और कलह

करनेवाला, श्रेष्ठ कर्म्मों के विचार का त्याग करनेवाला, निर्दयी और साहसी होता है ।। ४६ ।।

सद्बुद्धिशालो जलसस्यसम्पद्वैश्यानुवृत्तौ कुशलः सुशीलः ।।
स्यादल्पवित्तो बहुपालकश्च जातो नलाब्दे चपलो मनुष्यः ५०

नल संवत्सर में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह उत्तमबुद्धि, जल की खेती से धन पैदा करनेवाला, वैश्यवृत्ति में बड़ा कुशल, सुशील, थोड़े धनवाला, बहुत जनों का पालन करनेवाला और चपल होता है ।। ५० ।।

पिङ्गेक्षणो गर्हितकर्म्मकर्त्ता स्यादुद्धतश्चञ्चलवैभवाढ्यः ।।
त्यागी शठोऽत्यन्तकठोरवाक्यो जातो नरः पिङ्गलनामधेये ५१

पिंगल संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह पीले नेत्र और निषिद्ध कर्म्म करने वाला, अहंकारी और कभी धनहीन और कभी धनपूर्ण, त्यागी, शठ और कठोर वचन बोलनेवाला होता है ।। ५१ ।।

अनल्पजल्पः प्रियतामुपेतस्त्वसाधुबुद्धिर्विधिना वियुक्तः ।।
कलिप्रसंगे किल कालरूपो यः कालयुक्तः प्रभवः कृशाङ्गः ५२

कालयुक्त संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला पुरुष बहुत बोलनेवाला, सबसे प्रीति करनेवाला, नीचबुद्धि, कर्महीन और कलह करने में कालरूप तथा दुर्बल शरीर होता है ।। ५२ ।।

उदारचेता विलसत्प्रसादो रणांगणप्राप्तयशाः सुवेषः ।।
नरेन्द्रमंत्री बहुपूजितार्थी सिद्धार्थजातो मनुजः समर्थः ५३

सिद्धार्थ संवत्सर में जन्म लेनेवाला मनुष्य उदारचित्त, सब पर दया करने वाला, संग्राम में विजय पानेवाला, उत्तम वेब धारण करनेवाला, राजा का मन्त्री, याचकों का पूजनेवाला और सर्व कार्य्यों में समर्थ होता है ।। ५३ ।।

भयङ्करः पालयिता पशूनां शश्वत्परोवादपरोऽतिधूर्त्तः ।।
जातापकीर्त्तिः खलचित्तवृत्तिर्नरोऽतिरौद्रः खलु रौद्रजन्मा ५४

रौद्रनाम संवत्सर में जन्म लेनेवाला पुरुष सबको भय देनेवाला, पशुओं का पालनेवाला और कलह करनेवाला, बड़ा धूर्त्त, बदनाम और दुष्ट वृत्तिवाला होता है ।। ५४ ।।

स्ववाक्यनिर्व्वाहमहाऽभिमानः प्रसन्नताहीनतरो नरः स्यात् ॥
कामी प्रकामन्दुरितप्रवृत्तिर्य्योदुर्म्मतिर्दुर्म्मतिवर्षजातः ५५

दुर्मति संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह अपने वचन का पालनेवाला, प्रसन्नता रहित, अत्यन्त कामी, पापकर्म्म करनेवाला और दुष्टबुद्धि होता है ॥५५॥

नित्यन्नरेन्द्रोदरगौरवः स्याद् गजाश्वभूहेमसमन्वितश्च ॥
तौर्य्यत्रिकप्रीतिरतीव जातश्चेन्मानवो दुन्दुभिनामधेये ५६

दुन्दुभी नाम संवत्सर में उत्पन्न होनेवाला पुरुष नित्य राजद्वार में प्रतिष्ठा पानेवाला; हाथी, घोड़ा, पृथ्वी और स्वर्णादि धन से निरन्तर युक्त और गाने बजाने में अत्यन्त प्रीति रखनेवाला होता है ॥ ५६ ॥

आरक्ताक्षः क्वचिदपि महाकामलाद्यामयानां
प्रादुर्भावादतिकृशतनुर्ज्जायतेऽत्यन्तरोषः ॥
पादद्वन्द्वे भवति कुनखी हस्तयुग्मेऽथवा स्या-
च्छस्त्राद्दुःखं व्रजति रुधिरोद्गारिजन्मा मनुष्यः ५७

रुधिरोद्गारी संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह रक्तनेत्र और कामलाआदि रोगों से दुर्बल शरीर, बड़ा क्रोधी, श्यामनखी और शस्त्र से दुःखी होता है ॥ ५७ ॥

आचारधर्म्माभिरतो नितान्तं मनोभवोत्कर्षतरो नरः स्यात् ॥
अन्याधिकत्वं सहते न किञ्चिद्रक्ताक्षिजातोक्षिरुजान्वितश्च ५८

रक्ताक्षीनाम संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह आचार धर्म्म से युक्त, मदान्ध, किसी की बड़ाई न सहनेवाला और नेत्रों का रोगी होता है ॥ ५८ ॥

स्यादन्तरायोहि परस्य कार्य्ये तमोगुणाधिक्यभयंकरश्च ॥
परस्य बुद्धिं प्रहरेत्प्रकामं यो हायने क्रोधननाम्नि जातः ५९

क्रोधन संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह पराये काम का बिगाड़नेवाला, तमोगुणी, भय देनेवाला और पराई बुद्धि का हरनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

उपार्जितार्थव्ययकृन्नितान्तं सेवारतो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ॥
सत्कर्म्मताल्पत्वमनःप्रवृत्तिः क्षयाभिधाने जननं हि यस्य ६०

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
संवत्सरफलानि ॥ १ ॥

क्षयकृत्संवत्सर में जो उत्पन्न होता है वह निरन्तर पैदा किये हुये धन का खर्च करनेवाला और पराई सेवा में युक्त, चित्त की वृत्ति निष्ठुर और सत्कर्म में थोड़ा मन लगानेवाला होता है ॥ ६० ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां संवत्सरफलानि ॥

———

अथायनफलानि ।

शश्वत्प्रसन्नो ननु सूनुकांतासन्तोषयुक्तोतितरां चिरायुः ॥
नरः सदाचारपरोप्युदारो धीरश्च सौम्यायनजातजन्मा १

अयनों का फल ।

उत्तरायण सूर्य में जो मनुष्य उत्पन्न होता है वह निरन्तर प्रसन्न और स्त्री-पुत्रादिकों से सुखी होनेवाला, संतोषी और दीर्घायु, श्रेष्ठ आचारयुक्त, उदार और धीर होता है ॥ १ ॥

अखर्वगर्वः कृषिकर्म्मकर्त्ता चतुष्पदाढ्योतिकठोरचित्तः ॥
शठोप्यसह्यो ननु मानवानां याम्यायने ना जननं प्रपन्नः २

इत्ययनजातफलम् ।

दक्षिणायन सूर्य में जो उत्पन्न होता है वह बड़ा अभिमानी, खेती करनेवाला, चौपाये जीवों का पालनेवाला, कठोरचित्त, शठ और किसी की बात का न सहनेवाला होता है ॥ २ ॥

इति अयनफल ।

———

अथर्त्तुफलम् ।

कन्दर्प्परूपो मतिमान् प्रतापी संगीतशास्त्रे गणिते प्रवीणः ॥
शास्त्रप्रसूतामलचैलचेता वसन्तजन्मा मनुजः प्रसन्नः १

ऋतुओं का फल ।

वसन्तऋतु में जो उत्पन्न होता है वह बड़ा सुन्दररूप व बुद्धिमान्, बड़ा प्रतापी, गाने बजाने की विद्या में और गणित में बड़ा चतुर, शास्त्रों के अभ्यास से स्वच्छ वस्त्र की तुल्य चित्तवाला होता है ॥ १ ॥

ऐश्वर्य्यविद्याधनधान्ययुक्तो वक्ता प्रलम्बामलकेशपाशः॥
भोगी भवेन्नीरविहारशीलो यो ग्रीष्मकाले भवताम्प्रपन्नः २

ग्रीष्मऋतु में उत्पन्न होनेवाला पुरुष ऐश्वर्य, विद्या, धन और धान्य से युक्त, व्याख्यान करनेवाला, उत्तम लम्बे केशवाला, सुखभोगी और जलविहार करनेवाला होता है ॥ २ ॥

संग्रामधीरो मतिमान् प्रतापी तुरंगमप्रेमकरः सुरूपः॥
कफानिलात्मा ललनाविलासी वर्षोद्भवो वै पुरुषः सहर्षः ३

वर्षाऋतु में जो उत्पन्न होता है वह संग्राम में बड़ा धीर, प्रतापी, बुद्धिमान् और घोड़ों से बड़ी प्रीति रखनेवाला, उत्तम स्वरूप, कफ और वातप्रकृतिवाला, स्त्रियों से विलास करनेवाला और हमेशा प्रसन्न चित्त रहता है ॥ ३ ॥

अपूर्णरोषः पुरुषोनिलात्मा मानी धनी धर्म्मरुचिः शुचिःस्यात्॥
रणप्रियो वाहनसंयुतश्च ऋतौ शरन्नाम्नि च यस्य जन्म ४

शरद्ऋतु में जन्म लेनेवाला पुरुष अल्प क्रोधी, वातप्रकृति, अहंकारी, धनी, धर्म में रुचि करनेवाला, पवित्र शरीर, लड़ाई में प्रीति रखनेवाला और उत्तम वाहनों से युक्त होता है ॥ ४ ॥

नरेन्द्रमन्त्री चतुरोप्युदारो नरो भवेच्चारुगुणोपपन्नः॥
सत्कर्म्मधर्म्मानुरतो मनस्वी हेमन्तजातस्सततं विनीतः ५

हेमन्तऋतु में जो उत्पन्न होता है वह राजा का मंत्री, चतुर, उदार, बड़ा गुणी, अच्छे कर्मों का करनेवाला तथा उत्तम धर्म्म का पालने वाला, दृढ़ चित्त और निरन्तर नम्रस्वभाव होता है ॥ ५ ॥

मिष्टान्नपानानुरतो नितान्तं क्षुधान्वितः पुत्रकलत्रसौख्यः॥
सत्कर्म्मवेषः पुरुषः सरोषो बलाधिशाली शिशिरर्तुजन्मा ६

इति ऋतुफलम्।

शिशिरऋतु में जो उत्पन्न होता है वह नित्य ही मीठे भोजन करनेवाला और क्षुधातुर, स्त्री पुत्रों का सुख देखनेवाला, श्रेष्ठ कर्म और वेषवाला, बली, पौरुषी तथा क्रोधी होता है ॥ ६ ॥

इति ऋतुफल।

अथ मासफलम् ।

सत्कर्म्मविद्याविनयोपपन्नो भोगी नरः स्यान्मधुरान्नभोगी ॥
सत्पात्रमित्रानुरतश्च मन्त्री चैत्रोद्भवश्चापि विचित्रमन्त्रः १

जो चैत्र में उत्पन्न हुआ है वह श्रेष्ठकर्म्म और विद्या-विनययुक्त,सर्वसुख भोगी, मीठे भोजन करनेवाला, सज्जन और मित्रों में अनुरक्त, राजा का मंत्री तथा विचित्र सलाह देनेवाला होता है ॥ १ ॥

सुलक्षणः पुण्यगुणानुशीलः पुमान् बलीयान्द्विजदेवभक्तः ॥
कामी चिरायुर्ज्जलपानशीलः स्यान्माधवे बान्धवसौख्ययुक्तः २

वैशाखमास में जो उत्पन्न होता है वह पुरुष उत्तम लक्षणवाला, गुणवान्, पुण्यवाला, बली और देवता-ब्राह्मणों की भक्ति करनेवाला, कामी, बहुत पानी पानेवाला, दीर्घायु और बन्धु सुखसे युक्त होता है ॥ २ ॥

क्षमान्वितश्चञ्चलचित्तवृत्तिर्व्विदेशवासाभिरुचिश्च तीव्रः ॥
विचित्रबुद्धिः खलु दीर्घसूत्री जेष्ठोद्भवः श्रेष्ठतरो नरः स्यात् ३

ज्येष्ठमास में जो उत्पन्न होता है वह चञ्चल और क्षमायुक्त, विदेश जाने की अभिलाषा रखनेवाला, तीक्ष्ण स्वभाव, श्रेष्ठबुद्धि और देर में काम करनेवाला तथा बड़ा श्रेष्ठ होता है ॥ ३ ॥

बहुव्ययोनल्पवचो विलासः प्रमादशीलो गुरुवत्सलश्च ॥
सदाग्निमान्द्यः शुभकर्म्म कृत्स्यादाषाढजोद्गाढतराभिमानः ४

आषाढ़ में जो उत्पन्न होता है वह बहुत खर्च करनेवाला, बहुत बोलनेवाला, हास-विलासयुक्त, उत्तम स्वभाव और गुरुभक्त, मंदाग्नि-रोगयुक्त, शुभकर्म्म करने वाला और बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

पुत्रैश्च पौत्रैश्च कलत्रमित्रैः सुखी च तातस्य निदेशकर्त्ता ॥
लोकप्रसिद्धः कफवान् वदान्यो गुणान्वितः श्रावणमासजन्मा ५

श्रावणमास में जो पुरुष उत्पन्न हुआ है वह पुत्र, पौत्र, स्त्री और मित्रों से सुखी, पिता की आज्ञा पालनेवाला, लोक में प्रसिद्ध, कफ प्रकृति, उदारचित्त और गुणी होता है ॥ ५ ॥

श्रीमान् भवेत्क्षीणकलेवरश्च दाता च कान्तासुतजातसौख्यः ॥
सुखे च दुःखे विकृतो हि मर्त्यो भवेन्नरो भाद्रपदाप्तजन्मा ६

भादों के महीने में जो उत्पन्न होता है वह धनी, दुर्बल शरीर, दानी, स्त्री-पुत्रादिकों का सुख भोगनेवाला और सुख-दुःख में समान प्रकृतिवाला होता है ॥ ६ ॥

विद्वान् धनी राजकुलप्रियश्च सत्कार्य्यकर्त्ता बहुभृत्ययुक्तः ॥
दाता गुणज्ञो बहुपुत्रसम्पत् स्यादाश्विनेश्वादिसमृद्धियुक्तः ७

आश्विनमास में जो उत्पन्न होता है वह विद्या-धन से पूर्ण, राजकुल का प्यारा, श्रेष्ठ कार्य करनेवाला, बहुत सेवकों से युक्त, दाता, गुण का ग्राहक, बहुत पुत्र-संपदासमेत और अश्वादि धनयुक्त रहता है ॥ ७ ॥

सत्कर्म्मकर्त्ता बहुवाग्विलासो धनी लसत्कुञ्चितकेशपाशः ॥
कामं सकामः क्रयविक्रयार्थी सत्कृत्यकृत्कार्त्तिकजातजन्मा ८

कार्त्तिक में जो उत्पन्न होता है वह श्रेष्ठ कर्म और बहुत वार्ता करनेवाला, धनी, घूंघरवाले बालोंवाला, अच्छी कामनावाला, बेंचने खरीदने में बड़ा चतुर और उत्तम कार्य करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

सत्तीर्थयात्रानिरतः सुशीलः कलाकलापे कुशलो विलासी ॥
परोपकर्त्ता धृतसाधुमार्गो मार्गोद्भवो वै विभवैः समेतः ९

मार्गशीर्ष में जो उत्पन्न होता है वह उत्तम तीर्थयात्रा करनेवाला, सुशील, कारीगरी की कलाओं में निपुण, हास-विलासयुक्त, परोपकारी, साधुप्रकृति और बड़े विभवसमेत रहता है ॥ ९ ॥

परोपकारी पितृवित्तहीनः कष्टार्जितार्थव्ययकृद्विधिज्ञः ॥
सुगुप्तमंत्रः कृतशास्त्रयत्नः पौषे विशेषात्पुरुषः कृशाङ्गः १०

पौषमास में जन्म लेनेवाला परोपकारी, पिता की द्रव्य से हीन, कष्ट से द्रव्य पैदाकर खर्च करनेवाला, विधि विधान का जाननेवाला, गुप्त मंत्रणावाला, शास्त्र में यत्नकारी और दुर्बल शरीर होता है ॥ १० ॥

सन्मन्त्रविद्वैदिकसाधुयोगो योगोक्तविद्याभ्यसनानुरक्तः ॥
बुद्धेर्विशेषान्निहतारिसंघो माघोद्भवः स्यादनघो मनुष्यः ११

माघ में उत्पन्न होनेवाला पुरुष मंत्रशास्त्र में निपुण, वेदमार्ग से चलनेवाला, योगाभ्यासी, अपनी बुद्धि बल से शत्रुओं का नाश करनेवाला और पापरहित होता है ॥ ११ ॥

परोपकारी कुशलो दयालुर्बलान्वितः कोमलकायशाली ॥
विलासिनीकेलिविधानशीलोयः फाल्गुने फल्गुवचो विलासः १२

जो फालगुनमास में उत्पन्न हुआ है वह परोपकारी, चतुर, दयावान्, बली, कोमलांग और स्त्रियों के संग हास-विलास करनेवाला, बड़ा प्रसन्न और मनोहर वचन कहनेवाला होता है ॥ १२ ॥

क्षेपकः ॥

विषयहीनमतिः सुचरित्रदृग् विविधतीर्थकरश्च निरामयः ॥
सकलवल्लभ आत्महितंकरः खलु मलिम्लुचमासभवो नरः १३

इति मासजातफलम् ।

मलमास में जो उत्पन्न होता है वह संसार के विषयों से विरक्त, श्रेष्ठ चरित्र देखनेवाला, अनेक तीर्थों की यात्रा करनेवाला, रोगरहित, सबका प्यारा और अपना हित करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

इति मासफल ।

——:०:——

अथ पक्षजातफलम् ।

चंचच्चिरायुःसुतरांसुशीलः स्त्रीपुत्रवान् कोमलकायकान्तिः ॥
सदासदानंदविनीतकालश्चेज्जन्मकालस्तु बलक्षपक्षे १

पक्षों का फल ।

शुक्लपक्ष का जन्म लेनेवाला पुरुष दीर्घजीवी, बड़ा सुशील, स्त्री-पुत्रयुक्त, कोमलांग, कान्तियुक्त और हमेशा आनन्द से काल व्यतीत करनेवाला होता है ॥१॥

प्रतापशीलो विबलश्च लोलः कलिप्रियः स्वीयकुलोद्धतश्च ॥
मनोभवाधिक्ययुतो नितांतं सितेतरे यस्य नरस्य जन्म २

इति पक्षफलम् ।

कृष्णपक्ष का जन्म लेनेवाला पुरुष प्रतापी निर्बल शरीर, चञ्चल स्वभाव,

कलह करनेवाला, अपने कुल से विपरीत चलनेवाला और अत्यन्त कामी होता है ॥ २ ॥

इति पक्षफल ।

अथ दिनरात्रिफलम् ।

तेजस्वी पितृसादृश्ययश्चारुदृष्टिर्नृपप्रियः ॥
बन्धुपूज्यो धनाढ्यश्च दिवाजातो नरो भवेत् १

दिनरात्रिजन्म का फल ।

जिसका जन्म दिन में होता है वह तेजस्वी, पिता की सदृश शील स्वभाव, सुन्दर दृष्टि, राजाओं से प्रीति करनेवाला, बन्धुपूज्य और धनाढच होता है ॥ १ ॥

मन्ददृग् बहुकामार्त्तः क्षयरोगी मलीमसः ॥
क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशिजातो नरो भवेत् २

इति दिनरात्रिफलम् ।

और जिसका जन्म रात्रि को होता है वह मन्ददृष्टि और कामी, क्षयरोगयुक्त, मलिनस्वभाव, कठोरचित्त और गुप्तपाप करनेवाला होता है ॥ २ ॥

इति दिनरात्रिफल ।

अथ तिथिफलम् ।

बहुजनपरिवारश्चारुविद्यो विवेकी
कनकमणिविभूषा वेषशाली सुशीलः ॥
अतिसुललितकांतिर्भूमिपालाप्तवित्तः
प्रतिपदि यदि सूतिर्जायते यस्य जन्तोः १

तिथियों का फल ।

प्रतिपदा तिथि में जिसका जन्म होता है वह बहुत जनों से पूर्ण कुटुम्बवाला, उत्तम विद्यावाला, विवेकी, सुवर्णरत्नादि आभूषण का धारण करनेवाला, उत्तम वेष, अतिमनोहर कान्ति और राजद्वार से प्रतिष्ठापूर्वक धन पानेवाला होता है ॥ १ ॥

दाता दयालुर्गुणवान् सुसंपच्चञ्चत्सदाचारविचारधन्यः ॥
प्रसन्नमूर्तिर्बहुगीतकीर्त्तिर्मर्त्यो द्वितीयातिथिसम्भवः स्यात् २

द्वितीया में जन्म लेनेवाला पुरुष दाता, दयावान्, गुणी, श्रेष्ठ सम्पदायुक्त, उत्तम आचार विचार करने में धन्य, प्रसन्नमूर्त्ति और उत्तम कीर्तिवाला होता है ॥२॥

कामाधिकः स्यादनवद्यविद्यो बलान्वितो राजकुलाप्तवित्तः ॥
प्रवासशीलश्चतुरो विलासी मर्त्यस्तृतीयाप्रभवोऽभिमानी ३

तृतीया तिथि में जो उत्पन्न होता है वह कामी, श्रेष्ठ विद्या और बल से युक्त, राजकुल से धनप्राप्ति करनेवाला, देशाटन करनेवाला, चतुर, हास-विलासयुक्त और अहङ्कारी होता है ॥ ३ ॥

ऋणप्रवृत्तिर्बहुसाहसः स्याद्रणप्रवीणः कृपणस्वभावः ॥
द्यूते रतिर्लोलमना मनुष्यो वादी यदि स्याज्जनने चतुर्थी ४

चतुर्थीतिथि में जन्म लेनेवाला ऋणी, साहसी और लड़ाई में चतुर, कृपणस्वभाव, जूवां खेलनेवाला, चञ्चलस्वभाव और वादविवाद करने वाला होता है ॥ ४ ॥

संपूर्णगात्रश्च कलत्रपुत्रमित्रान्वितो भूतदयान्वितश्च ॥
नरेन्द्रमान्यस्तु नरो वदान्यः प्रसूतिकाले किल पञ्चमी चेत् ५

पञ्चमी तिथि में जो उत्पन्न होता है वह भरा हुआ शरीर, स्त्री-पुत्रऔर मित्रों से युक्त, सबके ऊपर दया करने वाला, राजमान्य और उदार चेता होता है ॥५॥

सत्यप्रतिज्ञो धनसूनुसंपद्दीर्घोरुजानुर्मनुजो महौजाः ॥
प्रकृष्टकीर्तिश्चतुरो वरिष्ठः षष्ठ्यां प्रजातो व्रणकीर्णगात्रः ६

षष्ठी तिथि में जो मनुष्य उत्पन्न होता है वह सत्य प्रतिज्ञा वाला, धनी, पुत्रयुक्त, दीर्घ जांघ-घुटना वाला और बड़ा पराक्रमी, अच्छी कीतिवाला, चतुर, श्रेष्ठ और व्रण युक्त होता है ॥ ६ ॥

ज्ञानी गुणज्ञो हि विशालनेत्रः सत्पात्रदेवार्चनचित्तवृत्तिः ॥
कन्याप्रसूतिः परवित्तहर्त्ता स्यात्सप्तमीजो मनुजोऽरिहन्ता ७

सप्तमी तिथि में जो उत्पन्न होता है वह ज्ञानी, गुणज्ञ, उत्तमनेत्र, सत्पात्र और देवार्चन करनेवाला, कन्याओं की संतानवाला, परधन हरनेवाला और शत्रु का नाश करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

नानासंपत्सूनुसौख्यः कृपालुः पृथ्वीपालात्प्राप्तविद्याधिकारः ॥

कान्ताप्रीतिश्चञ्चला चित्तवृत्तिर्यस्याष्टम्यां जन्म चेन्मानवस्य ८

अष्टमी तिथि में जो उत्पन्न होता है वह अनेक सम्पदावाला, पुत्र-सुखयुक्त, कृपालु, राजाओं से विद्या का अधिकार पानेवाला, स्त्रियों में प्रीति रखनेवाला और चञ्चलस्वभाव होता है ॥ ८ ॥

पराङ्मुखो बन्धुजनस्य कार्ये कठोरवाक्यश्च सुधीर्विरोधी ॥
नरः सदाचारगतादरः स्याद् यस्य प्रसूतौ नवमीतिथिश्चेत् ९

जिसके जन्म समय में नवमी तिथि होती है वह बन्धुजनों के कार्य्य से दूर रहता है और कठोर वचन बोलनेवाला, बुद्धिमान्, विरोधी, आचार-विचार से हीन और आदर से रहित होता है ॥ ९ ॥

धर्मैकबुद्धिर्भववैभवाढ्यः प्रलम्बकण्ठो बहुशास्त्रपाठी ॥
उदारचित्तोतितरां विनीतो रम्यश्च कामी दशमीभवस्स्यात् १०

दशमी में जो उत्पन्न होता है वह धार्मिक, संसारी विभव से युक्त, बड़ी गर्दन वाला, बहुत शास्त्रों का पढ़नेवाला, उदार चित्त, नम्रतायुक्त, सुन्दर और कामी होता है ॥ १० ॥

देवद्विजार्चाव्रतदानशीलः सुनिर्मलांतःकरणः प्रवीणः ॥
पुण्यैकचित्तोत्तमकर्म्मकृत्स्यादेकादशीजोऽतिकृशोतिरोषः ११

एकादशी में जो उत्पन्न हुआ है वह देवता और ब्राह्मणों के पूजन में निरत, व्रत और दान का करनेवाला, निर्मल स्वभाव, बुद्धिमान्, पुण्यात्मा और उत्तम कर्म करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

जलप्रियो वै व्यवहारशीलो निजालयावासविलासशीलः ॥
सदान्नदाता क्षितिपालवित्तःस्याद्द्वादशीजो मनुजः प्रजावान् १२

द्वादशी तिथि में जो उत्पन्न होता है वह जल से प्रीति रखनेवाला और व्यवहार करनेवाला, अपने स्थान में निवास करनेवाला, हास-विलासयुक्त, हमेशा अन्न का देनेवाला और राजाओं से धन की प्राप्ति करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

रूपान्वितः सात्त्विकतावियुक्तः प्रलम्बकण्ठश्च नरप्रसूतिः ॥
नरोतिशूरश्चतुरः प्रकामं त्रयोदशीनामतिथौ प्रसूतौ १३

जिसके जन्म समय में त्रयोदशी तिथि होती है वह सुन्दररूप, सात्त्विकी स्वभाव,

उच्चग्रीव, पुत्रों का उत्पन्न करनेवाला, चतुर और बड़ा शूरवीर होता है ।।१३।।

क्रूरोतिशूरश्चतुरः सहासः कन्दर्प्पलीलाकुलचित्तवृत्तिः ॥
स्याद्दुःसहोत्यंतविरुद्धभाषी चतुर्दशीजः पुरुषः सरोषः १४

चतुर्दशी में जो उत्पन्न होता है वह क्रूरस्वभाव, शूरवीर, चतुर, हँसमुख, अतिकामी, दुःख से सहन करनेवाला और सबसे विरुद्ध कहनेवाला होता है ।।१४।।

अतिसुललितकायो न्यायसम्प्राप्तवित्तो
बहुयुवतिसमेतो नित्यसञ्जातहर्षः ॥
प्रबलतरविलासोऽत्यन्तकारुण्यपुण्यो
गुणगणपरिपूर्णः पूर्णिमाजातजन्मा १५

पूर्णमासी में जो जन्म लेता है वह मनोहर शरीर, नीति से धन उत्पन्न करनेवाला और बहुत स्त्रियों समेत हमेशा प्रसन्नता से काल बितानेवाला, बहुत हास-विलास करनेवाला, दान धर्म में बुद्धि रखनेवाला और बहुत गुणों से युक्त होता है ।। १५ ।।

शान्तो मनस्वी पितृमातृभक्तः क्लेशाप्तवित्तश्च गमागमेच्छुः ॥
मान्यो जनानां हतकान्तिहर्षो दर्शोद्भवः स्यात्पुरुषः कृशाङ्गः १६
इति तिथिजातफलम् ।

आमावास्य में जिसने जन्म पाया है वह शान्तस्वभाव, दृढ़ चित्त, माता-पिता की सेवा करनेवाला, क्लेश से धन कमानेवाला, यात्रा में जाने आने की इच्छावाला, सम्पूर्ण जनों का मान्य, कान्ति तथा हर्ष से हीन और दुर्बल शरीरवाला होता है ।। १६ ।।

इति तिथिफल ।

--:०:--

अथ वारफलम् ।

शूरोल्पकेशी विजयी रणाग्रे श्यामारुणः पित्तचयः प्रकोपः ॥
दाता महोत्साहयुतो महौजा दिने दिनेशस्य भवेन्मनुष्यः १

वारों का फल ।

रविवार को जो उत्पन्न होता है वह शूरवीर, थोड़े बालोंवाला, संग्राम में विजय

पानेवाला, रक्त और श्यामवर्ण, पित्त-कोपयुक्त, दाता, बड़े उत्साहवाला और बलवान् होता है ॥ १ ॥

प्राज्ञः प्रशीतः प्रियवाग्विधिज्ञः शश्वन्नरेन्द्राश्रयवृत्तिवर्त्ती ॥
सुखे च दुःखे च समस्वभावो वारे नरः शीतकरस्य जातः २

चन्द्रवार में जो उत्पन्न हुआ है वह पण्डित, शीतलस्वभाव, प्रिय बोलनेवाला, सम्पूर्ण विधि-विधान का जाननेवाला, हमेशा राजाओं से जीविका पानेवाला और सुख-दुःख में सम स्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

वक्रोक्तिरत्यन्तरणप्रियः स्यान्नरेन्द्रमन्त्री च धरोपजीवी ॥
सत्त्वान्वितस्तीव्रतरस्वभावो दिने भवेन्नावनिनन्दनस्य ३

मंगल के दिन जिसका जन्म होता है वह कूट बोलनेवाला, लड़ने में बड़ा प्रचण्ड और राजा का मंत्री, पृथ्वी से जीविका करनेवाला, बली और तीक्ष्ण स्वभाववाला होता है ॥ ३ ॥

सद्रूपशाली मृदुवाग्विलासः श्रीमान् कलाकौशलतासमेतः ॥
वणिक्क्रियायां हि भवेदभिज्ञः प्राज्ञो गुणज्ञो ज्ञदिनोद्भवो यः ४

बुध के दिन जिसका जन्म हुआ है वह रूपवान्, मधुर बोलनेवाला, धनवान्, कारीगरी की विद्या में बड़ा प्रवीण, वाणिज्य में निपुण, पण्डित और गुणी होता है ॥ ४ ॥

विद्वान् धनी सर्व्वगुणोपपन्नो मनोरमः क्ष्मापतिलब्धकामः ॥
आचार्य्यवर्य्यश्च जनप्रियः स्याद्वारे गुरोर्य्यस्य नरस्य जन्म ५

गुरुवार में जिसका जन्म हुआ है वह विद्वान्, धनी, सर्वगुणसंयुक्त, मनोहर शरीर, राजद्वार से धन व प्रतिष्ठा पानेवाला, श्रेष्ठ आचार्य और सबसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

सुनीलसत्कुञ्चितकेशपाशः प्रसन्नवेषो मतिमान् विशेषात् ॥
शुक्लाम्बरप्रीतिधरो नरः स्यात्सन्मार्गगो भार्गववारजन्मा ६

शुक्रवार के दिन जन्म लेनेवाला पुरुष घुँघुराले श्याम केशवाला, प्रसन्नवदन, बुद्धिमान्, श्वेत वस्त्र धारण में बहुत प्रीति रखनेवाला और उत्तम मार्ग पर चलनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अकालसम्प्राप्तजराप्रवृत्तिर्बलोज्झितो दुर्बलदेहयष्टिः ॥
तमोगुणी क्रौर्य्यचयाभिभूतः शनेर्दिने जातजनुर्मनुष्यः ७

इति वारफलम्।

शनि के दिन जिसका जन्म हुआ है वह विना काल ही वृद्धावस्था से घिर जाता है और निर्बल शरीर, दुर्बलता समेत, तमोगुणी और क्रूर स्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥

इति वारफल।

अथ नक्षत्रफलम्।

सदैवसेवाभ्युदितो विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत् ॥
योषाविभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनीजन्मनि मानवस्य १

नक्षत्रों का फल।

जिसके जन्म समय में अश्विनी नक्षत्र होता है वह हमेशा सेवा से बड़प्पन वाला और विनययुक्त, सत्य बोलनेवाला, सर्व सम्पदायुक्त और स्त्री, पुत्र, मणि, रत्न और आभूषणादि से संतुष्ट रहता है ॥ १ ॥

सदापकीर्तिर्हि महापवादैर्नानाविनोदैश्च विनीतकालः ॥
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणीप्रणीतो भरणीभजातः २

भरणी में जो उत्पन्न होता है वह कलहकारी और संसार में अपकीर्तिवाला, अनेक विनोदों से काल व्यतीत करनेवाला तथा जल से डरनेवाला, चपल-स्वभाव और नीच प्रकृतिवाला होता है ॥ २ ॥

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीनो वृथाटनोत्पन्नमतिः कृतघ्नः ॥
कठोरवाग्गर्हितकर्म्मकृत्स्याच्चेत्कृत्तिका जन्मनि यस्य जन्तोः ३

जिसके जन्म समय में कृत्तिका नक्षत्र होता है उसको क्षुधा बहुत लगती है और मिथ्यावादी, धनहीन, वृथा घूमनेवाला और कृतघ्नी, कठोर वाणी तथा नीच कर्म करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

धर्म्मकर्म्मकुशलः कृषीवलश्चारुशीलविलसत्कलेवरः ॥
वाग्विलासकलिताखिलाशयो रोहिणी भवति यस्य जन्मभम् ४

रोहिणी जिसका जन्म नक्षत्र है वह धर्म-कर्म में बड़ा कुशल और खेती करने वाला, सुशील, सुन्दर शरीर और उत्तम वाणी बोलनेवाला होता है ॥ ४ ॥

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणीनां गणेषु ॥
भोक्ता नृपस्नेहसुखेन पूर्णः सन्मार्ग्गवृत्तो मृगजातजन्मा ५

मृगशिरा में जो उत्पन्न होता है वह धनुर्विद्या का अभ्यास करनेवाला, नम्र-स्वभाव, गुणीजनों से प्रीति करनेवाला, सुख भोग करनेवाला, राजाओं से प्रीति करनेवाला और श्रेष्ठमार्ग पर चलनेवाला होता है ॥ ५ ॥

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्तिर्बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः ॥
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्द्रा दयार्द्रचेता न भवेन्मनुष्यः ६

आर्द्रा नक्षत्र में जो उत्पन्न होता है उसके क्षुधा बहुत और रूखा शरीर, कान्तिहीन, भाइयों से प्रीति करनेवाला, क्रोधी, कृतघ्नी अर्थात् किसी के सलूक को न माननेवाला और दयारहित होता है ॥ ६ ॥

प्रभूतमित्रः कृतशास्त्रयत्नः सद्रत्नचामीकरभूषणाढ्यः ॥
दाता प्रतापी वसुधावसुश्च पुनर्वसुर्य्यस्य भवेत्प्रसूतौ ७

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा हुआ पुरुष सबका मित्र, शास्त्र पढ़नेवाला, अच्छे रत्न-सुवर्ण के आभूषण धारण करनेवाला, दाता, प्रतापी और पृथिवी का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्म्मसक्तो विनयाभियुक्तः ॥
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सन्माननानाधनवाहनाढ्यः ८

जो पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न होता है वह प्रसन्न वदन, माता-पिता की सेवा करनेवाला, अपने धर्म का पालनेवाला, विनययुक्त, सब जगह मान पानेवाला और बहुत धन-वाहन से युक्त रहता है ॥ ८ ॥

वृथाटनः स्यादतिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम् ॥
सार्प्पे सदर्थो हि वृथार्प्पितार्थः कन्दर्प्पसन्तप्तमना मनुष्यः ९

आश्लेषा नक्षत्र में जो जन्म लेता है वह वृथा घूमनेवाला, दुष्टस्वभाव, बेमतलब सर्वजनों को दुःख देनेवाला, अच्छे धनवाला तथा वृथा धन खोनेवाला और काम से पीड़ित मनवाला होता है ॥ ९ ॥

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्रस्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ॥
चेज्जन्मभं यस्य मघानघः सन्मतिः सदारातिविघातदक्षः १०

जिसके जन्म समय में मघा नक्षत्र हो तो वह कठोरचित्त, पिता का भक्त, तीव्रस्वभाव, उत्तम विद्यायुक्त, निष्पाप, श्रेष्ठमति और शत्रु के नाश करने में बड़ा दक्ष होता है ॥ १० ॥

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता
कामार्त्तोऽपि स्याच्छिरालोतिदक्षः ॥
धूर्त्तः क्रूरोऽत्यन्तसञ्जातगर्व्वः
पूर्व्वाफाल्गुन्यस्ति चेज्जन्मकाले ११

पूर्वाफाल्गुनी जिसके जन्म समय में होती है वह शूरवीर, त्यागी, साहसी, बहुतजनों का स्वामी और कामी, नाड़ीवाला, चतुर, बड़ा धूर्त्त, क्रूरमति और बड़ा अहंकारी होता है ॥ ११ ॥

दाता दयालुः सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपतिप्रधानः ॥
धीरो नरोत्यन्तमृदुस्वभावः स्यादुत्तराफाल्गुनिकाप्रसूतौ १२

जिसके जन्मसमय में उत्तराफाल्गुनी होती है वह दाता और सब पर दया करनेवाला, सुशील, उत्तम कीर्तियुक्त, राजमंत्री, धैर्ययुक्त और कोमल स्वभाव वाला होता है ॥ १२ ॥

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेवार्चनकृत्प्रयत्नः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत् १३

हस्त नक्षत्र में जिसका जन्म होता है वह दाता, दृढ़चित्त, बड़ा यशस्वी, देवता-ब्राह्मणों का पूजक और सम्पूर्ण संपदाओंवाला होता है ॥ १३ ॥

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेतिदक्षश्च विचित्रवासः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिर्विचित्रा खलु तस्य शास्त्रे १४

चित्रा नक्षत्र में जो जन्मता है उसके प्रताप से सब शत्रु दबे रहते हैं, नीति में बड़ा निपुण, रंग बिरंगे वस्त्रवाला और शास्त्र के विचार में अति उत्तम बुद्धिवाला होता है ॥ १४ ॥

कन्दर्परूपः प्रभया समेतः कान्तापरप्रीतिरतिप्रसन्नः ॥

स्वातीप्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपतिप्राप्तविभूतियुक्तः १५

जिसके जन्म समय में स्वाती नक्षत्र होता है वह कामदेव के समान रूपवाला, कांतियुक्त और स्त्री से परम प्रीति करनेवाला, अतिप्रसन्न चित्त और राजा से पाये हुये धन से युक्त होता है ॥ १५ ॥

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसौम्यः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः १६

विशाखा जिसके जन्म समय में हो वह अग्निहोत्र और देवार्चन क्रिया में निरन्तर नियुक्त रहता है। धातुक्रिया में निपुण, उग्र स्वभाव और किसी का मित्र नहीं होता है ॥ १६ ॥

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेता रिपूणां च कलाप्रवीणः ॥
स्यात्सम्भवे यस्य किलानुराधा सम्पद्विशाला विविधा च तस्य १७

जिसके जन्म समय में अनुराधा नक्षत्र हो वह उत्तम कान्ति, श्रेष्ठ कीर्ति, हमेशा मङ्गल कार्य करनेवाला, शत्रुजनों का जीतनेवाला, कारीगरी के कामों में प्रवीण तथा अनेक प्रकार की सुन्दर संपत्तिवाला होता है ॥ १७ ॥

सत्कीर्तिकान्तिर्विभुतासमेतो वित्तान्वितोत्यन्तलसत्प्रतापः ॥
श्रेष्ठप्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोद्भवः स्यात्पुरुषो विशेषात १८

ज्येष्ठा नक्षत्र में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह संसार में बड़ी कीर्ति और उत्तम कान्तिवाला, प्रभुतायुक्त, धनयुक्त और बड़ा प्रतापी, अच्छी प्रतिष्ठा पानेवाला और बोलने में बड़ा चतुर होता है ॥ १८ ॥

अथ मूलविचारः।

मूलं विरुद्धावयवं समूलं कुलं हरत्येव वदन्ति सन्तः ॥
चेदन्यथा सत्कुरुते विशेषात् सौभाग्यमायुश्च कुलाभिवृद्धिम् १९

अब मूलनक्षत्र का विचार कहते हैं।

मूलनक्षत्र की विरुद्ध घटी में जो बालक उत्पन्न होते हैं वे मूलसमेत कुल का विनाश करते हैं और जो शुभ घटी में होते हैं वे सुख-सौभाग्य, दीर्घजीवी और कुल की वृद्धि करनेवाले होते हैं ऐसा सज्जन लोग कहते हैं ॥ १९ ॥

ज्येष्ठांत्यघटिकैका च मूलस्याद्यघटीद्वयम् ॥

अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्नशिशोर्मुखम् २०
अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता ॥
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिकं प्रोच्यतेऽधुना २१

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त्यकी एक घड़ी और मूल के आदि की दो घड़ी ये तीन घड़ी अभुक्तमूल कहलाती हैं। ऐसे समय में जो बालक उत्पन्न होता हैं उसका पिता उस बालक का मुख आठ वर्ष तक न देखे जो अपना शुभ चाहे और जो मुख देखा चाहे, तो शांति करके मुख देखे, सो कहते हैं ॥ २० । २१ ॥

रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत् ॥
शतच्छिद्रो घटस्तस्मान्निः सृतेन जलेन हि २२
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति ॥
जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मङ्गलं ध्रुवम् २३

सौ छिद्र का कलश बनवाकर उस घट में पञ्चरत्नी, शतौषधी, सप्तमृत्तिका और सर्वतीर्थों का जल छोड़कर उसके जल से ॥ २२ ॥ बालक और माता-पिता इन तीनों को स्नान कराने से और जप, होम, छायादान करने से तथा ब्राह्मणों के निमन्त्रण इत्यादि करने से अरिष्ट दूर होते हैं और मंगल होता है ॥ २३ ॥

विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः ॥
मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः २४

विद्वानों ने गण्डान्तमूल की यह विधि कही है। मुनियों के वचन सत्य हैं, जो अपनी कुशल चाहते हैं उनको अवश्य मानने चाहिये ॥ २४ ॥

मूलस्य पादत्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्य रिष्टम् ॥
चतुर्थपादः शुभदो नितांतं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम् २५

मूल नक्षत्र के चार चरण होते हैं। पहले चरण में पिता को दोष, दूसरे में माता को दोष, तीसरे में धन का दोष और चौथा शुभ होता है और श्लेषानक्षत्र का फल विपरीत है अर्थात् चौथे पाद में पिता को दोष, तीसरे में माता को, दूसरे में धन का दोष और पहला शुभ है ॥ २५ ॥

कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतोमहीजार्किबुधैः समेतः ॥

चेज्जन्मकाले किल यस्य मूल उन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य २६

कृष्णपक्ष में तृतीया, दशमी और शुक्लपक्ष में चतुर्दशी तिथि तथा मंगल, शनैश्चर और बुध इन वारों में जो जन्मसमय मूलनक्षत्र पड़े तो कुल का नाश करनेवाला बालक होता है ॥ २६ ॥

दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च ॥
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् २७

दिन के मूल में पिता को दोष, सायंकाल के मूल में मातुल को दोष, राति के मूल में पशुवों को दोष और प्रातःकाल के मूल में मित्रवर्गों को दोष होता है ॥२७॥

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलम्।

मूर्ध्नि पञ्च मुखे पञ्च स्कन्धयोर्घटिकाष्टकम् ॥
गजाश्च भुजयोर्युग्मं हस्तयोर्हृदयेऽष्टकम् २८
युग्मं नाभौ दिशो गुह्ये षट् जान्वोः षट् च पादयोः ॥
विन्यस्य पुरुषाकारे मूलस्य फलमादिशेत् २९

पुरुषाकृति मूल आश्लेषा का फल।

पुरुषाकार चक्र लिख के शिरस्थान में ५ पांच घटी स्थापन करे और ५ घटी मुख में, फिर ८ घटी स्कन्धों में, फिर ८ घटी भुजाओं में, २ घटी हाथों में, ८ घटी हृदय में, २ घटी नाभि में, १० घटी गुदा में, ६ घटी जंघा में और ६ घटी चरणों में इस प्रकार पुरुषाकार चक्र में सम्पूर्ण घटी स्थापन करके उसका फल कहे ॥२८।२९॥

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृघातनम् ॥
स्कन्धयोर्धूर्वहत्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्म्मकृत् ३०

शिरःस्थान में जो घटी हैं उन में जन्म हो तो राज्य का लाभ, मुख की घटी में पिता का नाश, स्कन्ध में वाहन सुख और भुजा में कुत्सित कर्म करनेवाला होता है ॥ ३० ॥

हत्याकरः करद्वन्द्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ॥
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ३१

दोनों हाथ में हत्या करनेवाला और हृदय में राज्य की प्राप्ति, नाभि में पड़े तो अल्पायु और गुदा में पड़े तो उत्तम सुख होता है ॥ ३१ ॥

जंघायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीवितात्पता ॥
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥
विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्पे तच्च विपर्य्ययात् ३२

इति पुरुषाकारमूलाश्लेषाफलम् ।

जंघा में पड़े तो घूमने में प्रसन्नता रहे और चरणों की घटी में थोड़े काल जीता है। मुनिवरों ने मूल की घटियों का यह फल कहा है वह सब विद्वानों को जानना चाहिये। आश्लेषा नक्षत्र के मूल का फल विपरीत क्रम से गणना करना ॥ ३२ ॥

अथ पुरुषाकारमूलचक्रम् ।

मूर्ध्नि	५	राज्यम्
मुखे	५	पितृघातः
स्कन्धयोः	८	वाहनसुखम्
बाह्वोः	८	अकर्मकृत्
हस्तयोः	२	हत्याकरः
हृदये	८	राज्यम्
नाभौ	२	अल्पायुः
गुह्ये	१०	सौख्यम्
जान्वोः	६	भ्रमणम्
पादयोः	६	अल्पजीवी

अथ पुरुषाकारमाश्लेषाचक्रम् ।

पादयोः	६	अल्पजीवी
जान्वोः	६	भ्रमणम्
गुह्ये	१०	सौख्यम्
नाभौ	२	अल्पायुः
हृदये	८	राज्यम्
हस्तयोः	२	हत्याकरः
बाह्वोः	८	अकर्मी
स्कन्धयोः	८	वाहनसुखम्
मुखे	५	पितृघातः
मूर्ध्नि	५	राज्यम्

इति पुरुषाकार मूलाश्लेषाफल ।

--:०:--

अथ मूलाश्लेषामुहूर्त्तफलम् ।

राक्षसो यातुधानश्च सोमः शुक्रः फणीश्वरः ॥
पिता माता यमः कालो विश्वेदेवा महेश्वरः ३३

शर्वाख्यश्च कुबेरश्च शुक्रो मेघो दिवाकरः ॥
गन्धर्वो यमदेवश्च ब्रह्मा विष्णुर्यमस्तथा ३४
ईश्वरश्चैव रुद्रश्च पवनो मुनयस्तथा ॥
षण्मुखो भृङ्गरीटिश्च गौरी नाम्नी सरस्वती ३५
प्रजापतिश्च मूलस्य त्रिंशद्वै क्षणनायकाः ॥
विपरीता पुनर्ज्ञेया आश्लेषाजातबालके ३६
प्रथमे द्वितये षष्ठे चाष्टमेऽष्टादशे तथा ॥
त्रयोविंशे च नवमे कुलक्षयकरः शिशुः ३७
इति मूलाश्लेषामुहूर्तफलम् ।

मूल व आश्लेषा के मुहूर्तों का फल ।

एक नक्षत्र में ३० मुहूर्त्त होते हैं। जिस मुहूर्त्त में बालक उत्पन्न हो उसका फल क्रम से कहते हैं। प्रथम में राक्षस, २ यातुधान, ३ सोम, ४ शुक्र, ५ फणीश्वर, ६ पिता, ७ माता, ८ यम, ९ काल, १० विश्वेदेवा, ११ महेश्वर, १२ शर्व, १३ कुबेर, १४ शुक्र, १५ मेघ, १६ दिवाकर, १७ गन्धर्व, १८ यम, १९ ब्रह्मा, २० विष्णु, २१ यम, २२ ईश्वर, २३ रुद्र, २४ पवन, २५ मुनि, २६ षण्मुख, २७ भृंगरीटि, २८ गौरी, २९ सरस्वती, ३० प्रजापति ये मुहूर्तों के नाम हैं। इनका फल कहते हैं। १ प्रथम २ द्वितीय ६ षष्ठ ८ अष्टम ९ नवम १८ अष्टादश २३ त्रयोविंश इन मुहूर्तों में जन्मा बालक कुल का क्षय करनेवाला होता है ॥

अब आश्लेषा नक्षत्र में विपरीत गणना कहते हैं। प्रथम मुहूर्त्त प्रजापति, २ सरस्वती, ३ गौरी, ४ भृंगरीटि, ५ षण्मुख, ६ मुनि, ७ पवन, ८ रुद्र, ९ ईश्वर, १० यम, ११ विष्णु, १२ ब्रह्मा, १३ यम, १४ गन्धर्व, १५ दिवाकर, १६ मेघ, १७ शुक्र, १८ कुबेर, १९ शर्व, २० महेश्वर, २१ विश्वेदेवा, २२ काल, २३ यम, २४ माता, २५ पिता, २६ फणीश्वर, २७ शुक्र, २८ सोम, २९ यातुधान, ३० राक्षस इनका फल भी पूर्व लिखित समझना ॥ ३३ । ३७ ॥

इति मूलाश्लेषामुहूर्तफल ।

अथ मूलाश्लेषामुहूर्त्तचक्रम् ॥

नाम	अङ्क	नाम	अङ्क
राक्षसः	१	दिवाकरः	१६
यातुधानः	२	गन्धर्वः	१७
सोमः	३	यमः	१८
शुक्रः	४	ब्रह्मा	१९
फणीश्वरः	५	विष्णुः	२०
पिता	६	यमः	२१
माता	७	ईश्वरः	२२
यमः	८	रुद्रः	२३
कालः	९	पवनः	२४
विश्वेदेवाः	१०	मुनयः	२५
महेश्वरः	११	षण्मुखः	२६
शर्वः	१२	भृङ्गरीटिः	२७
कुबेरः	१३	गौरी	२८
शुक्रः	१४	सरस्वती	२९
मेघः	१५	प्रजापतिः	३०

अथ मूलवृक्षफलम् ।

वेदाः सप्त गजाः काष्ठाः खेटाः बाणाश्च षट् शिवाः ॥
मूलस्तम्भत्वचः शाखा पत्रम्पुष्पम्फलं शिखा ३८
मूलवृक्षविभागेषु मंगलं हि फले दले ॥
अमंगलफलं विद्याच्छेषभागेषु निश्चितम् ३९

मूलवृक्ष का फल ।

मूल में ४ घड़ी, स्तम्भ में ७, त्वचा में ८, शाखा में १०, पत्र में ९, पुष्प में ५, फल में ६, शिखा में ११ हैं। फल और दल की घड़ी में जन्मे बालक का फल उत्तम है और शेष बचे भागों का फल निषिद्ध है ॥ ३८ । ३९ ॥

पादे मुहूर्त्ते वेलायां वृक्षे च पुरुषाकृतौ ॥
अनिष्टमशुभाधिक्ये शुभाधिक्ये शुभं फलम् ४०

चरण, मुहूर्त्त, बेला, वृक्ष और पुरुषाकारचक्र इन सबका फल अलग अलग विचारना जो अधिक शुभ हो तो शुभ फल और अशुभ अधिक हो तो अशुभ जानना चाहिये ॥ ४० ॥

तातस्य जन्मभे यस्य प्रसूतिर्जायते यदि ॥
तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठमरिष्टं कुरुते ध्रुवम् ४१

अगर पिता के जन्म नक्षत्र में बालक उत्पन्न हो तो वह पिता को या ज्येष्ठ भ्राता को अरिष्ट करे ॥ ४१ ॥

मूलवच्छान्तिकन्तत्र विधेयं हि विचक्षणैः ॥
भूमिरत्नानि हेमान्नं देयं विप्रेषु भक्तितः ४२

बुद्धिमानों को चाहिये कि मूलशान्ति की रीति से शान्ति करावें और पृथ्वी, रत्न, सुवर्ण और अन्नदान भक्तिपूर्वक ब्राह्मणों को देवें ॥ ४२ ॥

सुखेन युक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्म्मकर्त्ता ॥
प्रतापिताराातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्याज्जननम्प्रपन्नः ४३

इति मूलविचारः ।

मूलनक्षत्र में जन्मा बालक सुखी और धन-वाहन से युक्त, हिंसक, बली, स्थिर कर्म का करनेवाला, शत्रुनाशक और सुकृती होता है ॥ ४३ ॥

इति मूल विचार ।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चञ्चद्वाग्विलासःसुशीलः ॥
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढाजन्मभं यस्य पुंसः ४४

पूर्वाषाढ में जन्मा बालक बार-बार जलपान में अनुरक्त, सुखभोगी, सुन्दर वाणी बोलनेवाला, सुशील और स्थिर संपत्तिवाला होता है ॥ ४४ ॥

दाता दयावान् विजयी विनीतः सत्कर्मकर्त्ता विभुतासमेतः ॥
कान्तासुतावाप्तसुखो नितान्तं वैश्वे सुवेषः पुरुषोऽभिमानी ४५

उत्तराषाढ में जो उत्पन्न होता है वह दाता, दयावान् और विजय पानेवाला, कोमल स्वभाव, अच्छा कर्म करनेवाला, स्वामित्व से युक्त और स्त्रीपुत्रादिकों से हमेशा सुख पानेवाला, सुन्दर वेष तथा अहंकार युक्त रहता है ॥ ४५ ॥

अतिसुललितकान्तिः सम्मतः सज्जनानां
नन्तु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः ॥
द्विजवरसुरभक्तिर्व्यक्तवाङ् मानवः स्या-
दभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः सः स्ववंशे ४६

जिसके जन्म समय में अभिजित् नक्षत्र हो वह उत्तम कान्तिवाला, सज्जनों का संगी, विनीत, उत्तम कीर्तिवाला, मनोहर रूप, देवता व ब्राह्मणों का पूजनेवाला, यथार्थ बोलनेवाला और अपने कुल में प्रधान होता है ॥ ४६ ॥

शास्त्रानुरक्तो बहुपुत्रमित्रः सत्पात्रभक्तिर्विजितारिपक्षः ॥
प्राणी पुराणश्रवणप्रवीणश्चेज्जन्मकाले श्रवणं हि यस्य ४७

श्रवण नक्षत्र में जो उत्पन्न हो वह शास्त्र पढ़ने में तत्पर, बहुत पुत्र और मित्रवाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुजनों का जीतनेवाला और पुराणों के सुनने में चतुर होता है ॥ ४७ ॥

आचारजातादरचारुशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः ॥
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठासहितो नरः स्यात् ४८

धनिष्ठा नक्षत्र में जो उत्पन्न होता है वह आचार से सर्वत्र आदर पानेवाला, उत्तम स्वभाव, धनवान्, बली, कृपालु और बड़ी प्रतिष्ठा पानेवाला होताहै॥४८॥

शीतभीरुरतिसाहसी सदा निष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत् ॥
वैरिणामतिशयेन दारुणोवारुणोडु यदि यस्य सम्भवे ४९

शतभिषा नक्षत्र में जन्म हो तो सरदी से डरनेवाला, बड़ा साहसी, निरंतर निष्ठुर स्वभाव व चतुर और शत्रुजनों का नाश करनेवाला होता है ॥ ४९ ॥

जितेन्द्रियः सर्व्वकलासुदक्षो जितारिपक्षः खलु, तस्य नित्यम्॥
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्व्वा पूर्व्वा यदा भाद्रपदप्रसूतौ ५०

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र जिसके जन्म समय में हो वह जितेन्द्रिय, हमेशा शत्रु का जीतनेवाला, कारीगरी की कला में निपुण और श्रेष्ठ बुद्धिवाला होता है ॥५०॥

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता ॥
यस्योत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यां लभेन्मां च भवेद्वदान्यः ५१

उत्तराभाद्रपद में जन्मा पुरुष अपने कुल में अधिक भूषणरूप, मध्य शरीर वाला, शुभ कर्म करनेवाला, उत्तम धनप्राप्ति करनेवाला और दानशील होता है ॥ ५१ ॥

चारुशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनात्तु भवनैकमानसः ॥
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम् ५२

इति नक्षत्रजातफलानि ।

रेवती में जन्मे हुये पुरुष का शील स्वभाव उत्तम और विभववान्, जितेन्द्रिय, अच्छे धन से युक्त और बड़ी बुद्धिवाला होता है ॥ ५२ ॥

इति जन्मनक्षत्र फल ।

---:०:---

अथ बृहज्जातकोक्तनवांशफलम् ।

विनीतो धर्म्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः ॥
विद्याभ्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके १

बृहज्जातकोक्त नवांशों का फल ।

प्रथम नवांश में जो उत्पन्न होता है वह विनीत, धर्मात्मा, सत्य बोलनेवाला, दृढ़व्रत, विद्या पढ़ने-लिखने में चित्त लगानेवाला होता है ॥ १ ॥

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः ॥
गंधर्वप्रमदासक्तो जायते द्वितयांशके २

दूसरे नवांश में जो उत्पन्न होता है वह उत्पन्न किये विभव का भोगनेवाला, संग्राम में हारनेवाला और वेश्याप्रसंगी होता है ॥ २ ॥

स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोल्पवीर्यवान् ॥
वीरविद्याविचारज्ञो जायते त्रितयांशके ३

तीसरे नवांश में उत्पन्न हुआ पुरुष स्त्रीयुत, संतति हीन, मायायुक्त, थोड़ा पराक्रम और वीरविद्या (जादू) का जानेवाला होता है ॥ ३ ॥

बहुस्त्री सुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः ॥
नृपसेव्यथवामात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ४

चौथे नवांशा में जो उत्पन्न हुआ है वह बहुत स्त्री जनों का संगी, सुन्दर स्वरूप, पूज्य, धनी, जलसेवी, तथा राजा का सेवक या राजा का मंत्री होता है ।।४।।

बहुमित्रजनामात्यो बन्धुपुत्रसुखान्वितः ॥
महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पञ्चमांशके ५

पांचवें नवांशा में जो उत्पन्न हुआ है वह बहुत मित्र-मंत्रियोंवाला; बंधु, पुत्र और सुख से युक्त तथा बड़ा आदर पानेवाला होता है ।। ५ ।।

जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः ॥
जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ६

छठयें नवांशा में जो पैदा हुआ है वह शत्रुसमूहका जीतनेवाला, शूरवीर, दृढ़ मित्रता करनेवाला और मंडलीक राजा होता है ।। ६ ।।

अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथः कलायुतः ॥
सेनापतित्वमाप्नोति सञ्जातः सप्तमांशके ७

सप्तम नवांशा में जो पुरुष उत्पन्न हुआ है उसकी आज्ञा सब जगह अटल होती है और वह पृथ्वी का नाथ, कलायुक्त एवं सेना का पति होता है ।। ७ ।।

उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोदितः ॥
कोपी दुर्ज्जनतप्तांगो नरो जातोष्टमांशके ८

अष्टम नवांशा में जो उत्पन्न होता है वह उदार बुद्धि, पृथ्वी में विख्यात, धन धान्य का खर्च करनेवाला, कोपयुक्त और दुष्टजनों से भयभीत रहता है ।। ८ ।।

दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदा सुखी ॥
ज्ञाता धर्मी धनी मान्यो जायते नवमांशके ९

इति बृहज्जातकोक्तनवांशकफलानि ।

जो नवम नवांशा में उत्पन्न हुआ है वह प्रसन्नचित्त, विद्या का अभ्यास करनेवाला, सदा सुखी, जाननेवाला, धर्मयुक्त, धनवान्, माननीय और दीर्घजीवी होता है ।। ९ ।।

इति नवांशफल ।

—:०:—

अथ क्रमप्राप्तानि पुरा पितृव्यैर्लिखितानि योगफलानि ।
शश्वत्कांतापुत्रमित्रादिसौख्यं स्वातन्त्र्यं स्यात्सर्व्वकार्य्यप्रसङ्गे ॥
चञ्चद्देहोत्पादने मानसं चेद्विष्कुम्भो वै सम्भवे यस्य जंतोः १

योगों का फल ।

जिसके जन्मसमय में विष्कुम्भयोग हो तो वह स्त्री, पुत्र, मित्रादिकों के सुख समेत, सर्व कार्य में स्वतंत्र और शरीर का पोषक होता है ॥ १ ॥

वक्ता चंचद्रूपसम्पत्तियुक्तो दातात्यन्तं स्यात्प्रसन्नाननश्च ॥
जातानन्दः सद्विनोदप्रसङ्गाद्धर्म्मप्रीतिः प्रीतिजन्मा मनुष्यः २

प्रीतियोग में जो उत्पन्न होता है वह वक्ता, उत्तम रूप, संपतियुक्त, दानी, प्रसन्न वदन, सज्जनों के प्रसंग से प्रसन्नचित्त और धर्म में प्रीति रखनेवाला होता है ॥ २ ॥

अर्थात्यर्थं साहसैरन्वितश्च नानास्थानोद्यानयानप्रवृत्तिः ॥
यस्यायुष्मान् सम्भवे सम्भवेद्वै स्यादायुष्मान्मानवो मानयुक्तः ३

जिसके जन्म समय में आयुष्मान् योग हो वह धनी, साहसी और अनेक स्थानों में, वनों में, यानों में जाने की इच्छावाला, मानयुक्त और दीर्घजीवी पुरुष होता है ॥ ३ ॥

ज्ञानी धनी सत्यपरायणः स्यादाचारशीलो बलवान् विवेकी ॥
सुश्लाघ्यसौभाग्यविराजमानः सौभाग्यजन्मा हि महाभिमानी ४

सौभाग्य योग में जो जन्मा है वह ज्ञानी, धनी और सत्य बोलनेवाला, शुभाचारयुक्त, बलवान्, विवेकी और प्रशंसा के योग्य, सौभाग्य से युक्त तथा बड़ा अभिमानी होता है ॥ ४ ॥

सत्वरोतिचतुरः सदुत्तरश्चारुगौरवयुतश्च सन्मतिः ॥
नित्यशोभनविधानतत्परः शोभनो भवति शोभनोद्भवः ५

शोभनयोग में जो होता है वह वेगवान्, बड़ा चतुर, सच्चे उतर का देनेवाला, गौरवयुक्त, श्रेष्ठमति, हमेशह उत्तम कार्यों का करनेवाला तथा शोभायुक्त होता है ॥ ५ ॥

सदामदो योगसरुक्सरोषो विशालवक्त्रांघ्रिरतीवधूर्त्तः ॥
कलिप्रियो दीर्घहनुर्मनुष्यः पाखण्डिकः स्यादतिगण्डजातः ६

अतिगण्डयोग में जो पुरुष उत्पन्न होता है वह सदा अहंकारी, रोगी, क्रोधी और उत्तम मुख व चरणवाला, बड़ा धूर्त्त, कलह करनेवाला, बड़ी जांघोंवाला और पाखण्डी होता है ॥ ६ ॥

हृष्टः सदा सर्वकलाप्रवीणः ससाहसोत्साहसमन्वितश्च ॥
परोपकारी सुतरां सुकर्मा भवेत् सुकर्मा यदि सूतिकाले ७

सुकर्मा योग में जो पैदा होता है वह सब कलाओं का जाननेवाला, प्रसन्नमुख, साहस और उत्साहयुक्त, परोपकारी तथा श्रेष्ठ कर्म का करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

प्राज्ञो वदान्यः सततम्प्रहृष्टः श्रेष्ठः सभायां चपलः सुशीलः ॥
नयेन युक्तो नियमेन धृत्या धृत्याह्वये यस्य नरस्य जन्म ८

धृतियोग में जो उत्पन्न है वह पण्डित और दानी, हमेशह प्रसन्न, श्रेष्ठ और सभा में चपलस्वभाव, सुशील, न्यायनेता, धीर और नियमों का करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

नरो दरिद्रामयसंयुतश्च सत्कर्मविद्याविनयैर्विरिक्तः ॥
यस्य प्रसूतिर्यदि शूलयोगे शूलव्यथा तस्य भवेत्कदाचित् ९

शूलयोग में जो उत्पन्न होता है वह दरिद्री, रोगी, नीच कर्म करनेवाला, विद्या और विनय से रहित तथा शूलरोग की व्यथा से पीड़ित रहता है ॥ ९ ॥

धूर्त्तः सुहृत्कार्य्यपराङ्मुखश्च क्लेशो विशेषात् परुषस्वभावः ॥
चेत्सम्भवे यस्य भवेच्च गण्डः प्रचण्डकोपः पुरुषः प्रदिष्टः १०

गण्डयोग जिसके जन्म समय में हो वह पुरुष धूर्त्त, मित्रों के कार्य से विमुख, रूखा स्वभाव, क्लेशभोगी और बड़े कोप से युक्त होता है ॥ १० ॥

सुसंग्रही प्रीतिरतीव दक्षो धनान्वितः स्यात् क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य वृद्धिर्भाग्याभिवृद्धिर्नियमेन तस्य ११

वृद्धियोग में जो उत्पन्न हुआ है वह संग्रही, सबसे प्रीति करने में दक्ष, क्रय-विक्रय करने से धनवाला तथा नियमपूर्वक उसके भाग्य की वृद्धि होती है ॥ ११ ॥

निश्चला हि कमला सदालये संभवेच्च वदने सरस्वती ॥
चारुकीर्तिरपि चेद् ध्रुवे तदा चेद् ध्रुवो भवति यस्य संभवे १२

जो ध्रुवयोग में पैदा होता है उसके स्थान में निश्चल धन रहे, मुख में सरस्वती वास करे और जगत् में उत्तम कीर्ति प्रकाशित रहे ॥ १२ ॥

क्रूरोल्पदृष्टिः कृपया विहीनो महाहनुः स्यादपवादवादी ॥
असत्यताप्रीतिरतीव मर्त्यो व्याघातजातः खलु घातकर्त्ता १३

व्याघातयोग में जो उत्पन्न हुआ है वह क्रूर, मन्ददृष्टि, दयाहीन, मोटी जंघावाला, पराये अपवाद में निरत, मिथ्यावाद में प्रीति और जनों का घातक होता है ॥ १३ ॥

सुस्निग्धगात्रः कृतशास्त्रयत्नः सुरक्तभूषावसनानुरक्तः ॥
प्रसूतिकाले यदि हर्षणश्चेत् स मानवो वै रिपुकर्षणः स्यात् १४

जो हर्षणयोग में पैदा होता है वह स्निग्धगात्र, शास्त्र पढ़नेवाला, श्रेष्ठ आभूषण और रक्त वस्त्रों का धारण करनेवाला और शत्रुओं का नाश करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

सुधीः सुबंधुर्गुणवान् महौजाः सत्यान्वितो रत्नपरीक्षकः स्यात् ॥
चेत्संभवे यस्य च वज्रयोगः सवज्रयुक्तोत्तमभूषणाढ्यः १५

वज्रयोग में जिसका जन्म होता है वह श्रेष्ठबुद्धि, श्रेष्ठ बन्धुजनोंवाला, गुणवान्, बली, सत्यवक्ता, जौहरी और हीरा से युक्त उत्तम भूषण धारण करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

उदारचेताश्चतुरः सुशीलः शास्त्रादरः सारविराजमानः ॥
प्रसूतिकाले यदि यस्य सिद्धिर्भाग्याभिवृद्धिः सततं हि तस्य १६

सिद्धियोग में जो जन्मा है वह उदारचित्त, चतुर, सुशील और शास्त्र का पढ़नेवाला तथा निरन्तर भाग्योदययुक्त होता है ॥ १६ ॥

उदारबुद्धिः पितृमातृवाक्ये गदार्त्तमूर्तिश्च कठोरचित्तः ॥
परस्य कार्य्ये व्यतिपाततुल्यो नरः खलु स्याद्व्यतिपातजन्मा १७

व्यतीपात योग में उत्पन्न पुरुष उदारबुद्धि, माता पिता के वाक्य का पालनेवाला, रोगी शरीर, कठोरचित्त और पराये कार्य का भंग करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

उत्पन्नभोक्ता विनयोपपन्नो द्रव्याल्पता सद्व्ययतासमेतः ॥
सुकर्म्मसौजन्यतया वरीयान् भवेद्वरीयान् प्रभवे हि यस्य १८

वरीयान् योग में जो पैदा हुआ है वह धन उत्पन्न करके भोगनेवाला, सबसे विनीत, अल्पधनी, श्रेष्ठ कर्म में धन खर्च करनेवाला सुजनता और अच्छे कर्म में प्रवीण होता है॥ १८॥

असत्यसाक्षी प्रतिभूर्बहूनां व्यक्तात्मकर्मा क्षमया विहीनः ॥
दक्षोल्पभक्षो विजितारिपक्षस्त्वधर्षितो वै परिघोद्भवः स्यात् १९

परिघयोग में उत्पन्न मनुष्य झूठी गवाही देनेवाला, बहुतों का जामिन, मिथ्यावादी, क्षमाहीन, चतुर, थोड़ा भोजन करनेवाला, शत्रुओं का जीतनेवाला तथा मानयुक्त होता है॥ १९॥

सन्मन्त्रशास्त्राभिरतो नितान्तं जितेन्द्रियश्चारुशरीरयष्टिः ॥
योगःशिवोजन्मनि यस्यजन्तोः सदाशिवं तस्य शिवप्रसादात् २०

जिसके जन्म समय में शिवयोग होता है वह श्रेष्ठ मंत्रविद्या में निपुण, जितेन्द्रिय, सुन्दर शरीर और शिवजी की कृपा से निरन्तर आनन्दयुक्त होता है॥ २०॥

जितेन्द्रियः सत्यपरोतिगौरः सर्वेषु कार्य्येष्वतिकोविदश्च ॥
भवेत्प्रसूतौ यदि सिद्धियोगः सिद्ध्यन्तिकार्य्याणि कृतानि तस्य २१

सिद्धियोग में जो उत्पन्न हुआ है वह जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, गौर अंग और सर्व कार्य करने में बड़ा पण्डित होता है तथा उसके किये हुये सब कार्य सिद्ध होते हैं॥ २१॥

नूनं विनीतश्चतुरः सुहासः स्वकार्यदक्षो जितशत्रुपक्षः ॥
सन्मन्त्रविद्याविधिनैव सर्वं संसाधयेत्साध्यभवो हि दक्षः २२

साध्ययोग में जो पैदा होता है वह विनीत, चतुर, सुन्दर हासवाला, अपने कार्य में बड़ा चतुर, शत्रुजनों का जीतनेवाला, तथा श्रेष्ठ मंत्रविद्या से सर्वकार्य साधनेवाला होता है॥ २२॥

शुभप्रचारः शुभवाग्विलासः शुभस्य कर्त्ता शुभलक्षणश्च ॥
शुभोपदेशं कुरुते नराणां यस्य प्रसूतौ शुभनामयोगः २३

शुभयोग में जो उत्पन्न हुआ है वह शुभ प्रचारवाला, सुन्दर बोलनेवाला, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, शुभ लक्षण और सबको उत्तम उपदेश देनेवाला होता है॥ २३॥

जितेन्द्रियः सत्यवचा महौजा वाग्वादसंग्रामजयाभ्युपेतः ॥
सन्मानशुक्लाम्बरधारणेच्छुः शुक्लोद्भवो वैभवसंयुतः स्यात् २४

शुक्लयोग में पैदा होनेवाला पुरुष जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, बड़ा बली, वाद-विवाद में और संग्राम में विजय पानेवाला, सबका मान्य, श्वेत वस्त्र धारण में रुचि करनेवाला और विभवसंयुक्त होता है ॥ २४ ॥

विद्याभ्यासे प्रीतिरत्यन्तचेता नित्यं सत्याचारजातादरश्च ॥
शान्तो दान्तो जायते चारुकर्म्मा ब्रह्मायोगस्सम्भवे यस्य पुंसः २५

ब्रह्मयोग में जो उत्पन्न हुआ है वह विद्याभ्यास में अत्यन्त प्रीति करे और सर्वत्र सत्य से आदर पावे तथा शान्तस्वभाव, इन्द्रियों का दमन करनेवाला, और उत्तम कर्म्मकर्त्ता होता है ॥ २५ ॥

प्राज्ञो बलीयान्विपुलामलश्रीयुक्तःकफात्मा हि भवेन्महौजाः ॥
निजान्वये वै मनुजो नरेंद्रस्त्वैन्द्रोद्भवश्चारुतरप्रभावः २६

जिसके जन्मसमय में ऐन्द्रयोग हो वह पण्डित, बलवान्, बहुत धनसमेत, कफ-स्वभाव, बड़ा पराक्रमी, अपने कुल में राजा और उसका बड़ा प्रभाव होता है॥२६॥

चञ्चलश्च कुटिलः खलमैत्रः शास्त्रभक्तिरहितो हतचित्तः ॥
साध्वसे मनसि तस्य नो धृतिर्वैधृतिर्भवति यस्य जन्मनि २७

इति योगफलानि ।

वैधृतियोग में जो उत्पन्न होता है वह चञ्चल और कुटिल, दुष्टजनों का मित्र, शास्त्र की भक्ति से रहित, हीनस्वभाव, दुष्ट विचार करनेवाला और अस्थिर चित्तवाला होता है ॥ २७ ॥

इति योगफल ।

—:०:—

अथ करणफलम् ।

कामी दयालुर्बलवान् सुशीलो विचक्षणः शीघ्रगतिस्सभाग्यः ॥
बवाभिधाने जननं हि यस्य नानाविधा तस्य भवेत्सुसंपत् १

करणों का फल ।

बवकरण में जिसका जन्म होता है वह कामी, दयालु, बली, सुशील, पण्डित और शीघ्र चलनेवाला, भाग्ययुक्त तथा विविध सम्पदा समेत होता है ।

शूरतातिविलसद्बलवत्तासंयुतो भवति चारुविलासः ॥
काव्यकृद्वितरणप्रणयश्चेद्वालवे मलमतिश्च कलाज्ञः २

बालवकरण में जो उत्पन्न हुआ है वह शूरवीर, बली और सुन्दर हास-विलासयुक्त, काव्य रचनेवाला, दानी, निर्मल बुद्धि, तथा अनेक कारीगरी की कलाओं में निपुण होता है ॥ २ ॥

कामी प्रगल्भोभिमतो बहूनां नूनं स्वतन्त्रो बहुमित्रसौख्यः ॥
बलान्वितः कोमलवांग्विलासः श्रेष्ठः कुले कौलवजातजन्मा ३

कौलवकरण में पैदा होनेवाला कामी, वाचाल, बहुतजनोंका सहायक, स्वतंत्र, बहुत मित्रों के सुख से युक्त, बलवान्, कोमलवाणी, विलासयुक्त और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है ॥ २ ॥

चारुकोमलकलेवरशाली केलिलालसमनाश्च कलाज्ञः ॥
वाग्विलासकुशलोतिसुशीलस्तैतिलेविमलधीश्चलदृक् स्यात् ४

तैतिलकरण में जो उत्पन्न हुआ है वह कोमल शरीर, अनेक भोग-विलास-युक्त, कलाओं का जाननेवाला, वार्त्ता करने में कुशल, अत्यन्त सुशील, निर्मल-बुद्धि और चञ्चल दृष्टिवाला होता है ॥ ४ ॥

परोपकारे विहितादरश्च विचारसारश्चतुरो जितारिः ॥
शूरोतिधीरः सुतरामुदारो गरे नरश्चारुकलेवरश्च ५

गरकरण में उत्पन्न पुरुष पराये कार्य में निपुण, सूक्ष्म विचार करनेवाला, चतुर, शत्रु से विजय पानेवाला, बड़ा शूर व धीर, निरन्तर उदारचित्त और सुन्दर शरीरवाला होता है ॥ ५ ॥

कलाप्रवीणः सुतरां सहासः प्राज्ञो हि सम्मानसमन्वितश्च ॥
प्रसूतिकाले वणिजं हि यस्य वाणिज्यतोर्थागमनं हि तस्य ६

वणिजकरण में उत्पन्न पुरुष अनेक कलाओं में प्रवीण, हास-विलासयुक्त, बुद्धि-मान्, श्रेष्ठ मानयुक्त और वाणिज्य से धन का पैदा करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

चारुवक्त्रचपलो बलशाली हेलयासिदरितारिकुलश्च ॥
जायते खलमतिर्बहुनिद्रा यस्य जन्मसमये खलु भद्रा ७

विष्टिकरण जिसके जन्मसमय में हो वह सुन्दर वदन, चपल स्वभाव, बली, खड्ग से शत्रुकुल का नाश करनेवाला, दुष्टमाते और बहुत शयन करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

अतिसुललितबुद्धिर्मन्त्रविद्याविधाने
गुणगणसमवेतः सर्व्वदा सावधानः ॥
ननु जनकृतसख्यः सर्वसौभाग्ययुक्तो
भवति शकुनजन्मा शाकुनज्ञानशीलः ८

शकुनिकरण में जन्मा हुआ पुरुष मंत्रशास्त्र के जानने में उत्तम बुद्धिवाला, सम्पूर्ण गुणों करके युक्त, निरन्तर सावधान चित्त, सज्जनों का मित्र, सर्वप्रकार भाग्यशाली और शकुन के विचार में बड़ा निपुण होता है ॥ ८ ॥

नरः सदाचारपराङ्मुखः स्यादसंग्रही क्षीणशरीरयष्टिः ॥
चतुष्पदे यस्य भवेत् प्रसूतिश्चतुष्पदात्सत्वयुतो मनुष्यः ९

चतुष्पदकरण में जन्मा हुआ पुरुष सदाचार से भ्रष्ट, असंग्रही, दुर्बल शरीर और चौपाये जीवों में अधिक प्रीति करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

दुःशीलवक्रचलनो बलवान् खलात्मा
कोपानलाहतमतिः कलिकृत्कुलार्य्यैः ॥
द्रोहात्कुलक्षयभवेदतिदीर्घकाले
जातो हि नागकरणे रणरंगधीरः १०

नागकरण में जन्म लेनेवाला पुरुष दुष्टस्वभाव, बदचलन, बलवान्, दुष्ट, कोपाग्नि से नष्टबुद्धि, अपने कुल में लड़ाई करनेवाला और कुलविघाती व संग्राम में धीर होता है ॥ १० ॥

धर्म्मेऽप्यधर्म्मे समता मतेः स्यादङ्गेऽप्यनङ्गे विबलत्वमुच्चैः ॥
मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न किञ्चित्किंस्तुघ्नजातस्य हि मानवस्य ११

इति करणफलम् ।

किंस्तुघ्न करण में जन्म लेनेवाले पुरुष की धर्म-अधर्म में समान बुद्धि, निर्बल शरीर और मित्र-शत्रु में स्थिरबुद्धि नहीं रहती है ॥ ११ ॥

इति करणफल ।

———

अथ गण्डान्तफलम् ।

पौष्णादिगण्डान्तभवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोऽग्रजस्य ॥
जातस्य सत्यं त्रिविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदन्ति १

इति गण्डान्तफलम् ।

नक्षत्र, तिथि और लग्न ये तीन प्रकार के गण्डान्त होते हैं इनमें से नक्षत्र गण्डान्त पिता को, तिथि गण्डान्त बड़े भाई को और लग्नगण्डान्त उत्पन्न बालक को ही अशुभ होता है और तीनों गण्डान्त जो जन्मसमय में हों तो सबका नाश करनेवाला होता है ॥ १ ॥

इति गण्डान्तफल ।

--:०:--

अथ गणफलम् ।

सुस्वरश्च सरलोक्तिमतिः स्यादल्पभोजनकरो हि नरश्च ॥
जायते सुरगणेन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः १

गणों का फल ।

जो देवतागण में जन्मा है वह उत्तम स्वर, सुन्दरवाणी, थोड़ा भोजन करनेवाला, गुणीजनों का आदर करनेवाला, उत्तम जनों से प्रशंसित और निरन्तर धनयुक्त रहता है ॥ १ ॥

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी धनी दयालुर्बलवान्कलाज्ञः ॥
प्राज्ञः सुकांतिः सुखदो बहूनां मर्त्यो भवेन्मर्त्यगणे प्रसूतः २

मनुष्यगण में जो उत्पन्न होता है वह देवता ब्राह्मणों का पूजनेवाला, अभिमानी, धनी, दयालु और बलवान्, अनेक कलाओं का जाननेवाला, पण्डित, श्रेष्ठ-कान्ति और बहुत जनों को सुख देनेवाला होता है ॥ २ ॥

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ॥
दुःशीलवृत्तः कलिकृद् बलीयान् रक्षोगणोत्पन्ननरो विरोधी ३

इति गणफलम् ।

राक्षसगण में जन्म लेनेवाला पुरुष बहुत बोलनेवाला, कठोरचित्त, साहसी, क्रोधी, बदमाश, दुश्शील, कलहकारी, बली और सब जनों से विरोध करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

इति गणफल ।

--:०:--

अथ लग्नफलम् ।

चण्डाभिमानी गुणवान् सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम् ॥
पराक्रमप्राप्तयशो विशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽतिरोषः १

लग्नों का फल ।

मेष लग्न में जन्म लेनेवाला पुरुष प्रचंड अभिमानी, गुणी, कोपयुक्त, मित्रों का विरोधी, दुष्टजनों का संगी, अपने पराक्रम से यश पानेवाला और क्रोधयुक्त रहता है ॥ १ ॥

गुणाग्रणी स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च ॥
धीरश्च शूरः प्रियवाक् प्रशान्तः स्यात्पूरुषो यस्य वृषो विलग्ने २

वृषलग्न जिसके जन्म समय में हो वह बड़ा गुणी, धनवान्, गुरुभक्त, संग्राम में प्रीतिवाला, धीर, शूरवीर, प्रिय वचन बोलनेवाला और शान्त स्वभाववाला होता है ॥ २ ॥

भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः ॥
तस्य स्थितिः स्यान्नृपसन्निधाने लग्ने भवेन्ना मिथुनाभिधाने ३

मिथुन लग्न जिसके जन्म समय में हो वह भोगी, उदार, बहुत पुत्रों व मित्रों से युक्त, धनी, सुशील, गुप्त मंत्र रखनेवाला और राजाओं के निकट रहनेवाला होता है ॥ ३ ॥

मिष्टान्नभुक् साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः ॥
प्रकृष्टसारोतितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेत्सः ४

कर्कलग्न में जन्म लेनेवाला मधुर भोजन करनेवाला, साधु जनों में प्रीति करनेवाला, नम्रस्वभाव, विपरीत बुद्धि, जलविहार में बड़ी प्रीति रखनेवाला, उत्तम बलवाला और निरन्तर उदारचित्त होता है ॥ ४ ॥

कृशोदरश्चारुपराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोल्पभक्षः ॥
सञ्जातबुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने संजनने विलग्ने ५

सिंहलग्न जिसके जन्म समय में हो वह दुर्बल उदर, बड़ा पराक्रमी, भोगी, थोड़ी सन्तानवाला, अल्पभोजन करनेवाला और अहंकारी होता है ॥ ५ ॥

कामी क्रीडासद्गुणज्ञानसत्त्वकौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः ॥
लग्नं कन्या यस्य जन्यां स धन्यां कन्यां क्षीराब्धेवाप्नोति नित्यम् ६

कन्या लग्न जिसके जन्म समय में हो वह कामी और क्रीड़ा, श्रेष्ठ गुण, उत्तम ज्ञान और सतोगुणादि से युक्त, निरन्तर प्रसन्नचित्त तथा लक्ष्मी की प्राप्ति से युक्त होता है ॥ ६ ॥

गुणाधिकत्वं द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्यकर्म्मण्यतिनैपुणत्वम् ॥
पद्मालया तन्निलये न लोला लग्नं तुला चेत्स कुलावतंसः ७

तुला लग्न में जन्मा हुआ पुरुष गुणयुक्त, धन के लाभवाला, वाणिज्य कार्य में निपुण, स्थिरलक्ष्मी (धनवाला) और अपने कुल का प्रकाशक होता है ॥ ७ ॥

शूरो नरोऽत्यन्तविचारसारोऽनवद्यविद्याधिकतासमेतः ॥
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव ८

वृश्चिक लग्न में जन्म लेनेवाला पुरुष शूरवीर, उत्तम विचार करनेवाला, उत्तम विद्यायुक्त और निरन्तर कलहकारी होता है ॥ ८ ॥

प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतराम्मनोज्ञः ॥
सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्द्धनुर्यस्य जनुस्तनुस्स्यात् ९

धनुर्धरलग्न जिसके जन्मसमय में हो वह चतुर और राजसेवी, सत्यवक्ता, बहुत सुन्दर, विद्वान्, अनेक कलाओं में निपुण और धनुर्विद्या में कुशल होता है ॥ ९ ॥

कठिनमूर्त्तिरतीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद्बहुसंततिः ॥
सुचतुरोपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदयसम्भवः १०

मकर लग्न में जन्मा हुआ पुरुष कठोरशरीर, अत्यन्त शठ, अपने मनका करने वाला, बहुत संततिवाला, चतुर और लोभी होता है ॥ १० ॥

लोलस्वान्तोऽत्यन्तसंजातकामः चञ्चद्देहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे ॥
सस्यैरम्भःसंभवैर्युक् सदंभश्चेत्स्यात्कुम्भे सम्भवो यस्य लग्ने ११

कुम्भ लग्न में जो उत्पन्न है वह चञ्चल स्वभाव, अत्यन्त कामी, उत्तम शरीर, मित्रों से प्रीति रखनेवाला, धानादि की खेतीवाला और दम्भी होता है ॥ ११ ॥

दक्षोऽल्पभक्षोऽल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोऽतिधूर्त्तः ॥
साम्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिदाने जनने विलग्ने १२

मीन लग्न में जन्म लेनेवाला बड़ा दक्ष, थोड़ा भोजन करनेवाला, अल्पकामी, उत्तम रत्न-सुवर्णमाला, चपल, बड़ा धूर्त्त और अनेक रचना करने में बड़ा निपुण होता है ॥ १२ ॥

भवेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ ॥
तस्मिन् बलोने यदिवा विलग्ने युक्ते क्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् १३

जो जन्म समय में लग्न बली हो तो उसका पूर्ण फल होता है और जो लग्न निर्बल अथवा पापयुक्त व पापवीक्षित हो तो उसका फल थोड़ा होता है ॥ १३ ॥

नन्वेवमुदाहृतानां संवत्सरादिफलानां समयनियमाभावात् निराधारकत्वेन फलादेशः कथंसम्यक्घटतीति व्यर्थमेव किमर्थमुक्तमितिचेन्न । समयनियमोप्यस्ति तथाहि—

उक्तानि संवत्सरपूर्वकाणां फलानि तत्प्राप्तिरिति प्रकल्प्या ॥
सांवत्सरं सावनवर्षपस्य पाकेयनर्त्तुप्रभवं वरांशोः १४

इस प्रकार संवत्सर आदिकों के कहे हुये फलों का समय के नियम विना, निराधार होने से फलादेश कैसे घटित होगा ? यह व्यर्थ कहा गया ऐसा नहीं है किन्तु समय का नियम भी रक्खा गया है जैसे कहे हुये संवत्सरादिकों के फल की प्राप्ति इस प्रकार कल्पित है—संवत्सर का फल सावनवर्षपति की दशा में होता है और अयन-ऋतु के फल सूर्य की दशा में होते हैं ॥ १४ ॥

मासोद्भवम्मासपतेस्तथेन्दौ गणोडुपक्षप्रभवं च यत्स्यात् ॥
तिथिप्रभूतङ्करणोद्भवं च चन्द्रान्तरेऽर्क्कस्य दशाविभागे १५

मासफल मासपति की दशा में होता है और गण, नक्षत्र तथा पक्ष के फल चन्द्रमा की दशा में होते हैं एवं तिथि और करण के फल सूर्य की दशा में चन्द्रमा के अन्तर में होते हैं ॥ १५ ॥

वारोद्भवं वारविभोर्विचिन्त्यं योगोत्थमिद्धर्क्कबलान्वितस्य ॥
लग्नोद्भवं लग्नपतेर्द्दशायां दृग्भावयुग्राशिजमेवमूह्यम् १६

इति लग्नफलम् ।

वारफल वारपति की दशा में होता है, योगफल सूर्य और चन्द्रमा में जो बली हो उसकी दशा में होता है, लग्नफल लग्नपति की दशा में होता है और दृष्टि, भाव तथा राशि इनके फल इसी क्रम से राशीशों की दशा में होते हैं ॥ १६ ॥

इति लग्नफल ।

अथ डिम्भचक्रफलम् ।

डिम्भाख्यचक्रे रविभाच्च भानां त्रयं न्यसेन्मूर्ध्नि मुखे त्रयं च ॥
द्वे स्कंधयोर्द्वे भुजयोर्द्वयं च पाणिद्वये वक्षसि पंच भानि १
नाभौ च लिङ्गे च तथैकमेकं जान्वोर्द्वयम्पादयुगे भषट्कम् ॥
पुंसां सदा वै परिकल्पनीयम्मुनिप्रवर्य्यैः फलमुक्तमत्र २

डिम्भचक्र का फल ।

डिम्भाख्यचक्र में सूर्य्य के नक्षत्र से जिस अंग में जन्मनक्षत्र पड़े उसका वैसा फल जानना । ३ नक्षत्र शिर में, ३ मुख में, एक दोनों कन्धों में, एक २ दोनों भुजाओं में, एक २ दोनों हाथों में, ५ हृदय में, १ नाभि में, १ लिंग में, एक २ दोनों जाँघों में और तीन २ दोनों पादों में इस क्रम से पुरुष के लिये यह कल्पना किया है उसका फल अब अलग २ कहते हैं ॥ १ । २ ॥

सद्रत्नचामीकरचारुवस्त्रविचित्रबालव्यजनातपत्रैः ॥
विराजमानो मनुजोनितांतं मौलिस्थले भंनलिनीप्रभोश्चेत् ३

जो जन्म समय सूर्य के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र मस्तक में पड़े तो उत्तमरत्न और सुवर्ण के आभूषण धारण करे और सुन्दर विचित्र वस्त्र, व्यंजन और छत्र से शोभायमान रहता है ॥ ३ ॥

मिष्टाशनानां शयनासनानां भोक्ता च वक्ता सततम्प्रसन्नः ॥
स्मिताननो ना वदनानुयातम्भानोर्भवेद्भं जनने हि यस्य ४

यदि जन्म का नक्षत्र मुख में पड़े तो उत्तम भोजन, शय्या और आसन का भोग करनेवाला, शास्त्र का वक्ता, प्रसन्न और हँसमुख रहे ॥ ४ ॥

वृषांशको वंशविभूषणश्चेन्महोत्सवार्थप्रथितः प्रतापी ॥
नरोतिशूरोतितरामुदारो दिवाकरोडुस्थितमंशके चेत् ५

यदि जन्म का नक्षत्र दोनों कन्धों में पड़े तो बली, अपने वंश का विभूषण, महोत्सवयुक्त, विख्यात कीर्त्ति, प्रतापी, संग्राम में शूर और उदार होता है ॥५॥

त्यक्तस्वदेशः पुरुषो विशेषाद् गर्वोद्धतः शौर्य्ययुतो नितान्तम् ॥
विदेशवासाप्तमहत्प्रतिष्ठो मार्त्तण्डभम्बाहुगतम्प्रसूतौ ६

जन्म का नक्षत्र यदि भुजा में पड़े तो विदेश में विशेष वास करे, अहङ्कारी, शूरमा और विदेश-वास से बड़ी प्रतिष्ठा पानेवाला होता है ॥ ६ ॥

वदान्यतासद्गुणवर्ज्जितश्च पण्यादिरत्नादिपरीक्षकश्च ॥
सत्यानृताभ्यांसहितो हि मर्त्यो दिवामणेर्भंयदि पाणिसंस्थम् ७

और जो जन्म का नक्षत्र दोनों हाथों में पड़े तो उदार चित्त, अच्छे गुणों से हीन, क्रय-विक्रय में निपुण, रत्नों का परीक्षक और झूंठ-सच दोनों का बोलनेवाला होता है ॥ ७ ॥

भूपालतुल्यः स्वकुले सुशीलो बालो विशालोत्तमकीर्त्तिशाली ॥
शास्त्रे प्रवीणः परिसूतिकाले वक्षस्स्थले चेन्नलिनीशभं स्यात् ८

जो जन नक्षत्र हृदय में पड़े तो राजा के समान, अपने कुल में वड़ा सुशील, सुन्दर, उत्तम कीर्त्ति और शास्त्रों में बड़ा प्रवीण होता है ॥ ८ ॥

क्षमासमेतो रणकर्मभीरुः कलाकलापाकलनैकशीलः ॥
धर्म्मप्रवृत्तिः सुतरामुदारो नाभीसरोजेम्बुजबन्धुतारा ९

यदि जन्म का नक्षत्र नाभि में पड़े तो क्षमा करनेवाला, लड़ाई से डरनेवाला, अनेक कलाओं में प्रवीण, धार्मिक और सदा उदार चित्त बना रहता है ॥ २ ॥

कन्दर्प्पधूर्योज्झितसाधुकर्म्मा सद्गीतनृत्याभिरुचिः कलाज्ञः ॥
चेज्जन्मकालेनलिनीशभंस्याद्गुह्यस्थलेसोऽतुलकीर्त्तियुक्तः १०

जो जन्म नक्षत्र गुह्यस्थल अर्थात् लिंगस्थान में जन्म समय पड़े तो कामियों में अग्रगण्य, असाधुकर्म करनेवाला, नृत्य गीत में रुचिवाला, अनेक कलायुक्त और अतुल कीर्त्तिवाला होता है ॥ १० ॥

नानादेशानेकधासम्प्रचारः कार्योत्साहश्चञ्चलः क्षामगात्रः ॥
धूर्त्तो मर्त्यः सत्यहीनश्च नूनं जानुस्थाने भानुजं जन्मनि स्यात् ११

जन्म समय का नक्षत्र यदि दोनों जंघाओं में पड़े तो देशाटन करे और उत्तम कार्य में उत्साह करे। चञ्चल स्वभाव, छोटा शरीर, धूर्त्त और असत्यवादी होता है ॥ ११ ॥

कृषिक्रियायां निरतोऽल्पधर्मश्शत्रूज्झितः सेवनकर्मकर्त्ता ॥
तारा यदि स्यादरविन्दबन्धोः पादरविन्दे च नरस्य सूतौ १२

इति डिम्भचक्रफलम्।

जन्म समय का नक्षत्र दोनों चरणों में पड़े तो खेती करनेवाला, थोड़े धर्म वाला, शत्रुजनों से पराभव पानेवाला और सेवावृत्ति का करनेवाला होता है ॥१२॥

इति डिंभचक्रफल ॥

अथावयवस्वरूपम्।

ह्स्वा मीनवृषाजघटामिथुनधनुःकर्किमृगमुखाश्च समाः ॥
वृश्चिककन्यामृगपतिवणिजा दीर्घाः समाख्याताः १
एभिर्लग्नादिगण्यैः शीर्षप्रभृति नृशरीराणि ॥
सदृशानि विज्ञायन्ते स्थितिगगनचरैश्चैव तुल्यानि २
इदं लग्नतः सकाशात् कालपुरुषाकारचक्रन्द्रष्टव्यम् ॥

अवयवों का स्वरूप।

मीन, मेष, वृष और कुम्भ इन लग्नों के छोटे शरीर हैं; मिथुन, धनु, कर्क और मकर ये समशरीर हैं तथा वृश्चिक, कन्या, सिंह और तुला ये लग्न ऊँचे शरीर वाले हैं। लग्नकुण्डली में द्वादशभाव शिरसे पाद पर्यंत सब शरीरके अंग हैं, जिस अंग में जो लग्न पड़े, कालचक्र के अनुसार, उस अङ्ग को ह्रस्व या सम या दीर्घ जानना चाहिये ॥ १ । २ ॥

अथ द्वादशभावानां फलानि।

भिन्नं द्वादशधा विधाय विलसच्चक्रं च तत्र न्यसे—
ल्लग्नादुद्द्वादशराशयोऽतिविशदा वामांगमार्गक्रमात् ॥

अंश्यास्तत्र नभश्चराःस्फुटतरा राशौ च यत्रस्थिता-
स्तेभ्यः साधुफलं त्वसाधु सुधिया वाच्यं हि होरागमात् १

द्वादशभावों के फल।

बारह कोठे का चक्र बनाकर उसमें बायें मार्ग से द्वादश राशियों को स्थापन करे और जिस २ राशि में जो २ ग्रह स्थित हों उनको भी स्थापन करे तब उन ग्रहों का अच्छा या खराब फल होराशास्त्र से विचार कर कहना चाहिये ॥ १ ॥

अथ तनुभावविचारः।

रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जातिर्वयसः प्रमाणम् ॥
सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् २

तनुभाव का विचार।

रूप, वर्ण, चिह्न, जाति और अवस्था का प्रमाण तथा सुख, दुःख और साहस इन सबका विचार तनुभाव से करना चाहिये ॥ २ ॥

विलोकिते सर्वखगैर्विलग्ने लीलाविलासैः सहितो बलीयान् ॥
कुले नृपालो विपुलायुरेव भयेन मुक्तोऽरिकुलस्य हन्ता ३

जो लग्न को सब ग्रह देखते हों तो हास-विलासयुक्त, बली, कुल में राजा, दीर्घायु, भय से रहित और शत्रु का हन्ता होता है ॥ ३ ॥

सौम्यास्त्रयो लग्नगता यदि स्युः कुर्वन्ति जातं नृपतिं विनीतम् ।
पापास्त्रयो दुःखदरिद्रशोकैर्युतं नितांतं बहुभक्षकं च ४

तीन शुभग्रह अर्थात् बुध-गुरु-शुक्र ये लग्न में बैठे हों तो उत्पन्न पुरुष को विनीत अर्थात् नीतियुक्त राजा करते हैं और जिसके तीन क्रूरग्रह लग्न में हों वह दुःखी, दरिद्री, शोकयुक्त और बहुभक्षक होता है ॥ ४ ॥

लग्नाद् द्यूनषडष्टकेऽपि च शुभाः पापैर्न युक्तेक्षिता
मंत्री दण्डपतिः क्षितेरधिपतिः स्त्रीणां बहूनां पतिः ॥
दीर्घायुर्गदवर्जितो गतभयः सौन्दर्यसस्यान्वितः
सच्छीलो यवनेश्वरैर्निगदितो मर्त्यः प्रसन्नः सदा ५

लग्न से छठें, सातवें, आठवें जो शुभग्रह बैठें और कोई पापग्रह संग न हो तथा देखता भी न हो तो वह राजा का मंत्री या दण्डनायक अथवा पृथ्वी-

नायक और बहुत स्त्रियों का पति, दीर्घायु, रोगरहित, भयरहित, सुन्दरता और खेती से युक्त, उत्तम शील स्वभाव और हमेशा प्रसन्न रहता है ऐसा यवनेश्वरों ने कहा है ॥ ५ ॥

अथार्कादिग्रहाणां हि गुणवर्णविनिर्णयः ॥
आकारोपि शरीरस्य प्रोच्यते मुनिसम्मतः ६

अब सूर्यादिग्रहों के अनुसार गुणों व वर्णों का निर्णय और शरीर का आकार श्रेष्ठ मुनिजनों की सम्मति से कहा जाता है ॥ ६ ॥

शूरो गम्भीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुंतलश्च ॥
सुवृत्तगात्रो मधुपिङ्गनेत्रो मित्रो हि पित्तास्थ्यधिकोनतुङ्गः ७

जो सूर्य लग्न में पड़े तो बड़ा शूर, गम्भीर, चतुर, श्रेष्ठरूप, श्याम-अरुण वर्णवाला, अल्पकेश और नशीले नेत्र तथा पित्तस्वभाव, अस्थिसार अर्थात् पुष्टशरीर और न बहुत लंबे और न बहुत छोटे शरीरवाला होता है ॥ ७ ॥

सद्वाग्विलासोऽमलधीस्सुकायो रक्ताधिकः कुंचितकृष्णकेशः ॥
कफानिलात्माम्बुजपत्र नेत्रो नक्षत्रनाथः शुभगोतिगोरः ८

जो चन्द्रमा लग्न में हो तो मधुर वचन, निर्मलबुद्धि, उत्तम शरीर, बहुत रक्त अर्थात् रुधिरवाला, काले और घुँघुराले बाल, कफ-वात प्रकृति, उत्तम कमल के समान नेत्र और गौर वर्णवाला होता है ॥ ८ ॥

मज्जासारो रक्तगौरोत्युदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च ॥
चण्डः पिंगाक्षो युवा खर्व्वगर्व्वः खर्व्वश्चोर्वीसूनुरग्निप्रभः स्यात् ९

जो मंगल लग्न में हो तो मज्जा अधिक, शरीर लाल, व गौरवर्ण, उदार, हिंसक, शूर, पित्तप्रकृति, तामसी स्वभाव, प्रचंड, पीले नेत्र, युवावस्था, अहङ्कारी और अग्नि के समान तेजवाला होता है ॥ ९ ॥

श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक् त्रिदोषी ॥
रजोऽधिको मध्यमरूपधृक् स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः १०

बुध जिसके लग्न में हो तो वह श्यामल वर्ण, अधिक नसोंवाला, अनेक कलाओं की विधि का जाननेवाला, क्रीड़ा-कुतूहल में प्रवीण और कोमल वाणी, वात-पित्त-कफ मिश्रित प्रकृतिवाला, अधिक रजोगुणवाला, मध्यम रूप और तांबे के से नेत्रवाला होता है ॥ १० ॥

ह्रस्वाकारश्चारुचामीकराभः सम्यक्सारः सुस्वरोदारबुद्धिः ॥
दक्षः पिंगाक्षः कफी चातिमांसः प्राज्ञः सुज्ञैः कीर्तितो जीवसंज्ञः ११

जिसके जन्मलग्न में बृहस्पति होता है उसका छोटा शरीर, सुवर्ण की सी कान्ति, पुष्टशरीर, उत्तमस्वर, उदारबुद्धि, सब कार्यों में दक्ष, पीतनेत्र, कफप्रकृति, स्थूलशरीर, बुद्धिमान् और सज्जनों से आदर पानेवाला होता है ॥ ११ ॥

सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा
कुवलयदलनेत्रो वक्रनीलालकश्च॥
सुसरलभुजशाली राजसश्चातिकामी
मदयुतगजगामी भार्गवः शुक्रसारः १२

शुक्र जिसके लग्न में हो वह गहरे नील वर्णवाला, कफ-वातप्रकृति, कमल-पत्र से नेत्र, कुंचित काले केश, लंबी भुजा, राजसी स्वभाव, कामी, मदयुक्त, हाथी पर सवार होनेवाला और वीर्यवान् होता है ॥ १२ ॥

श्यामलोतिमलीनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः ॥
स्थूलदन्तनखपिंगलनेत्रो युक्शनिश्च खलतानिलकोपैः १३

जिसके लग्न में शनि होता है वह श्यामवर्ण, अत्यन्त मलीन वेष, नाड़ीवाला, आलसी, जटाधारी, दुर्बल, लम्बा शरीर, बड़े दांत और नख, पीले नेत्र, दुष्टस्वभाव और वात प्रकृतिवाला होता है ॥ १३ ॥

लग्नस्य नन्दांशपतेर्हिमूर्त्या मूर्त्तिः समाना बलशालिनो वा ॥
स्यादिन्दुनंदांशपतेस्तु वर्णःपरं विचार्य्याःकुलजातिदेशाः १४

लग्न के नवांशाधीश से स्वरूप और बल का विचार करना अथवा जिस ग्रह के नवांशा में चन्द्रमा स्थित है उसका वर्ण, कुल, जाति और देश उस ग्रह के अनुसार कहना योग्य है ॥ १४ ॥

सत्वं भवेयुः शशिसूर्य्यजीवास्तमो यमारौ च रजो ज्ञशुक्रौ ॥
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्यो गुणस्तस्य खगस्य नूनम् १५

सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति ये सतोगुणी हैं, शनैश्चर, मंगल तमोगुणी हैं और बुध, शुक्र रजोगुणी हैं । जिसके त्रिंशांश में सूर्य हो उस ग्रह की सदृश गुण कहना चाहिये ॥ १५ ॥

शिरोक्षिणीकर्णनसाकपोलौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृकाणे ॥
कंठांसदोर्दंडककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये १६
बस्तिस्ततो लिङ्गगुदे तथांडावूरू च जानू चरणौ तृतीये ॥
क्रमेण लग्नात्परपूर्वषट्के वामं तथा दक्षिणमंगमत्र १७

लग्न के प्रथम द्रेष्काण में इन अङ्गों का विभाग है—शिर, नेत्र,कर्ण, नासिका, कपोल, हनुस्थान अर्थात् दाढ़ी और मुख । तथा दूसरे द्रेष्काण में ये अंग हैं—कंठ,स्कन्ध,भुजा, कुक्षि,वक्षस्थल, पार्श्व और नाभि एवं तीसरे द्रेष्काण में ये अंग हैं—पेडू, लिङ्ग, गुदा, अंडकोश, ऊरु, जानु और चरण क्रम से लग्न से पर पूर्व राशि वाम दक्षिण अंग जानना । पहिली छः राशियां बायें अंग की हैं और पिछली छः राशियां दहिने अंग की जानना चाहिये ॥ १६ । १७ ॥

मत्स्यं तिलं लक्ष्म बलानुसारं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः ॥
स्वांशं स्वभागस्थिरगाश्च लक्ष्म युक्तेक्षिताः सौम्यनभश्चरेन्द्रैः १८

जिस अंग में शुभग्रह बली या निर्बल बैठे हों उस अंग में मसा या तिल अथवा लहसुन ये चिह्न होते हैं और जिस अंग में पापीग्रह हों उस अंग में व्रण होता है । अपने द्रेष्काण व नवांश में जो शुभग्रह होते हैं या शुभग्रहों की दृष्टि होती है तो लहसुन का चिह्न अवश्य होता है॥ १८ ॥

रवेर्व्रणः काष्ठचतुष्पदोत्थः शृंग्यम्बुचारिप्रभवः शशांकात् ॥
कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चांद्रेर्भौमः शनेश्चापि मरुद्द्विपद्भ्याम् १९

सूर्य का व्रण काष्ठ से या चौपाये से और चन्द्रमा का शृंगीजीव अर्तात् चौपाये से या जलचरजीव से व्रण कहना चाहिये । मंगल की दृष्टि से विष या शस्त्र या अग्नि से व्रण होता है । बुध का व्रण पृथिवी से होता है और शनि का वायु या मनुष्यकृत व्रण होना चाहिये ॥ १९ ॥

कुर्याद्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः ॥
गृहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्गे खलु राशितुल्यः २०

क्रूरग्रह छठे स्थान में हो तो व्रण होता है और वही क्रूरग्रह शुभग्रह के साथ हो तो लहसुन का चिह्न और शुभग्रह की दृष्टि हो तो तिल का चिह्न कहिये एवं तीन पापग्रहों के साथ बुध जिस राशि में हो वह राशि जिस अंग की है उसी अंग में व्रण जानना चाहिये ॥ २० ॥

मेषे शशांकः कलशे शनिश्चेद्भानुर्धनुस्स्थश्च भृगुर्मृगस्थः ॥
तातस्य वित्तं न कदापि भुंक्ते स्वबाहुवीर्येण नरो वरेण्यः २१

जिसके मेष में चन्द्रमा, कुम्भ में शनि, धनु में सूर्य और मकर में शुक्र हो तो वह पिता का धन न भोग करे किन्तु अपने बाहुबल से धन उत्पन्न करके प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

चतुर्षु केंद्रेषु भवंति पापा वित्तस्थिताः स्युर्यदि पापखेटाः ॥
नरो दरिद्रोतितरां निरुक्तो भयंकरश्चात्मकुलोद्भवानाम् २२

जिसके चारों केन्द्रों में पापग्रह बैठे हों अथवा दूसरे स्थान में पापीग्रह हों तो वह दरिद्री और कुटुम्बी जनों को दुःख देनेवाला होता है ॥ २२ ॥

सुतस्थितो वा यदि मूर्त्तिवर्त्ती बृहस्पती राज्यगतः शशांकः ॥
नरस्तपस्वी विजितेन्द्रियश्च स्याद्राजसीबुद्धिविराजमानः २३

पञ्चमस्थान में या लग्न में जिसके बृहस्पति बैठा हो और दशमस्थान में चन्द्रमा हो तो वह मनुष्य तपस्वी, जितेन्द्रिय और राजसी बुद्धिवाला होता है ॥ २३ ॥

कन्यायां च तुलाधरे सुरगुरुर्मेषे वृषे वा भृगुः
सौम्यो वृश्चिकराशिगः शुभखगैर्दृष्टः कुलश्रेष्ठताम् ॥
नूनं याति नरो विचारचतुरोऽप्यौदार्यजातादरो
नित्यानन्दभरो गुणैर्वरतरो निष्टापरो वित्तवान् २४

कन्या या तुला में बृहस्पति बैठे हों; मेष अथवा वृष में शुक्र तथा वृश्चिक में बुध और उनको शुभग्रह देखें तो अपने कुल में श्रेष्ठ और विचार में चतुर, उदारता से आदर पानेवाला और हमेशा प्रसन्न रहनेवाला, गुणों में पूर्ण, उत्तम निष्ठावाला और धनयुक्त रहता है ॥ २४ ॥

षष्ठेशसौरी भवतो बुधारौ नरो भवेच्चौर्य्यपरो नितांतम् ॥
स्वकर्मसामर्थ्यविधेर्विशेषात् परांघ्रिपाणीन्नकुगुणी छिनत्ति २५

जिसके षष्ठेश और शनि के संग बुध या मंगल हो तो वह चोरी करनेवाला और अपने कर्म की सामर्थ्य विधि से पराये हाथ-पैरों का काटनेवाला दुष्टजन होता है ॥ २५ ॥

प्रसूतिकाले किल यस्य जन्तोः कर्केर्कजश्चेन्मकरे महीजः ॥
चौर्य्यप्रसंगोद्भवचण्डदंडाच्छाखादिखण्डानि भवन्ति नित्यम् २६

जन्म समय में जिसके कर्क में शनि और मकर में मंगल हो तो वह चोरी करने में निरंतर दंड पाता रहता है ॥ २६ ॥

कुम्भे च मीने मिथुनाभिधाने शरासने स्युर्यदि पापखेटाः ॥
कुचेष्टितः स्यात् पुरुषो नितांतं वज्रेण नूनं निधनं हि तस्य २७

कुम्भ, मीन, मिथुन और धन इनमें पापग्रह बैठें तो वह पुरुष निषिद्ध चेष्टा-वाला होता है तथा वज्रके घात से मृत्यु पाता है ॥ २७ ॥

यस्य प्रसूतौ खलु नैधनस्थः सौम्यग्रहः सौम्यनिरीक्षितश्च ॥
तीर्थान्यनेकानि भवंति तस्य नरस्य सम्यङ्मतिसंयुतस्य २८

जन्म समय में जिसके आठवें शुभग्रह हों और शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो अनेक तीर्थों की यात्रा करनेवाला और बुद्धिमान् पुरुष होता है ॥ २८ ॥

बुधत्रिभागेन युते विलग्ने केन्द्रस्थचन्द्रेण निरीक्षितश्च ॥
शिष्टान्वये यद्यपि जातजन्मा स्यान्नीचकर्मा मनुजः प्रकामम् २९

जिसके जन्मलग्न में बुध का द्रेष्काण हो और चन्द्रमा केन्द्र में बैठा देखता हो तो उत्तमकुल में भी जन्मा हुआ पुरुष नीचकर्म करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

भानौ द्वितीये भवने शनिश्चेन्निशीथिनीशो गगनाश्रितश्च ॥
भूनन्दने वै मदने तदानीं स्यान्मानवो हीनकलेवरः सः ३०

दूसरे घर में सूर्य या शनि और दशयें चन्द्रमा तथा सातयें मंगल पड़ें तो वह मनुष्य दुर्बल शरीरवाला होता है ॥ ३० ॥

पापांतराले च भवेत्कलावान् तथार्कसूनुर्मदनालयस्थः ॥
कलेवरं स्याद्विकलं च तस्य श्वासक्षयः प्लीहकगुल्मरोगैः ३१

जिसके चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच में बैठे और शनैश्चर सातवें बैठा हो तो वह पुरुष श्वास, प्लीह, क्षयी, गुल्म इन रोगों से निरन्तर पीड़ित रहता है ॥ ३१ ॥

शशी दिनेशस्य यदा नवांशे भवेद्दिनेशः शशिनो नवांशे ॥
एकत्रसंस्थौ यदि तौ भवेतां लक्ष्मीविहीनो मनुजः स नूनम् ३२

चन्द्रमा सूर्य के नवांशा में और सूर्य चन्द्रमा के नवांशा में होते हुये एक ही साथ बैठे हों तो वह मनुष्य निश्चय धनहीन होता है ॥ ३२ ॥

व्ययेरिभावे निधने धने च निशाकरारार्कशनैश्चरास्स्युः ॥
बलान्वितास्ते त्वनिलाधिकत्वाच्चेजोविहीने नयने प्रकुर्य्युः ३३

जिसके छठे, आठवें, बारहवें और दूसरे स्थान में चन्द्रमा, मंगल, सूर्य और शनि ये चार ग्रह बली होकर बैठे हों तो वात के कोप से नेत्र तेजहीन हो जाते हैं ॥ ३३ ॥

पापास्त्रिपुत्रायगता भवन्ति विलोकिता नैव शुभैर्नभोगैः ॥
कुर्वन्ति ते कर्णविनाशनं च जामित्रयाताः खलु कर्णघातम् ३४

जिसके तीसरे, पाँचवें और ग्यारहवें पापग्रह बैठे हों और उनको शुभग्रह न देखते हों तो वह कानों से बधिर होता है तथा सातवें घर में पापीग्रह हों तो कानों से नहीं सुनाई देता है ॥ ३४ ॥

धनव्ययस्थानगतश्च शुक्रो वक्रोऽथवा कर्णरुजं करोति ॥
नक्षत्रनाथो यदि तत्र संस्थो दृग्दोषकारी कथितो मुनींद्रैः ३५

जिसके दूसरे-बारहें शुक्र या मंगल हों तो वह कानों का रोगी होता है और जिसके चन्द्रमा दूसरे-बारहें पड़े तो नेत्र का रोगी होता है ऐसा मुनि लोगों ने कहा है ॥ ३५ ॥

एते हि योगाः कथिता मुनींद्रैः सांद्रं बलं यस्य नभश्चरस्य ॥
कल्प्यं फलं तस्य च पाककाले सुनिर्म्मला यस्य मतिस्तु तेन ३६

इति तनुभावविचारः ।

ये योग मुनीन्द्रों ने कहे हैं। निर्मल बुद्धिवाले (ज्योतिषी) को चाहिये कि जो ग्रह अधिक बलवाला हो उसी की दशा में फल को कहे ॥ ३६ ॥

इति तनुभाव विचार ।

—:o:—

अथ धनभावविचारः ।

स्वर्णादिधातुः क्रयविक्रयश्च रत्नादिकोशोपि च संग्रहश्च ॥
एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः १

धनभाव का विचार ।

धनभाव से स्वर्णादि धातु, क्रय-विक्रय और रत्नादिकों के कोष का संग्रह ये सब दूसरे स्थान से विचार करे ॥ १ ॥

भानुभूतनयभानुतनूजैश्चेद्धनस्य भवनं युतदृष्टम् ॥
जायते मनुजो धनहीनः किम्पुनः कृशशशीक्षितयुक्तम् २

जो धनस्थान में सूर्य, मंगल, शनि ये ग्रह बैठे हों या देखते हों तो धन से हीन होता है और क्षीणचन्द्रमा भी जो इन पाप ग्रहों के साथ हो तो अत्यन्त ही धनहीन होता है ॥ २ ॥

धनालयस्थौ किल मङ्गलेन्दू दृग्दोषदौ मन्दविलोकनेन ॥
शनिर्द्धनस्थानगतः करोति धनाभिवृद्धिं च बुधेन दृष्टः ३

धनस्थान में चन्द्रमा तथा मंगल बैठे हों और शनि देखते हों तो नेत्रों में दोष होता है और जो धनस्थान में शनि बैठे हों और बुध देखता हो तो पुरुष धनयुक्त होता है ॥ ३ ॥

धने दिनेशोतिधनानि नूनं करोति मंदेन न चेक्षितश्च ॥
शुभाभिधाना धनभावसंस्था नानाधनाभ्यागमनानि कुर्युः ४

जो धनस्थान में सूर्य हो और शनि न देखता हो तो मनुष्य धनी होता है और जो धन स्थान में शुभग्रह बैठे हों तो अनेक तरह के धनों से पूर्ण होता है ॥४॥

गीर्वाणवन्द्यो द्रविणोपजातः सौम्येक्षितश्चेद् द्रविणङ्करोति ॥
सोमेन दृष्टो धनभावसंस्थः सोमस्य सुनुर्धनहानिदः स्यात् ६

बृहस्पति धनस्थान में बैठे और बुध की पूर्ण दृष्टि हो तो पूर्ण धन लाभ होता है और जो धनभाव में बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो धन की हानि होती है ॥ ५ ॥

धनस्थितो ज्ञेन विलोकितश्च कृशश्शशाङ्कोपि धनादिकानाम् ॥
पूर्व्वार्ज्जितानां कुरुते विनाशं नवीनवित्तप्रतिबन्धनं च ६

क्षीण चन्द्रमा धनभाव में बैठा हो और बुध उसको देखता हो तो पहिले का धन भी नाश हो जाता है और नवीन धन की प्राप्ति का रोकनेवाला होता है ॥६॥

वित्तस्थितो दैत्यगुरुः करोति विद्यागमं सोमसुतेन दृष्टः ॥
स एव सौम्यग्रहयुक्तदृष्टः प्रकृष्टविद्याप्तिकरो नराणाम् ७

इति धनभावविचारः ।

धन में शुक्र बैठा हो और बुध उसे देखता हो तो धनकी प्राप्ति होती है और जो शुक्र शुभग्रह के साथ बैठे या शुभग्रह की दृष्टि हो तो बहुत से धन का लाभ होता है ॥ ७ ॥

इति धनभावविचार।

अथ सहजभावविचारः।

सहोदराणामथ किङ्कराणाम्पराक्रमाणामुपजीविनां च ॥
विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे नियमेन कार्य्या १

सहजभाव का विचार।

जातक शास्त्र के जाननेवालों को चाहिये कि तीसरे (सहज) भाव से सहोदर भाई और नौकर, पराक्रम तथा आश्रित प्राणियों का विचार करें ॥१॥

पापालयं चेत्सहजं समस्तैः पापैः समेतम्प्रविलोकितं च ॥
भवेदभावः सहजोपलब्धेस्तद्वैपरीत्येन तदाप्तिरेव २

तीसरे घर में पापग्रहकी राशि हो और पापग्रह बैठे हों या देखते हों तो उस के भाई नहीं होते हैं और जो शुभग्रह की राशि हो या शुभग्रह बैठे हों या देखते हों तो भाई का सुख प्राप्त होता है ॥ २ ॥

क्षेपक।

अग्रे जातं रविर्हन्ति पृष्ठे जातं शनैश्चरः ॥
अग्रजं पृष्ठजं हन्ति सहजस्थो धरासुतः ३

सूर्य तीसरे बैठे तो बड़े भाई का नाश और शनि तीसरे बैठे तो छोटे भाई का नाश एवं मंगल सहज स्थान में बैठे तो छोटे व बड़े दोनों का नाशक होता है ॥ ३ ॥

इति क्षेपक।

नवांशका ये सहजालयस्थाः कलानिधिक्षोणिसुतप्रदृष्टाः ॥
तावन्मिताः स्युः सहजा भगिन्यस्त्वन्येक्षिता वै परिकल्पनीयाः ४

तीसरे भाव में जितने नवांशा स्थित हों और उनको चन्द्रमा तथा मङ्गल देखते हों तो उसी नवांशा की तुल्य संख्यावाले भाई होते हैं और अन्य ग्रहों के देखने से बहिन होती हैं ॥ ४ ॥

कुजेन दृष्टे रविजेऽनुजस्थे नश्यंति जाताः सहजास्तु तस्य ॥
दृष्टे च तस्मिन् गुरुभार्गवाभ्यां शश्वच्छुभं स्यादनुजेषु नूनम् ५

शनि तीसरे स्थान में बैठा हो और मंगल देखता हो तो भाइयों का नाश होता हैं और जो बृहस्पति व शुक्र देखते हों तो भाइयों का सुख निरन्तर रहता है ॥ ५ ॥

सौम्येन भूमीतनयेन दृष्टः करोति नाशं रविजोनुजानाम् ॥
शशांकवर्गे सहजे कुजेन दृष्टे सरोगाः सहजा भवेयुः ६

बुध या मंगल से दृष्ट शनि जो सहजस्थान में पड़े तो भाइयों का नाश करता है और यदि चन्द्रमा का षड्वर्ग सहजस्थान में हो और मंगल की दृष्टि पड़े तो उसके भाई रोगी बने रहते हैं ॥ ६ ॥

दिवामणौ पुण्यगृहे स्वगेहे सन्देह एवानुजजीवितस्य ॥
एकः कदाचिच्चिरजीवितश्च भ्राता भवेद्भूपतिना समेतः ७

इति सहजभावविचारः ।

जिसके नवमस्थान में सिंह राशिगत सूर्य हो उसके भाई के जीने में सन्देह है । कदाचित् एक भाई जो चिरञ्जीवी रहे तो वह राजाओं के साथ रहता है ७॥

इति सहजभावविचार ।

अथ सुहृद्भावविचारः ।

सुहृद्गृहग्रामचतुष्पदानां क्षेत्रोद्यमालोकनकं चतुर्थे ॥
दृष्टेः शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रभूतिर्नियमेन तेषाम् १

सुहृद्भाव का विचार ।

चौथे भाव से मित्र, मकान, ग्राम, चौपाये जीव, क्षेत्र, भूमि और उद्योग इनका विचार करना चाहिये । जो शुभग्रह बैठें हों या देखते हों तो इन सब पदार्थों की वृद्धि कहना (और जो चौथे स्थान में पापग्रह बैठे हों या देखते हों तो इन पदार्थों की हानि होती है यह बुद्धि से कलिपत करना) ॥ १ ॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिश्च संस्थितः ॥
सप्तमे भवने पापः परिवारक्षयङ्करः २

जब जन्मलग्न में बृहस्पति, दूसरे शनैश्चर और सातवें में पापग्रह बैठे हों तो वे परिवार का नाश करनेवाले होते हैं ॥ २ ॥

पापैस्त्रिभिश्चन्द्रमसि प्रदृष्टे स्यान्माननाशः शुभदृष्टिहीने ॥
व्ययास्तलग्नेष्वशुभाः स्थिताश्चेत्कुर्वन्ति ते वै परिवारनाशम् ३

यदि चन्द्रमा पर तीन पापग्रहों की दृष्टि हो और शुभग्रह कोई भी न देखता हो तो उसका मानभंग होता है एवं जिसके बारहें, सातवें और लग्न में सब पापग्रह बैठे हों तो उसके परिवार का नाश करनेवाले होते हैं ॥ ३ ॥

शनिर्धने सज्जनने यदि स्याल्लग्ने विलग्नः सुरराजमन्त्री ॥
सिंहीसुतः सप्तमभावयातो जातस्य जन्तोर्जननी न जीवेत् ४

जिसके जन्मसमय में धनस्थान में शनि, लग्न में बृहस्पति और सातवें राहु हो तो उसकी माता नहीं जीती है ॥ ४ ॥

चन्द्रमा यदि पापानां तृतयेन प्रदृश्यते ॥
मातृनाशो भवेत्तस्य यदि नो वीक्षितः शुभैः ५

इति सुहृद्भाव विचारः ।

जो तीन पापग्रह चन्द्रमा को देखते हों और शुभग्रह कोई भी न देखता हो तो उसकी माता का मरण हो जाता है ॥ ५ ॥

इति सुहृद्भाव विचार ।

अथ सुतभावविचारः ।

बुद्धिप्रबन्धात्मजमंत्रविद्याविनेयगर्भस्थितिनीतिसंस्थः ॥
सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयम् १

सुतभाव का विचार ।

पञ्चमभाव से बुद्धि का प्रबन्ध, विद्या, सन्तान, मन्त्राराधन, विनय, नीति-न्याय और गर्भस्थिति इन सबका होराशास्त्र के ज्ञाता लोगों को विचार करना योग्य है ॥ १ ॥

लग्ने द्वितीये यदि वा तृतीये विलग्ननाथे प्रथमः सुतः स्यात् ॥
तुर्य्यस्थितेस्मिंश्च सुतो द्वितीयः पुत्री सुतो वेति पुरः प्रकल्प्यम् २

जिसके लग्न का स्वामी लग्न में या दूसरे या तीसरे भवन में हो तो उसके प्रथम पुत्र उत्पन्न होता है और जो लग्न का स्वामी चौथे भवन में हो तो पहले कन्या और दूसरे पुत्र होता है इसी क्रम से पांचवें पुत्र, छठे कन्या, सातवें पुत्र इत्यादि जानना ॥ २ ॥

सुताभिधानं भवनं शुभावान् योगेन दृष्ट्या सहितं विलोक्य ॥
सन्तानयोगम्प्रवदेन्मनीषी विपर्य्ययत्वे हि विपर्य्ययः स्यात् ३

पञ्चमभवन में शुभग्रह की राशि हो, शुभग्रह बैठे हों और शुभग्रह देखते हों तो उसके सन्तान होती है और जिसके पञ्चमभवन में पापग्रह की राशि हो, पापग्रह बैठा हो और पापग्रह देखता हो तो उसके सन्तान नहीं होती है ॥ ३ ॥

सन्तानभावो निजनाथदृष्टः समानलब्धि शुभदृष्टयुक्तः ॥
करोति पुंसामशुभैः प्रदृष्टः स्वस्वाम्यदृष्टो विपरीतमेव ४

पञ्चमभाव का स्वामी पञ्चम को देखता हो या शुभग्रह बैठा हो अथवा देखता हो तो अपने समान उत्तम पुत्र का लाभ होता है और जो पापग्रह देखता हो और अपने स्वामी से देखा न जाता हो तो विपरीतयोग जानना ॥ ४ ॥

लग्ने वित्ते तृतीये वा लग्नेशोपत्यमग्रिमम् ॥
तुर्य्ये जन्मद्वितीयेऽस्य पुरः पुत्र्यादिजन्म च ५

लग्न में, दूसरे या तीसरे लग्नेश पड़ा हो तो पहले पुत्र होता है और जो चौथे लग्नेश हो तो पहले कन्या, दूसरे पुत्र इसी प्रकार पुत्र कन्या, कन्या पुत्र सब भावों में क्रम से जानना योग्य है ॥ ५ ॥

द्विदेहसंस्था भृगुभौमचन्द्राः सन्तानमादौ जनयन्ति नूनम् ॥
एते पुनर्द्धन्विगता न कुर्युः पश्चात्तथादौ गदितम्महद्भिः ६

जिसकी कुण्डली में द्विस्वभावराशि में शुक्र, मङ्गल और चन्द्रमा बैठे हों तो उसके पहले पुत्र उत्पन्न होता है और जो यही तीनों ग्रह धनराशि में हों तो यह योग नहीं होता है आदि में या अन्त में पुत्र होना बड़े लोगों ने कहा है ॥ ६ ॥

सन्तानभावे गगनेचराणां यावन्मितानामिह दृष्टिरस्ति ॥
स्यात्संततिस्तत्प्रमिता नृसंज्ञैर्नराश्च कन्याः प्रमदाभिधानैः ७

पञ्चमभाव में जितने ग्रहों की दृष्टि पड़ती है उतनी ही सन्तान होती हैं। पुरुषग्रह की दृष्टि से पुत्र और स्त्रीग्रह देखते हों तो कन्या जन्मती हैं ॥ ७ ॥

सन्तानभावांकसमानसंख्या स्यात्सन्ततिर्वेति वदन्ति केचित् ॥
नीचोच्चमित्रादिगृहस्थितानां दृष्ट्या शुभं वाशुभगर्भकानाम् ८

कोई आचार्य कहते हैं कि पञ्चमभाव में जितनी संख्या का अंक होता है उसके समान सन्तान होती हैं। (अर्थात् मेष में एक, वृष में दो, मिथुन में तीन, कर्क में चार इसी वृद्धि क्रम से १२ राशि में जानना) और अब ग्रहों के बलाबल से उच्च, नीच, स्वक्षेत्री और मित्रगेही ग्रहों की दृष्टि या योग से शुभ अथवा अशुभ जानना चाहिये ॥ ८ ॥

नवांशतुल्या प्रभवात्र संख्या दृष्ट्या शुभानां द्विगुणावगम्या ॥
क्लिष्टा च पापग्रहदृष्टियोगा मिश्रा च मिश्रग्रहदृष्टितोत्र ९

पञ्चमभाव में जितनी संख्यावाला नवांशा है उतनी ही सन्तान की संख्या जानना और शुभ ग्रहों की दृष्टि से उसकी दूनी संख्या जानना। पापग्रहों की दृष्टि से क्लेश और शुभग्रह-पापग्रह मिश्रित हों तो मिश्रित फल जानना योग्य है ॥९॥

सुताभिधाने भवने यदि स्यात्खलस्य राशिः खलखेटयुक्तः ॥
सौम्यग्रहालोकनवर्ज्जितश्च संतानहीनो मनुजस्तदानीम् १०

पञ्चमभवन में पापग्रह की राशि हो और पापग्रह बैठा हो या देखता हो तथा शुभग्रह कोई भी देखता न हो तो सन्तानहीन योग होता है अर्थात् उसके सन्तान नहीं होती है ॥ १० ॥

कविः कलत्रे दशमे मृगांकः पातालयाताश्च खला भवन्ति ॥
प्रसूतिकाले यदि मानवं ते संतानहीनं जनयन्ति नूनम् ११

जिसके जन्मसमय में सातवें शुक्र, दशवें चन्द्रमा और चौथे पापग्रह बैठे हों तो उसके भी सन्तान नहीं होती हैं ॥ ११ ॥

सुते सितांशे च सितेन दृष्टे बहून्यपत्यानि विधोरपीदम् ॥
दासीभवान्यात्मजभावनाथे यावन्मितेंऽशे शिशुसंमतिः स्यात् १२

जो पञ्चमभवन में शुक्र का नवांशा हो और शुक्र देखता भी हो तो उसके बहुत सन्तान होती हैं और चन्द्रमा के नवांशा और दृष्टि में भी यही फल जानना। पञ्चमभाव का स्वामी जितनी संख्या के नवांशा में हो उतनी ही दासी से सन्तान होती हैं ॥ १२ ॥

शुक्रेन्दुवर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम् ॥
भवन्ति कन्याः समराशिवर्गे पुत्राश्च तस्मिन्विषमाभिधाने १३

पांचवें स्थान में शुक्र या चन्द्रमा का षड्वर्ग हो या ये दोनों पंचम में बैठे हों या देखते हों तो समराशि के वर्ग में कन्या और विषमराशि के वर्ग में पुत्र उत्पन्न होते हैं ॥ १३ ॥

मन्दस्य राशिः सुतभावसंस्थो मन्देन युक्तो शशिनेक्षितश्च ॥
दत्तात्मजाप्तिः शशिवद्बुधेपि क्रीतः सुतस्तस्य नरस्य वाच्यः १४

पञ्चमभवन में शनि की राशि हो और शनि उसमें बैठा हो तथा उसको चन्द्रमा देखता हो तो दत्तकपुत्र की प्राप्ति होती है और इसी तरह जो बुध देखता हो तो क्रीत अर्थात् मोल लिये हुये पुत्र का सुख होता है ॥ १४ ॥

सन्तानाधिपतेः पञ्च षष्ठरिःफस्थिते खले ॥
पुत्राभावो भवेत्तस्य यदि जातो न जीवति १५

सन्तानभवन का स्वामी जिस भवन में बैठा हो उस स्थान से पांचवें, छठे और बारहें पापग्रह बैठे हों तो उसके पुत्र नहीं होता है जो होता भी है तो जीता नहीं है ॥ १५ ॥

मन्दस्य वर्गे सुतभावसंस्थे निशाकरस्थेपि च वीक्षितेऽस्मिन् ॥
दिवाकरेणोशनसा नरस्य पुनर्भवासम्भवसूनुलब्धिः १६

पञ्चम में शनि का षड्वर्ग हो और उसी में चन्द्रमा बैठा हो तथा शुक्र और सूर्य देखते हों तो पुनर्भवा (जिस स्त्री का दूसरे पुरुष से विवाह हुआ हो ऐसी) स्त्री से पुत्र की उत्पत्ति होती है ॥ १६ ॥

शनेर्गणः सद्मनि पुत्रभावे बुधेक्षिते नो रविभूमिजाभ्याम् ॥
पुत्रो भवेत्क्षेत्रभवोथ बौधे गणेपि गेहे रविजेन दृष्टे १७

शनि का षड्वर्ग संतानभाव में हो और बुध देखता हो एवं सूर्य और मंगल न देखते हों तो दासी पुत्र का सुख होता है। जो बुध का षड्वर्ग हो और शनि देखता हो तो भी वैसा ही जानना ॥ १७ ॥

नवांशकाः पञ्चमभावसंस्था यावन्मितैः पापखगैः प्रदृष्टाः ॥
नश्यन्ति गर्भाः खलु तत्प्रमाणाश्चेद्वीक्षितान्नोशुभखेचराणाम् १८

पञ्चमभाव में स्थित नवांशों को जितने पापग्रह देखते हों, उतने ही गर्भ नष्ट हो जाते हैं यदि उनको शुभग्रह न देखते हों तो ॥ १८ ॥

भूनंदनो नन्दनभावयातो जातं च जातन्तनयन्निहन्ति ॥
दृष्टे यदा चित्रशिखण्डिजेन भृगोः सुतेन प्रथमोपपन्नम् १९

इति सुतभाव विचारः ।

पञ्चमभाव में जो मंगल बैठे हों तो जितने पुत्र जन्में उतने सब नाश हो जायँ जो केतु की दृष्टि हो तो विशेष करके पुत्रनाशक योग होता है और जो शुक्र की दृष्टि हो तो प्रथम पुत्र का विनाश होता है ॥ १९ ॥

इति सुतभाव विचार ।

अथ शत्रुभावविचारः ।

वैरिव्रातः क्रूरकर्मामयानां चिन्ता शङ्का मातुलानां विचारः ॥
होरापारावारपारंप्रयातैरेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् १

शत्रुभाव का विचार ।

शत्रु और व्रण, क्रूरकर्म, रोग, चिन्ता, शंका और मातुल (मामा) सब का शुभाशुभ विचार छठेभाव से करना चाहिये ॥ १ ॥

दृष्टियुतिर्वा खलखेचराणामरातिभावेऽरिविनाशनं स्यात् ॥
शुभग्रहाणां युतिदृष्टितोत्र शत्रूद्गमोप्यामयसम्भवः स्यात् २

इति शत्रुभाव विचारः ।

छठे भाव में पापग्रहों की दृष्टि हो या पापग्रह बैठे हों तो उनके शत्रु का नाश होता है और जो शुभग्रह बैठे हों या उनकी दृष्टि हो तो शत्रु और रोग की वृद्धि होती है ॥ २ ॥

इति शत्रुभाव विचार ।

अथ जायाभावविचारः ।

रणाङ्गना चापि वणिक्क्रियाश्च जायाविचारागमनप्रमाणम् ॥
शास्त्रप्रवीणैर्हि विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् १

जायाभाव का विचार ।

युद्ध, स्त्री, व्यापार और परदेश से आने का प्रमाण इन सबका विचार विद्वानों को सप्तमभाव से करना चाहिये ॥ १ ॥

मूर्त्तौ कलत्रस्य नवांशको वा द्विषट्कभावस्त्रिलवः शुभानाम् ॥
अनेन योगेन हि मानवानां स्यादङ्गनानामचिराववाप्तिः २

जिसके सप्तमभाव में शुभग्रहों के नवांशक, द्वादशांशक और द्रेष्काण हों तो उसको शीघ्र स्त्री की प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

सौम्यैर्युतं सौम्यमसौम्यदृष्टं जायागेहन्देहिनामङ्गनाप्तिम् ॥
कुर्यान्नूनं वैपरीत्यादभावो मित्रत्वेन प्राप्तिकाले प्रलापः ३

जो सप्तमभाव में शुभग्रह की राशि हो और शुभग्रह बैठें हों और अशुभ ग्रह देखते हों तो पुरुष को स्त्री का लाभ होता है और जो इससे विपरीत अर्थात् पापग्रह बैठे हों और पापग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री की प्राप्ति नहीं होती है और जो वह पापी सप्तमेश का मित्र हो और शुभग्रह की दृष्टि हो तो कालान्तर में स्त्री की प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

लग्नाद्व्यये वा रिपुमन्दिरे वा दिवाकरेन्दू भवतस्तदानीम् ॥
स्यान्मानवस्यात्मज एक एव भार्य्यापि चैकेति वदन्ति सन्तः ४

जिसके लग्न से छठे या बारहें घर में सूर्य और चन्द्रमा बैठे हों तो उसके एक विवाह और एक ही पुत्र उत्पन्न होता है ॥ ४ ॥

गण्डान्तकालेपि कलत्रभावे भृगोः सुते लग्नगतेर्कजाते ॥
बन्ध्यापतिः स्यान्मनुजस्तदानीं शुभेक्षितं नो भवनं खलेन ५

सप्तमभाव में गण्डान्त लग्न हो और शुक्र तथा सूर्य ये बैठे हों तो उस पुरुष की स्त्री बंध्या होती है। शुभग्रह कोई न देखता हो और पापग्रह की राशि हो तो निश्चय ऐसा योग कहना चाहिए ॥ ५ ॥

व्ययालये वा मदनालये वा खलेषु बुद्ध्यालयगे हिमांशौ ॥
कलत्रहीनो मनुजस्तनूजैर्विवर्ज्जितः स्यादिति वेदितव्यम् ६

बारवें या सातवें पापग्रह बैठे हों और पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो वह पुरुष स्त्री और पुत्र करके विहीन होता है ऐसा जानना चाहिये ॥ ६ ॥

प्रसूतिकाले च कलत्रभावे यमस्य भूमीतनयस्य वर्गे ॥
ताभ्यां प्रदृष्टे व्यभिचारिणी स्याद्भर्तापि तस्या व्यभिचारकर्त्ता ७

जन्म समय सप्तमभाव में शनि और मंगल का षड्वर्ग हो तथा यही शनि और मंगल देखते हों तो उसकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है और उसका पुरुष भी व्यभिचारी होता है ॥ ७ ॥

शुक्रेन्दुपुत्रौ च कलत्रसंस्थौ कलत्रहीनं कुरुते नरन्तौ ॥
शुभेक्षितौ तौ वयसो विरामे कामं च रामां लभते मनुष्यः ८

जिसके सप्तमभाव में शुक्र और बुध बैठे हों तो उसका विवाह नहीं होता और जो शुभग्रह की दृष्टि हो तो बड़ी आयु होने पर स्त्री का लाभ होता है ॥ ८ ॥

शुक्रेन्दुजीवशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्च
द्वाभ्यां कलत्रभवने च तथैककेन ॥
एषां गृहे विषमभेथ विलोकिते वा
सन्ति त्रयो भवनवर्ग्गखगस्य भावाः ९

सप्तमभाव में शुक्र, चन्द्रमा, बृहस्पति और बुध ये चारों ग्रह या तीन या दो ग्रह या एक ग्रह बैठे हों और इन्हीं ग्रहों की विषमराशि सप्तमभाव में हो और यही देखते हों तो उतनी ही स्त्री होना चाहियें ॥ ९ ॥

कलत्रभावे च नवांशतुल्या नरस्य नार्य्यो ग्रहवीक्षणाद्वा ॥
एकैव भौमार्कनवांशके च जामित्रभावस्थबुधार्कयोर्वा १०

सप्तमभाव में जितने नवांशक हों और जितने ग्रह देखते हों उतने ही विवाह होते हैं और मंगल तथा सूर्य का नवांश जो सप्तमभाव में हो तथा सूर्य-बुध बैठें हों तो एक ही विवाह का योग जानिये ॥ १० ॥

शुक्रस्य वर्गेण युते कलत्रे बह्वङ्गनाप्तिर्भृगुवीक्षणेन ॥
शुक्रेक्षिते सौम्यगणेङ्गनानाम्बाहुल्यमेवाशुभवीक्षणान्न ११

सप्तमभाव में शुक्र का षड्वर्ग हो और शुक्र ही देखता हो तो बहुत स्त्रियों का लाभ होता है और शुभग्रह का षड्वर्ग हो तथा शुक्र देखते हों तो भी बहुत स्त्रियां होती हैं और जो पापग्रह देखता हो तो स्त्रियों का अभाव होता है ॥ ११ ॥

महीसुते सप्तमभावयाते कान्तावियुक्तः पुरुषस्तदा स्यात् ॥
मन्देन दृष्टेम्रियतेपि लब्ध्वा शुभग्रहालोकनवर्ज्जितेऽस्मिन् १२

जो मंगल सातवें घर में बैठे तो स्त्री का वियोग होता है और जो शनि की दृष्टि हो तो स्त्री मिले परन्तु थोड़े काल में मर जाय जो शुभग्रह न देखता हो तो ऐसा योग जानना ॥ १२ ॥

पत्नीस्थाने यदा राहुः पापयुग्मेन वीक्षितः ॥
पत्नीयोगस्तदा न स्याद्भूतापि म्रियते चिरात् १३

जो सप्तम में राहु हो और दो पापग्रह देखते हों तो उसको स्त्री नहीं मिलती है और जो कहीं मिली भी तो बहुत दिन जीती नहीं है ॥ १३ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे राहुसम्भवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्य्या न जीवति १४

इति सप्तमभाव विचारः ॥

जिसके सातवें राहु, छठे मंगल और आठवें शनैश्चर हों तो उसकी स्त्री जीती नहीं है ॥ १४ ॥

इति सप्तमभाव विचार ।

अथ संक्षेपतोऽष्टमभाव विचारः ॥

नद्युत्तरात्यन्तवैषम्यदुर्गं शस्त्रं चायुः संकटे चेति सर्वम् ॥
रन्ध्रस्थाने सर्वदा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः १

संक्षेप से अष्टमभाव का विचार ।

बड़ों की आज्ञा माननेवाले जातक के विद्वानों को चाहिये कि अष्टमभाव से नदी के पार उतरना, अत्यन्त विषमस्थान और शस्त्रप्रहार, आयुर्दाय और समस्त संकटों का विचार करें ॥ १ ॥

तुर्य्यस्थाने यदा भानुः शशिना च विलोकितः ॥
यदि नो वीक्षितः सौम्यैर्मरणन्तत्र निर्द्दिशेत् २

चौथे घर में सूर्य हों और चन्द्रमा उसको देखता हो तथा शुभग्रह और कोई देखता न हो तो उस बालक की मृत्यु जानना ॥ २ ॥

होराविद्भिश्चाष्टमस्थानयाते नानाभेदैर्यत्फलं तत् प्रदिष्टम् ॥
रिष्टाध्याये चापि निर्य्याणके वा यत्नान्नूनम्प्रोच्यते तच्च सर्वम् ३
रिष्टाध्याये निर्य्याणे वाग्रे सविशेषन्निरूपयिष्यामः ॥

इति संक्षेपतोऽष्टमभाव विचारः ।

जो प्राचीन आचार्यों ने अष्टमस्थान के फल विविध प्रकार के भेदों से कहे हैं उन सब फलों को अरिष्टाध्याय और निर्याण विचार में अवश्य ही यत्नपूर्वक कहेंगे ॥ ३ ॥

अरिष्टाध्याय और निर्याण में अष्टमभाव का विशेष फल आगे लिखेंगे ॥

इति अष्टमभाव विचार ।

—:०:—

अथ भाग्यभाव विचारः ।

धर्म्मक्रियायां हि भवेत्प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिर्व्विमलं च शीलम् ॥
तीर्थप्रयाणम्प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदम्प्रदिष्टम् १

भाग्यभाव का विचार ।

नवमभाव से धर्मक्रिया में मन की प्रवृत्ति और भाग्य की उत्पत्ति, निर्मल शील स्वभाव, तीर्थयात्रा, और नम्रता इन सबका विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

विहाय सर्व्वं गणकैर्विचिन्त्यं भाग्यालयं केवलमत्र यत्नात् ॥
आयुश्च माता च पिता च वंशो भाग्यान्वितेनैव भवन्ति धन्याः २

ज्योतिर्विद् को चाहिये कि बारहों भावों के विचारों को छोड़कर प्रथम भाग्य भाव का विचार करें क्योंकि जो भाग्यवान् हैं उसी के आयुर्दाय, माता, पिता और वंश ये सब धन्य हैं ॥ २ ॥

मूर्तेश्चापि निशापतेश्च नवमम्भाग्यालयं कीर्त्तितं-
तत्तत्स्वामियुतेक्षितं प्रकुरुते भाग्यं स्वदेशोद्भवम् ॥
चेदन्यैर्विषयान्तरेत्र शुभदाः स्वोच्चादिपाः सर्व्वदा
कुर्य्युर्भाग्यमसाधवोतिविबला दुःखोपलब्धिम्पराम् ३

लग्न से या चन्द्रमा से जो नवमस्थान है वह भाग्यभाव है उसके स्वामी अपने भाव में बैठें या देखें तो उसका भाग्योदय स्वदेश अर्थात् अपने ही देश में

होता है और जो भाग्यभाव को अपने स्वामी न देखें और शुभग्रह देखते हों तो उसका भाग्योदय परदेश में होना चाहिये और जो भाग्याधीश अपने उच्चादि राशि में बली होकर बैठें या देखें तो उसका भाग्योदय सर्व्वदा रहता है और जो ग्रह निर्ब्बल हों या पापग्रह देखते हों तो बड़े कष्ट से भाग्य का उदय होता है ॥ ३ ॥

भाग्येश्वरो भाग्यमतोस्ति किंवा सुस्थानगः सारविराजमानः ॥
भाग्याश्रितः कोस्ति विचार्य्यसर्व्वमत्यल्पमल्पम्परिकल्पनीयम् ४

भाग्य का स्वामी भाग्यभाव में हो अथवा केन्द्र-त्रिकोण में बली होकर बैठा हो तो उसका भाग्य उदय होता है और उसी भाग्याधीश के बलानुसार अल्प और अति अल्प भाग्य का विचार जानना ॥ ४ ॥

तनुत्रिसूनूपगतो ग्रहश्चेद्यो वाधिवीर्यो नवमम्प्रपश्येत् ॥
यस्य प्रसूतौ सुतभाग्यशाली विलासशीलो बहुलार्थयुक्तः ५

कोई ग्रह लग्न में या तीसरे या पांचवें स्थान में अत्यन्त बली होकर नवम स्थान को देखे तो उसके भाग्य का उदय और पुत्रादि सुख तथा अनेक पदार्थ युक्त बड़ा धनी होता है ॥ ५ ॥

चेद्भाग्यगामी खचरः स्वगेहे सौम्येक्षितो यस्य नरस्य सूतौ ॥
भाग्याधिशाली स्वकुलावतंसो हंसो यथा मानसराजमानः ६

कोई ग्रह नवम स्थान में बैठा हो और वह घर उसी ग्रह का हो तथा कोई शुभ ग्रह उसको देखता हो तो वह बड़ा भाग्यशाली और अपने कुल का प्रकाश करनेवाला होता है जैसे मानसरोवर में हंस ॥ ६ ॥

पूर्णेन्दुयुक्तौ रविभूमिपुत्रौ भाग्यस्थितौ सत्त्वसमन्वितौ च ॥
वंशानुमानात्सचिवं नृपं वा कुर्व्वन्ति ते सौम्यदृशं विशेषात् ७

जिसके भाग्यस्थान में पूर्णचन्द्रमा के साथ सूर्य और मंगल बली होकर बैठें तो वह अपने वंश के अनुसार राजा वा राजा का मंत्री होता है और जो शुभग्रह की दृष्टि हो तो अवश्य ही पूर्वोक्त फल होता है ॥ ७ ॥

स्वोच्चोपगो भाग्यगृहे नभोगो नरस्य योगं कुरुते सुलक्ष्म्या ॥
सौम्येक्षितोसौ यदि सौम्यपालं दन्तावलोत्कृष्टविलासशीलः ८

इति भाग्यभाव विचारः ।

जो भाग्यस्थान में कोई शुभग्रह अपनी उच्चराशि में बैठा हो तो वह बहुत धन की प्राप्ति कराता है और जो उसको शुभग्रह भी देखता हो तो उसको हाथी की सवारी मिले और वह बड़ा सुख भोग करनेवाला होवे ॥ ८ ॥

इति भाग्यभाव विचार ॥

अथ दशमभाव विचारः।

व्यापारमुद्रानृपमानराज्यम्प्रयोजनश्चापि पितुस्तथैव ॥
महत्पदाप्तिः खलु सर्वमेतत् राज्याभिधाने भवने विचार्य्यम् १

दशमभाव का विचार।

व्यापार, मुद्रा, राजमान्य और राजसम्बन्धी प्रयोजन, पिता के सुख दुःख का विचार, महत्पद की प्राप्ति ये सब दशमभाव से विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

समुदितमृषिवर्यैर्मानवानाम्प्रयत्ना-
दिह हि दशमभावे सर्व्वकर्म्मप्रकाशम् ॥
गगनगपरिदृष्ट्या राशिखेटस्वभावैः
सकलमपि विचिन्त्यं सत्त्वयोगात्सुधीभिः २

दशम स्थान में प्राप्त ग्रहों की दृष्टि से और राशि के, स्वभाव से तथा ग्रहों के बलाबल से प्राचीन आचार्यों ने दशमभाव से यत्नपूर्वक सम्पूर्ण उत्तम-अधम कर्मों का निर्णय करना कहा है ॥ २ ॥

तनोः सकाशाद्दशमे शशांके वृत्तिर्भवेत्तस्य नरस्य नित्यम् ॥
नानाकलाकौशलवाग्विलासैः सर्व्वोद्यमैः साहसकर्म्मभिश्च ३

जन्मलग्न से दशमभाव में जिसके चन्द्रमा बैठा हो तो वह पुरुष अनेक प्रकार की कारीगरी और वाग्विलास से तथा अनेक उद्यम वा साहस के कर्मों से नित्य धन पैदा करता है ॥ ३ ॥

तनोः शशांकाद्दशमे बलीयान् स्याज्जीवनं तस्य खगस्य वृत्त्या ॥
बलान्विताद्वर्गपतेस्तु यद्वा वृत्तिर्भवेत्तस्य खगस्य पाके ४

लग्न से या चन्द्रमा से दशमभवन में जो ग्रह बली होकर बैठा हो, उसी ग्रह के

अनुसार, उसकी वृत्ति कहना अथवा बली षड्वर्ग के स्वामी ग्रह की दशा में उस पुरुष की वृत्ति कहना चाहिये ॥ ४ ॥

दिवामणिः कर्म्मणि चन्द्रतन्वोर्द्रव्याण्यनेकोद्यमवृत्तियोगात् ॥
सत्त्वाधिकत्वन्नरनायकत्वम्पुष्टत्वमंगे मनसः प्रसादः ५

चन्द्रमा या लग्न से दशमभाव में जिसके सूर्य बैठा हो तो उस पुरुष को अनेक प्रकार की वृत्ति और अनेक यत्न से धन का लाभ होता है और जो वही सूर्य्य उच्च आदि बल युक्त होकर बैठा हो तो शरीर को पुष्ट, मन को प्रसन्न और राज्य सुख को करता है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दुतः कर्म्मणि चेन्महीजः स्यात्साहसःक्रौर्यंनिषादवृत्तिः ॥
नूनन्नराणां विषयाभिसक्तिर्दूरे निवासः सहसा कदाचित् ६

लग्न या चन्द्रमा से दशमस्थान में मंगल बैठा हो तो साहसकर्म या क्रूरकर्म या निषादवृत्ति से धनलाभ होता है तथा विषयासक्त और एकाएकी घर से दूर निवास करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

लग्नेन्दुभ्यां कर्म्मगो रौहिणेयः कुर्य्याद्द्रव्यन्नायकत्वं बहूनाम् ॥
शिल्पेभ्यासः साहसं सर्व्वकार्ये विद्वद्वृत्त्या जीवितं मानवानाम् ७

लग्न और चन्द्रमा से जो दशमभाव में बुध बैठा हो तो धनवान्, बहुतजनों का स्वामी, कारीगरी के कार्य में निपुण, सब कामों में साहसी और पाण्डित्य से जीविका करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

विलग्नतः शीतमयूखतो वा माने मघोनस्सचिवो यथा स्यात् ॥
नानाधनाभ्यागमनानि पुंसां विचित्रवृत्त्या नृपगौरवञ्च ८

लग्न या चन्द्रमा से दशमभाव में जो बृहस्पति बैठा हो तो अनेक प्रकार से धन प्राप्ति कराता है और राजसम्बन्ध से उसका बड़ा विभव होता है ॥ ८ ॥

होरायाश्च निशाकराद् भृगुसुतो मेषूरणे संस्थितो
नानाशास्त्रकलाकलापविलसद्वृत्त्यादिशेज्जीवनम् ॥
दाने साधुमतिं तथा विनयतां कामं धनाभ्यागमं
मानम्मानवनायकादविरलं शीलं विशालं यदा ९

लग्न या चन्द्रमा से जो शुक्र दशमभाव में स्थित हो तो अनेक शास्त्रों के पढ़ने

से और अनेक चतुराई से धन की प्राप्ति करे और दान में साधुमति, नम्रता, धनागम, उत्तमशील स्वभाव और हमेशा राजा से प्रतिष्ठा व मान पाता है ॥ ९ ॥

होरायाश्च सुधाकराद् रविसुतः सूतौ खमध्यस्थितौ
वृत्तिं हीनतरां नरस्य कुरुते कार्श्यं शरीरे सदा ॥
खेदं वादभयञ्च धान्यधनयोर्हीनत्वमुच्चैर्मन-
श्चित्तोद्वेगसमुद्भवेन चपलं शीलं च नो निर्म्मलम् १०

लग्न से या चन्द्रमा से जिसके दशमभाव में शनि स्थित होता है वह नीचवृत्ति से जीविका करनेवाला, कृश शरीर, रोगवान्, सज्जनों से विवाद, धनधान्य हीन, मलिन और चित्त में उद्वेग, चपल स्वभाव और दुष्टस्वभाव होता है ॥ १० ॥

सूर्य्यादिभिर्व्योमचरैर्विलग्ना-
दिन्दोः स्वपाके क्रमशः प्रकल्प्या ॥
अर्थोपलब्धिर्जनकाङ्गनन्याः
शत्रोर्हिताद् भ्रातृकलत्रभृत्यात् ११

लग्न या चन्द्रमा से दशम स्थान में सूर्य बैठा हो तो पिता से धन का लाभ कराता है। इसी तरह चन्द्रमा माता से, मङ्गल शत्रु से, बुध मित्र से, बृहस्पति भाई से, शुक्र स्त्री से और शनि दास से धन की प्राप्ति कराता है। सब ग्रह अपनी अपनी दशा में फल देते हैं ॥ ११ ॥

रवीन्दुलग्नास्पदसंस्थितांशपतेस्तु वृत्त्या परिकल्पयेत्ताम् ॥
सदौषधौर्णादितृणैः सुवर्णैर्दिवामणिर्वृत्तिविधिं विदध्यात् १२

सूर्य, चन्द्रमा और लग्न इन तीनों से जो दशमभाव के स्वामी हैं उनमें से जो बली होकर जिस ग्रह के नवांशां में बैठा होता है तो उसी के स्वभाव तुल्य वृत्ति कहना चाहिये। सूर्य हो तो श्रेष्ठ औषधी से, ऊर्ण वस्त्र से और तृण से जीविका होती है ॥ १२ ॥

नक्षत्रनाथोऽत्र कलत्रतश्च जलाशयोत्पन्नकृषिक्रियादेः ॥
कुजाग्निसत्साहसधातुशस्त्रैः सोमात्मजः काव्यकलाकलापैः १३

चन्द्रमा हो तो स्त्री से, जल से या खेती आदि से धन मिलता है और मङ्गल हो

तो अग्नि, साहस, स्वर्णादि धातु या शस्त्र से जीविका होती है एवं बुध हो तो काव्य रचना या बुद्धिबल से धन मिलता है ॥ १३ ॥

जीवो द्विजात्माकरदेवधर्म्मः शुक्रो महिष्यादिकरौप्यरत्नैः ॥
शनैश्चरो नीचतरप्रकारैः कुर्यान्नराणां खलु कर्मवृत्तिम् १४

जो बृहस्पति हो तो ब्राह्मण से या उत्तम धर्मसाधन, देवार्चन इत्यादि से धन का लाभ होता है और जो शुक्र हो तो महिषी आदि से या चाँदी अथवा रत्न से धन का आगम जानना तथा शनि हो तो नीचकर्म करने से धन मिलता है ॥१४॥

कर्मस्वामी ग्रहो यस्य नवांशे परिवर्त्तते ॥
तत्तुल्यकर्म्मणा वृत्तिं निर्दिशन्ति मनीषिणः १५

दशमभाव का स्वामी जिसके नवांशा में बैठा हो उसी के तुल्य कर्मों से पण्डित जन जीविका को कहते हैं ॥ १५ ॥

मित्रारिगेहोपगतैर्नभोगैस्ततस्तदर्थः परिकल्पनीयः ॥
तुंगे पतंगे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् १६

जो ग्रह मित्रगृह में या शत्रुगृह में स्थित होते हैं वे वैसा ही मित्र या शत्रु से धन का लाभ कराते हैं और जो सूर्य अपने उच्च में या स्वस्थान में अथवा मूलत्रिकोण में बैठा हो तो अपने बाहुबल से ही अर्थ की सिद्धि होती है ॥ १६ ॥

लग्नार्थलाभोपगतैः सवीर्य्यैः शुभैर्भवेद्भूधनसौख्यमुच्चैः ॥
इतीरितं पूर्वमुनिप्रवर्यैर्बलानुमानात्परिचिन्तनीयम् १७

इति दशमभाव विचारः ।

जिसके बलवान् होकर लग्न में या दूसरे या ग्यारहें स्थान में शुभग्रह बैठे हों तो उसको पृथ्वी से उत्पन्न बहुतसा धन लाभ होता है । ग्रहों के बलानुसार फल का विचार करना चाहिये ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ १७ ॥

इति दशमभाव विचार ।

—:०:—

अथ लाभभावविचारः ।

गजाश्वहेमाम्बररत्नजातमांदोलिकामङ्गलमण्डनानि ॥
लाभः किलैषामखिलं विचार्य्यमेतच्च लाभस्य गृहे ग्रहज्ञैः १

लाभभाव का विचार ।

ज्योतिषी को चाहिये कि हाथी, घोड़ा, सोना, वस्त्र, आभूषण, सब रत्न, पालकी तथा अन्य माङ्गलिक शृङ्गार की वस्तु इन सब चीजों का विचार लाभभाव से करे ॥ १ ॥

सूर्य्येण युक्ते च विलोकिते वा लाभालये तस्य गणोत्र चेत्स्यात् ॥
भूपालतश्चौरकुलात्कलेर्वा चतुष्पदादेर्बहुधा धनाप्तिः २

जो लाभभाव में सूर्य बैठा हो या देखता हो अथवा लाभ भाव में सूर्य का षड्वर्ग हो तो राजा से, चोरों से, कलह से अथवा चौपाये जीवों से धन का लाभ होता है ॥ २ ॥

चन्द्रेण युक्तं च विलोकितं वा लाभालये चन्द्रगणाश्रितं चेत् ॥
जलाशयस्त्रीगजवाजिवृद्धिः पूर्णे भवेत्क्षीणतरे विलोमम् ३

जो लाभभाव में पूर्ण होकर चन्द्रमा बैठा हो या दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा का षड्वर्ग हो तो जलाशय से, स्त्रीपक्ष से अथवा हाथी, घोड़ा आदि से धन का लाभ होता है और जो क्षीण चन्द्रमा हो तो विपरीत फल अर्थात् इन चीजों की हानि होती है ॥ ३ ॥

लाभालयं मंगलयुक्तदृष्टं प्रकृष्टभूषामणिहेमलब्धिः ॥
विचित्रयात्राबहुसाहसं स्यान्नानाकलाकौशलबुद्धियोगैः ४

जो लाभभाव मङ्गल करके या युक्त हो तो उत्तम रत्न-सुवर्ण के आभूषणों का लाभ होता है और अपने साहस से देशदेशान्तर की यात्रा और शिल्पादि में तेज बुद्धि होती है ॥ ४ ॥

लाभे सौम्यगणाश्रिते सति युते सौम्येन संवीक्षिते
नाना काव्यकलाकलापविधिना शिल्पेन लिप्या सुखम् ॥
युक्तिर्द्रव्यमयो भवेद्धनचयः सत्साहसैरुद्यमैः
सख्यं चापि वणिग्जनैर्बहुतरं क्लीबैर्नृणां कीर्त्तितम् ५

जो लाभालय में बुध बैठा हो या देखता हो और शुभग्रह भी देखते हों तो अनेक काव्यों की रचना से, कारीगरी से अथवा लिखने के काम से सुख होता है और धन का संचय साहस से वा अनेक उद्यमों से अथवा वणिक् जनों से या क्लीबजनों से होता है ॥ ५ ॥

यज्ञक्रियासाधुजनानुयातो राजाश्रितोत्कृष्टकृपो नरः स्यात् ॥
द्रव्येण हेमप्रचुरेण युक्तो लाभे गुरोर्व्वर्ग्गयुगीक्षणं चेत् ६

जो लाभालय में गुरु बैठा हो या देखता हो अथवा गुरु का षड्वर्ग हो तो यज्ञकर्म से, साधुजनों के संग से, राजा के आश्रय से सोना-चाँदी आदि बहुत से धन का लाभ होता है ॥ ६ ॥

लाभालयं भार्ग्गववर्ग्गजातं युतेक्षितं वा यदि भार्गवेण ॥
वेश्याजनैर्वापि गमागमैर्वा सद्रौप्यमुक्ताप्रचुरास्वलब्धिः ७

और जो लाभस्थान में शुक्र बैठे या दृष्टि हो या शुक्र का षड्वर्ग हो तो वेश्या जनों से या परदेश जाने आने से धन और मोती आदि का बहुत लाभ होता है ॥ ७ ॥

लाभवेश्मनि शनीक्षितियुक्ते तद्गणेन सहिते सति पुंसाम् ॥
नीललोहमहिषीगजलाभो ग्रामवृन्दपुरगौरवमिश्रः ८

जो शनैश्चर लाभभाव में बैठा या देखता हो या शनिका षड्वर्ग हो तो उस पुरुष को नील के व्यापार से, लोहे से अथवा भैंस-हाथी के व्यापार से लाभ रहे और बहुत ग्रामों से धन और बड़प्पन की वृद्धि होवे ॥ ८ ॥

युक्तेक्षिते लाभगृहे सुखाख्ये वर्गे शुभानां समवस्थिते च ॥
लाभो नराणां बहुधाथवास्मिन् सर्वग्रहैर्युक्तनिरीक्ष्यमाणे ९

इति लाभभावविचारः।

जो सब ग्रह लाभस्थान को देखते हों और लाभस्थान में व सुखस्थान में शुभग्रहों की युति या दृष्टि या शुभग्रहों का षड्वर्ग हो तो मनुष्य को निरन्तर लाभ हुआ करता है ॥ ९ ॥

इति लाभभाव विचार।

—:०:—

अथ व्ययभावविचारः।

हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बन्ध एव च ॥
सर्वमेतद्व्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नतः १

व्ययभाव का विचार।

व्ययभाव से हानि, दान, खर्च, दंड और बंधन इन सबका विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

व्ययालये क्षीणकरः कलावान् सूर्योथवा द्वावपि तत्र संस्थौ ॥
द्रव्यं हरेद्भूमिपतिस्तु तस्य व्ययालये वा कुजदृष्टियुक्ते २

जिसके व्ययभाव में क्षीणचन्द्रमा या सूर्य अथवा दोनों बैठे हों तो उसका धन राजा हर लेता है और जो मंगल की दृष्टि हो तो भी राजा धन हरता है ॥२॥

पूर्णेन्दुसौम्येज्यसिताव्ययस्थाः कुर्वन्ति संस्थां धनसञ्चयस्य ॥
प्रान्त्यस्थिते सूर्य्यसुते कुजेन युक्तेक्षिते वित्तविनाशनं स्यात् ३

इति व्ययभावविचारः।

जो पूर्णचन्द्रमा, बृहस्पति, बुध और शुक्र ये व्ययभाव में बैठे हों तो धन संचय का ढंग करते हैं और यदि बारहें मंगल से युक्त या दृष्टि होकर शनि बैठा हो तो धन का नाश करता है ॥ ३ ॥

इति व्ययभावविचार।

अथ भावफलोपयुक्तत्वेन रिष्टाध्यायो निरूप्यते ॥

लग्नेन्दोश्च कलत्रपुत्रभवने स्वस्वामिसौम्यग्रहै-
र्युक्ते वाथ विलोकिते खलु तदा तत्प्राप्तिरावश्यकी ॥
लग्ने चेत्सविता स्थितो रविसुतो जायाश्रितो मृत्युकृत्
जायायाश्च महीसुतः सुतगतः कुर्यात्सुतानां क्षतिम् १

अब भावफल का उपयोगी रिष्टाध्याय का निरूपण करते हैं।

लग्न से या चन्द्रमा से पांचवां या सातवां भवन अपने स्वामी करके या शुभग्रहों करके देखा जाता हो तो स्त्री-पुत्रों की प्राप्ति अवश्य होती है और जो सूर्य लग्न में बैठा हो और शनैश्चर सातवें बैठा हो तो स्त्री का विनाश करते हैं अथवा मंगल पञ्चम में बैठा हो तो पुत्रों का विनाश करता है ॥ १ ॥

असौम्यमध्यस्थितभार्गवश्चेत्पातालरन्ध्रे खलखेटयुक्ते ॥
सौम्यैरदृष्टे भृगुजे च पत्नीनाशो भवेत्पाशहुताशनाद्यैः २

जिसके चौथे या आठवें भाव में पापग्रह बैठें हों और शुक्र पापग्रहों के मध्य में बैठा हो तथा उसे शुभग्रह कोई न देखता हो तो उसकी स्त्री का विनाश फाँसी या अग्नि आदि से होता है ॥ २ ॥

दिवाकरेन्दू व्ययवैरियातौ जायापती एकविलोचनौ स्तः ॥
कलत्रधर्म्मात्मजगौ सितार्कौ पुमान्भवेत्क्षीणकलत्र एव ३

बारहें सूर्य व छठे चन्द्रमा बैठें हों तो स्त्री पुरुष दोनों एक २ नेत्र के होते हैं और सातवें या नवें या पांचवें शुक्र और सूर्य दोनों बैठे हों तो उस पुरुष को स्त्री का सुख नहीं होता है ॥ ३ ॥

भसंधियाते च सिते स्मरस्थे तनौ प्रपन्ने नतु भानुसूनौ ॥
बन्ध्यापतिःस्यान्मनुजस्तदानीं सुतालयन्नो शुभदृष्टियुक्तम् ४

जो सातवें स्थान की संधि में शुक्र बैठा हो और लग्न में शनैश्चर नहीं बैठा हो तथा पंचमभाव में कोई शुभग्रह न बैठा हो और न देखता हो तो उसकी स्त्री बन्ध्या होती है ॥ ४ ॥

क्रूराश्च होराः स्मररिष्फयाताः सुतालये हीनबलः कलावान् ॥
एवं प्रसूतौ किल यस्य योगो भवेत्स भार्य्यातनयैर्विहीनः ५

जो लग्न में, सातवें और बारहें क्रूरग्रह बैठें हों और पंचमभाव में क्षीण चन्द्रमा बैठा हो, ऐसा योग जिसके जन्मसमय में हो वह स्त्री-पुत्रों से विहीन होती है॥५॥

सितेऽस्तयाते शनिभौमवर्गे भौमार्कदृष्टे परदारगामी ॥
मन्दारचन्द्रा यदि संयुताः स्युः पौंश्चल्यसक्तौ रमणीनरौ स्तः ६

जिसके शुक्र सप्तम हो और मंगल शनि के षड्वर्ग में हो या मङ्गल और सूर्य देखते हों तो पराई स्त्री का संग करे अथवा जो शनि, भौम और चन्द्रमा ये शुक्र के संग में हों तो स्त्री पुरुष दोनों व्यभिचारी होते हैं ॥ ६ ॥

द्यूनेर्कजारौ सभृगौ शशांकादपुत्रभार्य्यं कुरुतो नरन्तौ ॥
स्यातां नृनारीखगयोःस्मरस्थौ सौम्येक्षितौ तौ शुभदौनृनार्यौ ७

जो चन्द्रमा से सप्तमभाव में शनि, भौम और शुक्र बैठें हों तो पुत्र-स्त्री का सुख न होवे । जो सप्तमभाव में पुरुषग्रह बैठा हो और शुभग्रह देखता हो तो पुरुष को सुख और जो स्त्रीग्रह उसी स्थान में बैठा हो और शुभग्रह देखता हो तो स्त्री को सुख कहना चाहिये ॥ ७ ॥

परस्परांशोपगतौ रवींदू रोषामयन्तौ कुरुतो नराणाम् ॥
एकैकगेहोपगतौ तु तौ वा तमेव रोगं कुरुतो नितान्तम् ८

जो सूर्य, चन्द्रमा के नवांश में और चन्द्रमा, सूर्य के नवांश में बैठा हो तो दोनों स्त्री पुरुष क्रोधी होते हैं और जो एक सूर्य ही बैठे तो पुरुष रोगी होता है और जो चन्द्रमा सूर्य के नवांश में हो तो उसकी स्त्री हमेशा रोगिणी होती है ॥ ८ ॥

मंदावनीसूनुरवींदवश्चेन्द्रन्ध्रारिवित्तव्ययभावसंस्थाः ॥
आंध्यं भवेत्सारसमन्वितस्य खेटस्य दोषात्पुरुषस्य नूनम् ९

जो शनैश्चर, मङ्गल, सूर्य और चन्द्रमा ये क्रम से आठवें, छठे, दूसरे और बारहें भाव में स्थित हों तो मनुष्य अन्धा होता है, जो ग्रह इन स्थानों में हो उसी ग्रह के दोष से अन्धयोग होता है ॥ ९ ॥

मृगालिगोकर्कटकास्त्रिकोणे प्रसूतिकाले खलखेटयुक्ताः ॥
निरीक्षिता वा जनयंति जातं कुष्ठेन युक्तं प्रवदन्ति संतः १०

जिसके पाँचवें और नवें स्थान में मकर, वृश्चिक, वृष और कर्क ये लग्न पापग्रह से युक्त हों या पापग्रह देखते हों तो उस पुरुष के कुष्ठरोग होता है ऐसा सज्जन लोग कहते हैं ॥ १० ॥

मन्दार्कचन्द्रास्त्रिसुतायधर्म्मे सौम्यैर्न युक्ता न च वीक्षिताश्चेत् ॥
कर्णप्रणाशं जनयंति नूनं स्मरस्थितास्ते दशनाभिघातम् ११

शनि, सूर्य, चन्द्रमा ये तीनों ग्रह तीसरे, पाँचवें, नवें या ग्यारहें बैठें हों और शुभग्रह कोई साथ न हो और न देखता हो तो कान से बधिर होता है और वही तीन ग्रह जो सातवें बैठे हों तो दांतों का विनाश करते हैं ॥ ११ ॥

ग्रस्ते विधौ लग्नगताश्च पापास्त्रिकोणगा जन्म पिशाचकस्य ॥
ग्रहस्ते विधौ लग्नगते तथैव नेत्रोपघातः खलु कल्पनीयः १२

चन्द्रमा पापग्रह के साथ हो और लग्न में तथा नवें और पाँचवें भी पापग्रह हों तो पिशाच स्वभाववाला होता है और पापयुक्त चन्द्रमा लग्न में हो तो नेत्र का विनाश करता है ॥ १२ ॥

लग्नस्थिते देवपुरोहितेऽस्ते शनौ च वाताधिकता नितान्तम् ॥
जीवे विलग्नेऽवनिनन्दनेऽस्ते मदोद्धतः स्यात्पुरुषो विशेषात् १३

जिसके लग्न में बृहस्पति और सातवें शनैश्चर हो तो वह वात-व्याधि से निरन्तर रोगी बना रहता है और जिसके बृहस्पति लग्न में और मंगल सातवें हो तो वह मद से उत्पथगामी होता है ।। १३ ।।

स्मरे त्रिकोणे धरणीतनूजे शनौ तनौ वा पवनप्रकोपः ।।
क्षीणेन्दुमन्दौ व्ययभावयातौ तदापि वाताधिकता नराणाम् १४

सातवें, पाँचवें या नवें मंगल बैठा हो और लग्न में शनैश्चर हो तो वात-व्याधियुक्त शरीर होता है तथा क्षीणचन्द्रमा और शनैश्चर बारहें भाव में बैठे हों तो भी मनुष्य वातरोग से पीड़ित होता है ।। १४ ।।

वंशच्छेदकरौ शशांकभृगुजौ क्रूरौ स्वकामांबुपे-
शिल्पी केंद्रगतार्किणा बुधयुतस्त्र्यंशे समालोकिते ।।
अंत्ये देवगुरौ दिनेश्वरयुतस्यांशे च दासीयुतो
नीचः कामगयोः खरांशुशशिनोः सौरेण संदृष्टयोः १५

जो चन्द्रमा और शुक्र क्रूरग्रहों के साथ दूसरे, सातवें और चौथे पड़ें तो वंशच्छेद योग अर्थात् पुत्रहीन होता है और जो शनैश्चर केन्द्र में बुध के साथ या द्रेष्काण में अथवा बुध से देखा जाता हो और बृहस्पति सूर्य के नवांशा में बारहें बैठा हो तो वह पुरुष दासीगमन करे तथा चन्द्रमा और सूर्य सप्तमभाव में बैठें हों और शनैश्चर से देखे जाते हों तो नीचकर्म करनेवाला होता है ।। १५ ।।

वयो राशिं स्वनक्षत्रमेकीकृत्य पृथक् पृथक् ।।
द्विचतुस्त्रिगुणं कृत्वा सप्ताष्टरसभाजितम् १६
आद्यन्तयोर्भवेद्दुःखी मध्ये शून्यं धनक्षयः ।।
स्थानत्रये भशेषन्तु मृत्युः सांकेषु वै जयी १७

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे रिष्टाध्यायः ।। २ ।।

वर्त्तमान वर्ष का अङ्क और मेषराशि आदि की गणना से राशि का अङ्क और अश्विन्यादि नक्षत्र की गणना से नक्षत्र का अंक इन तीनों की संख्या को एकत्र कर तीन स्थानों में स्थापित करे । फिर प्रथमांक को दुगुना, मध्यांक को चौगुना और अन्त्यांक को तिगुना करे तदनंतर पहिले अंक को जो दुगना किया है उसमें सात का भाग, दूसरा जो चौगुना किया है उसमें आठ का भाग तथा जिसको तिगुना किया है उसमें छः का भाग देवे ।। १६ ।।

आदि और अन्त्य में जो शून्य बचे तो दुःख तथा मध्य में शून्य बचे तो धनका नाश और जो तीनों स्थानों में शून्य आवे तो उस वर्ष में मृत्यु होती है और जो तीनों स्थानों में अंक शेष रहें तो उस वर्ष में जय औ सुखप्राप्ति होती है ॥ १७ ॥

इति श्रीदैवज्ञ ढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां रिष्टाध्यायः ॥ २॥

अथ रविभावविचारः।

लग्नेऽर्केल्पकचः क्रियालसतनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतः
कामी लोचनरुक् सुकर्कशतनुश्शूरो क्षमी निर्घृणः ॥
फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थिति हरः सिंहे निंशाधः पुमान्
दारिद्रोपहतो विनष्टतनयः संस्थस्तुलासंज्ञके १

रवि के भाव का विचार।

जिसके तनुभाव में सूर्य हो तो वह थोड़ें केशवाला, कार्य करने में आलसी, क्रोधी, बहुत ऊँचा, कामासक्त, नेत्ररोगी, कर्कश शरीर, शूर, क्षमायुक्त और घृणारहित होता है और जो सूर्य कर्कलग्न में हो तो नेत्र में फुल्ली होती है और जो मेष में सूर्य हो तो एकस्थान में निवास न होवे और जो सिंह में हो तो रातौंधी हो तथा तुला में हो तो सन्तानरहित व दरिद्री होता हैं ॥ १ ॥

धनसुतोत्तमवाहनवर्जितो हतमतिः सुजनोज्झितसौहृदः ॥
परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणेर्द्रविणे यदि संस्थितिः २

जो धनस्थान में सूर्य हो तो धन, पुत्र और वाहन से रहित तथा बुद्धि से हीन, मित्रों का विरोधी और पराये घर में रहनेवाला होता है ॥ २ ॥

प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्णचित्तोनुचरान्वितश्च ॥
मितानुजः स्यान्मनुजो बलीयान् दिनाधिराजे सहजेधिसंस्थे ३

जो सूर्य तीसरे हो तो प्रिय बोलनेवाला, धन-वाहनवाला, अच्छे कान और चित्तवाला, दास-दासीयुक्त, थोड़े भाइयोंवाला और बली होता है ॥ ३ ॥

सौख्येन यानेन धनेन हीनं तातस्य वित्तोपहतप्रवृत्तम् ॥
चलन्निवासं कुरुते पुमांसं पातालशाली नलिनीविलासी ४

जो सूर्य चौथे भाव में हो तो सुख, सवारी और धन से हीन, पिता का द्रव्य खर्चनेवाला और भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

स्वल्पापत्यं शैलदुर्गेशभक्तं सौख्यायुक्तं सत्क्रियार्थैर्विमुक्तम् ॥
भ्रांतं स्वांतं मानवं हि प्रकुर्य्यात् सूनुस्थाने भानुमान् वर्त्तमानः ५

जिसके पंचम स्थान में सूर्य हो तो वह थोड़े सन्तानवाला, दुर्गा और ईश्वरका भक्त, सुखहीन, श्रेष्ठ कर्म्म से विमुख, धनहीन और भ्रान्त चित्तवाला होता हैं ॥ ५ ॥

शश्वत्सौख्येनान्वितः शत्रुहंता सत्त्वोपेतश्चारुयानो महोजाः ॥
पृथ्वीभर्त्तुस्स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्रसंस्थो यदि स्यात् ६

शत्रुभाव में सूर्य के होने से निरन्तर सुखी, शत्रुओं को जीतनेवाला, सतोगुणी, बलयुक्त, सुन्दर वाहनवाला और राजा का मन्त्री होता है ॥ ६ ॥

श्रियाविमुक्तो हतकायकांतिर्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः ॥
नृपप्रकोपार्त्तिकृशो मनुष्यः सीमंतिनीसद्मनि पद्मिनीशे ॥ ७

जिसके सातवें भाव में सूर्य हो तो वह धनहीन, शोभाविहीन, भयभीत, रोगयुक्त, कुशील, राज के कोप से दुःखी और दुर्बल शरीर होता है ॥ ७ ॥

नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिं बुद्धिभ्रंशः पूरुषस्यातिरोषः ॥
अर्थाल्पत्वं कार्श्यमंगे विशेषादायुःस्थाने पद्मिनीप्राणनाथे ८

यदि सूर्य अष्टम स्थान में हो तो छोटे नेत्रोंवाला, बहुत शत्रुवाला, निर्बुद्धि, क्रोधी, थोड़े धनवाला और दुर्बल शरीर होता है ॥ ८ ॥

धर्म्मकर्म्मनिरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रजसुखान्वितः सदा ॥
मातृवर्गविषमो भवेन्नरस्त्रित्रिकोण भवने दिवामणौ ९

धर्मभाव में सूर्य हो तो धर्म-कर्म में निरत, श्रेष्ठ बुद्धि, पुत्र-मित्रादिकों से सुख पानेवाला और माताकुलका विरोधी होता है ॥ ९ ॥

सद्बुद्धिवाहनधनागमनानि नूनं
भूपप्रसादसुतसौख्यसमन्वितानि ॥
साधूपकारकरणं मणिभूषणानि
मेषूरणे दिनपतिः कुरुते नराणाम् १०

जो दशम में सूर्य हो तो श्रेष्ठ बुद्धि, वाहनसुख, निरन्तर धनलाभ, राजा की

कृपा, पुत्र का सुख और साधुजनों का उपकारी तथा रत्न-मणि-आभूषणों से युक्त बना रहता है ॥ १० ॥

गीतप्रीतिं चारुकर्म्मप्रवृत्तिं चंचत्कीर्त्तिं वित्तपूर्त्तिन्नितांतम् ॥
भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मानवानाम् ११

लाभभाव में जो सूर्य बैठा हो तो गानविद्या में प्रीति और श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, उत्तम कीर्ति, धन से पूर्ण और नित्य राजद्वार से धन का पानेवाला होता है ॥११॥

तेजोविहीने नयने भवेतां तातेन साकं गतचित्तवृत्तिः ॥
विरुद्धबुद्धिर्व्ययभावयाते कांते नलिन्याः फलमुक्तमार्यैः १२

इति रविभावविचारः।

बारहें घर में सूर्य के होने से नेत्रों में प्रकाश की कमी और पिता से विरोध करनेवाला तथा वैर बुद्धिवाला होता है ऐसा श्रेष्ठों ने कहा है ॥ १२ ॥

इति सूर्यभावविचार।

--:०:--

अथ चन्द्रभावविचारः।

दाक्षिण्यरूपधनभोगगुणैर्वरेण्य-
श्चंद्रे कुलीरवृषभाजगते विलग्ने ॥
उन्मत्तनोचबधिरो विकलोऽथ मूकः
शेषेषु ना भवति हीनतनौ विशेषात् १

चन्द्र के भाव का विचार।

जो चन्द्रमा कर्क, वृष और मेष राशि में बैठा हो तो दयावान्, रूपवान्, धनवान्, उत्तम भोगयुक्त एवं गुणी पुरुष होता है और जो शेषराशि हैं उनमें बैठा हो तो उन्मत्त, नीचकर्मी, विकल और मूक होता है ॥ १ ॥

सुखात्मजद्रव्ययुतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधौ द्वितीये ॥
क्षीणे स्खलद्वाग्विधनोऽल्पबुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फलतारतम्यम् २

जो धनभाव में पूर्ण चन्द्रमा बैठा हो तो निरन्तर सुखी, धन-पुत्रयुक्त और विनीत होता है और क्षीण हो तो देर में बोलनेवाला, धनहीन एवं अल्पबुद्धि होता है और जो न क्षीण, न पूर्ण चन्द्रमा हो तो मिला फल समझना ॥ २ ॥

हिंस्रः सगर्व्वः कृपणोल्पबुद्धिर्भवेन्नरो बन्धुजनाश्रयश्च ॥
दयामयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे प्रसूतौ ३

जिसके तीसरे चन्द्रमा हो वह हिंसक, अहंकारी, कृपण, अल्पबुद्धि, भाइयों के आधीन और दया व रोग से रहित होता है ॥ ३ ॥

जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम् ॥
प्रसूतिकाले कुरुते कलावान् पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ४

चौथे चन्द्रमा में जल से उत्पन्न धन मिलता है और कृषी, स्त्री, वाहन और पुत्र का सुख होता है तथा द्विज और देवता की भक्ति में प्रीति होती है ॥ ४ ॥

जितेन्द्रियः सत्यवचः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः ॥
सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालयेब्जः ५

पञ्चमभाव में चन्द्रमा के होने से जितेन्द्रिय, सत्यवक्ता, प्रसन्नचित्त, धनी, पुत्र सुखसमेत, सब वस्तुओं का संग्रही और शीलयुक्त होता है ॥ ५ ॥

मंदाग्निः स्यान्निर्दयः क्रौर्य्ययुक्तो नाल्पालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः ॥
रोषावेशात्यंतसंजातशत्रुः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथे नरः स्यात् ६

छठे चन्द्रमा बैठे तो मन्दाग्नि, निर्दयी, क्रूरकर्मी, आलसी, निष्ठुर, दुष्ट-स्वभाववाला, क्रोधी और बहुत शत्रुओंवाला होता है ॥ ६ ॥

महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च ॥
धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे चन्द्राननस्थानविराजमाने ७

सप्तम स्थान में चन्द्रमा हो तो बड़ा अभिमानी, कामी, क्षीणशरीर, धनहीन और विनयरहित होता है ॥ ७ ॥

नानारोगक्षीणदेहोतिनिःस्वश्चौराराातिक्षोणिपालाभितप्तः ॥
चित्तोद्वेगैर्व्याकुलो मानवः स्यादायुःस्थाने वर्त्तमाने हिमांशौ ८

जिसके अष्टमभाव में चन्द्रमा हो वह अनेक रोगों से क्षीणशरीर, दरिद्री, चौर और शत्रुजनों से पीड़ित, राजपक्ष से भयभीत और चित्त के उद्वेग से व्याकुल होता है ॥ ८ ॥

कलत्रपुत्रद्रविणोपपन्नः पुराणवार्त्ताश्रवणानुरक्तः ॥
सुकर्म्मसत्तीर्थपरो नरः स्याद्यदा कलावान्नवमालयस्थः ९

जिसके नवम चन्द्रमा हो तो वह स्त्री-पुत्र-धनसंयुक्त, पुराण वार्त्ता के श्रवण में अनुरागी, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला और तीर्थाटन करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्त्तिर्मूर्तिः सत्त्वसंतोषयुक्ता ॥
चञ्चल्लक्ष्मीश्शीलसंशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनीनायकश्चेत्

जिसके दशमभाव में चन्द्रमा हो उसको राजा से बहुत धन मिले और उत्तमकीर्त्ति, शील-संतोष से युक्त तथा शील को बढ़ानेवाली लक्ष्मी से युक्त होता है ॥ १० ॥

सन्माननानाविधवाहनाप्तिः कीर्तिश्च सद्भोगगुणोपलब्धिः ॥
प्रसन्नतालाभविराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम् ११

लाभभाव में चन्द्रमा बैठा हो तो सन्मान और उत्तम वाहनों की प्राप्ति, सत्कीर्त्ति, उत्तमभोग, अच्छे गुणों का लाभ और निरन्तर प्रसन्नचित्त बना रहता है ॥ ११ ॥

हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रैर्वैकल्यं स्यान्नेत्रयोः शत्रुवृद्धिः ॥
रोषावेशः पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह १२

इति चन्द्रभावविचारः ।

व्ययभाव में चन्द्रमा हो तो दुष्टस्वभाव, मित्रों से हीन, नेत्ररोगी, बहुत शत्रु वाला और क्रोधी होता है ॥ १२ ॥

इति चन्द्रभावविचार ।

—:०:—

अथ भौमभावविचारः ।

अतिमतिभ्रमता च कलेवरं क्षतयुतं बहुसाहसमुग्रताम् ॥
तनुभृतां कुरुते तनुसंस्थितोवनिसुतो गमनागमनानि च १

भौम के भाव का विचार ।

जिसके तनु में मंगल बैठा हो तो विकलमति, व्रणयुक्त शरीर, बड़ा साहसी, उग्रस्वभाव एवं जाने आने में लगा रहता है ॥ १ ॥

अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयातिविहीनताम् ॥
तनुभृतां विदधाति विरोधितां धननिकेतनगोऽवनिनंदनः २

जिसके धनस्थान में भौम बैठा हो तो वह धनहीन, दुष्टजनों के आश्रित, बुद्धिहीन, कृपारहित और सबसे विरोध करनेवाला होता है ॥ २ ॥

भूपप्रसादोत्तमसौख्यमुच्चैरुदारता चारुपराक्रमश्च ॥
धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ३

तीसरे मंगल बैठा हो तो राजा की कृपा से उत्तम सुखवाला और उदार चित्त, श्रेष्ठ पराक्रमी, धनवान् और भाई के सुख से रहित होता है ॥ ३ ॥

दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रपातो कलेवरे रुक् बलताबलत्वम् ॥
प्रसूतिकाले किल मंगलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ४

जिसके चौथे मंगल बैठा हो तो वह भाइयों और वाहनों से दुःखी, रोगयुक्त शरीर तथा निर्बल होता है ॥ ४ ॥

कफानिलाद्व्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्यहानिः ॥
मतिर्विलोला विपुलात्मजेऽस्मिन् प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ५

जिसके पञ्चमस्थान में मंगल हो तो वह कफ-वात से पीड़ित तथा स्त्री, मित्र, पुत्रादिकों से सुख की हानिवाला और चञ्चल बुद्धि होता हैं ॥ ५ ॥

प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषाद्रोषावेशःशत्रुवर्गोपशान्तिः ॥
सद्भिः संगोनङ्गवृद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ६

शत्रुस्थान में मंगल बैठा हो तो जठराग्नि की प्रबलतावाला, क्रोधी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, सज्जनों का सङ्गी और कामी होता है ॥ ६ ॥

नानानर्थो व्यर्थचिन्तोपसर्गैर्व्वैरिव्रातैर्मानवं हीनदेहम् ॥
दारारागात्यन्तदुःखप्रतप्तं दारागारेऽङ्गारकोयं करोति ७

सप्तमभाव में जो मंगल हो तो अनेक प्रकारसे धनकी हानि, व्यर्थ-चिंता, रोग और शत्रुओं से हीनदेह (कृशशरीर) तथा स्त्री के अनुराग से विशेष दुःख पाने वाला होता है ॥ ७ ॥

वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीडा नीचकर्म्मप्रवृत्तिः ॥
बुद्धेरान्ध्यं सज्जनानां च निन्दा रन्ध्रस्थाने मेदिनीनन्दनेऽस्मिन् ८

जिसके अष्टमभाव में मंगल हो तो वह विकलतायुक्त, नेत्रों का रोगी, दुष्ट

रुधिर से पीड़ा पानेवाला, नीचकर्म्म करनेवाला, दुर्बुद्धि और सज्जनों की निन्दा करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

हिंसाविधाने मनसः प्रवृत्तिर्भूमीपतेर्गौरवतोग्रलब्धिम् ॥
क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थितः क्षोणिसुतः करोति ९

जिसके नवम स्थान में भौम हो तो उसकी हिंसा करने में बुद्धि रहती है और राजा से उच्च अधिकार पाता है तथा क्षीण पुण्य और धनहीन होता है ॥ ९ ॥

विश्वम्भरापतिसमत्वमतीव तोषं
सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् ॥
चंचद्विभूषणमणीविविधागमांश्च
मेषूरणे धरणिजः कुरुते नराणाम् १०

जिसके दशमभाव में मंगल हो वह राजा की समान सुखवाला, संतोषयुक्त, बड़ा साहसी, परोपकारी तथा बहुत प्रकारके मणि व रत्नों का संचय करनेवाला होता है ॥ १० ॥

ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमंसुललितानि च वाहनानि ॥
भूपप्रसादसुकुतूहलमङ्गलानि दद्यादवाप्तिभवने हि सदावनेयः ११

जिसके लाभस्थान में भौम हो तो उसको ताँबा, मूँगा, सोना इन पदार्थों का लाभ व सुन्दर रक्तवस्त्रों का लाभ, उत्तम वाहनोंवाला और राजा की कृपा से अनेक मंगलकार्य का करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

स्वमित्रवैरं नयनेतिबाधा क्रोधाभिभूतं विमलत्वमङ्गे ॥
धनव्ययं बन्धनमल्पतेजो व्यये धराजो विदधाति नूनम् १२

इति भौमभावविचारः ।

व्ययभाव में मंगल हो तो मित्रों का विरोधी, नेत्रों का रोगी, सदैव क्रोधी, विमल शरीर, धन का खर्च करनेवाला, बन्धन में पड़नेवाला और अल्पतेज होता है ॥ १२ ॥

इति भौमभावविचार ।

—:०:—

अथ बुधभावविचारः ।

शान्तो विनीतस्सुतरामुदारो नरः सदाचारपरोतिधीरः ॥
विद्वान् कलाज्ञो विपुलात्मजश्च शीतांशुसुनौ जनने तनुस्थे १

बुध के भाव का विचार ।

तनुभाव में जो बुध हो तो शान्तस्वभाव, विनीत, उदारचित्त, श्रेष्ठ आचरण में तत्पर और धीर, पण्डित, अनेक चतुराई की कलाओं में निपुण और बहुत संतानवाला होता है ॥ १ ॥

विमलशीलयुतो गुरुवत्सलः कुशलताकलितार्थमहत्सुखः ॥
विपुलकांतिसमुन्नतिसंयुतो धननिकेतनगे शशिनन्दने २

जिसके धनस्थान में बुध बैठा हो तो वह निर्मल शील स्वभाव, गुरुवत्सल, विद्या में निपुण और सुख सौभाग्ययुक्त, उत्तम कान्तिवाला और भाग्य वृद्धिवाला होता है ॥ २ ॥

साहसी निजजनैः परियुक्तः शुद्धचित्तरहितो हतसौख्यः ॥
मानवः कुशलितेप्सितकर्त्ता शीतभानुतनयेनुजसंस्थे ३

जिसके तीसरे बुध हो तो वह साहसी, परिवारयुक्त, अशुद्ध चित्त (मलिन), सुख से रहित और मनमाना कार्य करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

सद्वाहनैर्धामधनैः समेतः संगीतनृत्याभिरुचिर्मनुष्यः ॥
विद्याविभूषागमनाधिशाली पातालगे शीतलभानुसूनौ ४

जिसके चौथे बुध बैठा हो वह धन, धाम और उत्तम वाहनों से युक्त, नृत्य-गीत आदि में अधिक प्रीति करनेवाला तथा विद्या और आभूषणादि से शोभित रहता है ॥ ४ ॥

पुत्रसौख्यसहितं बहुमित्रम्मन्त्रवादकुशलं च सुशीलम् ॥
मानवङ्किल करोति सलीलं शीतदीधितिसुतः सुतसंस्थः ५

पञ्चमस्थान में बुध हो तो पुत्रों के सुख से युक्त, बहुत मित्रोंवाला, मन्त्रवाद में कुशल, सुशील और सब कार्यों के करने में प्रवीण होता है ॥ ५ ॥

वादप्रीतिस्सामयो निष्ठुरात्मा नानारातिव्रातसन्तप्तचित्तः ॥
नित्यालस्यव्याकुलःस्यान्मनुष्यःशत्रुक्षेत्रेरात्रिनाथात्मजेऽस्मिन् ६

छठे स्थान में बुध बैठा हो तो वाद प्रतिवाद में निपुण और निष्ठुर चित, बहुत शत्रुजनों से दुःखित चित्तवाला और हमेशा आलस्य से विकल शरीर वाला होता है ॥ ६ ॥

चारुशीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत् ॥
कामिनीकनकसूनुसंयुतः कामिनीभवनगामिनीन्दुजे ७

जिसके सप्तमभाव में बुध हो तो वह उत्तम शीलवाला, अनेक विभवों से शोभित, सत्य बोलनेवाला और स्त्री, पुत्र, धन आदि सुख से युक्त रहता है ॥ ७ ॥

भूपप्रसादाप्तसमस्तसम्पन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः ॥
सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्त्ता रंध्रे भवेच्चंद्रसुतः प्रसूतौ ८

अष्टमभवन में जो बुध बैठा हो तो उसको राजा की कृपा से संपूर्ण सम्पदा का लाभ होता है तथा सबका विरोधी, अहंकारी और पराये यत्नों का हटानेवाला होता है ॥८॥

उपकृतिकृतिविद्याचारुजातादरः स्या-
दनुचरधनसूनुः प्राप्तहर्षो विशेषात् ॥
वितरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चे-
दमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागमोयम् ९

नवमभाव में बुध बैठा हो तो वह सबका उपकारी, विद्यायुक्त, सभा में आदर पाने वाला तथा धन, पुत्र, दास-दासीजनों से बड़ा सुख पानेवाला और दान देने में दत्तचित्त होता है ॥ ९ ॥

ज्ञानप्रज्ञाश्रेष्ठकर्म्मा मनुष्यो नानासम्पत्संयुतो राजमान्यः ॥
चंचल्लीलावाग्विलासाधिशाली मानस्थाने बोधने वर्त्तमाने १०

दशमभवन में बुध बैठा हो तो ज्ञानी, बुद्धिमान्, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, अनेक संपदाओं से युक्त, राजा से मान पानेवाला और उत्तम वाणी से शोभित होता है ॥१०॥

भोगासक्तोऽत्यन्तवित्तो विनीतो नित्यानन्दश्चारुशीलो बलिष्ठः ॥
नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नन्दने शीतभानोः ११

जिसके लाभभाव में बुध बैठा हो तो वह भोगयुक्त, बहुत धनी, विनीत, निरन्तर प्रसन्नता से काल व्यतीत करनेवाला, उत्तम शील स्वभाव, बली और अनेक विद्याओं में अभ्यास करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

कलाविहीनः सुजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः ॥
धूर्त्तोनितांतं मलिनो नरस्याद्व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ १२
इति बुधभावविचारः ।

जिसके व्ययभाव में बुध बैठा हो तो वह शिल्पविद्या से हीन, बन्धुजनों से त्यागा हुआ, अपने कार्य में दक्ष, अपने पक्ष का जीतनेवाला, कपटी और मलिन वेष होता है ॥ १२ ॥

इति बुधभावविचार ।

अथ गुरुभावविचारः ।

विद्यासमेतोभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः ॥
नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखण्डिसूनौ १

गुरु के भाव का विचार ।

जिसके तनुभाव में बृहस्पति हो तो वह विद्यावाला, राजाओं को प्रसन्न करनेवाला, पण्डित, उदारचित्त और उत्तम शरीरवाला होता है ॥ १ ॥

सद्रूपविद्यागुणकीर्त्तियुक्तः संत्यक्तवैरोपि नरो गरीयान् ॥
त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाणवंद्ये द्रविणोपयाते २

धनभाव में गुरु बैठा हो तो सुन्दररूप, विद्या, गुण और कीर्तियुक्त, सबका प्यारा, गंभीर स्वभाव, त्यागी, सुशीलवान् तथा धनवान् पुरुष होता है ॥ २ ॥

सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुतप्रीतिविवर्जितश्च ॥
नरोग्निमांद्याबलतासमेतः पराक्रमी शक्रपुरोहितेऽस्मिन् ३

जिसके तीसरे बृहस्पति पड़े वह स्वजनता से विहीन, कृपण, कृतघ्नी, स्त्री-पुत्रादिकों से वैरभाव रखनेवाला व मन्दाग्नि तथा पराक्रम से हीन होता है ॥ ३ ॥

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः सञ्जातहर्षः पुरुषः सदैव ॥
नृपानुकम्पासमुपात्तसंपद्दंभोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे ४

जिसके चौथे स्थान में गुरु बैठा हो वह सर्वत्र मान पानेवाला, अनेक धन वाहन आदि से प्रसन्न चित्त और राजा की कृपा से अनेक संपदा पानेवाला होता है ॥ ४ ॥

सन्मित्रपुत्रोत्तममंत्रशास्त्रमुख्यानि नानाधनवाहनानि ॥
दद्याद् गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूतिकाले तनयालयस्थः ५

जिसके पञ्चमभाव में गुरु विराजमान हो वह श्रेष्ठ मित्र और पुत्र से युक्त, उत्तम मंत्र-विद्या में निपुण तथा नाना प्रकार के धन-वाहनों से युक्त और वार्ता करने में चतुर होता है ॥ ५ ॥

सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिः कीर्त्तिप्रियोरातिजनप्रहर्त्ता ॥
प्रारब्धकार्यालसकृन्नरः स्यात् सुरेन्द्रमंत्री यदि शत्रुसंस्थः ६

छठे स्थान में गुरु हो तो उत्तम गानविद्या से विमुख चित्त, कीर्त्ति का चाहने वाला, शत्रुजनों का नाश करनेवाला तथा प्रारब्ध के भरोसे रहनेवाला आलसी होता है ॥ ६ ॥

शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः
कान्ताविचात्यंतसंजातसौख्यः ॥
मंत्री मर्त्यः काव्यकर्त्ता प्रसूतौ
जायाभावे देवदेवाधिदेवे ७

सप्तमभाव में गुरु बैठा हो तो निरन्तर शास्त्र में अभ्यास करनेवाला, स्त्री-पुत्रादिकों से सुख पानेवाला और राजा का मन्त्री तथा काव्य करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च ॥
नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ८

अष्टमभाव में गुरु स्थित हो तो वह मनुष्य दूतकर्म्म करनेवाला, मलिन, दीन, विवेकहीन, उद्धतस्वभाव, नित्य आलसी और दुर्बल शरीरवाला होता है ॥ ८ ॥

नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्रकलाकलनादरः ॥
व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वै तपसि स्थिते ९

नवमस्थान में गुरु बैठा हो तो राजा का मन्त्री, उत्तम कर्म्म करनेवाला, सर्व्व शास्त्रों का अभ्यासी, तीर्थ-व्रत-दान आदि में तत्पर और देवता-ब्राह्मणों का पूजनेवाला होता है ॥ ९ ॥

सद्राजचिह्नोत्तमवाहनानि मित्रात्मजश्रीरमणीसुखानि ॥
यशोभिवृद्धिं बहुधा विधत्ते राज्ये सुरेज्यो विजयं नराणाम् १०

दशमभाव में गुरु बैठा हो तो उत्तमराजचिह्न और वाहनोंवाला तथा स्त्री, पुत्र और मित्रादिकों से अनेक सुख पानेवाला और बड़ा यशस्वी होता है ॥ १० ॥

सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्वस्त्ररत्नोत्तमवाहनानि ॥
भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवंद्यो यदि लाभसंस्थः ११

जिसके लाभभाव में गुरु बैठा हो तो वह पराक्रमी, धन की प्राप्तिवाला, उत्तम वस्त्र, रत्न और वाहनादि से युक्त तथा सदैव राजा की कृपा से सुख सम्पदा वाला होता है ॥ ११ ॥

नानाचित्तोद्वेगसञ्जातकोपं पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम् ॥
बुद्ध्या हीनं मानवं मानहीनं वागीशोयं द्वादशस्थःकरोति १२

इति गुरुभावविचारः ।

व्ययभाव में गुरु विराजमान हो तो चित्त में निरन्तर उद्वेग, कोपयुक्त, पापी, आलसी, निर्ल्लज्ज, बुद्धिहीन और मानविहीन होता है ॥ १२ ॥

इति गुरुभावविचार ।

—:o:—

अथ शुक्रभावविचारः ।

बहुकलाकुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनो मदनानुभवः पुमान् ।
अवनिनायकमानधनान्वितो भृगुसुते तनुभावगते सति १

शुक्र के भाव का विचार ।

जिसके तनुभाव में शुक्र स्थित हो वह अनेक कलाओं में निपुण, उत्तम बोलने वाला, सुन्दर बदनवाला, कामी और राजद्वार से धन तथा सन्मान पानेवाला होता है ॥ १ ॥

सदन्नपानाभिरतं नितान्तं सद्वस्त्रभूषाधनवाहनाढ्यम् ॥
विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनन्दनोऽयम् २

जिसके धनभाव में शुक्र हो तो वह उत्तम भोजन पान करनेवाला, उत्तम धन, वाहन, वस्त्र और आभूषणोंवाला तथा विचित्र विद्या से युक्त होता है ॥ २ ॥

कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येण हीनो मदनानुतप्तः ॥
सतामनिष्टो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ३

तीसरे स्थान में शुक्र हो तो दुर्बल शरीर, कृपण, दुष्ट स्वभाववाला, धनहीन, कामी, उत्तमजनों से विरोध करनेवाला और दुष्ट चेष्टायुक्त होता है ॥ ३ ॥

मित्रक्षेत्रं ग्रामसद्वाहनानां नानासौख्यं वंदनं देवतानाम् ॥
नित्यानन्दं मानवानां प्रकुर्याद्दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोयम् ४

चौथे भाव में शुक्र बैठा हो तो मित्र, खेत, ग्राम और उत्तम वाहनों से अनेक सुख भोग करनेवाला, देवपूजक और निरन्तर आनन्द में काल व्यतीत करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सकलकाव्यकलाभिरलंकृतस्तनयवाहनधान्यसमन्वितः ॥
नरपतेर्गुरुगौरवभाङ्नरो भृगुसुते सुतसद्मनि संस्थिते ५

जिसके पञ्चमभाव में शुक्र बैठा हो तो वह काव्य की कलाओं से शोभित, धन, धान्य, पुत्र और वाहनों से युक्त और राजा से बड़े भारी पद को पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

अभिमतो न भवेत्प्रमदाजने ननु मनोभवहीनतरो नरः ॥
विबलताकलितः किल सम्भवे भृगुसुतेऽरिगतेरिभयान्वितः ६

छठे स्थान में शुक्र बैठा हो तो वह स्त्रियों को नहीं चाहनेवाला, कामदेव से हीन, निर्बल शरीर और शत्रुओं के भय से युक्त होता है ॥ ६ ॥

बहुकलाकुशलो जलकेलिकृद्रतिविलासविधानविचक्षणः ॥
अतितरां नटनीकृतसौहृदः सुनयनाभवने भृगुनन्दने ७

सप्तमभाव में शुक्र बैठा हो तो अनेक कलाओं में कुशल, जलक्रीड़ा में निपुण, भोग-विलास की विधि में निपुण और स्त्रियों से अधिक प्रीति करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

प्रसन्नमूर्त्तिर्नृपलब्धमानः शठोऽतिनिःशङ्कतरः सगर्व्वः ॥
स्त्रीपुत्रचिन्तासहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सिताख्ये ८

अष्टमभाव में जो शुक्र बैठा हो तो प्रसन्न मूर्ति, राजा से मान पानेवाला, शठ, निर्भय, अहङ्कारयुक्त और स्त्री-पुत्र आदि की चिन्ता में लगा रहता है ॥ ८ ॥

अतिथिगुरुसुरार्चातीर्थयात्रार्पितार्थः
प्रतिदिनधनयानात्यंतसंजातहर्षः ॥
मुनिजनसमवेषः पूरुषस्त्यक्तरोषो
भवति नवमभावे सम्भवे भार्गवेऽस्मिन् ९

नवमभाव में शुक्र बैठा हो तो वह देवता, गुरु और अतिथियों का पूजने वाला, तीर्थयात्रा में धन खर्चनेवाला, हमेशा धन-वाहन से सुख पानेवाला, मुनियों का सा वेष धारण करनेवाला तथा क्रोधरहित होता है ॥ ९ ॥

सौभाग्यसन्मानविराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः ॥
कान्तासुतप्रीतिरतीव नित्यं भृगोस्सुते राज्यगते नरः स्यात् १०

यदि दशमभवन में शुक्र विराजमान हो तो सुख, सम्पत्ति और सन्मान से युक्त और स्नान, पूजन तथा ध्यान में मन को लगानेवाला, धनवान् और स्त्री-पुत्रों में अधिक प्रीति करनेवाला होता है ॥ १० ॥

सद्गीतनृत्यादरतां नितान्तं नित्यं च चिन्तागमनानि नूनम् ॥
सत्कर्मधर्म्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ११

लाभभाव में शुक्र बैठा हो तो श्रेष्ठ गानविद्या और नृत्य आदि विद्याओं को आदर देनेवाला, नित्य चिन्ता से युक्त तथा अच्छे कर्म और धर्म में चित्त का लगानेवाला होता है ॥ ११ ॥

संत्यक्तसत्कर्म्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च ॥
दयालुतासत्यविवर्ज्जितः स्यात्काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते १२

इति शुक्रभावविचारः ।

व्ययस्थान में शुक्र स्थित हो तो उत्तम कर्मों का त्याग करनेवाला, सबसे विरोध रखनेवाला, कामी तथा सत्य और दया से विहीन होता है ॥ १२ ॥

इति शुक्रभावविचार ।

अथ मन्दभावविचारः ।

प्रसूतिकाले नलिनीशसूनुः स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतो विलग्ने ॥
कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्वभद्रं सरुजं दरिद्रम् १

शनि के भाव का विचार।

लग्न में जिसके शनैश्चर तुला, मकर या कुम्भ का हो वह मनुष्य मंडलाधीश राजा होता है। जो और लग्नों में बैठे तो अशुभ, दरिद्री, रोगयुक्त हमेशा बना रहता है ॥ १ ॥

अन्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो
जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात् ॥
देशांतरे वाहनराजमानो
धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ २

जिसके धनभाव में शनि बैठा हो वह पराये घर में रहनेवाला, कुकर्मी और मित्र-भाई लोगों से त्यागा हुआ देशान्तर में जाकर, वाहनवाला होकर, राजा से मान पाता है ॥ २ ॥

राजमानशुभवाहनयुक्तो ग्रामपो बहुपराक्रमशाली ॥
पालको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ३

जिसके तीसरे स्थान में शनि हो तो वह राजा से मान पानेवाला, अच्छे वाहनों से युक्त, ग्राम का स्वामी, बड़ा पराक्रमी और बहुत मनुष्यों का पालनेवाला होता है ॥ ३ ॥

पित्तानिलक्षीणबलं कुशीलमालस्ययुक्तं कलिदुर्बलांगम् ॥
मालिन्यभाजं मनुजं विदध्याद्रसातलस्थो नलिनीशजन्मा ४

जिसके चौथे शनि विराजमान हो वह वात-पित्त से निर्बल शरीर, खोटा स्वभाव, आलसी, कलहसे कृश शरीर और मलिन वेषवाला होता है ॥ ४ ॥

सदागदक्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनङ्गहानिम् ॥
प्रसूतिकाले नलिनीशपुत्रः पुत्रस्थितः पुत्रभयं करोति ५

जिसके पञ्चमस्थान में शनि बैठा हो वह रोग से क्षीणशरीर, धन से हीन, कामचेष्टा से रहित और उसके पुत्रों को भय होता है ॥ ५ ॥

विनिर्जितारातिगणो गुणज्ञः सुताभ्यनुज्ञापरिपालकस्स्यात् ॥
पुष्टाङ्गयष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ६

जिसके छठे भाव में शनि बैठा हो वह शत्रुओं को जीतनेवाला, गुणग्राही, पुत्र की आज्ञा पालनेवाला, पुष्ट शरीर और प्रबल जठराग्निवाला होता है ॥६॥

आमयेन बलहीनतांगतो हीनवृत्तिजनचित्तसंस्थितिः ॥
कामिनीभवनधान्यदुःखितः कामिनीभवनगे शनैश्चरे ७

जिसके सप्तमस्थान में शनि स्थित हो वह रोग करके निर्बल शरीर, नीचवृत्ति में चित्त लगानेवाला; स्त्री, घर तथा धान्य से दुःख पानेवाला होता है ॥ ७ ॥

कृशतनुर्ननु दद्रुविचर्चिकाप्रभवतोभयतोषविवर्जितः ॥
अलसतासहितो हि नरो भवेन्निधनवेश्मनि भानुसुते स्थिते ८

जिसके अष्टम में शनि बैठा हो वह दुर्बल शरीर, दाद-खाज आदि रुधिर के कोप से भयभीत, असंतोषी और आलसी होता है ॥ ८ ॥

धर्म्मकर्म्मसहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजोतिमनोज्ञः ॥
सम्भवस्य समये रविसूनौ धर्मसञ्ज्ञनिलये यदि संस्थे ९

नवमस्थान में शनि स्थित हो तो धर्म-कर्म से युक्त, विकल शरीर, दुष्टमति और अतिसुन्दर होता है ॥ ९ ॥

राज्ञःप्रधानमतिनीतियुतंविनीतंसद्ग्रामवृन्दपरभेदनकाधिकारम् ॥
कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हि तरणेस्तनुजः करोति १०

दशमभाव में शनि बैठा हो तो राजा का मन्त्री, नीतिशास्त्र में विशारद, बहुत ग्रामों का स्वामी, चतुर और धन से पूर्ण रहता है ॥ १० ॥

कृष्णाश्वानामिन्द्रनीलोर्णिकानां नानाचञ्चद्वस्तुदन्तावलानाम् ॥
प्राप्तिंकुर्य्यान्मानवानाम्बलीयान्प्राप्तिस्थाने वर्त्तमानेऽर्कसूनौ ११

जिसके लाभभाव में शनि स्थित हो वह काले घोड़ों से, नील पदार्थों से, हाथियों से और ऊर्ण वस्त्र, हाथीदांत इत्यादिकों से लाभ को प्राप्त होता है ॥११॥

दयाविहीनो विधनो व्ययार्त्तः सदाऽलसो नीचजनानुयातः ॥
नरोङ्गभङ्गोज्झितसर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतौ १२

व्ययभाव में शनि बैठा हो तो वह दयाविहीन, धनहीन, बहुत धन खर्च ने वाला, आलसी, नीचसंगी, अंगभंग और सब सुखों से विहीन रहता है ॥१२॥

तन्वादिस्थशनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम् ॥
राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि सम्मतम् १३

जो फल शनैश्चर के द्वादशभावों का कहा है वही फल राहु का भी जानना यही मुनिजनों का सम्मत है ॥ १३ ॥

स्वोच्चस्थितः पूर्णफलं विधत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्द्धमेव ॥
फलांघ्रिमात्रं रिपुमन्दिरस्थश्चास्तम्प्रयातः खचरो न किंचित् १४

इति मन्दभावविचारः ।

जो ग्रह अपनी उच्चराशि में बैठा हो तो पूर्ण फल देता है और जो अपने या मित्रके घर में बैठा हो तो उसका आधा फल होता है और जो शत्रु के घर में बैठा हो तो चतुर्थांश फल होता है तथा जो ग्रह अस्त है उसका फल कुछ भी नहीं होता है ॥ १४ ॥

इति शनिभावविचार ।

अथ राहुभावविचारः ।

लग्ने तमो दुष्टमतिस्वभावन्नरं च कुर्य्यात्स्वजनानुवंचकम् ॥
शीर्षव्यथाकामरसेन संयुतङ्करोति वादे विजयं सरोगम् १

राहु के भाव का विचार ।

लग्न में राहु बैठा हो तो दुष्टमति, दुष्टस्वभाव, मित्रविरोधी, शिरपीड़ायुक्त, कामी, वाद-विवाद में विजय पानेवाला और रोगी होता है ॥ १ ॥

धनगते रविचन्द्रविमर्दने मुखरतांकितभावमथो भवेत् ॥
धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलु तदा लभते मनुजोऽटनम् २

धनस्थान में राहु बैठा हो तो वह निन्दित वचनोंवाला, धनहीन, दरिद्री और भ्रमण करनेवाला होता है ॥ २ ॥

दुश्चिक्येऽरिभवोद्भवं वितनुते लोके यशस्वी नरः
श्रेयो वापि भवेत्तदाहि लभते सौख्यं विलासादिकम् ॥
भ्रातृणां निधनं पशोश्च मरणन्दारिद्र्यभावैर्युतं
नित्यं सौख्यगणैः पराक्रमयुतं कुर्य्याच्च राहुः सदा ३

जिसके तीसरे राहु बैठा हो वह शत्रुओं का जीतनेवाला, यशस्वी, कल्याण-युक्त, हास-विलास आदि सुख से युक्त होता है तथा उसके भाई और पशुओं का मरण होता है और वह दरिद्रता से युक्त एवं सब प्रकार के सुखों से युक्त पराक्रमी होता है ॥ ३ ॥

सुखगते रविचन्द्रविमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत् ॥
स्वजनतां सुतमित्रसुखन्नरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम् ४

चौथे राहु बैठा हो तो सुख का नाश करता है और स्वजनता, मित्र-पुत्रादि से दुःखी और हमेशा घूमनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सुखगतो नहि मित्रविवर्द्धतामुदरशूलविलासविपीडनम् ॥
खलु तदा लभते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्रविमर्दने ५

पंचम में राहु बैठा हो तो मित्रसुखविहीन, उदररोगी, पीड़ायुक्त और भ्रमवाला होता है ॥ ५ ॥

शत्रुक्षयन्द्रव्यसमागमं च पशुषु पीडा कटिपीडनञ्च ॥
समागमैर्म्लेच्छजनैर्महाबलं प्राप्नोति जन्तुर्य्यदि षष्ठगे तमे ६

छठे राहु बैठा हो तो शत्रु का नाश करनेवाला, बहुत धन की प्राप्तिवाला, पशुओं में पीड़ावाला, कटि-पीड़ा से युक्त तथा म्लेच्छजनों के समागम से बड़ा बली होता है ॥ ६ ॥

जायाविरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचण्डरूपामथ कोपयुक्ताम् ॥
विवादशीलामथ रोगयुक्तां प्राप्नोति जन्तुर्मदने तमे च ७

सप्तमभाव में राहु बैठा हो तो स्त्री से विरोध रहे या स्त्री का नाश होता है तथा उसकी स्त्री कलह करनेवाली, कोपवाली, प्रचण्ड स्वभाववाली और रोगिणी होती है ॥ ७ ॥

अनिष्टनाशं खलु गुह्यपीडां प्रमेहरोगं वृषणस्य वृद्धिम् ॥
प्राप्नोति जन्तुर्विकलारिलाभं सिंहीसुते वा खलु मृत्युगेहे ८

अष्टमस्थान में राहु बैठा हो तो अर्शरोगयुक्त गुदा में पीड़ावाला, प्रमेहरोगी, अण्डकोश की वृद्धिवाला, विकल शरीरवाला तथा वैरियों से लाभ होता है ॥ ८ ॥

धर्म्मार्थनाशः किल धर्म्मगे तमे सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य ॥
दरिद्रता बन्धुसुताल्पता च भवेच्च लोके किल देहपीडा ९

नवम में राहु बैठा हो तो धन और धर्म का नाश, अल्पसुखी, घूमनेवाला, दरिद्री, देहपीड़ायुक्त और भाइयों के अल्पसुखवाला होता है ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य राहुः स्वयन्दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ॥
रुजो वाहने वातपीडां च जन्तोर्यदासौख्यगो मीनगः कष्टभाजम् १०

दशमभाव में राहु बैठा हो तो पिता के सुख से रहित, ऐश्वर्यहीन, शत्रु-नाशक, रोगी, वाहनोंवाला तथा वातव्याधि से पीड़ा पानेवाला होता है ॥ १० ॥

लाभे गते यदि तमे सकलार्थलाभं
सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधं च मानम् ॥
वस्त्रादिकांचनचतुष्पदसौख्यभावं
प्राप्नोति सौख्यविजयं च मनोरथं च ११

यदि लाभभाव में राहु बैठा हो तो बड़ा सुखी, धन लाभवाला, राजाओं से अनेक प्रकार की प्रतिष्ठा पानेवाला तथा वस्त्र, सुवर्ण और चौपाये जीवों से सुख पानेवाला, संग्राम में विजय और सफल मनोरथों का पानेवाला होता है ॥ ११ ॥

नेत्रे च रोगं किल पादघातं प्रपञ्चभावं किल वत्सलत्वम् ॥
दुष्टे रतिं मध्यमसेवनं च करोति यानं व्ययगे तमे वा १२
इति राहुभावविचारः ।

जिसके बारहें राहु हो वह नेत्ररोगी, चरणरोगी, बड़ा प्रपंची, कृपालु, दुष्टजनों का संगी और सवारी से थोड़ा सुख पानेवाला होता है ॥ १२ ॥

इति राहुभावविचार ।

अथ केतुभावविचारः ।

यदा लग्नगश्चेच्छिखी शत्रुकर्त्ता
सरोगादिभोगो भयं व्यग्रता च ॥
कलत्रादिचिन्ता महोद्वेगता च
शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य १

केतु के भाव का विचार ।

जिसके लग्न में केतु बैठा हो तो उसके शत्रु बहुत हों, रोगों का भोगी, भयभीत, व्याकुल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता तथा हमेशा वातव्याधि से युक्त रहता है ॥ १ ॥

धने चेच्छिखी धान्यनाशो धनं च कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद् व्यचिन्ता॥
मुखे रोगता संततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्य गेहेतिसौख्यम् २

धनभाव में केतु बैठा हो तो धनधान्यादि का विनाश, कुटुम्ब का विरोधी, राजा से धन की चिन्ता तथा हमेशा मुख का रोगी होता है और जो अपने अथवा शुभग्रह के घर में हो तो सुखी होता है ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ॥
भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीडा सुखं स्वोच्चगेहे भयोद्वेगता च ३

तीसरे घर में केतु बैठा हो तो शत्रु का नाश हो तथा धन, तेज, भोग और ऐश्वर्ययुक्त होता है एवं भाइयों का नाश, बाहु में पीड़ा और भययुक्त मानसी चिन्ता होती है और जो अपने उच्च में या अपनी राशि में पड़े तो हमेशा सुखी होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थे च मातुः सुखन्नो कदाचित् सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति ॥
शिखी बन्धुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्व्वं सदा व्यग्रता च ४

जो चौथे स्थान में केतु बैठा हो तो माता को सुख कभी न होवे तथा पितृवर्गों और मित्रवर्गों से भी दुःख पावे, बन्धुविहीन रहे और जो धनराशि में बैठा हो तो हमेशा दुःखी न रहे कभी २ सुख और व्यग्रता होती है ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे घातपातादिकष्टम् ॥
स्वबन्धुप्रियासन्ततिः स्वल्पपुत्रः सदा संभवेद्वीर्य्ययुक्तो नरश्च ५

पञ्चम में केतु बैठा हो तो अपने आप ही गिरने आदि की उदर में पीड़ा होती है। थोड़े पुत्रवाला, बन्धुजनों की सन्तति से प्रीति करनेवाला और हमेशा बली बना रहता है ॥ ५ ॥

शीखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातुलात्पक्षतोमानभङ्गः ॥
चतुष्पत्सुखं द्रव्यलाभो नितांतं न रोगस्य देहे सदा व्याधिनाशः ६

जिसके छठे स्थान में केतु बैठा हो तो शत्रुओं का नाश, मामा के पक्ष से मानभंग, चौपाये जीवों से सुख, द्रव्य का लाभ, व्याधियों का नाश और शरीर रोगरहित होता है ॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे मार्ग्गतश्चित्तवृत्तिं सदा वित्तनाशोऽथवा वारिभूतः ॥
भवेत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता च ७

यदि सातवें केतु बैठा हो तो मार्ग से चिन्ता तथा शत्रुओं से धन का नाश होता है और जो वृश्चिक राशि में हो तो हमेशा लाभ, स्त्रीजनों को पीड़ा, खर्च ज्यादा और उदासीन बना रहता है ।। ७ ।।

गुदे पीडनं वाहनैर्द्रव्यलाभं यदा कीटगे कन्यके युग्मगे वा ॥
भवेच्छिद्रगे राहुछाया यदा स्यादजे गोलिगे जायते चातिलाभः ८

अष्टम में केतु बैठा हो तो गुदा में पीड़ा होती है और मिथुन, कर्क तथा कन्या इन राशियों में बैठा हो तो वाहनों से धन का लाभ होता है और जो मेष, वृष या वृश्चिक में स्थित हो तो बहुत लाभ होता है ।। ८ ।।

यदा धर्म्मगः केतुकः क्लेशनाशः
सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ॥
सहेतुर्व्यथां बाहुरोगं विधत्ते
तपोदानतो हास्यवृद्धिङ्करोति ९

जो धर्मस्थान में केतु विराजमान हो तो सब दुःखों का नाश होता है और पुत्र की इच्छावाला होता है तथा म्लेच्छ द्वारा भाग्य की वृद्धि, सकारण बाहु में पीड़ा तथा दान और तपस्या में लोक हँसाई होती है ।। ९ ।।

पितुर्नो सुखं कर्म्मगो यस्य केतुः
स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति ॥
रुजो वाहने वातपीडा च जन्तो-
र्यदा कन्यगः सौख्यगः कष्टभाजम् १०

दशमभाव में केतु बैठा हो तो पिता के सुख से रहित, दुष्ट स्वभाववाला और शत्रुनाशक होता है तथा उसके वाहनों में पीड़ा तथा शरीर में वात की पीड़ा होती है जो कन्या राशि का होकर दशम में बैठा हो तो अधिक कष्ट होता है ।। १० ।।

सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः
सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोपि यस्य ॥
गुदे पीड्यते सन्ततेर्दुर्भगत्वं
शिखीलाभगः सर्वलाभं करोति ११

ग्यारहें केतु बैठा हो तो श्रेष्ठ वचन बोलनेवाला, विद्यायुक्त, दर्शन के योग्य, भोगी, तेजस्वी, उत्तम वस्त्रों का धारण करनेवाला, गुदा में रोगवाला और सन्तान-सुख से हीन तथा सब सुख से युक्त रहता है ।। ११ ।।

शिखीरिष्फगः पादनेत्रे च पीडा स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति ॥
रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्म्म रुजा पीड्यते बस्तिगुह्यं सरोगम् १२

इति केतुविचारः ।

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाव-
स्थितग्रहफलाध्यायः ॥ ३ ॥

जिसके बारहें स्थान में केतु स्थित हो तो नेत्रों और चरणों में पीड़ावाला, राजा के समान धन खर्चनेवाला, शत्रु का जीतनेवाला, मन में चिन्तायुक्त, रोग से पीड़ित और गुदा में तथा गुप्त स्थान में रोग होता है ।। १२ ।।

इति केतुविचार ।

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
भावस्थितग्रहफलाध्यायः ।। ३ ।।

अथ मेषादिगृहगतरविं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

दानधर्म्मबहुभृत्यसंयुतः कोमलामलतनुर्गृहप्रियः ॥
आवनेयभवने विरोचने शीतदीधितिनिरीक्षिते सति १

सूर्य के ऊपर दृष्टि का फल ।

जो मङ्गल के घर में सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो दान धर्म में प्रीति करे और सेवक अधिक हों, कोमल व अमल शरीर तथा अपने घर में रहनेवाला होता है ।। १ ।।

क्रूरो नरः सङ्गरकर्म्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलं बलीयान् ॥
भवेदवश्यं कुजगेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे २

जो मङ्गल के घर में सूर्य बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो वह मनुष्य क्रूर-स्वभाव, संग्राम में धीर, लालनेत्र व पैरवाला और बड़ा बली होता है ।। २ ।।

सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव ॥
भवेदवश्यं परवान् मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ३

जो मङ्गल के घर में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो सुख, सतोगुण और धन से विहीन, पराया काम करनेवाला, परदेश में रहनेवाला और मलिन-वेष होता है ॥ ३ ॥

दाता दयालुर्ब्बहुलार्थयुक्तो-नृपालमंत्री कुलधुर्य्यवर्य्यः ॥
स्यान्मानवो भूतनयालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ४

जो मङ्गल के घर में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो दानी, दयावान्, बहुत धन से युक्त, राजा का मन्त्री और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है ॥ ४ ॥

हीनांगनाप्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमित्रः ॥
त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ५

जो मङ्गल के घर में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो तो नीच स्त्री से प्रीति रखनेवाला, दीन, धनहीन, खोटे मित्रोंवाला और चर्मरोग से युक्त होता है ॥ ५ ॥

उत्साहहीनो मलिनोतिदीनो दुःखाभिभूतो विमतिर्न्नरः स्यात् ॥
कांते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ६

मङ्गल के घर में सूर्य विराजमान हो और शनि देखता हो तो उत्साहरहित, मलिनवेष, बहुत दीन, निरन्तर दुःखी और बुद्धिहीन रहता है ॥ ६ ॥

वाराङ्गनाप्रीतिकरो नितांतं स्याद्भूरिभार्य्यः सलिलोपजीवो ॥
दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ७

जो शुक्र के घर में सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वेश्याजनों से बड़ी प्रीति करनेवाला, बहुत स्त्रियों का पति और जलाशय से जीविका करनेवाला होता है ॥७॥

संग्रामधीरोऽतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्त्तिः ॥
क्षीणोनरः स्याद्भृगुमन्दिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ८

जो शुक्र के स्थान में सूर्य बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो संग्राम में धीर, बड़ा बली, साहसी, धन और कीर्त्ति को प्राप्त करनेवाला तथा क्षीणशरीर होता है ॥ ८ ॥

सङ्गीतसत्काव्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात् ॥

प्रसन्नमूर्त्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे ९

शुक्र के घर में सूर्य्य बैठा हो और बुध देखता हो तो गाने-बजाने और काव्य-रचना में तथा लिखने के काम में चतुर होता है तथा प्रसन्न वदन रहता है॥९॥

वंशानुमानान्नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्रविणान्वितो वा ॥
भीरुर्नरः शुक्रगृहं प्रपन्ने दृष्टे रवौ देवपुरोहितेन १०

शुक्र के घर में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो अपने कुल में राजा या प्रधान होता है और उत्तम रत्न, आभूषण तथा धन से युक्त और भयभीत बना रहता है ॥ १० ॥

सुलोचनः कान्तवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिन्तः ॥
भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के संवीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ११

शुक्र के घर में सूर्य बैठा हो और शुक्र ही देखता भी हो तो उत्तम नेत्रवाला, शोभायमान शरीर, राजमन्त्री तथा मित्र व शत्रुओं से युक्त और चिन्तावाला होता है ॥ ११ ॥

दीनोऽर्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्य्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः ॥
असाधुवृत्तामययुङ्नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे १२

शुक्र के घर में सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो दीन, धनहीन, आलसी, स्त्री से मतभेदवाला, दुष्टकर्मी और रोगयुक्त होता है ॥ १२ ॥

मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ॥
निरन्तरोद्वेगकरो नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणाङ्कदृष्टे १३

जो बुध के घर में सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो शत्रु और मित्रजनों से पीड़ित, परदेश जाने पर भी धन से हीन तथा निरन्तर व्याकुल बना रहता है॥१३॥

रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोऽत्यन्तदीनो
रणजयविधिहीनोऽत्यन्तसंजातलज्जः ॥
भवति ननु मनुष्यः सालसश्चापि हंसो
बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे १४

जो बुध के घर में सूर्य बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो शत्रु के भय व कलह

से युक्त, बहुत दुःखी, संग्राम में पराजय पाय लज्जित हो और बहुत दुःखी बना रहता है ॥ १४ ॥

भूपप्रसादोन्नतिमात्मजानां सहन्ति नो शत्रुजनाप्तिमित्राः ॥
प्रसूतिकाले नलिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थे च बुधेन दृष्टे १५

बुध के घर में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो राजाओं की प्रसन्नता से पुत्रों की उन्नतिवाला, बहुत मित्रोंवाला और शत्रुजनों का नाशक होता है ॥ १५ ॥

सुगुप्तमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः ॥
भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे १६

जो बुध के घर में सूर्य बैठा हो और उसे बृहस्पति देखता हो तो गुप्त मन्त्रवाला, अत्यन्त स्वतन्त्र, स्त्री-पुत्रादिकोंवाला और अहंकारयुक्त होता है ॥ १६ ॥

विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्राङ्कितमूर्त्तिवर्त्ती ॥
पृथ्वीपतेर्दौत्यकरो नरस्स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे १७

बुध के घर में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो तो परदेश में वास करनेवाला, चपलस्वभाव, हास-विलासयुक्त और विष, अग्नि या शस्त्र से चिह्नित शरीर वाला तथा राजा का दूत होता है ॥ १७ ॥

धूर्त्तोऽतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्निजैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भास्करिणा प्रसूतौ १८

जो बुध के घर में सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो धूर्त्त, भृत्युजनों से युक्त, बुद्धिहीन और अपने जनों से हमेशा उद्विग्नचित्त बना रहता है ॥ १८ ॥

पुण्यश्च पानीयभवैर्म्महार्थी पृथ्वीपतिर्व्वा सचिवश्च रौद्रः ॥
भवेन्नरो जन्मनि चण्डरश्मौ कर्काटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे १९

जो कर्कराशि में सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो जल-संबंधी व्यापार से बहुत धन पानेवाला, राजा या राजा का मंत्री और सबको भय देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

स्वबन्धुवर्गैर्गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगन्दरैर्वा ॥
पीडा नराणां हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे २०

जो कर्क में सूर्य बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो अपने बन्धुजनों से विरक्त

चित्त और सूजन आदि रोगों से या भगन्दररोग से पीड़ित शरीर होता है ।। २० ।।

विद्यायशोमानविराजमानो भूपानुकम्पाप्तमनोभिलाषः ॥
निरस्तशत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्काटकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् २१

जो कर्क में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो विद्यावान्, यशस्वी, मान-प्रतिष्ठायुक्त, राजा की कृपा से पूर्ण मन की अभिलाषावाला और शत्रुजनों का नाश करनेवाला होता है ।। २१ ।।

कुलाधिकश्चामलकीर्त्तिशाली भूपालसंप्राप्तमहत्पदार्थः ॥
भवेन्नरः शीतकरर्क्षयाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे २२

कर्क में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो अपने कुल में श्रेष्ठ, उत्तम कीर्त्ति पानेवाला और राजा से बड़े २ पदार्थों का पानेवाला होता है ।। २२ ।।

स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्रधनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः ॥
निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे शुक्रनिरीक्ष्यमाणे २३

कर्क में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो स्त्रीजनों से वस्त्र-धन आदि की प्राप्तिवाला और पराये कार्य के होने में अपने मन में विषाद करनेवाला होता है ।। २३ ।।

कफानिलार्तः पिशुनोन्यकार्य्ये स्यादान्तरायश्चपलस्वभावः ॥
क्लेशी नरः शीतिकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मन्दनिरीक्ष्यमाणे २४

कर्क में सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो वह कफ और बात से पीड़ित, चुगुलखोर, पराये काम में विघ्न करनेवाला और चपलस्वभाव होता है ।। २४ ।।

धूर्त्तो गम्भीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्धार्थयुतः प्रसिद्धः ॥
मित्रे निजक्षेत्रयुते प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे २५

सिंहराशि में सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष धूर्त्त और गम्भीर, राजाओं से मान पानेवाला, धनी और प्रसिद्ध पुरुष होता है ।। २५ ।।

नानाङ्गनाप्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः ॥
महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे २६

जो सिंहराशि में सूर्य बैठा हो और मंगल देखता हो तो अनेक स्त्रियों से

भोग व प्रीति करनेवाला, बड़ा धूर्त्त, कफप्रकृति, क्रूरस्वभाव, शूरवीर, बड़ा उद्यमी और अपने कुल में प्रधान होता है ।। २६ ।।

धूर्त्तो नृपानुव्रजनः सुसक्तो विद्धत्प्रियो लेखनतत्परश्च ।।
भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्यनिरीक्ष्यमाणे २७

सिंह में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष धूर्त्त और राजाओं का प्रिय, पण्डितों से प्रीति करनेवाला और लिखने में बड़ा चतुर होता है ।। २७ ।।

देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्त्ता स्वजनप्रियश्च ।।
भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे २८

जो सिंह में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष देवमन्दिर, बाग, ताल वा बावली-कूप आदि का बनानेवाला और सज्जनों से प्रीति करने वाला होता है ।। २८ ।।

त्वग्दोषरोषापयशोभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ।।
स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चाननेऽर्के भृगुजेन दृष्टे २९

सिंह में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो तो त्वचा में रोगवाला, क्रोधी, अपयशी, उत्साहरहित, अपने इष्टमित्रों का विरोधी तथा सत्य और दया से विहीन होता है ।। २९ ।।

शठो नरः कार्य्यविघातकर्त्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम् ।।
नरो मृगेन्द्रोपगते दिनेशे दिनेशपुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ३०

सिंह में सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो वह शठ बुद्धि, अपना कार्य बिगाड़नेवाला और घर के लोगों को भी संताप देनेवाला होता है ।। ३० ।।

कायकान्तिसुतसौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली ।।
स्यान्नरः सुरपुरोहितभस्थे भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ३१

यदि बृहस्पति के घर में सूर्य बैठा हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो शोभायमान शरीर, पुत्र-सुखसमेत, वाग्विलास में कुशल और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है ।। ३१ ।।

संग्रामसंततयशो विशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसङ्गः ।।
स्थिराश्रयो जीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ३२

बृहस्पति के घर में सूर्य स्थित हो और मंगल देखता हो तो संग्राम में विशेष यश पानेवाला, वक्ता, अकेला रहनेवाला, स्थिर आश्रयवाला और प्रचण्डस्वभाव वाला होता है ॥ ३२ ॥

धातुक्रियाकाव्यकलाकथाज्ञः सद्वाक्यमन्त्रादिविधिप्रवीणः ॥
सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ३३

बृहस्पति के घर में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष धातुके बनाने में चतुर, काव्यरचना और कथा का जाननेवाला, श्रेष्ठ वचनों का बोलनेवाला, मन्त्र-यन्त्र साधन में प्रवीण और सज्जनों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

नृपालमैत्री कुलभूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः ॥
विद्वान् पुमान् भानुमतीज्यगेहे संदृष्टदेहेमरपूजितेन ३४

जो बृहस्पति के घर में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता भी हो तो राजाओं से प्रीति रखनेवाला, अपने कुल की मर्यादा का पालनेवाला और शिल्पकार्य की विधि का जाननेवाला, धन-धान्य से युक्त तथा विद्यावान् होता है ॥ ३४ ॥

सुगन्धमालाम्बरचारुयोषाभूषाविशेषानुभवाप्तसौख्यः ॥
भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ३५

बृहस्पति के घर में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो तो सुगंध पदार्थ, पुष्पमाला, उत्तम वस्त्र, श्रेष्ठ स्त्री और बहुत आभूषणों से युक्त अनेक सुख पानेवाला होता है ॥ ३५ ॥

परान्नभुङ्नीचतरप्रवृत्तश्चतुष्पदप्रीतिधरो नरः स्यात् ॥
सूर्ये सुराचार्य्यगृहे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुते न सूतौ ३६

बृहस्पति के घर में सूर्य बैठा हो और शनि देखता हो तो पराया अन्न खानेवाला, नीचकर्म करनेवाला तथा चौपाये जीवों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

नारीप्रसङ्गेन गतार्थसौख्यो मायापटुश्चञ्चलचित्तवृत्तिः ॥
भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मनिस्थे सहस्ररश्मौ हिमरश्मिदृष्टे ३७

जो सूर्य शनि के घर में बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो स्त्री के प्रसंग से धन और सुख का नाश, माया रचने में चतुर और चञ्चल चित्त की वृत्तिवाला होता है ॥ ३७ ॥

परकलहगतार्थो व्याधिवैरिप्रतप्त-
स्त्वतिविकलशरीरोऽत्यन्तचिन्तासमेतः ॥
भवति ननु मनुष्यः सम्भवे तिग्मराशौ
गतवति सुतगेहे दृष्टदेहे कुजेन ३८

जो शनि के घर में सूर्य बैठा हो और मंगल देखता हो तो पराये कलह में धन का खर्चनेवाला, वैरी और व्याधि से दुःखी, विकल शरीर और चिन्तायुक्त होता है ॥ ३८ ॥

क्लीबस्वभावः परचित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात् ॥
दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमन्दिरस्थे ३९

शनि के घर में सूर्य बैठा हो और बुध देखता हो तो नपुंसक का सा स्वभाव, पराये चित्त का हरनेवाला, साधुजनों से त्यागा हुआ और शूर-वीर होता है ॥ ३९ ॥

सत्कर्मकर्त्ता मतिमान् बहूनां समाश्रयश्चारुयशो मनस्वी ॥
स्यान्मानवो भानुसुतालयस्थे भानौ च वाचस्पतिना प्रदृष्टे ४०

शनि के घर में सूर्य बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष उत्तम कर्म करनेवाला, बुद्धिमान्, बहुतजनों का पालनेवाला, बड़े यशका पानेवाला तथा उदारचेता होता है ॥ ४० ॥

शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वरांगनाभ्योपि धनोपलब्धिम् ॥
करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः ४१

जो शनि के घर में सूर्य बैठा हो और शुक्र देखता हो तो शंख, मूंगा, उत्तम रत्न और धनवाला तथा श्रेष्ठ स्त्रियों से भी धन का लाभ करनेवाला होता है ॥ ४१ ॥

प्रौढप्रतापाद्विजितारिपक्षः क्षोणीपतिप्रीतिमहाप्रतिष्ठः ॥
प्रसन्नमूर्त्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालयेऽर्के शनिना प्रदृष्टे ४२

इति मेषादिगृहगतरविं प्रति ग्रहदृष्टिफलम्।

शनि के घर में सूर्य बैठा हो और शनि की दृष्टि हो तो बड़ा प्रतापी, शत्रुजनों

का जीतनेवाला, राजाओं से प्रीति और प्रतिष्ठा का पानेवाला तथा प्रसन्न वदन रहता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिगृहगत रविप्रति ग्रहदृष्टिफल ।

अथ मेषादिगृहगतचन्द्रम्प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

उग्रस्वभावोपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः ॥
नरो भवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशाङ्के नलिनीशदृष्टे १

चन्द्रमा के ऊपर दृष्टि का फल ।

मेष में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो उग्रस्वभाव होने पर भी नम्रता से कोमल वाणी बोलनेवाला, धीर, राजाओं से भाग्य की वृद्धि पानेवाला और संग्राम में भयभीत बना रहता है ॥ १ ॥

विषाग्निवातास्त्रभयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च ॥
दन्ताक्षिपीडा निविडा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे २

मेष में स्थित चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो तो विष, अग्नि, वातव्याधि और शस्त्र से भय होता है तथा मूत्ररोगी एवं दांत और नेत्रों में पीड़ायुक्त बना रहता है ॥ २ ॥

विलसदमलकीर्त्तिः सर्वविद्याप्रवीणो
द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् ॥
भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशाङ्कः
शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ३

चन्द्रमा मेष में स्थित हो और बुध देखता हो तो निर्मल कीर्त्तियुक्त, समस्त विद्या में प्रवीण, अनेक गुणयुक्त, धनी, सज्जनों की सम्मति करनेवाला तथा उत्तम सम्पत्ति और प्रतिष्ठायुक्त रहता है ॥ ३ ॥

नृपप्रधानः पृथिवीपतिर्वा कुलानुमानाद्बहुसम्पदाढ्यः ॥
भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ४

चन्द्रमा मेष में स्थित हो और बृहस्पति देखता हो तो अपने कुलानुसार राजा का मन्त्री या स्वयं राजा होता है और बहुत संपदायुक्त होता है ॥ ४ ॥

योषाविभूषाधनसूनुसौख्यो भोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः ॥
स्यात्पुरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ५

जो मेष में चन्द्रमा बैठा हो और शुक्र देखता हो तो स्त्री, धन, आभूषण और पुत्र इनके सुख से युक्त, भोगी, श्रेष्ठ वक्ता और गुणवान् होता है ॥ ५ ॥

गदयुतं हृतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्यमसत्कृतम् ॥
क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ६

मेष में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो रोगयुक्त शरीर, उत्साह रहित चित्त, धनहीन, मिथ्यावादी और निरादर पानेवाला होता है ॥ ६ ॥

कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मान्त्रिकोवाहनधान्ययुक्तः ॥
नरो नितान्तश्चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशाङ्के ७

वृष में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो खेती करनेवाला, विधि विधान का जाननेवाला, मन्त्रविद्या में कुशल, धन-धान्य और वाहनों से युक्त तथा अपना कार्य साधने में बड़ा चतुर होता है ॥ ७ ॥

कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात् साधुमित्रः सुतरां पवित्रः ॥
प्रसन्नमूर्त्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ८

वृष में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह पुरुष कामी, स्त्रियों का मन हरनेवाला, साधुजनों का मित्र, बहुत पवित्र और प्रसन्न वदन होता है ॥ ८ ॥

प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च ॥
गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद् वृषे शशाङ्कः शशिजेन दृष्टः ९

वृष में स्थित चन्द्रमा को बुध देखता हो तो वह पुरुष चतुर, विधि विधान का जाननेवाला, सर्वजनों पर कृपा करनेवाला, प्रसन्न चित्त, सर्वजनों का हितकारी और गुणी होता है ॥ ९ ॥

जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्त्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः ॥
भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद् वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः १०

वृष में विराजमान चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो स्त्री-पुत्रादिकों से आनन्द पानेवाला, उत्तम कीर्तिवाला, धर्म के कामों में लगनेवाला और पितृभक्त होता है ॥ १० ॥

भूषणाम्बरगृहासनशय्यागन्धमाल्यचतुरंघ्रिसुखानि ॥
आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ११

वृष में स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो उत्तम वस्त्र, आभूषण, घर, आसन, शय्या, सुगंध, माला और चौपाये जीव इन सब वस्तुओं की प्राप्ति से सुख पाता है ॥ ११ ॥

कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः ॥
करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथा परार्धे खलु तातघातम् १२

चन्द्रमा वृष के पूर्वदल (प्रथम होरा) में हो और शनि देखता हो तो माता की मृत्यु होती है और जो चन्द्रमा परभाग में हो और शनि देखता हो तो पिता की मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततङ्करोति ॥
नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितो भानुमता च दृष्टः १३

जो जन्मकाल में चन्द्रमा मिथुनराशि में बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष पण्डित, सुशील, धनहीन, निरन्तर क्लेशयुक्त और सब उत्सवों वाला होता है ॥ १३ ॥

उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः ॥
युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन १४

जो जन्म समय में मिथुन में चन्द्रमा बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो उदार स्त्रीवाला, चतुर, शूर, बुद्धिमान, बड़ा ज्ञानी और धन-वाहन से युक्त रहता है ॥ १४ ॥

धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति ॥
निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः १५

मिथुन में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो धीर, शुभ आचरण करने वाला, उदार चित्त और राजा से धन पानेवाला होता है ॥ १५ ॥

विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् ॥
करोति मर्त्यं मिथुनेऽधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः १६

मिथुन का तो चन्द्रमा हो और बृहस्पति उसे देखता हो तो वह पुरुष विद्या

और विवेकयुक्त, धनी, प्रसिद्ध, नम्रस्वभाव और हमेशा पुण्याचरण करनेवाला होता है ।। १६ ।।

व स्त्रप्रसूनान्नवरांगनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः ।।
करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वस्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः १७

मिथुन में चन्द्रमा बैठा हो तथा शुक्र देखता हो तो उत्तम वस्त्र, सुगन्धियुक्त पुष्प, उत्तम भोजन, स्त्री, वाहन और आभूषणों से सुख पानेवाला होता है ।। १७ ।।

धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विश्लेषमायाति विगर्हितत्वम् ।।
नरो हि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ १८

मिथुन में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो स्त्री, धन, वाहन और पुत्रादिकों से सुख को नहीं पाता है तथा निन्दित होता है ।। १८ ।।

निरर्थकक्लेशकरं विकीर्णैर्नृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम् ।।
कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः १९

जन्म के समय कर्क में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो नीचजनों से व्यर्थ कलह करनेवाला, राजा के आश्रित और किला का अधिकारी होता है।।१९।।

दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणाङ्गयष्टिं मनुजं करोति ।।
कुलीरसंस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान् किल मंगलेन २०

जन्मसमय कर्क में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो दक्ष, शूर, माता का विरोधी और दुर्बल शरीरवाला होता है ।। २० ।।

दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवम्मनुष्यम् ।।
कर्काधिरूढः कुरुते हिमांशुर्हिमांशुपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः २१

कर्क में स्थित चन्द्रमा को बुध देखता हो तो स्त्री, पुत्र, धन की उन्नति और नीति इनसे सुखी तथा सेना का पति अथवा राजा का मन्त्री होता है ।। २१ ।।

नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारु पराक्रमं च ।।
करोति जातं यदि चक्रवर्त्ती पियूषमूर्त्तिर्गुरुणेक्ष्यमाणः २२

कर्क में स्थित चन्द्रमा को गुरु देखता हो तो राजा से अधिकार पानेवाला, गुणी, नीति का जाननेवाला, हमेशा सुखी और उत्तम पराक्रमयुक्त चक्रवर्ती राजा होता है ।। २२ ।।

सद्रत्नचामीकररत्नभूषावरांगनासौख्ययुतं नितान्तम् ॥
नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्रनिरीक्ष्यमाणः २३

कर्क में स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो उत्तम रत्न, सुवर्ण, आभूषण और उत्तम स्त्रियों से हमेशा सुख पानेवाला होता है ॥ २३ ॥

सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनम्पापरतं गतार्थम् ॥
करोति जातं निजगेहगामी चेद्यामिनीशो रविजेन दृष्टः २४

कर्क में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो झूंठ बोलनेवाला, माता से विरोध करनेवाला, सदा घूमनेवाला, पापी और धनहीन होता है ॥ २४ ॥

गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं वरपदं च विलंघितसंततिम् ॥
हरिगतो वितनोति निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः २५

सिंह में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो गुणी, राजाओं का प्यारा, उत्तम पद (अधिकार) को प्राप्त तथा संतान त्यागनेवाला होता है ॥ २५ ॥

नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखोहि भवेन्नरः ॥
हरिणलक्ष्मणि केसरिणि स्थिते क्षितिसुतेन तनु प्रविलोकिते २६

सिंह में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो राजा का मंत्री होता है एवं धन, वाहन तथा पुत्र और स्त्री इनसे सुखी रहता है ॥ २६ ॥

धनांगनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति ॥
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः २७

सिंह में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो धन, स्त्री, पुत्र और वाहनों से हमेशा सुखी बना रहता है ॥ २७ ॥

बहुश्रुतं विस्मृतसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः प्रधानम् ॥
चन्द्रोऽमरेन्द्रोपगतोमरेन्द्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले २८

जन्मसमय सिंह में चन्द्रमा बैठा हो और गुरु देखता हो तो बहुश्रुत, साधुजनों के संग को भूलनेवाला और राजा का मंत्री होता है ॥ २८ ॥

स्त्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम् ॥
पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः २९

सिंह में स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो स्त्री से सुख, विभवसमेत, गुणी, गुण का जाननेवाला, चतुर, पण्डित और विधि-विधान का जाननेवाला होता है ।। २९ ।।

कान्तावियुक्तः कृषिकर्मदक्षो दुर्गाधिकारो हि नरोऽल्पकार्यः ।।
सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ३०

सिंह में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो स्त्री का वियोगी, खेती के काम में चतुर, किलेदार और अल्पकार्य का करनेवाला होता है ।। ३० ।।

भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्य्याविमुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् ।।
जातश्च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं खररश्मिदृष्टः ३१

कन्या में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो राजद्वार में धन का अधिकारी (खजांची), श्रेष्ठ आचरण करनेवाला, स्त्री से अलग रहनेवाला तथा गुरुभक्त होता है ।। ३१ ।।

हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ ।।
कुमारिकासंश्रितशीतभानुर्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति ३२

कन्या में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो हिंसक, बड़ा शूर, क्रोधी, राजा के आश्रित और संग्राम में विजय पानेवाला होता है ।। ३२ ।।

ज्योतिर्विद्याकाव्यसंगीतविद्यं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्त्तिं विनीतम् ।।
कुर्य्यान्नूनं मानवं मानवंतं कन्यास्थेन्दुश्चेन्दुजेन प्रदृष्टः ३३

कन्या में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो ज्योतिर्विद्या, काव्य तथा संगीत विद्या में बड़ा निपुण, विद्यावान्, संग्राम में विजय पानेवाला और विनीत होता है ।। ३३ ।।

भूरिबन्धुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकीर्तिसंयुतम् ।।
मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चंद्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ३४

कन्या में स्थित चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो बहुत बन्धुओंवाला, राजाओं से प्रीति करनेवाला, उत्तम आचरणवाला तथा कीर्त्ति का पानेवाला होता है ।। ३४ ।।

विलासिनीकेलिविलासचित्तं कान्ताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम् ॥
कुर्य्यान्नरं शीतकरः कुमार्य्यां संस्थः सितेन प्रविलोकितश्च ३५

कन्या में चन्द्रमा बैठा हो और शुक्र देखता हो तो स्त्रियों में हास-विलास करने वाला, स्त्री के आधीन और राजाओं से धन का पानेवाला होता है ॥ ३५ ॥

निष्किञ्चनं हीनमतिं नितान्तं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्या ॥
हीनम्प्रकुर्य्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगाङ्कोऽर्कसुतेन दृष्टः ३६

कन्या में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो दरिद्री, बिलकुल बुद्धि से हीन, स्त्री के आश्रय से धन पानेवाला और माता करके विहीन होता है ॥ ३६ ॥

सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः ॥
मित्रैरमित्रैश्च नरोतितप्तस्तुलाधरे शीतकरेऽर्कदृष्टे ३७

तुला में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो हमेशा घूमनेवाला, सुख और धन से हीन तथा अच्छी स्त्री, पुत्र और स्वजनों से रहित एवं शत्रु व मित्र-जनों से दुःखी रहता है ॥ ३७ ॥

बुद्ध्या परार्थाकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम् ॥
करोति जातं हि तुलागतेन्दुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ३८

तुला में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो अपनी बुद्धि से परकार्य का नाश करनेवाला, मायावी तथा विषयों से तप्त होता है ॥ ३८ ॥

कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैस्समेतम् ॥
कुर्य्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ३९

तुला में स्थित चन्द्रमा को बुध देखता हो तो शिल्पविद्या की विधि का जाननेवाला, धन-धान्य से युक्त, बोलने की शक्ति तथा विद्या-विभव से युक्त होता है ॥ ३९ ॥

विचक्षणो वस्त्रविभूषणेषु क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने ॥
तुलाधरे शीतकरे नरः स्याद् दृष्टे शुनासीरपुरोहितेन ४०

तुला में चन्द्रमा बैठा हो और गुरु देखता हो तो वस्त्र और आभरणों के कार्य में तथा क्रय-विक्रय में बड़ा चतुर होता है ॥ ४० ॥

प्राज्ञस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः ॥
हृष्टो नरः पीतकलेवरश्च जूके मृगाङ्के भृगुजेन दृष्टे ४१

तुला में चन्द्रमा बैठा हो और शुक्र देखता हो तो बड़ा चतुर, अनेक उद्यमों से धन की प्राप्ति करनेवाला, राजाओं की कृपा का पात्र, प्रसन्नचित्त और पीतवर्ण शरीरवाला होता है ॥ ४१ ॥

धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोऽपि हीनो विषयोपभोगैः ॥
भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूजदृष्टे ४२

जन्म के समय तुला में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो धन, धान्य तथा उत्तम वाहनों से युक्त होकर भी विषय-भोग से रहित होता है ॥ ४२ ॥

सद्वृत्तहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यन्तकृतप्रयासम् ॥
सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्याच्चाराधिपः कौर्प्यगतोऽर्कदृष्टः ४३

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो निषिद्धवृत्ति का करने वाला, धनवान्, मनुष्यों को असह्य, बड़ा परिश्रम करनेवाला तथा सेना में निवास करनेवाला होता है ॥ ४३ ॥

रणांगणावाप्तयशो विशेषो गम्भीरतागौरवसंयुतश्च ॥
भूपानुकम्पासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ४४

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो संग्राम में विशेष यश पानेवाला, गौरव तथा गंभीरता से युक्त और राजा की दया से बहुत धन पानेवाला होता है ॥ ४४ ॥

वाग्विलासकुशलो रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितान्तम् ॥
कूटकर्म्मणि नरो निपुणः स्याद् वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे ४५

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो वाग्विलास में कुशल, संग्राम में बड़ा धीर, नृत्य और गीत में निरंतर तत्पर तथा कूट करने में निपुण होता है ॥ ४५ ॥

लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः ॥
स्यान्मानवोजन्मनि शीतरश्मौ संस्थेलिनीज्येन निरीक्ष्यमाणे ४६

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और गुरु देखता हो तो संसार के मुताबिक

चलनेवाला, श्रेष्ठ स्वरूप, अच्छा कर्म करनेवाला तथा धन और आभूषणों से युक्त होता है ।। ४६ ।।

प्रसन्नमूर्त्तिः समुदारकीर्त्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः ॥
कान्ताहृतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ४७

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और शुक्र देखता हो तो प्रसन्न बदन, उदार चित्त, कूट करने में निपुण, धन और वाहन से युक्त तथा स्त्रियों में धन खर्चनेवाला होता है ।। ४७ ।।

स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्त्वयक्ष्मप्रकोपम् ॥
कुर्याच्चन्द्रः सूतिकालेऽलिसंस्थे छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः ४८

वृश्चिक में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो स्थान से भ्रष्ट, दीनता का नाश करनेवाला, थोड़े धनवाला, नीच सन्तानवाला, निर्बल और यक्ष्मारोग से पीड़ित होता है ।। ४८ ।।

प्रौढप्रतापोत्तमकीर्त्तिसम्पत्सद्वाहनान्याहवजं जयञ्च ॥
नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ४९

धन राशि में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य्य देखता हो तो बड़ा प्रतापी, उत्तम कीर्त्ति और धनवाला, श्रेष्ठवाहनों से युक्त, संग्राम का जीतनेवाला और राजाओं का प्यारा होता है ।। ४९ ।।

सेनापतित्वञ्च महत्प्रतापं पद्मालयालङ्करणोपलब्धिम् ॥
कुर्य्यान्नराणां हरिणाङ्क एषः शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ५०

धन राशि में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो सेना का पति और बड़ा प्रतापी तथा लक्ष्मी और अनेक आभूषणों का पानेवाला होता है ।। ५० ।।

सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्य्यान्नरं ज्योतिषशिल्पविद्यम् ॥
तुरङ्गजंघे हि कुरङ्गजन्मा कुरङ्गलक्ष्मप्रभवेन दृष्टः ५१

धन राशि में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो बाणी का विलास करनेवाला, बहुत भृत्यजनों से युक्त और ज्योतिष व शिल्पविद्या में बड़ा कुशल होता है ।। ५१ ।।

महत्पदस्थो धनवान् सुवृत्तो भवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः ॥
धनुर्द्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ५२

धन राशि में चन्द्रमा बैठा हो और गुरु देखता हो तो बड़ा अधिकार पानेवाला, धनी, सुन्दर शरीर और श्रेष्ठ कर्म करनेवाला होता है ।। ५२ ।।

सन्तानार्थात्यन्तसञ्जातधर्म्मः शश्वत्सौख्येनान्वितोमानवः स्यात् ॥
तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणत्वम्प्रयातः ५३

जन्मसमय धन राशि में स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो धन, सन्तान तथा उत्तम धर्मवाला और हमेशा सुख भोगनेवाला होता है ।। ५३ ।।

सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्धक्तारम्मानवञ्चं प्रचण्डम् ॥
कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिः करोति ५४

जिसके धन राशि में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो वह सतोगुणी, हमेशा शास्त्र में अभ्यास रखनेवाला, सत्य बोलनेवाला और प्रचंड होता है।।५४।।

गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः ॥
हिमकरे मकरे च दिवाकरे क्षितितनौ हि नरः प्रभवेद्यदि ५५

मकर में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य देखता हो तो धनहीन, मलिन वेष, घूमने-फिरने में प्रसन्न, बुद्धिहीन और निश्चय दुःखित मन होता है ।। ५५ ।।

अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितान्तं मृगे मृगाङ्केऽवनिसूनुदृष्टे ५६

मकर में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह मनुष्य तेजस्वभाव, धन और वाहन से युक्त, बुद्धिमान्, स्त्री-पुत्रादिकों से सुखी तथा विभव का भोगनेवाला होता है ।।५६ ।।

बुद्ध्या हीनो निर्द्धनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झितः पूरुषःस्यात् ॥
आर्कीकेरः स्थावरे शीतरश्मौ पीयूषांशोरात्मजेन प्रदृष्टे ५७

मकर में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो बुद्धिहीन, धनहीन, घर का त्याग करनेवाला तथा स्त्री-पुत्रादिकों से त्याग दिया जाता है ।। ५७ ।।

नृपात्मजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नरः स्यात् ॥
मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे ५८

जिसके जन्मकाल में मकरगत चन्द्रमा को गुरु देखता हो तो वह राजा का पुत्र, सतोगुणी, गुणग्राही और स्त्री पुत्रादिकों से युक्त होता है ।। ५८ ।।

सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूषणवस्त्रसुखी नरः ॥
कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जनौ ननु वीक्ष्यते ५९

जन्मसमय मकर में स्थित चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो सुन्दर नेत्रवाला, धन और वाहनयुक्त तथा पुत्र, वस्त्र और आभूषणों से सुखी बना रहता है ॥ ५९ ॥

महालसोमन्दधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥
पीयूषमूर्त्तिर्यदि नक्रवर्त्ती त्रिमूर्त्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः ६०

मकर में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो बड़ा आलसी, थोड़ा धनवाला, मिथ्या बोलनेवाला, मलिनतायुक्त और व्यसनों से घिरा रहता है ॥ ६० ॥

कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्म्मरतो नरः स्यात् ॥
पीयूषमूर्त्तिर्यदिकुम्भगामी त्वंभोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः ६१

कुम्भ में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य्य देखता हो तो खेती करनेवाला, जालसाजी करनेवाला, राजा के आश्रित और धर्म्म में निरत होता है ॥ ६१ ॥

धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो
विषमतमपदार्थोत्पादकोऽनल्पजल्पः ॥
भवति मलिनचित्तोत्यन्तधूर्त्तो हि मर्त्यः
शशिनि कलशयाते वीक्षिते भूसुतेन ६२

कुम्भ में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो धन, स्थान, माता तथा पिता से अलग रहनेवाला, बहुत कठिन पदार्थ का बनानेवाला, बहुत बोलनेवाला, मलिन चित्त और बड़ा धूर्त्त होता है ॥ ६२ ॥

विषयसौख्यरतोशनसंविधौ युरुचिरतीवशुचिः प्रियभाषणः ॥
युवतिगीतसुनीतिकृतादरो घटगतेन्दुरिह ज्ञनिरीक्षितः ६३

कुम्भ में चन्द्रमा बैठा हो और बुध देखता हो तो विषयसुख में प्रीति रखने वाला, भोजन के विधान में रुचिवाला, अत्यन्त पवित्र, प्रियवचन बोलनेवाला तथा स्त्रियों के गीत और नीति आदि का आदर करनेवाला होता है ॥ ६३ ॥

महीपुरग्रामसुखादिसौख्यं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम् ॥
कुर्य्यान्नरं श्रेष्ठतरं घटस्थो निशाकरः शक्रगुरुप्रदृष्टः ६४

कुम्भ में चन्द्रमा बैठा हो और गुरु देखता हो तो पृथ्वी, नगर और ग्राम आदि के सुखवाला, अनेक भोगों से युक्त, साधुजनों से प्रीति करनेवाला और उत्तम पुरुष होता है ॥ ६४ ॥

मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनोजनोत्सारितगौरवः स्यात् ॥
निशाकरे कुम्भधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन ६५

जिसके जन्मकाल में कुम्भगत चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तो वह मित्र, पुत्र, स्त्री और गृह के सुख से विहीन, दीन और गौरवरहित होता है ॥ ६५ ॥

खरोष्ट्रबालाश्वतरादिलाभं कुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम् ॥
करोति पुंसां हि घटेऽधितिष्ठन् निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः ६६

कुम्भ में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो गधा, ऊँट, नये घोड़े आदि के लाभवाला और नीच स्त्री में रत तथा धर्म्म से विरोध करनेवाला होता है ॥ ६६ ॥

मनोभवोत्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वम्बहुवित्तवृद्धिम् ॥
सत्कार्य्यसिद्धिं कुरुते हिमांशुर्झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणः ६७

मीन में चन्द्रमा बैठा हो और सूर्य्य देखता हो तो बड़ा कामी, उत्तम सुख पानेवाला, सेनापति, बड़ा धनी और उत्तम कार्य्य का साधनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

पराभिभूतं कुलटाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतन्नितान्तम् ॥
करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः ६८

मीन में चन्द्रमा बैठा हो और मंगल देखता हो तो शत्रुओं से तिरस्कृत, कुलटा स्त्रियों से प्रीति करनेवाला, पाप कर्म्म करनेवाला और निरन्तर दुःखी बना रहता है ॥ ६८ ॥

वरांगनासूनुसुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् ॥
कुर्य्यान्नराणां हरिणांक एष वैसारिणस्थो ज्ञनिरीक्ष्यमाणः ६९

मीन में चन्द्रमा बैठा हो और उसे बुध देखता हो तो उत्तम स्त्री व पुत्रों से सुखी और राजद्वार में धन व मान का पानेवाला होता है ॥ ६९ ॥

उदारदेहं सुकुमारदेहं सद्गेहिनीसूनुधनादिसौख्यम् ॥
नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पतिवीक्षितश्चेत् ७०

मीन में स्थित चन्द्रमा को गुरु देखे तो वह उदार तथा सुकुमार शरीरवाला तथा श्रेष्ठ स्त्री, धन और पुत्र आदि के सुख से युक्त व राजा होता है ।। ७० ।।

सद्गीतवाद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनीकेलिविलासशीलम् ॥
करोति मर्त्यं तिमियुग्मसंस्थः शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्रदृष्टः ७१

मीन में चन्द्रमा बैठा हो और शुक्र देखता हो तो गीत-वाद्य में निरत, उत्तम चरित्र और स्त्रियों से हास-विलास करने में बड़ा कुशल होता है ।। ७१ ।।

कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचांगनासख्यमविक्रमं च ॥
नीहाररश्मिश्शफरं प्रपन्नो नरं विदध्याद्रविसूनुदृष्टः ७२

इति मेषादिगृहगतचंद्रं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

मीन में चन्द्रमा बैठा हो और शनि देखता हो तो कामातुर, स्त्री-पुत्रादिकों से हीन, नीचस्त्रियों से संग करनेवाला और हीन पराक्रमी होता है ।। ७२ ।।

इति मेषादिगृहगत चन्द्रप्रति ग्रहदृष्टिफल ।

अथ मेषादिगृहगतभौमं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

प्राज्ञः सुवक्ता पितृमातृभक्तो धनी प्रधानोऽतितरामुदारः ॥
नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनीराजनिरीक्ष्यमाणे १

मंगल के ऊपर दृष्टि का फल ।

मेष व वृश्चिकराशि में मङ्गल बैठा हो और सूर्य देखता हो तो पण्डित, वक्ता, माता-पिता का भक्त, धनी, राजा का मन्त्री तथा बड़ा उदार होता है ।। १ ।।

अन्याङ्गनासक्तमतीवशूरं कृपाविहीनं हतचौरवर्गम् ॥
नरं प्रकुर्य्यान्निजधामगामी भूमीतनूजो द्विजराजदृष्टः २

मेष व वृश्चिक में मङ्गल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो परस्त्री का संगी, बड़ा शूरवीर, दयारहित और चोरों का नाश करनेवाला होता है ।। २ ।।

पण्यांगनालंकरणैकवृत्तिर्विचक्षणोऽन्यद्रविणापहारी ॥
भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ३

जन्मसमय मेष व वृश्चिक में मंगल बैठा हो और बुध देखता हो तो वेश्याओं को वस्त्र अलंकार आदि से विभूषित करनेवाला, चतुर तथा पराया धन हरनेवाला होता है ।। ३ ।।

वंशेऽवनाशो धनवान् सकोपो नृपोपचारः कृतचौरसख्यः ॥
आरे निजागारगते नरः स्यात् सूतौ सुराचार्य्यनिरीक्ष्यमाणे ४

मेष व वृश्चिक में मंगल बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो अपने कुल में राजा, धनी, क्रोधी, राजचिह्नयुक्त और चोरों से मित्रता करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

भूयो भूयो भोजनौत्सुक्यसक्तः
कान्ताहेतोर्यानचिन्ता नितान्तम् ॥
प्राणी पुण्ये कर्म्मणि प्रीतिमान् स्यात्
स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे ५

मेष व वृश्चिक में मंगल बैठा हो और शुक्र देखता हो तो बारंबार भोजन करनेवाला, स्त्री के लिये सवारी की चिन्ता करनेवाला और दानधर्म में अधिक प्रीति रखनेवाला होता है ॥ ५ ॥

मित्रोज्झितम्मातृवियोगतप्तं कृशाङ्गयष्टिं विषमं कुटुम्बे ॥
ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात् कुजः स्वभेस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ६

मेष व वृश्चिक में मंगल बैठा हो और शनि देखता हो तो मित्रों से त्यागा हुआ, माता के वियोग में संतप्त, दुर्लभ शरीर, कुटुम्ब में द्वेष करनेवाला तथा बहुत ईर्ष्यावाला होता है ॥ ६ ॥

कान्तामनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनादिसंस्थानरुचिं विपक्षम् ॥
प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ७

शुक्र के घर में मङ्गल बैठा हो और सूर्य्य देखता हो तो स्त्रीजनों से विरक्त, सघन वनादि में रहने की रुचिवाला, शत्रुरहित और कोपयुक्त होता है ॥ ७ ॥

अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्बह्वङ्गनानामपि नायकश्च ॥
स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ८

जो शुक्र के घर में मङ्गल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो माता का विरोधी, युद्ध से डरनेवाला और बहुत स्त्रियों का स्वामी होता है ॥ ८ ॥

शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च ॥
सत्कायकान्तिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ९

शुक्र के घर में स्थित मङ्गल को बुध देखता हो तो शास्त्राभ्यास करने में निपुण, कलह में प्रीति रखनेवाला, बकवादी, थोड़ा धन पानेवाला और उत्तम शरीर की कान्तिवाला होता है ॥ ९ ॥

बन्धुप्रिये स्यान्निरतोऽतिभाग्यः सद्गीतनृत्यादिविधिप्रवीणः ॥
क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते संवीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ १०

जन्मसमय में शुक्र के घर में मङ्गल बैठा हो और गुरु देखता हो तो बन्धुजनों में प्रीति रखनेवाला, बड़ी भाग्यवाला तथा नाचने-गाने की विद्या में बड़ा प्रवीण होता है ॥ १० ॥

सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः ॥
स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुते सितेन ११

जिसके जन्मकाल में शुक्र के घर में मङ्गल बैठा हो और शुक्र देखता भी हो तो वह बहुत जनों से प्रशंसा पानेवाला, राजा का मन्त्री, सेनापति और बहुत सुखभोग करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

ख्यातो विनीतो धनवान् सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः ॥
नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनन्दने भानुसुतेन दृष्टे १२

शुक्र के घर में मङ्गल बैठा हो और शनि देखता हो तो बड़ा विख्यात, विनीत, धनयुक्त, उत्तम मित्रोंवाला, पवित्र बुद्धिवाला, शास्त्रों में परिश्रम करनेवाला तथा पुर और ग्रामों का स्वामी होता है ॥ १२ ॥

विद्याधनैश्वर्ययुतं सुसत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम् ॥
कुर्य्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुते सूर्यनिरीक्ष्यमाणे १३

जो बुध के घर (मिथुन और कन्या) में स्थित मङ्गल को सूर्य देखता हो तो वह पुरुष विद्या, धन व ऐश्वर्य से युक्त, पराक्रमी और वन, किला तथा पर्वतादि में विहार करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

संरक्षणे भूपतिना नियुक्तं कान्तारतिं सत्त्वयुतं सतोषम् ॥
भूमीसुतः सञ्जनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः १४

बुध के घर में मङ्गल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो राजा की कृपा से प्रजा की रक्षा में नियुक्त, स्त्रियों से प्रीति करनेवाला, सतोगुणी और संतोष वाला होता है ॥ १४ ॥

अनल्पजल्पङ्गणितप्रगल्भं काव्यप्रियञ्चानृतचारुवाक्यम् ॥
दौत्ये प्रयासैः सहितम्प्रकुर्य्याद्धरातनूजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः १५

बुध के घर में मंगल बैठा हो तथा बुध ही देखता हो तो बड़ा वक्ता, गणित विद्या में कुशल, काव्यकर्त्ता, असत्य और सुन्दर वचनवाला तथा दूतकर्म में बड़ा प्रयास करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः ॥
सोमसूनुभवनेवनिसूनुर्दानवारिसचिवेनं च दृष्टः १६

बुध के घर में मंगल बैठा हो और गुरु देखता हो तो वह अनेक व्यसनसंयुक्त विदेश की यात्रा करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कान्ताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम् ॥
कुर्य्यान्नरम्भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनन्दनेन १७

बुध के घर में मंगल बैठा हो तथा शुक्र देखता हो तो उत्तम वस्त्र, भोजन और पेय पदार्थों से सुख पानेवाला, स्त्रियों में आसक्त और बहुत समृद्धिशाली होता है ॥ १७ ॥

अतीवशूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः ॥
भवेन्नरो भास्करसूनुदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे १८

बुध के घर में मंगल बैठा हो और शनि देखता हो तो बड़ा शूरवीर, मलिन वेष, आलसी स्वभाव तथा वन, किला और पर्वतादि में विहार करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

पित्तप्रकोपार्त्तियुतोऽतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः ॥
भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ १९

कर्क में मंगल बैठा हो और सूर्य देखता हो तो पित्त के कोप से क्लेश पानेवाला, बड़ा धीर, दण्डदेने का अधिकारी और बड़ा प्रतापी होता है ॥ १९ ॥

गदाभिभूतो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः ॥
भवेन्नरः कर्कटगे महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे २०

कर्क में मंगल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो निरन्तर रोगयुक्त, गई वस्तु से शोकपानेवाला, हीन वेषक्त और साधुता से रहित होता है ॥ २० ॥

मित्रैर्वियुक्तोऽल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः ॥
बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः २१

कर्क में मंगल बैठा हो और बुध देखता हो तो मित्रों से विमुख, थोड़े कुटुम्ब के भारवाला, पापकर्म का करनेवाला तथा दुष्ट स्वभावयुक्त होता है ॥ २१ ॥

नरेन्द्रमन्त्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः ॥
कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन २२

कर्क में स्थित मंगल को गुरु देखता हो तो राजा का मंत्री, गुणी, गौरवयुक्त, मान-प्रतिष्ठा पानेवाला, दानी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है ॥ २२ ॥

अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरन्तरानर्थसमुद्भवः स्यात् ॥
भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वङ्गारके कर्कटराशिसंस्थे २३

कर्क राशि में मंगल बैठा हो तथा शुक्र देखता हो तो व्यसन से धन का नाश करनेवाला और हमेशा ही अनर्थ कार्य का करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

कीलालधान्यादिधनः सुकान्तिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः ॥
महीसुते कर्कटराशियाते निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ २४

कर्क में मंगल बैठा हो और शनि देखता हो तो जलोत्पन्न धान्यादि से धन-प्राप्ति करनेवाला व राजा से धनप्राप्ति करनेवाला तथा उत्तम शरीरवाला होता है ॥ २४ ॥

हितप्रकर्त्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता ॥
वनाद्रिकुञ्जेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे २५

सिंह में मंगल बैठा हो तथा सूर्य देखता हो तो मित्रों का सहायक, शत्रुजनों का नाश करनेवाला तथा वन और पर्वत के कुंजों में घूमनेवाला होता है ॥ २५ ॥

प्रपुष्टमूर्त्तिः कठिनस्वभावश्चाम्बाविनीतो निपुणः स्वकार्ये ॥
तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे २६

सिंह में मंगल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो हृष्ट-पुष्टबदन, क्रूरस्वभाव, माता का भक्त, अपना कार्य करने में निपुण और तीव्र बुद्धि होता है ॥ २६ ॥

सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे-
ऽभिज्ञोऽपि लुब्धश्चलचित्तवृत्तिः ॥

स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्
सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे २७

सिंह में मंगल बैठा हो और बुध देखता हो तो उत्तम काव्य रचनेवाला, कारीगरी की कलाओं में निपुण, लोभी, चंचलस्वभाव और अपने कार्य के साधन करने में निपुण होता है ॥ २७ ॥

प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतोबहूनाम् ॥
विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतो जीवेक्षिते सिंहगते महीजे २८

सिंह में मंगल बैठा हो और गुरु देखता हो तो प्रशंसित बुद्धिवाला, राजाओं का मित्र, सेनापति, बहुत मनुष्यों का मित्र और विद्या में प्रवीण होता है ॥२८॥

गर्वोन्नतोऽत्यन्तशरीरकान्तिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः ॥
भूमीसुते सिंहगते प्रसूतो नीरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन २९

सिंह में मंगल बैठा हो और शुक्र देखता हो तो अभिमानी, शोभायमान शरीर, अनेक स्त्रियों का भोग करनेवाला तथा धनवान् होता है ॥ २९ ॥

भवेन्निवासोऽन्यगृहेतिचिन्ता वृद्धाकृतित्वं द्रविणोज्झितत्वम् ॥
भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ३०

सिंह में मंगल बैठा हो और शनि देखता हो तो और के घर में निवास करनेवाला, धनहीन और वृद्धाकृति बना रहता है ॥ ३० ॥

वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च ॥
करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ३१

बृहस्पति के घर (धनुर्मीन) में मंगल बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वन, पर्वत व कोट आदि में निवास करनेवाला, तीक्ष्णस्वभाव, भाग्यशाली और सबसे आदर पानेवाला होता है ॥ ३१ ॥

विद्वद्विधिज्ञं नृपतेरसह्यङ्कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च ॥
प्राज्ञम्प्रकुर्य्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ३२

बृहस्पति के घर में मंगल बैठा हो तथा चन्द्रमा देखता हो तो विद्वानों की विधि का जाननेवाला, राजा से विरोध करनेवाला, कलह में प्रीति करनेवाला, सब मनुष्यों से त्यागा हुआ तथा पंडित होता है ॥ ३२ ॥

प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम् ॥
करोति जातं खलु लोहिताङ्गः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः ३३

जिसके जन्मसमय में बृहस्पति के घर में स्थित मंगल को बुध देखता हो तो पण्डित, शिल्पविद्या में निपुण, सुशील, सब विद्याओं में कुशल तथा नम्र स्वभाव होता है ॥ ३३ ॥

कांतातिचिन्तासहितं नितान्तमारातिवर्गैः कलहानुरक्तः ॥
स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्य्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः ३४

बृहस्पति के घर में मंगल बैठा हो और बृहस्पति ही देखता हो तो स्त्रीकी चिन्तावाला, निरन्तर शत्रुजनों से कलह करनेवाला और अपने स्थान का त्याग करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

उदारचेता विषयानुसक्तो विचित्रभूषापरिभूषितश्च ॥
भाग्यान्वितः स्यात्पुरुषोऽवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे ३५

बृहस्पति के घरमें मंगल बैठा हो औरशुक्र देखता हो तो उदारचित्त, विषय नें आसक्त, विचित्र भूषणों से भूषित वेष और भाग्यशाली होता है ॥ ३५ ॥

कायकान्तिरहितश्च नितान्तं स्थानसंचलरतोपि च दुःखी ॥
अन्यकर्म्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुरुतेऽर्कजदृष्टे ३६

बृहस्पति के घर में मंगल बैठा हो और शनि देखता हो तो बिलकुल शरीर की शोभा से रहित, अनेक स्थानों में भ्रमण करनेवाला, दुःखयुक्त और पराया काम करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

कलत्रपुत्रार्थसुखैस्समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम् ॥
कुर्यान्नरं भूतनयोर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ३७

शनि के घर में मंगल बैठा हो और सूर्य देखता हो तो स्त्री, पुत्र, धन के सुख से युक्त, श्यामवर्ण, तीक्ष्णस्वभाव और शूर-वीर होता है ॥ ३७ ॥

सद्भूषणम्मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चंचलसौहृदं च ॥
उदारचितम्प्रकरोति जातं कुजोर्कदृष्टे शशिना प्रदृष्टः ३८

शनि के घर में मंगल बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो उत्तम भूषणोंवाला,

मातृसुखहीन, स्थान से विहीन, स्थिर मित्रता न रखनेवाला और उदारचित्त होता है॥ ३८॥

प्रियोक्तियुक्तोऽटनलब्धवित्तः सत्त्वान्वितः कैतवसंयुतश्च ॥
अभीर्नरो मन्दगृहम्प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ३९

शनि के घर में मङ्गल बैठा हो और बुध देखता हो तो प्रियवचन बोलनेवाला, पर्यटन करने से धन पानेवाला, पराक्रमी, जालसाजी में निपुण तथा निर्भय होता है॥ ३९॥

दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बन्धुप्रियं चारुशरीरकान्तिम् ॥
कार्य्यप्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः ४०

शनि के घर में मङ्गल बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो दीर्घायु, गुणी, राजा की कृपा से युक्त, बन्धुजनों से प्रीति करनेवाला, कोमल शरीर की कान्तिवाला तथा कार्य में प्रलाप करनेवाला होता है॥ ४०॥

सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कान्ताप्रियोऽत्यन्तकलिप्रियश्च ॥
क्षोणीसुते मंदगृहे प्रयाते निरीक्ष्यमाणे भृगुणा नरः स्यात् ४१

शनि के घर में मङ्गल स्थित हो और शुक्र देखता हो तो उत्तम भोग, सुख-सौभाग्य समेत, स्त्रियों से प्रीति करनेवाला और अत्यन्त कलह करनेवाला होता है॥ ४१॥

नृपाप्तवित्तो वनिताविषादो बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः ॥
रणप्रियः स्याद्धरणीतनूजे मन्देक्षिते मन्दगृहं प्रयाते ४२

इति मेषादिगृहगतभौमं प्रति ग्रहदृष्टिफलम्।

शनि के घर में मङ्गल बैठा हो और शनि ही देखता हो तो राजा से धन पावे, स्त्री से विषाद करे और बहुश्रुत, बुद्धिमान्, बहुत कष्ट पानेवाला तथा लड़ाई में प्रीति करनेवाला होता है॥ ४२॥

इति मेषादिगृहगत भौम प्रति ग्रहदृष्टिफल।

अथ मेषादिगृहगत बुधं प्रति ग्रहदृष्टि फलम्।

बन्धुप्रियं सत्यवचोविलासं नृपालसद्गौरवसंयुतञ्च ॥
करोति जातं क्षितिसूनुगेहे संस्थो बुधो भानुमता प्रदृष्टः १

बुध के ऊपर दृष्टि का फल।

मङ्गल के घर (मेष और वृश्चिक) में बुध बैठा हो और सूर्य देखता हो तो बन्धुओं को प्रिय, सत्यवक्ता, विलासी और राजाओं की तुल्य अच्छे गौरव से युक्त होता है॥ १॥

सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कान्तारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः॥
कौटिल्यभाक् स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टे २

मङ्गल के घर में बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो गीत नृत्यादि में बहुत प्रीतिवाला, स्त्रियों में अनुरक्त, वाहन तथा भृत्यजनों से युक्त और कुटिलता करनेवाला होता है॥ २॥

भूपप्रियं भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च॥
क्षुधान्वितं संजनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ३

मङ्गल के घर में बुध बैठा हो और मङ्गल ही देखता हो तो राजाओं का प्यारा, बड़ा धनी, शूर, शिल्प के काम में निपुण, कलह करनेवाला और क्षुधातुर होता है॥३॥

सुखोपपन्नं चतुरं सुवाक्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम्॥
करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः ४

मङ्गल के घर में बुध बैठा हो और गुरु देखता हो तो सुख भोगनेवाला, चतुर, श्रेष्ठ वाक्यवाला, प्रसन्नचित्त और स्त्री-पुत्रादि से युक्त होता है॥ ४॥

कान्ताविलासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम्॥
करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः ५

मङ्गल के घर में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो स्त्रीजनों से हास-विलास करनेवाला, गुणों के गौरव से युक्त, मित्रों से प्रीति करनेवाला, सब से विनययुक्त और श्रेष्ठ बुद्धिवाला होता है॥ ५॥

सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलोत्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम्॥
करोति मर्त्यं हरिणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शनिना प्रदृष्टः ६

मङ्गल के घर में बुध बैठा हो और शनि देखता हो तो बड़ा साहसी तेजस्वभाव, अपने कुल में कलह करनेवाला और दुष्ट वृत्तिवाला होता है॥ ६॥

दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकाराभिरतं नितान्तम्॥
शान्तं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्य्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः ७

जो शुक्र के घर (वृष-तुला राशि) में बुध बैठा हो और सूर्य देखता हो तो दरिद्र, दुःख और रोग से पीड़ित शरीर, निरंतर परोपकार में तत्पर, शुद्ध चित्त और शान्त स्वभाववाला होता है ॥ ७ ॥

बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम् ॥
ख्यातं प्रकुर्य्यान्मनुजं हि सौम्यश्शुक्रर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ८

शुक्र के घर में बुध बैठा हो और उसे चन्द्रमा देखता हो तो बड़ा प्रपञ्ची, धन-धान्ययुक्त, दृढ़व्रत, राजा का मन्त्री और विख्यात कीर्त्तिवाला होता है ॥ ८ ॥

राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विषयश्च नूनम् ॥
कुर्य्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षे संस्थः धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ९

शुक्र के घर में बैठे हुए बुधपर मङ्गल की दृष्टि हो तो राजा से अपमान होने आदि रोगसे दुःखी, बन्धुजनों से त्यागा हुआ और विषयों से रहित होता है ॥९॥

देशोत्तमग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम् ॥
कुर्य्यान्नरं चन्द्रसुतः सितर्क्षे संस्थः सुराचार्य्यनिरीक्ष्यमाणः १०

शुक्र के घर में बुध बैठा हो तथा गुरु देखता हो तो देश, उत्तम ग्रामों तथा नगरों का अधिकारी, चतुर, गुणों का जाननेवाला, गुणयुक्त और सुशील होता है ॥ १० ॥

अतिसुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषै-
युंवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्षहर्षम् ॥
अतिचतुरमुदारं चारु भाग्यं प्रकुर्य्याद्-
भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ११

शुक्र के घर में स्थित बुध को शुक्र ही देखता हो तो बहुत उत्तम वेष, वस्त्राभूषणों की विशेषता से स्त्रियों के मन की जाननेवाला, कामदेव के आवेशसे हर्षित, बहुत चतुर, उदार तथा उत्तम भाग्यवाला होता है ॥ ११ ॥

कलत्रमित्रात्मजयानपीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनम् ॥
कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितोज्ञः सितधामगामी १२

शुक्र के घर में बैठे हुए बुध को शनि देखता हो तो स्त्री, मित्र, पुत्र और सवारी आदि के दुःख से संतप्त, धनहीन तथा शत्रुजनों से पीड़ित होता है ॥१२॥

सत्योपेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च ॥
चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यं स्वक्षेत्रस्थश्चन्द्रपुत्रोऽर्कदृष्टः १३

अपने स्थान (मिथुन-कन्या राशि) में बुध स्थित हो और सूर्य देखता हो तो सत्य बोलनेवाला, सुन्दर खेल-विलासवाला, राजा से मान और उन्नति पाने वाला तथा चंचलता से क्षीण होता है ॥ १३ ॥

अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती ॥
भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्यमाणे मृगलाञ्छनेन १४

अपने घर में बुध बैठा हो तथा उसे चन्द्रमा देखता हो तो बड़ा वक्ता, अमृत-समान वचन बोलनेवाला, कलह में प्रीतिवाला और राजा के समीप बैठनेवाला होता है ॥ १४ ॥

प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम् ॥
जनप्रियं संजनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितोज्ञः स्वगृहेऽधिसंस्थः १५

अपने स्थान में स्थित बुध को मङ्गल देखता हो तो प्रसन्नवदन, कुटिलस्वभाव, कलाओं का ज्ञाता, राजकार्य में बड़ा प्रवीण तथा सबसे प्रीति करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

बह्वर्थसामर्थ्यविराजमानसद्राजमानाप्तपदाधिकारम् ॥
श्रुतं प्रकुर्यान्निजमंदिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन १६

अपने मन्दिर में बैठे हुए बुध को गुरु देखता हो तो बड़ा धनी, पुरुषार्थी, राजा से अच्छे अधिकार का पानेवाला तथा बहुश्रुत होता है ॥ १६ ॥

नरेंद्रदूतो विजितारिवर्गः सन्धिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः ॥
वाराङ्गनासक्तमनोभिलाषः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात् १७

अपनी राशि में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो राजा का दूत, शत्रुओं का जीतनेवाला, मेल-मिलाप कराने में बड़ा निपुण और वेश्याजनों में आसक्त मनवाला होता है ॥ १७ ॥

प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषादिसमृद्धिमुच्चैः ॥
कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमन्दिरस्थो रविसूनुदृष्टः १८

जो निज स्थान में बुध बैठा हो तथा उसे शनि देखता हो तो सबसे नम्रभाव,

जिस काम को आरम्भ करे उसको पूर्ण करनेवाला और अच्छे वस्त्र-आभरण आदिक की समृद्धिवाला होता है ॥ १८ ॥

वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टे १९

कर्क राशि में बुध बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वस्त्र आदि की शुद्धि में, रत्नादि के संग्रह में, मन्दिर बनवाने में और पुष्पों की माला गूथने में बड़ा निपुण होता है ॥ १९ ॥

कान्तानिमित्ताप्तमहद्व्यलीको द्रव्यव्ययात्यन्तकृशाङ्गयष्टिः ॥
बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे २०

कर्क में बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो स्त्री के निमित्त से बहुत पीड़ा पानेवाला, धन खर्चनेवाला, दुर्बल शरीर और अनेक उपद्रव युक्त बना रहता है ॥ २० ॥

स्वल्पश्रुतं चौर्यरतं च शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् ॥
कुर्यान्नरं शीतकरस्य सुनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः २१

कर्क में बुध बैठा हो तथा उसे मंगल देखता हो तो थोड़ा सुननेवाला, चोरकर्म्म करनेवाला, शूर, प्रीतियुक्त वचन बोलनेवाला तथा कूटविद्या में निपुण (छली) होता है ॥ २१ ॥

प्राज्ञो विधिज्ञो विधिनातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः ॥
स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे २२

कर्क में बुध बैठा हो और गुरु देखता हो तो पण्डित, विधि का ज्ञाता, बड़ा भाग्यशाली, अच्छी वाणीवाला और राजा से मान का पानेवाला होता है ॥ २२ ॥

प्रियंवदश्चारुशरीरभाक्च सद्गीतविद्यादिविधौ प्रवीणः ॥
स्यान्मानवो दानववंद्यदृष्टे कर्काटकस्थेऽमृतभानुसूनौ २३

कर्क में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो प्रीतियुक्त वचन बोलनेवाला, कोमल शरीरवाला तथा गाने व बजाने की विद्या में बड़ा निपुण होता है ॥ २३ ॥

गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदं भानुरतं कृतघ्नम् ॥
करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कूलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः २४

कर्क में स्थित बुध को शनि देखता हो तो मूर्ख, बन्धुजनों से विमुख, झूठ बोलनेवाला, दंभी और कृतघ्नी होता है ।। २४ ।।

कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम् ॥
क्षुद्रं प्रकुर्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः २५

सिंह राशि में स्थित बुध को सूर्य देखता हो तो निर्दई, चञ्चल स्वभाव, ईर्षा करनेवाला, हिंसा करनेवाला, भयंकररूप तथा क्षुद्रमतिवाला होता है ।। २५ ।।

रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितान्तम् ॥
सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चन्द्रेक्षितः सिंहगतो बुधाख्यः २६

सिंह में बुध बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो रूपवान्, सुन्दरमति, नम्रस्वभाव, गीत-नाच आदि में निरत तथा उत्तम चरित्रवाला होता है ।। २६ ।।

कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षताङ्कितं हीनमतिं विचित्रम् ॥
सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः सिंहगतः शशीजः २७

सिंह लग्न में बैठे हुए बुध को मंगल देखता हो तो कामदेव तथा बल से रहित, हीनचरित्र, व्रणयुक्त शरीर, हीनमति, विचित्र स्वभाव तथा बहुत दुःख भोगनेवाला होता है ।। २७ ।।

कोमलामलरुचिः कुलवर्य्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः ॥
वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादिन्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे २८

सिंह में बुध बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो कोमल शरीर, निर्मलरुचि, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर नेत्रयुक्त, बड़ा पराक्रमी और उत्तम वाहन तथा धन से युक्त होता है ।। २८ ।।

सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः ॥
भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंहस्थिते दानववन्द्यदृष्टे २९

सिंह में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो सुन्दररूप से शोभित, प्रिय बोलनेवाला, राजा के आश्रित तथा धन-वाहन आदि का सुख भोगनेवाला होता है ।। २९ ।।

स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगन्धं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम् ॥
सुखेन हीनं मनुजं प्रकुर्य्यान्मन्देक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः ३०

जिसके सिंह में बुध बैठा हो और शनि देखता हो तो उसके शरीर में पसीना

आने से अधिक दुर्गन्ध होती है तथा वह बड़े शरीरवाला, कुरूप, उग्रस्वभाव और सुख से विहीन होता है ॥ ३० ॥

शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो भङ्गोज्झितः शान्तिमुपागतश्च ॥
स्यात्पूरुषो गीष्पतिवेश्मसंस्थे निशीथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे ३१

जो बृहस्पति के भवन (धनुर्मीन) में बुध बैठा हो और सूर्य देखता हो तो शूलरोग, अश्मरी और प्रमेहादि रोगों से पीड़ित शरीर, मन की तरंगों से रहित तथा शान्तचित्त रहता है ॥ ३१ ॥

लेखक्रियायां सुतराम्प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम् ॥
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रे चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ३२

गुरु के घर में बुध बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो लिखने में बड़ा प्रवीण, साधु और मित्रजनों का संग करनेवाला तथा निरन्तर सुख भोगनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

परंपराचौरवनस्थितानां स्याल्लेखको धान्यधनैर्विहीनः ॥
नरस्तु नीहारकरप्रसूतौ जीवालये मङ्गलदृष्टदेहम् ३३

गुरु के घर में बुध बैठा हो और मङ्गल देखता हो तो परंपरा से ही चोरी करने वाला तथा वन में बसनेवाला, लेखक तथा धन-धान्य से हीन होता है ॥ ३३ ॥

विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेखकर्त्ता ॥
भर्त्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ३४

बृहस्पति के घर में बैठे हुए बुध को बृहस्पति ही देखता हो तो बड़ा ज्ञानी, अपने कुल में उत्तम, राजा के खजाने का लेखक तथा बहुतजनों का स्वामी होता है ॥ ३४ ॥

भूपामात्यापत्यलेखाधिकारं चौर्य्यासक्तं सौकुमार्येण युक्तः ॥
द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ३५

गुरु के घर में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो राजा का मन्त्री, लिखने का अधिकारी, चोरी में आसक्तचित्त, सुकुमारता से युक्त तथा धनी होता है ॥ ३५ ॥

बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कान्तारदुर्गाचलवासशीलः ॥
कार्य्योपयुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगे ज्ञेऽर्कसुतेन दृष्टे ३६

गुरु के घर में बुध बैठा हो और शनि देखता हो तो खटाई आदि का बहुत भोजन करनेवाला, मलिनवेष, खोटे आचरणवाला तथा बन, दुर्ग और पर्वतादि का निवास करनेवाला तथा कार्य के योग्य नहीं होता है ॥ ३६ ॥

प्रारब्धकार्य्याकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम् ॥
कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुधः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ३७

शनि के घर में बुध विराजमान हो और सूर्य देखता हो तो प्रारब्ध के कार्य से प्रतापयुक्त, मल्लविद्या में बड़ा कुशल एवं खोटे स्वभाववाला तथा कुटुम्बवाला होता है ॥ ३७ ॥

जलोपजीवी धनवांश्च भीरुः प्रसूनकन्दोद्यमतत्परश्च ॥
पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे ३८

शनि के घर में बुध बैठा हो तथा उसको चन्द्रमा देखता हो तो जल से जीविका करनेवाला, धनी, डरपोक तथा कन्दमूल और पुष्पादि के उद्यम में तत्पर होता है ॥ ३८ ॥

व्रीडालसस्तब्धतरस्वभावः सौम्यः सुखी वाक्चपलोर्थयुक्तः ॥
स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽब्जसूनौ क्षितिनन्दनेन ३९

शनि के घर में बुध बैठा हो और मंगल देखता हो तो लज्जावान्, आलसी, कर्कश स्वभाववाला, सौम्यता से युक्त, सुखी और बोलने में चपल तथा धनयुक्त होता है ॥ ३९ ॥

धान्यवाहनधनान्वितः सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामतिः ॥
भानुसूनुभवनेऽब्जनन्दने देवदेवसचिवेक्षिते नरः ४०

शनि के घर में बुध बैठा हो और गुरु देखता हो तो धन, धान्य और वाहनों से युक्त, बड़ा सुखी, नगर और ग्राम का अधिकारी तथा बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥ ४० ॥

बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् ॥
कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञः शनिगेहसंस्थः ४१

शनि के घर में बुध बैठा हो और शुक्र देखता हो तो बहुत पुत्र-पौत्रादि का उत्पन्न करनेवाला, कुत्सितरूप, उत्तमजनों से त्यागा हुआ, नीचजनों का संगी तथा बड़ा कामी होता है ॥ ४१ ॥

सुखोज्झितं पापरतं च दीनमकिञ्चनं हीनजनानुयातम् ॥
करोति मर्त्यं शनिधामगामी सौम्यस्तमोहंतृसुतेन दृष्टः ४२
इति मेषादिगृहगतबुधं प्रति ग्रहदृष्टिफलम्।

जो शनि के घर में बुध बैठा हो और शनिश्चरही देखता हो तो निरन्तर दुःखी, पापी, दीन, दरिद्री तथा नीचजनों का संगी होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिगृहगत बुधप्रति दृष्टिफल।

अथ मेषादिगृहगतगुरुं प्रति ग्रहदृष्टिफलम्।

असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्त्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः ॥
भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे १

गुरु के ऊपर दृष्टि का फल।

मंगल के घर (मेष वृश्चिक) में गुरु बैठा हो और सूर्य देखता हो तो झूंठ से डरनेवाला, धर्मकार्य्य करनेवाला, देश में प्रसिद्ध, उत्तम भाग्ययुक्त और विनीत होता है ॥ १ ॥

ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सताम्म तो धर्म्मरतः प्रशान्तः ॥
जातो भवेद् भूमिसुतर्क्ष याते वाचांपतौ शीतकरेण दृष्टे २

मंगल के घर में गुरु बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो विख्यात, विनीत, स्त्री के वशीभूत, उत्तमसंगी, धर्म में प्रीति करनेवाला तथा शान्त होता है ॥ २ ॥

क्रूरोतिधूर्त्तः परगर्व्वहर्त्ता नृपाश्रयाज्जीवनवृत्तिकर्त्ता ॥
भर्त्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ३

मंगल के घर में गुरु बैठा हो और मंगल ही देखता हो तो अतिक्रूर, बड़ा धूर्त्त, पराये गर्व का हरनेवाला, राजा के द्वारा जिविका करनेवाला तथा बहुतजनों का मालिक होता है ॥ ३ ॥

सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विहीनश्छिद्रप्रतीक्षी प्रणतानुयातः ॥
मर्त्यो भवेत्कैतवसंप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे ज्ञदृष्टे ४

मंगल के घर में गुरु बैठा हो तथा उसको बुध देखता हो तो सुन्दर आचरण, सत्य तथा उत्तम वाणी से हीन, पराये छिद्रका देखनेवाला, नम्र मनुष्यों का संगी तथा छल से युक्त होता है ॥ ४ ॥

गन्धमाल्यशयनासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम् ॥
संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजसंस्थः ५

मंगल के घर में गुरु बैठा हो और शुक्र देखता हो तो गंध, माला, शय्या, आसन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र और उत्तम स्थान इन वस्तुओं से सुख पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

लुब्धं रौद्रं साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितं च
कुर्यान्मंत्रे निष्ठुरं देवमंत्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्ददृष्टः ६

मंगल के घर में गुरु बैठा हो और शनि देखता हो तो लोभी और भयङ्कर, साहस करनेवाला तथा मित्र, पुत्रादिकों से दुःख पानेवाला और सलाह देने में निष्ठुरस्वभाववाला होता है ॥ ६ ॥

सङ्गरावविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम् ॥
मंत्रिणं हि कुरुते सुरमंत्री दैत्यमंत्रिगृहगो रविदृष्टः ७

शुक्र के घर में गुरु बैठा हो और सूर्य देखता हो तो संग्राम का जीतनेवाला, व्रणयुक्त शरीर, रोगी, बहुत वाहन और सेवकोंवाला तथा मन्त्री होता है ॥७॥

सत्त्वेन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम् ॥
सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवाः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः ८

शुक्र के घर में गुरु विराजमान हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो पराक्रमी, हमेशा विनययुक्त, परोपकारी, उत्तम चित्त और उत्तम भाग्यवाला होता है ॥ ८ ॥

भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदम्भूपतिलब्धमानम् ॥
नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजालयस्थः ९

शुक्र के घर में गुरु बैठा हो और मंगल देखता हो तो भाग्यशाली, पुत्रों से सुख पानेवाला, प्रियवचन बोलनेवाला, राजद्वार से मानप्रतिष्ठा पानेवाला तथा उत्तमाचरण करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

सन्मंत्रविद्यानिरतं नितांतं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम् ॥
चञ्चत्कलाज्ञं पुरुषं प्रकुर्य्याद् गुरुर्भृगुक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः १०

शुक्र के घर में गुरु बैठा हो और बुध देखता हो तो उत्तम मन्त्र विद्या का

अनुरागी, बहुत भाग्यवाला, राजा से धन पानेवाला तथा शिल्प में बड़ा चतुर होता है ॥ १० ॥

धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम् ॥
करोति मर्त्यं सुरराजमंत्री शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ११

शुक्र के घर में स्थित गुरु को शुक्र ही देखता हो तो धनी, उत्तम आभूषण वाला, उत्तम कार्य में चित्त लगानेवाला तथा धन-धान्य आदि वैभव से युक्त होता है ॥ ११ ॥

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम् ॥
नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः १२

शुक्र के घर में गुरु बैठा हो और शनिश्चर देखता हो तो उत्तम स्त्री-पुत्र आदि के सुख से युक्त, पण्डित, नगर-ग्रामादिकों के उत्सव से युक्त तथा चतुर होता है ॥ १२ ॥

सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजमंत्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मनि स्थः १३

जो बुध के स्थान में गुरु बैठा हो तथा उसे सूर्य देखता हो तो सुन्दर स्त्री, पुत्र, मित्र और धन के सुखवाला तथा श्रेष्ठ प्रतिष्ठा के पाने से शोभित होता है ॥ १३ ॥

गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण ॥
कुर्यान्नरन्देवगुरुर्बुधर्क्षे संस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः १४

बुध के घर में गुरु बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो गुणी, ग्राम-पुरादि का उपकारी तथा बहुत गौरव से समृद्धिवाला होता है ॥ १४ ॥

संग्रामसम्प्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च ॥
करोति जातं विबुधेन्द्रमंत्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः १५

बुध के घर में गुरु बैठा हो और मंगल देखता हो तो संग्राम में विजय पानेवाला, व्रणयुक्त शरीर तथा धन और पराक्रम से युक्त होता है ॥ १५ ॥

सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता ॥
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टे १६

बुध के घर में स्थित गुरु को बुध देखता हो तो उत्तम स्त्री, पुत्र, धन और मित्रों से सुख पानेवाला, ज्योतिष और शिल्प शास्त्र का जाननेवाला तथा सुन्दरवाणी बोलनेवाला होता है ॥ १६ ॥

धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रासादवापीकृषिकर्म्मचित्तः ॥
भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येज्यदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे १७

बुध के घर में गुरु बैठा हो और शुक्र देखता हो तो धन, स्त्री और पुत्र से बड़ा सुखी तथा मन्दिर, बावली आदि के बनवाने में तथा खेती के कार्य में दत्तचित्त और प्रसन्न मनवाला होता है ॥ १७ ॥

नरेन्द्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवम्पूर्णगुणाभिरामम् ॥
नरं पुरग्रामपतिङ्करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टः १८

बुध के घर में स्थित गुरु को शनि देखता हो तो राजा से श्रेष्ठ गौरव (बड़प्पन) का पानेवाला, निरन्तर उत्सववाला, गुणों से पूर्ण तथा ग्राम और पुर का मालिक होता है ॥ १८ ॥

दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिः पूर्वं च पश्चात् खलु तत्सुखानि ॥
कुर्य्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः १९

जिसके कर्क राशि में स्थित गुरु को सूर्य देखता हो तो वह पहले तो स्त्री, पुत्र और धन के सुख को नहीं पाता है किन्तु पिछली अवस्था में इन सबका सुख होता है ॥ १९ ॥

नरेन्द्रकोशाधिकृतिं सुकान्तिं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम् ॥
सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यः शशिना प्रदृष्टः २०

कर्क में गुरु बैठा हो और उसे चन्द्रमा देखता हो तो राजा का खजांची, उत्तम कान्तिवाला, उत्तम वाहन तथा धन से सुखी और उत्तम कार्य में चित्त लगानेवाला होता है ॥ २० ॥

कुमारदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् ॥
प्राज्ञं क्षताङ्गं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्योऽवनिजेन दृष्टः २१

जिसके जन्म लग्न में कर्क राशि में स्थित गुरु को मंगल देखता हो तो वह कुमार, स्त्री, वस्त्रों और सुन्दर आभूषणों से युक्त, गुणवान्, शूरवीर, बुद्धिमान् तथा घावयुक्त शरीरवाला होता है ॥ २१ ॥

मित्राश्रयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तबुद्धिर्विलसत्प्रतापः ॥
मंत्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवंद्ये शशिसूनुदृष्टे २२

कर्क में स्थित गुरु को बुध देखता हो तो मित्र के आश्रय से सर्व सिद्धियों का पैदा करनेवाला, अच्छे कार्य में बुद्धि लगानेवाला, बड़ा प्रतापी तथा राजा का मंत्री होता है ॥ २२ ॥

बह्वङ्गनावैभवमङ्गनानां नानासुखानामुपलब्धयः स्युः ॥
कुलीरयाते वचसामधीशे निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन २३

कर्क में गुरु बैठा हो और शुक्र देखता हो तो बहुत स्त्रियों के वैभव को भोग करनेवाला तथा स्त्रियों के अनेक सुखों की प्राप्ति करनेवाला होता है ॥ २३ ॥

सन्मान भूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरस्स्यात् ॥
अनल्पजल्पः खलु कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे २४

कर्क में गुरु बैठा हो और शनि देखता हो तो उत्तम मान, आभूषण तथा गुणवाला, सुशील, सेना का पति, ग्राम और पुर का मालिक और बहुत वार्त्ता करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्त्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ॥
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः २५

सिंह राशि में गुरु बैठा हो और सूर्य देखता हो तो बहुत धन का खर्चनेवाला, विख्यातकीर्त्ति, बड़ा धूर्त्त, राजा से धन पानेवाला तथा शुभकार्य में चित्त का लगानेवाला होता है ॥ २५ ॥

प्रसन्नमूर्त्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्तधनं वदान्यम् ॥
कुर्य्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशाङ्कदृष्टः करिवैरिसंस्थः २६

सिंह में गुरु बैठा हो तथा चन्द्रमा देखता हो तो प्रसन्न वदन, चित्तशुद्धि रहित, स्त्री के लिये धन प्राप्ति करनेवाला तथा दानी होता है ॥ २६ ॥

मान्यो गुरूणां गुणगौरवेण सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः ॥
प्राणी भवेत्केसरिणि स्थितेऽस्मिन्गीर्वाणवन्द्येऽवनिजेन दृष्टे २७

जिसके सिंह में गुरु बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह गुण के गौरव

से बड़ों से भी माना जाता है और उत्तम कर्म करने की विधि में चतुर होता है ॥ २७ ॥

गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात्सिंहस्थिते देवगुरौ ज्ञदृष्टे २८

सिंह में गुरु बैठा हो और बुध देखता हो तो मकान आदि के निर्माण करने में बड़ा निपुण, बड़ा गुणी, राजा का मन्त्री तथा बातचीत करने में बड़ा चतुर होता है ॥ २८ ॥

भूमीपतिप्राप्तमहत्पदस्थः कान्ताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः ॥
भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे निरीक्षिते चासुरपूजितेन २९

सिंह में स्थित गुरु को शुक्र देखता हो तो राजद्वार में बड़ा अधिकार पानेवाला, स्त्रियों से प्रीति करनेवाला तथा गुणों का ज्ञाता होता है ॥ २९ ॥

सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च ॥
करोति मर्त्यं मरुताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ३०

सिंह में गत गुरु को शनि देखता हो तो सुखहीन, मलिन वेष, मीठे वचन बोलनेवाला, दुर्बल शरीर और उत्सव रहित होता है ॥ ३० ॥

राज्ञां विरुद्धत्वमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम् ॥
शत्रूद्गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ३१

अपने गृह (धनुर्मीन) में जो गुरु विराजमान हो और उसको सूर्य देखता हो तो राजाओं का विरोधी, मित्रों से विमन रहनेवाला तथा बहुत शत्रुजनों वाला होता है ॥ ३१ ॥

सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या प्रियाप्रियत्वाभिमतं विशेषात् ॥
करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः ३२

अपने घर में गुरु बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो भाग्य तथा धन की वृद्धि से बड़ा अभिमानी, अधिकतर स्त्री से प्रीति करनेवाला, बड़ा सुखी और विनीत होता है ॥ ३२ ॥

व्रणांकितं संगरकर्मदक्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् ॥
परोपकाराभिरतं प्रकुर्याद् गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ३३

अपने घर में गुरु बैठा हो और उसे मंगल देखता हो तो व्रणयुक्त शरीर, संग्राम करने में बड़ा दक्ष, हिंसा करनेवाला, अत्यन्त क्रूरस्वभाव और पराये उपकार में निरत होता है ॥ ३३ ॥

नृपाश्रयप्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्य्यसुखोपपन्नः ॥
परोपकारादरतैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ३४

अपने घर में गुरु बैठा हो और बुध देखता हो तो राजा के आश्रय से बड़ा अधिकार पानेवाला तथा स्त्री, धन, ऐश्वर्य और सुख से युक्त, पराये उपकार तथा आदर में दत्त चित्त रहता है ॥ ३४ ॥

सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् ॥
नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निजमन्दिरस्थः ३५

अपने घर में गुरु बैठा हो और उसे शुक्र देखता हो तो सुखी, धनवान्, प्रसन्न बदन, पण्डित तथा ऐश्वर्य से शोभित होता है ॥ ३५ ॥

पदच्युतं सौम्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवञ्च ॥
करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सूर्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः ३६

अपने घर में गुरु बैठा हो और शनि देखता हो तो ओहदे से गिरा हुआ, उत्तम पुत्रों से विहीन, संग्राम से भागनेवाला तथा दीन होता है ॥ ३६ ॥

प्रसन्नकान्तिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम् ॥
कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मन्दालयस्थो यदि भानुदृष्टः ३७

शनि के घर (मकर-कुंभ) में गुरु बैठा हो और सूर्य देखता हो तो प्रसन्नकान्ति, उत्तम वाणी बोलनेवाला, परोपकारी, आदरयुक्त और अपने कुल में राजा होता है ॥ ३७ ॥

कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्म्मक्रियायां सुतरामुदारः ॥
नरोभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे ३८

शनि के घर में गुरु बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो कुल का पालने वाला, तीक्ष्णबुद्धि, सुशील, धर्म करने में बड़ा उदार, अभिमानी तथा माता-पिता का भक्त होता है ॥ ३८ ॥

स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात् कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव ॥

सूतौ सुरेज्ये शनिमन्दिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन ३९

जन्मसमय शनि के घर में गुरु बैठा हो और मंगल देखता हो तो राजा की कृपा से सर्व कार्य की सिद्धि करनेवाला, उत्तम कीर्त्तिवाला तथा सुखों से युक्त रहता है ॥ ३९ ॥

शान्तं नितान्तं वनितानुकूलं धर्म्मक्रियायां निरतं नितान्तम् ॥
करोति मर्त्यं मरुतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमन्दिरस्थः ४०

शनि के घर में गुरु बैठा हो और उसको बुध देखता हो तो बिलकुल शान्त स्वभाव, स्त्री के वशीभूत तथा धर्म्मकार्य का करनेवाला होता है ॥ ४० ॥

विद्याविवेकार्थगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलाषः ॥
स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे ४१

जन्मसमय शनि के घर में गुरु बैठा हो तथा उसे शुक्र देखता हो तो विद्या, विवेक, धन और गुणों से युक्त तथा राजा से मन की अभिलाषा का पानेवाला होता है ॥ ४१ ॥

कामं सकामं सुगुणाभिरामं सद्मार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम् ॥
ख्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मन्देक्षितो मन्दगृहस्थजीवः ४२
इति मेषादिगृहगतगुरुप्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

शनि के घर में बैठे हुए जीव को शनि ही देखता हो तो श्रेष्ठ कामयुक्त, उत्तम गुणवाला तथा धन और स्थान को पानेवाला, धन-धान्य से युक्त, जगत् में विख्यात तथा विनीत (नम्र) होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिगृहगत गुरुप्रति ग्रहदृष्टिफल ।

अथ मेषादिगृहगतशुक्रं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

कृपाविशेषं नृपतेर्नितांतमतीव जायाजनितव्यलीकम् ॥
कुर्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः १

शुक्र के ऊपर दृष्टि का फल ।

जिसके सूर्य से दृष्टि होकर शुक्र मङ्गल के घर (मेष-वृश्चिक) में बैठा हो तो

वह निरन्तर राजा की विशेष कृपा से युक्त तथा स्त्री से पैदा हुए अत्यन्त क्लेश का पानेवाला होता है ॥ १ ॥

श्रेष्ठप्रतिष्ठं चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम् ॥
करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः २

मङ्गल के घर में शुक्र बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो उत्तम प्रतिष्ठावाला, चञ्चल चित्त और काम की आतुरता से विकार को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनङ्करोति ॥
नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः ३

मङ्गल के घर में शुक्र बैठा हो और मङ्गल ही देखता हो तो धन, मान और सुख इन करके हीन, दीन तथा विशेष करके मलिन वेषवाला होता है ॥ ३ ॥

अनार्यमर्थात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च ॥
क्रूरं परार्थावहरं नरं हि करोति शुक्रः कुजभे ज्ञदृष्टः ४

मंगल के घर में शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो नीच स्वभाव, धन और अपने जनों से विहीन तथा बुद्धि और पराक्रम से रहित, क्रूरस्वभाव तथा पराये धन का हरनेवाला होता है ॥ ४ ॥

कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतं सत्कायकान्तिं सुतरां विनीतम् ॥
उदारचित्तम्प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षिते दैत्यगुरुः कुजर्क्षे ५

मंगल के घर में शुक्र बैठा हो और गुरु देखता हो तो स्त्री-पुत्र से सुख पानेवाला, शरीर की उत्तम कान्तिवाला, विनीत और उदारचित्त होता है ॥५॥

सुगुप्तचित्ताभिमतं प्रशान्तं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम् ॥
करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः ६

मंगल के घर में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो अपना मनोरथ गुप्त रखनेवाला, शान्तस्वभाव, माननीय, दानी और सज्जनों का संग करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः ॥
प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतंगेन निरीक्ष्यमाणे ७

जन्मसमय अपनी राशि (वृष-तुला) में शुक्र बैठा हो और सूर्य देखता हो तो श्रेष्ठ स्त्रियों से तथा धन और वाहनों से सुखों को प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

विलासिनीकेलिविलाससक्तः
कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली ॥
नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः
स्वीयालये स्यात्स्फुजितीन्दुदृष्टे ८

अपने घर में शुक्र बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो स्त्रीजनों के हास-विलास में आसक्त, अपने कुल का पालनेवाला, बुद्धिमान्, सुशील और उत्तम वचन बोलनेवाला होता है ॥ ८ ॥

गृहादिसौख्योपहतं नितांतं कलिप्रसंगाभिभवोपलब्धिम् ॥
कुर्यान्नराणां दनुजेन्द्रमन्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ९

अपने घर में शुक्र बैठा हो और मंगल देखता हो तो बिलकुल स्थान-सुख से विहीन और कलह के प्रसंग से अपमान का पानेवाला होता है ॥ ९ ॥

गुणाभिरामं शुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्वं धृतिसंयुतं च ॥
स्वक्षेत्रगो दैत्यगुरुः प्रकुर्यान्नरन्तुषारांशुसुतेन दृष्टः १०

अपने घर में शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो गुणी, उत्तम भाग्यवाला, सुन्दर, श्रेष्ठ स्वभाव, सतोगुणी तथा अधिक धारणाशक्तिवाला होता है ॥ १० ॥

सद्वाहनानां गृहिणीगुणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम् ॥
करोति लब्धिं निजवेश्मयातः सितः सुराचार्यनिरीक्षितश्चेत् ११

जिसके जन्म समय अपने घर में शुक्र बैठा हो और गुरु देखता हो तो उसको अच्छे वाहन, स्त्री, उत्तम गुण, उत्तम मित्र, पुत्र और धन की प्राप्ति होती है ॥ ११ ॥

गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो मनुजोतिदीनः ॥
भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोःसुते भानुसुतेन दृष्टे १२

जन्म समय अपने घर में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो रोगी, नीच-संगी, सुख और धन से विहीन तथा अतिदीन होता है ॥ १२ ॥

नृपावरोधाधिकृतं विनीतं गुणान्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम् ॥
कुर्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः १३

बुध के घर (मिथुन-कन्या) में शुक्र बैठा हो और सूर्य देखता हो तो राजा के रनिवास की रक्षा का अधिकारी, विनीत, गुणी और शास्त्र में अभ्यास करने वाला होता है ॥ १३ ॥

सदन्नवस्त्रादिसुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम् ॥
सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्य्यात् सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः १४

बुध के घर में शुक्र बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो उत्तम अन्न और वस्त्र आदि का सुखवाला, नीले कमल की तुल्य श्याम व सुन्दर नेत्रवाला और सुन्दर केशवाला होता है ॥ १४ ॥

भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः
कांतानिमित्तं द्रविणव्ययः स्यात् ॥
नरो हि नीहारकरात्मजर्क्षे
स्थिते सिते भूमिसुतेन दृष्टे १५

बुध के घर में शुक्र बैठा हो और मंगल देखता हो तो भाग्यवान्, कामकेलि में बड़ा चतुर तथा स्त्रियों के निमित्त धन का खर्चनेवाला होता है ॥ १५ ॥

प्रज्ञाम्महद्वाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवारसौख्यम् ॥
कुर्यान्नराणामुशना प्रकामं बुधर्क्षसंस्थश्च बुधेन दृष्टः १६

बुध के घर में शुक्र बैठा हो और बुध ही देखता हो तो बुद्धिमान्, वाहन तथा धन की बढ़तीवाला, सेनापति तथा अपने परिवार से बड़ा सुख पानेवाला होता है ॥ १६ ॥

सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः ॥
मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहोपयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन १७

बुध के घर में शुक्र बैठा हो और गुरु देखता हो तो श्रेष्ठबुद्धियुक्त, बहुत वैभव से युक्त, प्रसन्नचित्त तथा बहुत विनीत रहता है ॥ १७ ॥

पराभिभूतश्चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितञ्च ॥

मर्त्यं करोत्येव भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः १८

बुध के घर में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो वैरियों से अपमानित, चपल स्वभाव, अलग रहनेवाला, दुःख भोगनेवाला तथा सब जनों से त्यक्त होता है ॥ १८ ॥

सरोषयोषाकृतहर्षनाशः स्यात्पूरुषः शत्रुजनाभिभूतः ॥
दैत्यार्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षितेऽहर्पतिना प्रसूतौ १९

जन्मसमय कर्कराशि में शुक्र बैठा हो और सूर्य देखता हो तो क्रोधी, स्त्री से दुःख पानेवाला तथा शत्रुजनों से पीड़ित रहता है ॥ १९ ॥

कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ॥
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः २०

कर्क में शुक्र बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो पहले कन्या व पीछे पुत्र का लाभ होता है तथा माता और स्त्री का बहुत गौरव करनेवाला होता है ॥ २० ॥

कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो मनुष्यः ॥
परन्तु कान्ताकृतचिन्तयार्त्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् २१

कर्क में शुक्र बैठा हो और मंगल देखता हो तो कलाओं में निपुण, शत्रु का जीतनेवाला, बुद्धिबल से निरन्तर सुख भोगनेवाला तथा स्त्रीकृत चिन्ता से दुःखी होता है ॥ २१ ॥

विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणज्ञं कलत्रपुत्रोद्भवदुःखतप्तम् ॥
जनोज्झितञ्चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ज्ञदृष्टः २२

कर्क में शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो विद्या में प्रवीण, बड़ा गुणी, गुण का ज्ञाता, स्त्री पुत्रादिकों से दुःखी तथा सबसे त्यागा हुआ होता है ॥ २२ ॥

अतिचतुरमुदारं चारुवृत्तिं विनीत-
मतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यम् ॥
प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते
सुरपतिगुरुदृष्टो भार्गवः कर्कसंस्थः २३

कर्क में स्थित शुक्र को गुरु देखता हो तो बड़ा चतुर, उदार, उत्तम वृत्तिवाला,

विनीतस्वभाव, विशेष वैभव से युक्त, स्त्री-पुत्रों से सुख पानेवाला तथा प्रियवचन बोलनेवाला होता है ॥ २३ ॥

सवृत्तसौख्योपहृतङ्गतार्थं व्यर्थप्रयत्नं वनिताजितञ्च ॥
स्थानच्युतं संजनयेन्मनुष्यं मन्देक्षितः कर्कगतः सिताख्यः २४

कर्क में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो उत्तम आचरण और उत्तम सुख से विहीन, धन से रहित, व्यर्थ यत्न करनेवाला तथा स्त्री के वश रहनेवाला और अपने स्थान का त्याग करनेवाला होता है ॥ २४ ॥

स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कान्ताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः ॥
क्रमेलकाद्यैर्य्यदि वा युतस्स्यादर्केक्षिते सिंहगते सिताख्ये २५

सिंहराशिगत शुक्र को सूर्य देखता हो तो स्पर्धा करके चित्त की वृत्ति को बढ़ाने वाला, स्त्री के द्वारा धन की प्राप्तिवाला और ऊंट आदि से युक्त होता है ॥२५॥

नूनञ्जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भवश्च ॥
यस्य प्रसूतौ दनुजेन्द्रमन्त्री चन्द्रेक्षितः सिंहगतोयदि स्यात् २६

जिसके जन्मसमय सिंह में शुक्र बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो दूसरी माता वाला और स्त्री से विरोध करनेवाला तथा अनेक विभवों से युक्त होता है ॥२६॥

नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः २७

सिंह में शुक्र बैठा हो और मंगल देखता हो तो राजा का प्यारा, धन-धान्य से युक्त तथा कामदेव से पैदा हुए व्यसन से युक्त रहता है ॥ २७ ॥

धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लब्धं स्मराधिक्यविकारनिन्द्यम् ॥
दैत्येन्द्रमंत्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः २८

सिंह में शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो धनयुक्त और अनेक पदार्थों का संग्रह करनेवाला और काम की प्रबलता से दुष्टरोगयुक्त होता है ॥ २८ ॥

नरेन्द्रमंत्री धनवाहनाढ्यो बहङ्गनानन्दनभृत्यसौख्यः ॥
विख्यातकर्म्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् २९

सिंह में शुक्र बैठा हो और गुरु देखता हो तो राजा का मंत्री; धन और वाहन

से युक्त, अनेक स्त्री और पुत्र तथा भृत्यजनों से सुख पानेवाला और विख्यात कर्म करनेवाला होता है ।। २९ ।।

नृपोपमं सर्व्वसमृद्धिभाजं दण्डाधिकारेष्यथवा नियुक्तम् ॥
करोति मर्त्यं मृगराजवर्त्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेन दृष्टः ३०

सिंह में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो राजा की समान अनेक सुख भोग करनेवाला और दण्ड देने का अधिकारी होता है ३० ।।

रौद्रम्प्राज्ञम्भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात् ॥
नानादेशप्राप्तयानम्मनुष्यं कुर्य्याच्छुक्रो जीवभे भानुदृष्टः ३१

बृहस्पति के घर (धनुर्मीन) में शुक्र बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो तो बड़ा भयंकर और पण्डित, उत्तम भाग्ययुक्त, पराक्रमी, विशेष धन का संग्रह करने वाला तथा अनेक देशों का घूमनेवाला होता है ।। ३१ ।।

सद्राजमानेन विराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् ॥
धीरं ससारं हि नरङ्करोति भृगुर्गुरुक्षेत्रगतोऽब्जदृष्टः ३२

बृहस्पति के घर में स्थित शुक्र को चन्द्रमा देखता हो तो उत्तम राजधानी में मान प्रतिष्ठा पानेवाला, विख्यात कीर्त्ति, कोमल स्वभाव, अनेक भोगयुक्त, धैर्ययुक्त और बलवान् होता है ।। ३२ ।।

द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नङ्कांताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम् ॥
सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमेक्षितेज्यालयगामिशुक्रः ३३

बृहस्पति के घर में स्थित शुक्र को मंगल देखता हो तो शत्रुजनों से द्वेष करनेवाला, धनी, प्रसन्नचित्त, स्त्री से प्रेम रखनेवाला, श्रेष्ठ पुण्यवाला और उत्तम वाहनों से युक्त होता है ।। ३३ ।।

सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् ॥
कुर्य्यान्नराणां गुरुमन्दिरस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः ३४

बृहस्पति के घर में शुक्र विराजमान हो और बुध देखता हो तो उत्तम वाहन, धन, वस्त्र और आभूषणों का लाभवाला, उत्तम अन्नोंवाला तथा निश्चय सुख भोगनेवाला होता है ।। ३४ ।।

तुरङ्गहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् ॥

करोत्यवाप्तिं भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ३५

बृहस्पति के घर में शुक्र बैठा हो और बृहस्पति ही देखता हो तो अश्व, सुवर्ण, वस्त्र, आभूषण, बड़े हाथी तथा स्त्री इन सबों से सुख पानेवाला होता है ।।३५।।

सद्भोगसौख्योत्तमकर्मभाजन्नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम् ॥
करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ३६

बृहस्पति के घर में शुक्र बैठा हो और शनि देखता हो तो उत्तम भोगी, सुखवाला, श्रेष्ठ कर्म का करनेवाला, निरन्तर उत्सव का करनेवाला तथा बड़ा धनी होता है ।। ३६ ।।

स्थिरस्वभावं विभवोपपन्नम्महाधनं सारविराजमानम् ॥
कान्ताविलासैः सहितं प्रकुर्य्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्टः ३७

शनि के घर (मकर-कुंभ) में जो शुक्र बैठा हो और उसे सूर्य देखता हो तो वह मनुष्य स्थिरस्वभाव, वैभववाला, बड़ा धनी, बहुत पराक्रमी और स्त्रियों से विलास करनेवाला होता है ।। ३७ ।।

ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्त्वं धनवाहनाढ्यम् ॥
करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ३८

जो शनि के घर में स्थित शुक्र को चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष तेजस्वी, शोभायमान शरीर, बड़ा बलवान् तथा धन और वाहनों से युक्त होता है ।। ३८।।

श्रमामयाभ्यामतितप्तमूर्त्तिमनर्थतोऽर्थक्षतिसंयुतञ्च ॥
कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ३९

जो शनि के क्षेत्र में शुक्र बैठा हो और मंगल देखता हो तो परिश्रम व रोग से अत्यन्त संतापयुक्त शरीरवाला और अनर्थ से धन का क्षय करनेवाला पुरुष होता है ।। ३९ ।।

विद्वद्विधिज्ञं धनिनं सुतुष्टम्प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुलप्रपञ्चम् ॥
सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्य्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ४०

जो शनि के गृह में शुक्र बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष विद्वानों की विधि का जाननेवाला, बहुत प्रसन्न चित्त, बुद्धिमान्, बड़ा बलवान् और धनवान्, बहुत प्रपंचवाला तथा अच्छी वाणी बोलनेवाला होता है ।। ४० ।।

सद्गन्धमाल्याम्बरचारुवाद्यसञ्जातसङ्गीतरुचिः शुचिश्च ॥
स्यान्मानवो दानवराजपूज्ये सुरेज्यदृष्टे शनिमन्दिरस्थे ४१

जो शनि के घर में स्थित शुक्र को बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष उत्तम सुगंधित पुष्पमालाधारक, विचित्र वस्त्रों का धारण करनेवाला और वाद्य में तथा गानविद्या में रुचि रखनेवाला और पवित्र होता है ॥ ४१ ॥

प्रसन्नगात्रश्च विचित्रलाभं धनाङ्गनावाहनसूनुसौख्यम् ॥
कुर्यान्नरं दानववृन्ददेवो मन्देक्षितो मन्दगृहेधिसंस्थः ४२
इति मेषादिगृहगतशुक्रं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

जो शनि के गृह में स्थित शुक्र को शनि देखता हो तो वह पुरुष प्रसन्न वदन, विचित्र लाभयुक्त तथा धन, स्त्री, पुत्र और वाहन इनसे सुख पानेवाला होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादिगृहगत शुक्रप्रति दृष्टिफल ।

अथ मेषादिगृहगतशनिं प्रति ग्रहदृष्टिफलम् ।

लुलायगोजाविसमृद्धिभाजं कृषिक्रियायां निरतं सदैव ॥
सत्कर्म्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः १

शनि के ऊपर दृष्टि का फल ।

जो मंगल के गृह (मेष-वृश्चिक) में शनि बैठा हो और सूर्य देखता हो तो भैंस, गऊ, बकरी, भेड़ इन चतुष्पद जीवों की वृद्धिवाला और सदा खेती का कार्य्य करनेवाला होता है ॥ १ ॥

नीचानुयातं चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितश्च ॥
कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यश्शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः २

जो मंगल के घर में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष कुशीली, नीचसंगी और चपलस्वभाव, दुष्ट, धन और सुख से रहित होता है ॥ २ ॥

अनल्पजल्पं गतसत्परार्थं कार्य्यक्षतिं जातविशेषवित्तम् ॥
करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ३

जो मंगल के घर में शनि बैठा हो और मंगल देखता हो तो बहुत बोलने वाला, सत्य और परोपकार से रहित और कार्य का बिगाड़नेवाला तथा विशेष करके धनहीन होता है ॥ ३ ॥

चौर्य्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम् ॥
ज्ञेक्षितोहि कुरुतेऽर्कनन्दनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ४

जो मंगल के घर में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष चोरी करनेवाला, कलह करनेवाला और स्त्री सुख से तथा उत्सव से रहित होता है ॥ ४ ॥

सुखधनैः सहितं नृपमंत्रिणं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् ॥
सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोऽवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ५

जो मंगल के घर में शनि बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष निरन्तर सुखी, धनयुक्त और राजद्वार में मुख्य अधिकार पानेवाला और राजा का मंत्री होता है ॥ ५ ॥

बहुप्रयाणाभिरतं विकान्तिम्पापाङ्गनासक्तमतिं विचित्तम् ॥
करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगुजेन दृष्टः ६

जो मंगल के घर में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष बहुत यात्रा करनेवाला, कान्तिरहित, पापिनी स्त्री का संग करनेवाला और विक्षिप्त चित्त होता है ॥ ६ ॥

विद्याविचारे प्रचुरोतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शान्तः ॥
भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्य्यात्मजे भार्ग्गववेश्मसंस्थे ७

जो शुक्र के घर (वृष-तुला) में शनि बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष विद्या के विचार में बड़ा वक्ता, परान्न भोजन करनेवाला, धनरहित और शान्तियुक्त होता है ॥ ७ ॥

नृपप्रसादाप्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम् ॥
बलान्वितं संजनयेन्मनुष्यं मन्दः सितर्क्षे हरिणाङ्कदृष्टः ८

जो शुक्र के घर में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष राजा की प्रसन्नता से बड़े अधिकार को पानेवाला; स्त्री, भूषण और वस्त्र से सुख पानेवाला और बलवान् होता है ॥ ८ ॥

संग्रामकार्य्याभिरतन्नितान्तमनल्पजल्पञ्च महत्प्रसादम् ॥
कुर्य्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ९

जो शुक्र के घर में शनि बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह पुरुष संग्राम के कार्य में लगा रहनेवाला और बहुत वार्त्ता करनेवाला तथा दया करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

कान्तारतो नीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतो गतार्थः ॥
क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे १०

जो शुक्र के घर में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो स्त्री में आसक्त, नीचों का संग करनेवाला, विनोद और हास्य में रत तथा धन खोनेवाला और नपुंसकों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ १० ॥

परोपकारे कृतचित्तवृत्तिः परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च ॥
दातोद्यमी सर्वजनप्रियश्च मन्दे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ११

जो शुक्र के घर में शनि बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष बड़ा परोपकारी और पराये दुःख से दुःखित, बड़ा दानी तथा बड़ा उद्यम करनेवाला और सर्वजनों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

रत्नादिलाभं वनिताविलासं जलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् ॥
कुर्य्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः १२

जो शुक्र के घर में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष धन-रत्नादि के लाभवाला और स्त्रियों से हास-विलास करनेवाला, जल की अधिकता वाला और राजद्वार में विशेष अधिकार पानेवाला होता है ॥ १२ ॥

सुखोज्झितन्नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् ॥
कुर्य्यान्नरन्तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमन्दिरस्थः १३

जो बुध के घर (मिथुन-कन्या) में शनि बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष दुःख भोगनेवाला, नीचजनों से संग करनेवाला, क्रोध करनेवाला, धर्म-रहित, सर्वजनों से द्रोह करनेवाला और बहुत धीर होता है ॥ १३ ॥

प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादप्राप्ताधिकारोन्नतकार्य्यवृत्तिः ॥
कान्ताधिकारो यदि वा नरः स्यान्मन्देज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे १४

जो बुध के घर में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष प्रसन्नवेष, राजा की प्रसन्नता से बड़ा अधिकार पानेवाला, ऊंचे कामों में वृत्ति करनेवाला तथा स्त्रियों के अधिकारवाला होता है ॥ १४ ॥

प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातङ्गभीरञ्च नरङ्करोति ॥
सोमात्मजक्षेत्रगतोर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले १५

जो बुध के घर में प्राप्त शनि को मंगल देखता हो तो वह पुरुष उत्तम बुद्धियुक्त, संपूर्ण विधि-विधान का जाननेवाला, विख्यात और बड़ा गंभीर होता है ॥१५॥

धनान्वितञ्चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्म्मदक्षम् ॥
शिल्पेष्वभिज्ञंमनुजम्प्रकुर्य्यात् सौम्येक्षितः सौम्यगृहस्थमन्दः १६

जो बुध के घर में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष बड़ा धनी, सुन्दर बुद्धि, विनीत अर्थात् झुकनेवाला, गानविद्या में प्रीति करनेवाला, लड़ाई करने में चतुर और कारीगरी की विद्या में निपुण होता है ॥ १६ ॥

राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी ॥
भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्याज्ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः १७

जो बुध के घर में शनि बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष राज-सेवी, उत्तम गुणों से युक्त, उत्तमजनों से प्रीति करनेवाला, मनस्वी और गुप्त धनवाला होता है ॥ १७ ॥

योषाविभूषाकरणे प्रवीणः सत्कर्म्मधर्मानुरतन्नितान्तम् ॥
स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञगेहे १८

जो बुध के घर में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष स्त्रियों के आभूषणादि बनाने में चतुर, निरन्तर उत्तम कर्म और धर्म करनेवाला तथा स्त्रियों में आसक्त चित्त होता है ॥ १८ ॥

आनन्ददारद्रविणैर्विहीनः सदान्नभोगैरपि चोज्झितश्च ॥
मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगतेऽर्कदृष्टे १९

जो कर्क राशि में शनि बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष आनन्द-

युक्त, स्त्री और धन से हीन, हमेशा अन्न-भोग से रहित तथा माता को क्लेश-कारी होता है ।। १९ ।।

निपीडनं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च ॥
कुर्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः २०

जो कर्क में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष बन्धुजनों को और माता को पीड़ा देनेवाला और विशेष धनों का बढ़ानेवाला होता है ।। २० ।।

गलद्बलक्षीणकलेवरश्च नृपार्पितार्थोत्तमवैभवोऽपि ॥
स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे २१

जो कर्क में शनि बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह पुरुष बलहीन, क्षीण-शरीर और राजा के दिये हुए धन से वैभववाला होता है ।। २१ ।।

वाग्विलासकठिनोऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः ॥
दम्भवृत्तिचतुरोपि नरः स्यात्कर्कगामिनिशनौ बुधदृष्टे २२

जो कर्क में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष वाग्विलास में कठोर, भ्रमण करने में बुद्धि रखनेवाला, अनेक चेष्टाओं से युक्त, पाखण्ड से युक्त तथा चतुर होता है ।। २२ ।।

क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि ॥
संयुतो भवति मानवो जनौ जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ २३

जो कर्क में शनि बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष भूमि, पुत्र, गृह स्त्री, धन, रत्न, वाहन और वस्त्राभरणों से संयुक्त होता है ।। २३ ।।

उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्य्यवर्य्यामलवाग्विलासैः ॥
नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगतेऽर्कसूनौ २४

जो कर्क में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष उदारता, गौरव और मानप्रतिष्ठा, सुंदरता तथा कोमल वाणी इन सबसे हीन होता है ।। २४ ।।

धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च ॥
भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुतेऽर्कदृष्टे २५

जो सिंहराशि में शनि बैठा हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष धन, धान्य, वाहन, अच्छी वृत्ति, सत्य और उत्तम चरित्रों से हीन होता है ॥ २५ ॥

सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्त्ति कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्त्तिम् ॥
प्रसन्नमूर्त्तिं कुरुतेऽर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणाङ्कदृष्टः २६

जो सिंह में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष उत्तम रत्न, आभूषण, वस्त्र और उत्तमकीर्त्ति से युक्त तथा स्त्री, मित्र तथा पुत्र के सुख से पूर्ण और प्रसन्नचित्त रहता है ॥ २६ ॥

संग्रामकर्म्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः ॥
क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ पञ्चाननस्थेऽवनिसूनुदृष्टे २७

जो सिंहराशि में स्थित शनि को मंगल देखता हो तो वह पुरुष युद्धविद्या में बड़ा विशारद, दयाहीन, बड़ा कोपवान् और क्रूरस्वभावयुक्त होता है ॥ २७ ॥

धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनञ्च नीचव्यसनाभिभूतम् ॥
करोति जातन्तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च २८

जो सिंह में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष धनहीन, स्त्री-सुख-रहित, निरन्तर दुःखयुक्त, दीनभाव और खोटे व्यसनों से युक्त होता है ॥ २८ ॥

सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम् ॥
नरम्पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः २९

जो सिंह में शनि बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष उत्तम मित्रों का संग करनेवाला, पुत्रादि सुख से युक्त, प्रसिद्ध, बड़ा गुणी, अच्छे आचरणवाला, शील स्वभाववाला और नगर तथा ग्राम का स्वामी होता है ॥ २९ ॥

धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्रतप्तम् ॥
कुर्य्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ३०

जो सिंहराशि में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष धन, धान्य, वाहन और सुख से युक्त तथा स्त्रियों से संताप पानेवाला होता है ॥ ३० ॥

ख्यातिन्धनाप्तिम्बहुगौरवाणि स्नेहम्प्रवृत्तिम्परनन्दनेषु ॥
लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे ॥ ३१ ॥

जो बृहस्पति के घर में शनि स्थित हो और सूर्य देखता हो तो वह पुरुष जगत्-

प्रसिद्ध और बड़ा धनी, गौरवयुक्त तथा अन्यों के पुत्रों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ ३१ ॥

सद्वृत्तशाली जननीवियुक्तो नामद्वयालङ्करणप्रयातः ॥
सुखार्थभार्य्यासुखभाङ्नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगेऽब्जदृष्टे ३२

जो बृहस्पति के घर में शनि बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष अच्छी वार्त्ता कहनेवाला, मातृसुख से रहित, दो नामों से शोभायमान, सुखी, बड़ा धनी और स्त्रियों से सुख पानेवाला होता है ॥ ३२ ॥

वार्तान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनन्दीनतरं करोति ॥
नरन्धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्त्तण्डपुत्रः सुरमंत्रिणोभे ३३

जो बृहस्पति के घर में शनि बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह पुरुष वातरोग से युक्त, संसार के मनुष्यों से विपरीत चेष्टावाला, परदेश में रहनेवाला और अत्यन्त दुःखी होता है ॥ ३३ ॥

गुणाभिरामो धनवान् प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः ॥
नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमन्दिरस्थे ३४

जो बृहस्पति के घर में शनि बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष बड़ा गुणी व बड़ा धनी, राजद्वार में बड़ा अधिकार पानेवाला और उत्तम आचार का करनेवाला होता है ॥ ३४ ॥

नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सर्वाधिशाली बलवान् सुशीलः ॥
स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहम्प्रयाते ३५

जो बृहस्पति के घर में शनि बैठा हो और बृहस्पति ही देखता हो तो वह पुरुष राजा का प्रधान सेनापति, सबका अधिपति, बड़ा बली और उत्तम शीलस्वभाव से युक्त होता है ॥ ३५ ॥

विदेशवाशी बहुकार्य्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतराम्पवित्रः ॥
स्यान्मानवो दानवमन्त्रिदृष्टे मन्देऽमराचार्य्यगृहम्प्रयाते ३६

जो बृहस्पति के घर में शनि बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष विदेश का रहनेवाला, बहुत काम करनेवाला, दो माताओं का पुत्र और निरन्तर पवित्र रहनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

कुरूपभार्य्यश्च पराञ्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च ॥
विदेशवाशी प्रभवेन्मनुष्यो मन्दे निजागारगतेऽर्कदृष्टे ३७

जो शनैश्चर अपने घर में अर्थात् मकर में या कुम्भ में बैठा हो और उसको सूर्य देखता हो तो वह कुरूपा स्त्रीवाला और पराया अन्न भोजन करनेवाला, बड़े परिश्रम से जीविका करनेवाला, रोगी तथा विदेशवासी होता है ॥ ३७ ॥

धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलत्स्वभावञ्जननीविरुद्धम् ॥
कामातुरञ्चापि नरम्प्रकुर्य्यान्मन्दः स्वभस्थोऽमृतरश्मिदृष्टः ३८

जो शनैश्चर अपने घर में बैठा हो और चन्द्रमा देखता हो तो वह पुरुष बड़ा धनी, स्त्रियों से युक्त, दुःख पानेवाला, चञ्चलस्वभाव, माता से विरोध करनेवाला और कामातुर होता है ॥ ३८ ॥

शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्व्वोत्कृष्टः सर्व्वदा हृष्टचित्तः ॥
ख्यातो मर्त्यश्चात्मजस्थेऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रे प्रेक्षणत्वम्प्रयाते ३९

जो शनि अपने घर में बैठा हो और मंगल देखता हो तो वह पुरुष बड़ा शूरवीर, क्रूरस्वभाव, साहस का कर्म करनेवाला, उत्तमगुणों से युक्त, सबसे अच्छा, सदा प्रसन्न चित्त और विख्यात कीर्त्तिवाला होता है ॥ ३९ ॥

सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्चनानाविधिकार्य्यसक्तान् ॥
करोति मर्त्यान्ननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्रदृष्टः ४०

जो शनि अपने घर में बैठा हो और बुध देखता हो तो वह पुरुष उत्तम वाहनों वाला, साहस का कर्म करनेवाला, पराक्रमी और बड़ा धीर-गंभीर और सर्वकार्य का साधन करनेवाला होता है ॥ ४० ॥

गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयञ्चारुशरीरयष्टिम् ॥
कुर्य्यान्नरन्देवगुरुप्रदृष्टश्चण्डांशुसूनुर्निजवेशमसंस्थः ४१

जो शनि अपने घर में बैठा हो और बृहस्पति देखता हो तो वह पुरुष बड़ा गुणी, राजा का मंत्री और रोगरहित तथा कोमल शरीरवाला होता है ॥ ४१ ॥

कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनन्धनाढ्यम् ॥
भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेःसुतो भार्गवसूनुदृष्टः ४२

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
ग्रहदृष्टिफलाध्यायः ॥ ४ ॥

जो शनि अपने घर में बैठा हो और शुक्र देखता हो तो वह पुरुष बड़ा कामातुर और दुराचारी, भाग्यशाली, सुखी, धनयुक्त, उत्तम भोजन करनेवाला तथा अधिपति होता है ॥ ४२ ॥

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
ग्रहदृष्टिफलाध्यायः ॥ ४ ॥

—०—

अथ राशिस्थग्रहफलानि ।

मेषादिराशिस्थसूर्यफलम् ।

भवति साहसकर्म्मकरो नरो रुधिरपित्तविकारकलेवरः ॥
क्षितिपतिर्मतिमान् सहितस्तदा सुसहसामहसामधिपे क्रिये १

जिसके जन्मकाल में मेषराशि का सूर्य हो तो वह पुरुष साहस का कर्म करनेवाला, रुधिर और पित्त-विकारसे युक्त शरीरवाला और भूमिका मालिक, बुद्धिमान् और साहसी होता है ॥ १ ॥

परिमलैर्विमलैः कुसुमाशनैः सुवसनैः पशुभिस्सुखमद्भुतम् ॥
गविगतोहि रविर्जलभीरुतां विहितमाहितमादिशते नृणाम् २

जिसके सूर्य वृष में बैठा हो तो वह उत्तम सुगन्धयुक्त पुष्पों की शय्यावाला, उत्तम वस्त्र धारण करनेवाला, चतुष्पदजीवों से अद्भुत सुख पानेवाला और जल से भय पानेवाला तथा योग्य कार्य करनेवाला होता है ॥ २ ॥

गणितशास्त्रकलामलशीलतासुललिताद्भुतवाक्प्रथितो भवेत् ॥
दिनपतौ मिथुने ननु मानवो विनयतानयतातिशयान्वितः ३

जिसके मिथुनराशि का सूर्य हो तो वह पुरुष गणितशास्त्र में प्रवीण, उत्तम

शील स्वभाववाला, उत्तम और अद्भुतवाणीवाला, विख्यातकीर्त्ति और विनय तथा अत्यन्त नीति से युक्त होता है ।। ३ ।।

सुजनतारहितः किल कालविज्जनकवाक्यविलोपकरो नरः ।।
दिनकरे हि कुलीरगते भवेत् सधनता धनतासहिताधिकः ४

जिसके कर्कराशि में सूर्य बैठा हो तो वह पुरुष क्रूरस्वभावयुक्त, कालका जाननेवाला, पिता के वचन को नहीं माननेवाला और निरन्तर धनयुक्त होता है ।। ४ ।।

स्थिरमतिश्च पराक्रमताधिको विभुतयाद्भुतकीर्त्तिसमन्वितः ।।
दिनकरे करिवैरिगतो नरो नृपरतो परतोषकरो भवेत् ५

जिसके जन्मकाल में सूर्य सिंहराशि में बैठा हो तो वह पुरुष स्थिरबुद्धि, अधिक पराक्रमी, समर्थ होने से बड़ी कीर्त्ति पानेवाला, राजसेवी और परोपकारी होता है ।। ५ ।।

दिनपतौ युवतौ समवस्थिते नरपतेर्द्रविणं हि नरो लभेत् ।।
मृदुवचाः श्रुतगेयपरायणः सुमहिमामहिमापहिताहितः ६

जिसके जन्मकाल में सूर्य कन्याराशि का हो तो वह पुरुष राजा से धन पानेवाला, कोमल वाक्य, गान श्रवण करनेवाला और महामहत्त्व पानेवाला होता है ।। ६ ।।

नरपतेरतिभीरुरहर्निशं जनविरोधविधानमघं दिशेत् ।।
कलिमनाः परकर्मरतिर्घटे दिनमणिर्न मणिद्रविणादिकम् ७

जिसके जन्मकाल में सूर्य तुलाराशि का हो तो वह पुरुष राजा से निरन्तर भय पानेवाला और सबसे विरोध करनेवाला, पापकर्म करनेवाला, कलह में प्रवीण, परकर्म करनेवाला और धन, मणि आदि से हीन होता है ।। ७ ।।

कृपणताकलहं च भृशं रुषं विषहुताशनशस्त्रभयं दिशेत् ।।
अलिगतः पितृमातृविरोधितां दिनकरो न करोति समुन्नतिम् ८

जिसके जन्मकाल में सूर्य वृश्चिक का हो तो वह पुरुष बड़ा कृपण, निरन्तर कलह करनेवाला, क्रोधी तथा विष, शस्त्र और अग्नि से भय पानेवाला, मातापिता का विरोधी तथा उन्नतिहीन होता है ।। ८ ।।

स्वजनकोपमतीव महन्मतिं बहुधनं हि धनुर्द्धरगो रविः ।।

स्वजनपूजनमादिशते नृणां सुमतितो मतितोषविवर्द्धनम् ९

जिसके जन्मकाल में धन राशिका सूर्य हो तो वह पुरुष स्वजनों से कोपयुक्त और बड़ा बुद्धिमान्, बड़ा धनी, मित्रों का हितकारी और अच्छी मति होने से संतोषी होता है ॥ ९ ॥

अटनतां निजपक्षविपक्षतामधनतां कुरुते सततं नृणाम् ॥
मकरराशिगतो विगतोत्सवं दिनविभुर्न विभुत्वसुखं दिशेत् १०

जिसके जन्मकाल में मकरराशि का सूर्य हो तो वह पुरुष भ्रमण करनेवाला, अपने कुटुंबियों से बिरोध करनेवाला, धनहीन, उत्सव रहित और विभुता के सुख से रहित होता है ॥ १० ॥

कलशगामिनिपङ्कजिनीपतौ शठतरो हि नरो गतसौहृदः ॥
मलिनताकलितो रहितः सदा करुणयारुणयार्त्तसुखी भवेत् ११

जिसके जन्मकाल में कुंभराशि का सूर्य हो तो वह पुरुष अत्यन्त शठ और सब से दुर्भाव रखनेवाला, सदा मलिनवेष रखनेवाला, दयारहित तथा अरुणता से युक्त सुखी होता है ॥ ११ ॥

बहुधनं क्रयविक्रयतः सुखं निजजनादपि गृह्यमहाभयम् ॥
दिनपतौ गुरुभेऽभिमतो भवेत् सुजनतो जनतोषदसन्मतिः १२

जिसके जन्मकाल में सूर्य मीनराशि में हो तो वह पुरुष व्यापार में बहुत धन पानेवाला, सुखी और अपने निजजनों से भय पानेवाला, सुजनता से मनुष्यों को सुख देनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धि होता है ॥ १२ ॥

इति मेषादिराशिस्थ रविफल ।

—:०:—

अथ मेषादिराशिस्थचन्द्रफलम् ।

स्थिरधनो रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदाविजितो भवेत् ॥
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतयास्वसुकीर्त्तिभाक् १

जो मेषराशि का चन्द्रमा हो तो वह पुरुष स्थिर धनवाला, अच्छे मनुष्यों से रहित, पुत्रादि सुख संपन्न, स्त्री के वशीभूत और अद्भुत प्रभुता से उत्तम कीर्त्ति-वाला होता है ॥ १ ॥

स्थिरगतिं सुमतिं कमनीयतां कुशलतां हि नृणामुपभोगताम् ॥

वृषगतो हिमगुर्भ्रंशमादिशेत् सुकृतितः कृतितश्च सुखानि च २

जो वृषराशि का चंद्रमा हो तो वह पुरुष मन्द चालवाला, बुद्धिमान्, चतुरता और कुशलता से युक्त, अनेक भोगयुक्त और अच्छे कर्म करने से सुखों को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतिप्रियः ॥
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत् सुजनता जनताकृतगौरवः ३

जो चंद्रमा मिथुनराशि का हो तो वह पुरुष सबसे प्रीति करनेवाला और हाथ में मत्स्य के चिह्नवाला, स्त्रियों के संग से विषय में सुख पानेवाला, स्त्रियों का प्यारा और सबसे स्नेह करनेवाला तथा गौरव से युक्त होता है ॥ ३ ॥

श्रुतकलाबलनिर्म्मलवृत्तयः कुसुमगन्धजलाशयकेलयः ॥
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमती सुमतोप्सितलब्धयः ४

जो कर्कराशि में चंद्रमा हो तो वह पुरुष शास्त्र में कुशल, बलवान्, निर्मल वृत्तिवाला, सुगंधित पुष्प का धारण करनेवाला और जलक्रीड़ा करनेवाला तथा पृथ्वी से मनचाहा धन पैदा करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अचलकाननयानमनोरथं गृहकलिश्च गलोदरपीडनम् ॥
द्विजपतिर्मृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम् ५

जो चन्द्रमा सिंहराशि में हो तो वह पुरुष पवन और पर्वतों में संचार करने का मनोरथ रखनेवाला, गृह में कलहकारी और गले में वा पेट में पीड़ा पाने वाला और हीनतेज होता है ॥ ५ ॥

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिविलासकुतूहलैः ॥
विमलशीलसुताजननोत्सवैः सुविधिनाविधिनासहितःपुमान् ६

जो कन्याराशि का चन्द्रमा हो तो वह पुरुष स्त्रियों से बहुत केलि-विलास-कुतूहल करनेवाला, उत्तम शील स्वभावयुक्त, कन्योत्पत्ति से सुख पानेवाला और सर्वविधि का जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥

वृषतुरङ्गमविक्रमविक्रमद्विजसुरार्चनदानमनाः पुमान् ॥
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभवसञ्चितविक्रमः ७

जो तुलाराशि में चन्द्रमा हो तो वह पुरुष बैल, घोड़े और बलयुक्त शरीर, ब्राह्मण वा देवता का पुजनेवाला, दान देनेवाला, बहुत स्त्रियों का भोग करनेवाला और धन-विभव से पराक्रम का संचय करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः ॥
कलिरुचिर्दिबलः खलमानसः कृशमना शमनापहतो भवेत् ८

जिसके वृश्चिकराशि का चन्द्रमा हो तो उस पुरुष का धन राजा से तथा द्यूत से क्षय हो जाता है और वह कलहप्रिय, निर्बल, दुष्टमतिवाला, छोटे मनवाला और चिन्तायुक्त होता है ॥ ८ ॥

बहुकलाकुशलः प्रबलो महा विमलताकलितः सरलोक्तिभाक् ॥
शशधरे तु धनुर्द्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ९

जिसके धनराशि का चन्द्रमा हो तो वह पुरुष अनेक कारीगरी की कला में प्रवीण, महाबली, निर्म्मल बुद्धि और उत्तम वचन कहनेवाला, धनयुक्त और थोड़ा खर्च करनेवाला होता हैं ॥ ९ ॥

कलितशीतभयः किल गीतवित् तनुरुषासहितो मदनातुरः ॥
निजकुलोत्तमवृत्तिकरः परं हिमकरे मकरे पुरुषो भवेत् १०

जिसके मकरराशि का चन्द्रमा हो तो वह पुरुष जल से भय पानेवाला, गानविद्या में निपुण, क्रोधयुक्त शरीर, कामातुर और अपने कुल में उत्तम वृत्तिका करनेवाला होता है ॥ १० ॥

अलसतासहितोऽन्यसुतप्रियः कुशलताकलितोतिविचक्षणः ॥
कलशगामिनिशीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरुरिपुव्रजः ११

जिसके कुम्भराशि का चन्द्रमा हो तो वह पुरुष बड़ा आलसी, परपुत्रों से प्रीति करनेवाला, निरन्तर प्रसन्नतायुक्त, विचक्षण बुद्धिवाला और शत्रु का जीतनेवाला होता है ॥ ११ ॥

शशिनिमीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलोजललालसः ॥
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्वबलताबलताकलितो नरः १२

जिसके जन्मसमय में चन्द्रमा मीनराशि का हो तो वह पुरुष जितेन्द्रिय, जल की

इच्छा करनेवाला, बड़ा गुणी, चतुर, निर्मल बुद्धिवाला, शस्त्रविद्या में कुशल और निर्बल शरीरवाला होता है ॥ १२ ॥

इति मेषादिराशिस्थ चन्द्रफल।

अथ मेषादिराशिस्थभौमफलम् ॥

क्षितिपतेः क्षितिमानधनागमैः सुवचसामहसाबहुसाहसैः ॥
अवनिजः कुरुते सततं युतं स्वजगतो जगतोऽभिमतन्नरम् १

जिसके जन्मसमय में मेषराशि का मंगल हो तो वह पुरुष राजद्वार से भूमि, धन और मान पानेवाला, अच्छे वचनवाला, साहसकर्म्म करनेवाला और सबका सहाय करनेवाला होता है ॥ १ ॥

गृहधनाल्पसुखञ्च रिपूदयं परगृहास्थितिमादिशते नृणाम् ॥
अवनयाग्निरुजौ वृषभस्थितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवपीडनम् २

जो वृषराशि में मंगल हो तो वह पुरुष अपने घर और धन से थोड़ा सुख पानेवाला, वैरियों से युक्त, पराये घर में निवास करनेवाला, अग्निमान्द्य से दुःखी और पुत्रपक्ष से कष्ट पानेवाला होता है ॥ २ ॥

बहुकलाकलनं कुलजोत्कलिं प्रचलनप्रियताञ्च निजस्थलात् ॥
ननु नृणां कुरुते मिथुनस्थितः कुतनयस्तनयप्रमुखात्सुखम् ३

जो मिथुनराशि का मंगल हो तो वह पुरुष बहुत कलाओं का जाननेवाला, कुटुम्बीजनों में कलह करनेवाला और अपने स्थान से दूर यात्रा करनेवाला और पुत्रादिकों से सुख पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

परगृहस्थिरतामतिदीनतां विमतितां शमिताञ्च रिपूदयम् ॥
हिमकरालयगे किल मङ्गले प्रबलयाबलया कलहं व्रजेत् ४

जो कर्कराशि में मंगल बैठा हो तो वह पुरुष पराये घर में निवास करनेवाला, अत्यन्त दीनभाव, हीनमति, बहुत शत्रुजनों के उपद्रव से शान्त और प्रबल स्त्री से कलहकारी होता है ॥ ४ ॥

अतितरां सुतदारसुखान्वितो हतरिपुर्विततोद्यमसाहसः ॥
अवनिजे मृगराजगते पुमाननयतानयतानियुतो भवेत् ५

जो सिंहराशि का मंगल हो तो वह पुरुष स्त्री-पुत्रादिकों से अत्यन्त सुख

पानेवाला और बड़ा साहसी, शत्रु को जीतनेवाला, बड़ा उद्यमी और नीति-अनीति से युक्त होता है ॥ ५ ॥

सुजनपूजनता जनताधिको यजनयाजनकर्म्मरतो भवेत् ॥
क्षितिसुते सति कन्यकयान्विते त्ववनितो वनितोत्सवतःसुखी ६

जो कन्याराशि का मंगल हो तो वह पुरुष मित्रों का सत्कार करनेवाला, बहुत मनुष्यों का साथी और पूजा करने-कराने के काम में तत्पर और स्त्रियों के उत्सव कर्म से सुख पानेवाला होता है ॥ ६ ॥

बहुधनव्ययताङ्गविहीनता गतगुरुप्रियतापरितापितः ॥
वणिजिभूमिसुते विकलः पमानवनितावनितोद्भवदुःखितः ७

जो तुलाराशि का मंगल हो तो वह पुरुष बहुत धन खर्च करनेवाला, अंगविहीन और बड़े जनों से प्रेमरहित, सन्तप्त शरीर, विकल और स्त्रीपक्ष से दुःखित रहता है ॥ ७ ॥

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितः सुतसुतावनितादिमहत्सुखम् ॥
वसुमतीसुतभाजि सरीसृपे नृपरतः परतश्च जयं व्रजेत् ८

जो वृश्चिकराशि का मंगल हो तो वह पुरुष विष, अग्नि और शस्त्र से भय-भीत रहनेवाला और स्त्री-पुत्रादिकों से बड़ा सुख पानेवाला, राजा का सेवी और शत्रुओं से विजय पानेवाला होता है ॥ ८ ॥

रथतुरङ्गमगौरवसंयुतः परमराजितनुक्षतिदुःखितः ॥
भवति नोऽवनिजे धनुषि स्थिते सुवनितावनिताभ्रमणिप्रियः ९

जो धनराशि का मंगल हो तो वह पुरुष रथ, घोड़े और गौरव से संयुक्त, व्रणरोग से दुःखित और श्रेष्ठ स्त्रियों के संग भ्रमण करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

रणपराक्रमतावनितासुखं निजजनप्रतिकूलतयाश्रमः ॥
विभवतामनुजस्य धरात्मजे मकरगे करगे चरमो भवेत् १०

जो मकरराशि का मंगल हो तो वह पुरुष संग्राम में पराक्रम देखनेवाला और स्त्रियों से सुख पानेवाला, निजजनों की प्रतिकूलता से अधिक परिश्रम पानेवाला और धन-विभव से सुख पानेवाला होता है ॥ १० ॥

विनयतारहितं सहितं रुजा निजजनप्रतिकूलमलङ्घलम् ॥

प्रकुरुते मनुजङ्कलशाश्रितः क्षितिसुतोऽतिसुतोद्भवदुःखितः ११

जो कुम्भराशि का मंगल हो तो वह पुरुष विनयभाव से रहित, रोगयुक्त शरीर, अपने जनों से प्रतिकूल, दुष्ट मतिवाला और बहुत पुत्रादिकों की उत्पत्ति होने से दुःखी होता है ॥ ११ ॥

व्यसनतां खलतामदयाख्रुतां
विकलताञ्चलनं च निजालयात् ॥
क्षितिसुतस्तिमिना सुसमन्वितो
विमतिना मतिनाशनमादिशेत् १२

जो मीनराशि में मङ्गल हो तो वह पुरुष व्यसनयुक्त, दुष्टमति, दयाहीन, विकल शरीर, अपने स्थान से दूर यात्रा करनेवाला और कुबुद्धि से नष्ट बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

इति मेषादिराशिस्थ भौमफल।

—:०:—

अथ मेषादिराशिस्थबुधफलम्।

खलमतिः किल चञ्चलमानसो बहुलभुक्कलहाकुलितो नरः ॥
अकरुणोऽनृणवांश्च बुधे भवेदविगते विगते क्षितिसाधनः १

जिसके मेषराशि में बुध बैठा हो वह दुष्टस्वभाव, चंचलचित्त, अति भोजन करनेवाला, कलहकारी, निर्दयी, ऋणी और भूमिका साधन करनेवाला होता है ॥ १ ॥

वितरणप्रणयं गुणिनन्दिशेद् बहुकलाकुशलं रतिलालसम् ॥
धनिनमिन्दुसुतो वृषभस्थितस्तनुजतोऽनुजतोऽतिसुखन्नरम् २

जिसके वृषराशि में बुध बैठा हो वह मनुष्य दान देने में प्रीतिवाला, गुणी, बहुत कलाओं में कुशल, स्त्रियों का भोग करनेवाला, धनी और हमेशा भ्राता व पुत्रादिकों से सुख पानेवाला होता है ॥ २ ॥

प्रियवचो रचनासु विचक्षणो द्विजननीतनयः शुभवेषभाक् ॥
मिथुनगे जनने शशिनन्दने सदनतोऽदनतोऽपि सुखी नरः ३

जिसके जन्मकाल में मिथुनराशि में बुध बैठा हो वह प्रियवचन बोलने की

रचना में प्रवीण, दो माताओं का पुत्र, सुन्दर वेषवाला तथा स्थान और भोजन से सुखी होता है ॥ ३ ॥

कुचरितानि च गीतकथादरो नृपरुचिः परदेशगतिर्नृणाम् ॥
किल कुलीरगते शशभृत्सुते सुरततारतता नितराम्भवेत् ४

जिसके बुध कर्कराशि में बैठा हो वह कुत्सित चरित्र करनेवाला और कथा वा गान का आदर करनेवाला, राजसेवी, परदेश का रहनेवाला और निरन्तर स्त्री-भोग की इच्छा रखनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अनृततासहितं विमतिम्परं सहजवैरकरं कुरुते नरम् ॥
युवतिहर्षपरं शशिनः सुतो हरिगतोऽरिगतोन्नतिदुःखितम् ५

जिसके सिंहराशि में बुध बैठा हो वह पुरुष झूठ बोलनेवाला, हीनमति वाला और बन्धुजनों से वैरभाव रखनेवाला, स्त्रीजनों से प्रीति करनेवाला, शत्रुओं से उन्नतिहीन और दुःख पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

सुवचनानुरतश्चतुरो नरो लिखनकर्मपरोहि वरोन्नतिः ॥
शशिसुते युवतौ च गते सुखी सुनयनानयनाञ्चलवेष्टितैः ६

जिसके कन्याराशि में बुध बैठा हो वह अच्छे वचन बोलनेवाला, चतुर और लिखने में बड़ा प्रवीण, निरन्तर उन्नतिवाला और उत्तम नेत्रवाली स्त्रियों के कटाक्ष से सुखी होता है ॥ ६ ॥

अनृतवाग्व्ययभाक्खलु शिल्पवित् कुचरिताभिरतिर्बहुजल्पकः ॥
व्यसनयुङ् मनुजः सहिते बुधेऽत्र तुलयातुलयात्वसतायुतः ७

जिसके तुलाराशि में बुध बैठा हो वह मिथ्यावादी, ज्यादा खर्च करनेवाला, कारीगरी में प्रवीण, खराब काम में मन लगानेवाला, बहुत बोलनेवाला, व्यसनी और असत्य से युक्त होता है ॥ ७ ॥

कृपणतातिरतिप्रणयश्रमो विहितकर्म्मसुखोपहतिर्भवेत् ॥
धवलभानुसुतेऽलिगते क्षतिस्त्वलसतोलसतोऽपि च वास्तुनः ८

जिसके वृश्चिकराशि में बुध बैठा हो वह कृपणता में बहुत प्रीति करनेवाला, परिश्रमी, अच्छे काम और सुख से विमुख, आलसी और गृह की भूमिवाला होता हैं। ॥ ८ ॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवः कुलपतिश्च कलाकुशलो भवेत् ॥
शशिसुतेऽत्र शरासनसंस्थिते विहितया हितया रमयान्वितः ९

जिसके धनराशि में बुध बैठा हो वह दान देनेवाला, विभवयुक्त, अपने कुल का पालन करनेवाला, कारीगरी में प्रवीण और योग्य हित करनेवाली स्त्री युक्त होता है ॥ ९ ॥

रिपुभयेन युतः कुमतिर्नरः स्मरविहीनतरः परकर्मकृत् ॥
मकरगे सति शीतकरात्मजे व्यसनतः सनतः पुरुषो भवेत् १०

मकरराशि में जिसके बुध बैठा हो वह निरन्तर शत्रु से भयभीत, बुद्धिहीन, कामदेव से रहित, पराया काम करनेवाला और व्यसनों से नम्र होता है ॥१०॥

गृहकलिं कलशे शशिनन्दने वितनुते तनुतां ननु दीनताम् ॥
धनपराक्रमधर्म्मविहीनतां विमतितामतितापितशत्रुभिः ११

जिसके कुम्भराशि में बुध बैठा हो वह निरन्तर घर में कलह करनेवाला, दीनता और कृशता का बढ़ानेवाला और धन, पराक्रम और धर्म्म से रहित तथा शत्रुओं से दुःख पानेवाला और बुद्धिहीन होता है ॥ ११ ॥

परधनादिकरक्षणतत्परो द्विजसुरानुचरो हि नरो भवेत् ॥
शशिसुते पृथुरोमसमाश्रिते सुवदनावदनानुविलोकनः १२

जिसके मीनराशि में बुध बैठा हो तो वह पराये धन की रक्षा करनेवाला, ब्राह्मण-देवताओं का पुजनेवाला और उत्तम स्त्रियों के वदन को देखनेवाला होता है ॥१२॥

इति मेषादिराशिस्थ बुधफल।

अथ मेषादिराशिस्थगुरुफलम्।

बहुतरां कुरुते समुदारतां सुरचितां निजवैरिसमुन्नतिम् ॥
विभवताञ्च मरुत्पतिपूजितः क्रियगतोरुगतोरुमतिप्रदः १

जिसके मेषराशि में गुरु बैठा हो वह बड़ा उदारचित्त और बहुत शत्रुओं वाला, वैभवयुक्त और उत्तम बुद्धिवाला होता है ॥ १ ॥

द्विजसुरार्चनभक्तिविभूतयो द्रविणवाहनगौरवलब्धयः ॥

सुरगुरौ वृषभे बहुवैरिणश्चरणगा रणगाढपराक्रमैः २

जिसके वृषराशि में गुरु बैठा हो तो वह देवता व ब्राह्मणों का पूजन करने वाला, भक्ति से युक्त और धन, वाहन और गौरवसम्पन्न तथा रण में गहरे पराक्रम से बहुत से वैरियों को पैर तले दबानेवाला होता है ॥ २ ॥

कवितया सहितः प्रियवाक् शुचि-
र्विमलशीलरुचिर्निपुणः पुमान् ॥
मिथुनगे सति देवपुरोहिते
सहितताहिततासहितैर्भवेत् ३

जिसके मिथुनराशि में गुरु बैठा हो तो वह काव्य का रचनेवाला, मीठी वाणी बोलनेवाला, पवित्र, उत्तम शीलस्वभाव और हित करनेवालों से हित करने वाला होता है ॥ ३ ॥

बहुधनागमनोमदनोन्नतिर्विविधशास्त्रकलाकुशलो नरः ॥
प्रियवचाश्च कुलीरगते गुरौ चतुरगैस्तुरगैः करिभिर्युतः ४

जिसके कर्कराशि में गुरु बैठा हो तो वह बड़ा धनी, कामदेव की वृद्धिवाला, अनेक शास्त्र और कलाओं में निपुण, अच्छे वचन बोलनेवाला तथा अच्छी चालवाले घोड़े और हाथियों से युक्त होता है ॥ ४ ॥

अचलदुर्गवनप्रभुतोऽर्ज्जितो दृढ़तनुर्ननु दानपरो भवेत् ॥
अरिविभूतिहरो हि नरो युतः सुवचसा वचसामधिपे हरौ ५

जिसके सिंहराशि में गुरु बैठा हो तो वह पर्वत, कोट और वन का स्वामी और बड़ा पराक्रमी, पुष्टशरीर, बड़ा दानी, शत्रु का धन हरनेवाला तथा श्रेष्ठ वाणी से युक्त होता है ॥ ५ ॥

कुसुमगन्धसदम्बरशालिता विमलता धनदानमतिर्भृशम् ॥
सुरगुरौ सुतया सति संयुते रुचिरता चिरतापितशत्रुता ६

जिसके कन्याराशि में गुरु बैठा हो तो वह उत्तम वस्त्र और सुगंधित पुष्पमालाओं को धारण करनेवाला, स्वच्छता और धनवाला, दान का देनेवाला तथा शत्रुओं को दुःख देने में रुचिवाला होता है ॥ ६ ॥

श्रुततपोजपहोममहोत्सवे द्विजसुरार्चनदानमतिर्भवेत् ॥

वणिजि जन्मनि चित्रशिखण्डिजे चतुरता तुरतासहितारिता ७

जिसके तुलाराशि में गुरु बैठा हो तो वह वेद, तप, जप और होम में तत्पर तथा देवता व ब्राह्मणों का पूजनेवाला, दानी तथा चतुरता, आतुरता और शत्रुता सहित होता है ॥ ७ ॥

धनविनाशनदोषसमुद्भवैः कृशतरो बहुदम्भपरो नरः ॥
अलिगते सति देवपुरोहिते भवनतो वनतोऽपि च दुःखभाक् ८

जिसके वृश्चिकराशि में गुरु बैठा हो तो वह धननाश के दोष से उत्पन्न दुर्बलतावाला, मिथ्यावादी और घर से तथा वन से भी दुःख पानेवाला होता है ॥ ८ ॥

वितरणप्रणयो बहुवैभवं ननु धनान्यथ वाहनसञ्चयः ॥
धनुषि देवगुरौ हि मतिर्भवेत्सरुचिरारुचिराभरणानि च ९

जिसके धनराशि में गुरु बैठा हो तो वह बड़ा दानी और बहुत वैभव से युक्त, धन और वाहन सञ्चय करनेवाला, सुन्दर बुद्धि तथा अच्छे आभूषणोंवाला होता है ॥ ९ ॥

हतमतिः परकर्म्मकरो नरो स्मरविहीनतरो भयरोषभाक् ॥
सुरगुरौ मकरे विदधाति नो जनमनो न मनोरथसाधनम् १०

मकरराशि में गुरु बैठा हो तो वह बुद्धिहीन और पराया काम करनेवाला, कामदेव से हीन, भययुक्त, क्रोधी, अपना मनोरथ साधनेवाला तथा मनुष्यों के मनोरथ को नाश करनेवाला होता है ॥ १० ॥

गदयुतः कुमतिर्द्रविणोज्झितः कृपणतानिरतः कृतकिल्बिषः ॥
घटगते सति देवपुरोहिते कदशनो दशनोदरपीडितः ११

जिसके कुंभराशि में गुरु बैठा हो तो वह रोगयुक्त शरीर, कुमति, धनहीन, कृपणता में निरत, पापकर्म करनेवाला, खराब भोजन करनेवाला तथा दांत और उदर में पीड़ावाला होता है ॥ ११ ॥

नृपकृपाप्तधनो मदनोन्नतिस्सदनसाधनदानपरो नरः ॥
सुरगुरौ तिमिनासहिते सतामनुमतोनुमतोत्सवदो भवेत् १२

जिसके मीनराशि में गुरु बैठा हो तो वह राजा का मंत्री और कामी, धनी, दान देनेवाला, उत्तम स्थान में निवास करनेवाला और प्रसन्न चित्त होता है ।। १२ ।।

इति मेषादिराशिस्थ गुरुफल ।

—:o:—

अथ मेषादिराशिस्थशुक्रफलम् ।

भवनवाहनवृन्दपुरोधिपः प्रचलनप्रियताविहितादरः ।।
यदि च सज्जनने हि भवेद्रविः कवियुतो वियुतो रिपुभिर्नरः १

जिसके जन्मकाल में मेषराशि में शुक्र बैठा हो तो वह मकान, वाहन समूह और पुर का स्वामी, यात्रा में प्रीतिवाला, आदर पानेवाला, कवियों से युक्त और शत्रुजनों से रहित होता है ।। १ ।।

बहुकलत्रयुतोत्सवगौरवं कुसुमगंधरुचिः कृषिनिर्मितः ।।
वृषगते भृगुजे कमला भवेदविरला विरला रिपुमण्डली २

जिसके वृषराशि में शुक्र बैठा हो वह बहुत स्त्री, उत्सव और गौरव से युक्त, सुगन्धित पुष्पों में रुचिवाला, खेती करनेवाला तथा शत्रुजनों का जीतनेवाला होता है ।। २ ।।

भृगुसुते जनने मिथुनस्थिते सकलशास्त्रकलामलकौशलम् ।।
सरलताललिता किल भारती सुमधुरा मधुरान्नरुचिर्भवेत् ३

जिसके मिथुनराशि में शुक्र बैठा हो वह सर्वशास्त्रों की कलाओं में निपुण और सरल, ललित तथा मीठी वाणी बोलनेवाला और मीठा भोजन करने में रुचिवाला होता है ।। ३ ।।

द्विजपतेस्सदने भृगुनन्दने विमलकर्ममतिर्गुणसंयुतः ।।
जनमलं सकलं कुरुते वशं सुकलया कलयापि गिरा नरः ४

जिसके कर्कराशि में शुक्र बैठा हो वह उत्तम कर्मों में मति लगानेवाला, गुणयुक्त और सुन्दर मीठी वाणी से सर्वजनों को वश करनेवाला होता है ।। ४ ।।

हरिगते सुरवैरिपुरोहिते युवतितो धनमानसुखानि च ।।
निजजनव्यसनान्यपि मानवस्त्वहिततो हिततोषमनुव्रजेत् ५

जिसके सिंहराशि में शुक्र बैठा हो वह स्त्रियों से धन, मान और सुख पानेवाला

एवं अपने जनों से व्यसनों को प्राप्त, तथा वैरियों से सुख सन्तोष को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

भृगुसुते सति कन्यकयान्विते बहुधनी खलु तीर्थमनोरथः ॥
कमलया पुरुषोतिविभूषितस्त्वमितया मितयापि गिरान्वितः ६

जिसके कन्याराशि में शुक्र बैठा हो वह बड़ा धनी और तीर्थों का मनोरथ करने वाला, अमित लक्ष्मी से विभूषित और मित (थोड़ा) बोलनेवाला होता है ॥ ६ ॥

कुसुमवस्त्रविचित्रधनान्वितो बहुगमागमनो ननु मानवः ॥
जननकालतुलाकलनं यदा सुकविना कविनायकतां व्रजेत् ७

जिसके जन्मसमय तुलाराशि में शुक्र बैठा हो वह पुष्प, विचित्रवस्त्र और धनवाला, बहुत आने जानेवाला और उत्तम काव्य का रचनेवाला तथा कवियों का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

कलहघातमतिं जननिंद्यतां प्रजननामयतां नियतं नृणाम् ॥
व्यसनतां जननेऽलिसमाश्रितः कविरलं विरलं कुरुते धनम् ८

जिसके वृश्चिकराशि में शुक्र बैठा हो वह सबकी निन्दा करनेवाला, कलह-कारी, जीवहिंसा करनेवाला, जन्म का रोगी, थोड़े धनवाला और व्यसनयुक्त होता है ॥ ८ ॥

युवतिसूनुधनागमनोत्सवं सचिवतां नियतं शुभशीलताम् ॥
जनुषि कार्मुकगः कुरुते कविः कविरतिं विरतिं विरतो नृणाम् ९

जिसके धनुराशि में शुक्र बैठा हो वह स्त्री, पुत्र और धन के आगमन से प्रसन्नतायुक्त और राजमन्त्री, उत्तम शील स्वभावयुक्त, कवियों में रति करनेवाला तथा विरक्त होता है ॥ ९ ॥

अभिरतिस्तु जरांगनया नृणां व्ययभयं कृशतामतिचिंतया ॥
भृगुसुते मृगराजगते सदा कविजने विजनेपि मनो भवेत् १०

जिसके मकरराशि में शुक्र बैठा हो वह वृद्धा स्त्री से भोग करनेवाला, व्यय करनेवाला और बहुत चिंता से दुर्बल शरीरवाला, कवीश्वरों में मन रखनेवाला और एकान्त निवास करनेवाला होता है ॥ १० ॥

उशनसः कलशे जनुषि स्थितो वसनभूणभोगविहीनता ॥

विमलकर्ममहालसता नृणामुपगतापगता विरमा भवेत् ११

जिसके कुम्भराशि में शुक्र बैठा हो वह वस्त्र, आभूषण और भोग से विहीन, अच्छे कर्म करने में आलसी और धन का नाश करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

भृगुसुते सति मीनसमन्विते नरपतेर्विभुता वितता भवेत् ॥
रिपुसमाक्रमणं द्रविणागमो वितरणे तरणे प्रणयो नृणाम् १२

जिसके मीनराशि में शुक्र बैठा हो वह राजा से बहुत धन पानेवाला, शत्रुओं को जीतकर धन पानेवाला और दान करने में तथा तैरने में प्रीति करनेवाला होता है ॥ १२ ॥

इति मेषादिराशिस्थ शुक्रफल ।

--:०:--

अथ मेषादिराशिस्थशनिफलम् ।

धनविहीनतया तनुता तनौ जनविरोधतयेप्सितनाशनम् ॥
क्रियगतेऽर्कसुते स्वजनैर्नृणां विषमता शमताशमनम्भवेत् १

जिसके जन्मकाल में मेषराशि में शनैश्चर बैठा हो वह निर्धनी होने से दुर्बल शरीर, सबसे विरोध रखने से वाञ्छित का नाश करनेवाला, अपने जनों से विरोध करनेवाला तथा शान्ति रहित होता है ॥ १ ॥

युवतिसौख्यविनाशनतां भृशं पिशुनसङ्गरुचिम्मतिविच्युतिम् ॥
तनुभृतां जनने वृषभस्थितो रविसुतो विसुतोत्सवमादिशेत् २

जिसके वृषराशि में शनैश्चर बैठा हो वह स्त्री-सुख से रहित और चुगुलखोरों का संग रखनेवाला, बुद्धिहीन और पुत्र के उत्सव (सुख) से रहित होता है ॥ २ ॥

प्रचलनं विमलत्वविहीनतां भवनबाह्यविलासकुतूहलम् ॥
व्रजति ना मिथुनोपगते सुते दिनविभोर्न विभोर्लभते सुखम् ३

जिसके मिथुनराशि में शनैश्चर बैठा हो वह चलने फिरनेवाला, निर्मलता से विहीन और घर से बाहर, हास-विलास करनेवाला तथा प्रभुता के सुख से हीन होता है ॥ ३ ॥

शशिनिकेतनगामिनि भानुजे तनुभृतां कृशता भृशमम्बया ॥

वरविलासकरा कमला भवेदविकलं विकलं रिपुमण्डलम् ४

जिसके कर्कराशि में शनैश्चर बैठा हो वह दुर्बल शरीर और मातृसुखरहित, धन से विलास करनेवाला और शत्रुओं का जीतनेवाला होता है ॥ ४ ॥

लिपिकलाकुशलश्च कलिप्रियो विमलशीलविहीनतरो नरः ॥
रविसुते रविवेश्मनि संस्थिते हतनयस्तनयप्रमदार्त्तिभाक् ५

जिसके सिंहराशि में शनैश्चर बैठा हो वह लिखने में बड़ा प्रवीण, सब जनों से कलह करनेवाला, स्वच्छ, शीलरहित, नीतिरहित तथा स्त्री-पुत्रों से दुःख पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

विहितकर्म्मणि शर्म्म कदापि नो विनयतोपहतश्चलसौहृदम् ॥
रविसुते सति कन्यकयान्विते विबलताबलतासहितो भवेत् ६

जिसके कन्याराशि में शनैश्चर बैठा हो वह श्रेष्ठ कर्म में कल्याण से रहित, नम्रता रहित, मित्रों से विरोध करनेवाला और निर्बल शरीरवाला होता है ॥ ६ ॥

निजकुलेऽवनिपालबलान्वितः स्मरबलाकुलितो बहुदानदः ॥
जलजिनीशसुते हि तुलान्विते नृपकृतोपकृतो हि नरो भवेत् ७

जिसके तुलाराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह अपने कुल में राज-बल से युक्त, कामदेव के बल से व्याकुल, बड़ा दानी और राजा से अपमानित होता है ॥ ७ ॥

विषहुताशनशस्त्रभयान्वितो धनविनाशनवैरिगदार्दितः ॥
विकलताकलिता च समन्विते रविसुते विसुतेष्टसुखो नरः ८

जिसके वृश्चिकराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह विष से, अग्नि से और शस्त्र से भय पानेवाला, धन का विनाश करनेवाला, शत्रु से और रोग से दुःख पानेवाला, विकल शरीर और पुत्र-सुख से रहित होता है ॥ ८ ॥

रविसुतेन युते सति कार्मुके सुतगणैः परिपूर्णमनोरथः ॥
प्रथितकीर्त्तिसुवृत्तपरो नरो विभवतो भवतोषयुतो भवेत् ९

जिसके धनराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह पुत्रादिकों से पूर्ण मनोरथवाला, विख्यातकीर्त्ति, अच्छे चाल-चलनवाला तथा विभव और संतोष से युक्त होता है ॥ ९ ॥

नरपतेरिव गौरवतां व्रजेद्रविसुते मृगराशिगते नरः ॥
अगुरुणा कुसुमैर्मृगजातया विमलया मलयाचलजैः सुखम् १०

जिसके मकरराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह राजाओं की तरह गौरव पाने वाला तथा सुगन्धित पुष्प, अगर, कस्तूरी और मलयागिरि चन्दनादि से प्रसन्न चित्त होता है ॥ १० ॥

ननु जितो रिपुभिर्व्यसनावृतो विहितकर्म्मपराङ्मुखतान्वितः ॥
रविसुते कलशेन समन्विते सुसहितः सहितः प्रचयैर्नरः ११

जिसके कुम्भराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह शत्रुजनों से जीता हुआ, व्यसनयुक्त, श्रेष्ठ कार्यों से विमुख और श्रेष्ठ मित्रोंवाला होता है ॥ ११ ॥

विनयताव्यवहारसुशीलता सकललोकगृहीतगुणो नरः ॥
उपकृतौ निपुणस्तिमिसंश्रिते रविभवे विभवेन समन्वितः १२

जिसके मीनराशि में शनैश्चर बैठा हो तो वह नम्रता और व्यवहार में बड़ा प्रवीण, श्रेष्ठ शीलवाला और सकल संसार के गुणों को ग्रहण करनेवाला, सर्वजनों का उपकारी और वैभव से युक्त होता है ॥ १२ ॥

इति मेषादिराशिस्थ शनिफल ।

बलान्विते राशिपतौ च राशौ खेटेथवा राशिफलं समग्रम् ॥
नीचोच्चगेहास्तमयादिभावैर्न्यूनाधिकत्वम्परिकल्पनीयम् १३

जिसके राशि का स्वामी बली होकर बलयुक्त राशि में बैठा हो उसे सम्पूर्ण फल होता है और उच्च, नीच और अस्तादि भावों से कमती व बढ़ती फलों की कल्पना करना चाहिये ॥ १३ ॥

इति राशिस्थग्रहफलानि ।

अथ शुभाशुभज्ञानार्थं शनिचक्रम् ।

नराकारं लिखेच्चक्रं शनिचक्रन्तदुच्यते ॥
वेदितव्यम्फलन्तत्र मानवानां शुभाशुभम् १

मनुष्याकार चक्र लिखे उसे शनिचक्र कहते हैं उसी से मनुष्यों का शुभाशुभ फल जानना चाहिये ॥ १ ॥

जन्मर्क्षतो यत्र च कुत्रसंस्थं मित्रस्य पुत्रम्प्रथमं विदित्वा ॥
चक्रे नराख्ये खलु जन्मधिष्ण्याद्विन्यस्य भानि प्रवदेत्फलानि २

जन्मनक्षत्र से लेकर उस नराकार चक्र में नक्षत्रों को स्थापित करे फिर जन्म नक्षत्र से गिने, जिस अङ्ग में शनि का नक्षत्र परे उसी के अनुसार फल कहे॥ २ ॥

नक्षत्रमेकञ्च शिरोविभागे मुखे लिखेत्त्रीणि युगं च गुह्ये ॥
नेत्रे च नक्षत्रयुगं हृदिस्थं भपञ्चकं वामकरे चतुष्कम् ३

एक नक्षत्र शिर में, तीन मुख में, दो नक्षत्र गुदा में, नेत्रों में दो और हृदय में पांच तथा बायें हाथ में चार नक्षत्र स्थापित करे ॥ ३ ॥

वामे च पादे त्रितयं हि भानां भानां त्रयन्दक्षिणपादसंस्थम् ॥
चत्वारि ऋक्षाणि च दक्षिणाख्ये पाणौ प्रणीतम्मुनिनारदेन ४

बायें चरण में तीन, दक्षिण चरण में तीन और दहिने हाथ में चार नक्षत्र स्थापित करे। यह चक्र नारदमुनि ने कहा है ॥ ४ ॥

रोगो लाभो हानिराप्तिश्च सौख्यं बन्धः पीडा सत्प्रयाणं च लाभः॥
मन्दे चक्रे मार्गगे कल्पनीयन्तद्वैलोम्याच्छीघ्रगे स्युः फलानि ५

जो शनिनक्षत्र शिर में पड़े तो वह पुरुष रोगी हो, मुख में पड़े तो लाभ, गुदा में पड़े तो हानि, नेत्रों में पड़े तो धन की प्राप्ति, हृदय में पड़े तो सुखी, बायें हाथ में पड़े तो बन्धन, बायें चरण में पड़े तो पीड़ा, दक्षिण चरण में पड़े तो श्रेष्ठ यात्रा और दक्षिण हस्त में पड़े तो लाभ होता है ॥ ५ ॥

अथ शनिचक्रम् ।

शिरसि	मुखे	गुदे	नेत्रयोः	हृदि	वाम-हस्ते	वाम-पादे	दक्षिण-पादे	दक्षिण-हस्ते
१	३	२	२	५	४	३	३	४
रोगम्	लाभः	हानिः	प्राप्तिः	सौख्यं	बंधनं	पीडा	श्रेष्ठ-यात्रा	लाभः

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्यदीपकम् ॥
विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् १

अब इसके अनन्तर तीनों लोकों को प्रकाशित करनेवाले, विख्यात और शीघ्र ही विश्वास करानेवाले सर्वतोभद्र चक्र को कहता हूं ॥ १ ॥

याम्योत्तराः प्रागपराश्च कोष्ठा नवात्र चक्रे सुधिया विधेयाः ॥
स्वरर्क्षवर्णादिकमत्र लेख्यं प्रसिद्धभावाच्च मया निरुक्तम् २

विद्वान् को चाहिये कि उस चक्र में दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम नौ कोठे बनावे और उसमें अपना वर्ण, स्वर और जन्मनक्षत्र लिखे उसी से ग्रहों के वेध का सम्पूर्ण शुभाशुभ फल कहा है ॥ २ ॥

भ्रमो भवेद्भेऽक्षरजे च हानिर्व्याधिः स्वरे भीश्च तिथौ निरुक्ता ॥
राशौ च वेधे सति विघ्नमेव जन्तुः कथञ्जीवति पञ्चवेधे ३

जो जन्मनक्षत्र पर पापग्रहों का वेध हो तो चित्त को भ्रम होता है । वर्ण (अक्षर) पर पापग्रहों का वेध हो तो हानि, जन्म स्वर को पापी वेधें तो व्याधि की उत्पत्ति, जन्म तिथि पर पापग्रहों का वेध हो तो भय और जन्म राशि पर पापग्रहों का वेध हो तो विघ्न होता है एवं पांचों नक्षत्र, अक्षर, स्वर, तिथि और राशि इनका वेध हो तो मृत्यु होती है ॥ ३ ॥

भरण्यकारौ वृषभञ्च नन्दां भद्रां तकारं श्रवणं विशाखाम् ॥
तुलाञ्च विध्येदनलर्क्षसंस्थो गृहोत्र चक्रे गदितं स्वरज्ञैः ४

भरणी नक्षत्र और अकार का वेध तथा वृष राशि और नन्दा तिथि का वेध, तकार में भद्रातिथि का तथा श्रवणनक्षत्र और विशाखा नक्षत्र का वेध होता है और तुला राशि पर कृत्तिका का वेध होता हैं ॥ ४ ॥

वकारमोकारमुकारदास्रं स्वातीं रकारम्मिथुनञ्च कन्याम् ॥
तथाभिजित्संज्ञकभं च विध्येद् ब्रह्मर्क्षसंस्थो हि नभश्चरेन्द्रः ५

वकार का औकार स्वर से वेध, उकार का अश्विनी से वेध, स्वाती का रकार से वेध, मिथुन का कन्याराशि से वेध और अभिजित् का रोहिणी से वेध होता है ॥ ५ ॥

कर्कं ककारं च हरिं पकारं चित्रां च पौष्णं च तथा लकारम् ॥
अकारकं वैश्वभमत्र विध्येदलं नभोमण्डलगो मृगस्थः ६

कर्क का ककार से वेध, सिंह का पकार से वेध, चित्रा और रेवती का लकार

से वेध होता है तथा अकार का उत्तराषाढ़ से वेध और ओकार का मकार से वेध होता है ॥ ६ ॥

एवं वेधः सर्वतोभद्रचक्रे सर्वर्क्षेभ्यश्चिन्तनीयः सुधीभिः ॥
दद्याद्वेधः सत्फलं सौम्यजातोऽत्यन्तं कष्टं दुष्टवेधः करोति ७

इस प्रकार सर्वतोभद्र चक्र में सब नक्षत्रों से वेध का विचार पंडितजनों को करना चाहिये । जो शुभग्रहों का वेध हो तो शुभफल और पापग्रहों का वेध हो तो दुष्ट फल होता है ॥ ७ ॥

यस्मिन्नृक्षे संस्थितो वेधकर्त्ता पापःखेटः सोऽन्त्यभयाति यस्मिन् ॥
काले तस्मिन् मङ्गलं पीडितानां प्रोक्तंसद्भिर्नान्यथा स्यात्कदाचित् ८

जिस नक्षत्र पर पापग्रह स्थित होकर वेध करता है वह जब अन्य नक्षत्र पर चला जाता है तब ही पीड़ितों को मंगल होता है ऐसा श्रेष्ठ मनुष्यों ने कहा है अन्यथा नहीं होता है ॥ ८ ॥

अथ सर्वतोभद्रचक्रम् ।

अ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	२	३	४	लॄ	म	पू
रे	च	१	ओ	नं	औ	५	ट	उ
उ	द	१२	रि	पू	भ	६	प	ह
पू	स	११	अः	ज	अं	७	र	चि
श	ग	ऐ	१०	९	८	ए	त	स्वा
ध	ऋ	ख	ज	भ	य	न	ऋ	वि
ई	श्र	अ	उ	पू	मू	ज्ये	अ	इ

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।

सूर्यकालानलं चक्रं स्वरशास्त्रोदितं हि यत् ॥
तदहं विशदं वक्ष्ये चमत्कृतिकरं परम् १

स्वरशास्त्र में कहे हुए तथा चमत्कार करनेवाले सूर्यकालानल चक्र को हम कहते हैं ॥ १ ॥

त्रिशूलकाग्राः सरलाश्च तिस्रः किलोर्ध्वरेखाः परिकल्पनीयाः ॥
रेखात्रयं मध्यगतं च तत्र द्वेद्वे च कोणोपरिगे विधेयम् २

तीन रेखा खड़ी लिखे तिन में एक एक रेखा में एक एक त्रिशूल बनावे और तीन रेखा उत्तर से दक्षिण तरफ आड़ी बनावे और दो दो रेखा उन कोणों में बनावे ॥ २ ॥

त्रिशूलकोणान्तरगान्यरेखा तदग्रयोः शृंगयुगं विधेयम् ॥
मध्ये त्रिशूलस्य च दण्डमूलात्सव्येन भान्यर्कभतोऽभिजिच्च ३

त्रिशूल और कोणों के बीच में एक और रेखा बनावे और उसके दाहिने बायें दो शृङ्ग बनावे । मध्य त्रिशूल के दण्ड के नीचे जिस नक्षत्र पर सूर्य्य हो उस नक्षत्र से लेकर वाममार्ग से अभिजित् समेत अट्ठाइसों नक्षत्र स्थापित करे ॥ ३ ॥

स्वनामभं यत्र गतं च तत्र प्रकल्पनीयं सदसत्फलं हि ॥
तलस्थऋक्षत्रितये क्रमेण चिन्ता वधश्च प्रतिबन्धनानि ४

अपने नाम का नक्षत्र जहां पर पड़े उसका शुभाशुभ फल जान लेवे । नीचे के तीन नक्षत्रों का फल चिंता, वध और बन्धन होता है ॥ ४ ॥

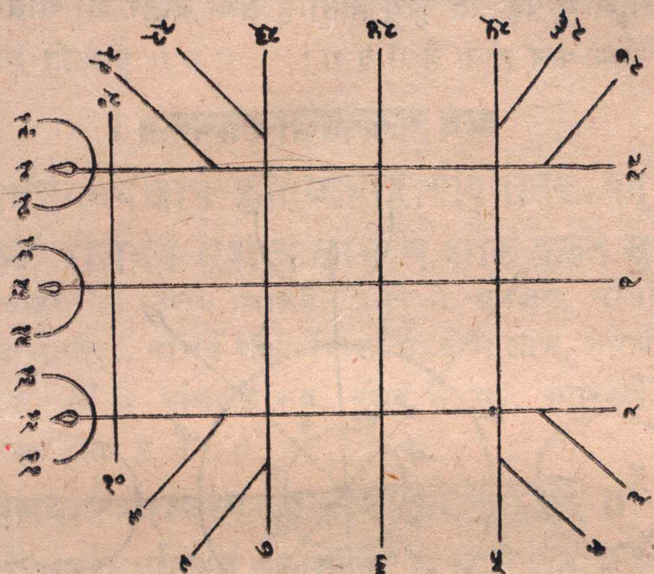
शृंगद्वये रुक् च भवेद्धि भंगं शूलेषु मृत्युः परिकल्पनीयः ॥
शेषेषु धिष्ण्येषु जयश्च लाभोऽभीष्टार्थसिद्धिर्बहुधा नराणाम् ५

दोनों शृङ्ग के नक्षत्रों का फल रोग और भङ्ग है और जो त्रिशूलों में नक्षत्र हैं उनका मृत्युफल है तथा जो शेष नक्षत्र हैं उनका फल जय, लाभ और अभीष्ट-सिद्धि होता है ॥ ५ ॥

श्रीसूर्यकालानलचक्रमेतद्गदे च वादे च रणे प्रयाणे ॥
प्रयत्नपूर्वं ननु चिन्तनीयं पुरातनानां वचसां प्रमाणम् ६

यह सूर्य्यकालानल चक्र रोग में, विवाद में, संग्राम में और यात्रा में यत्न से विचारने योग्य है। यह पुरातन आचार्यों का कहा हुआ है ॥ ६ ॥

अथ सूर्य्यकालानलचक्रम् ।



इति सूर्य्यकालानलचक्रम् ।

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।

कर्कोटकेन प्रविधाय वृत्तं तस्मिंश्च पूर्व्वापरयाम्यसौम्ये ॥
वृत्ताद्बहिःसंचलिते विधेये रेखे त्रिशूलाश्च तदग्रकेषु १

गोल मंडल बना कर उसके पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा और उत्तर से दक्षिण तक एक रेखा खींचे, वे रेखाएँ मंडल से बाहर निकली रहें। उन रेखाओं के चारों तरफ त्रिशूल बनावे ॥ १ ॥

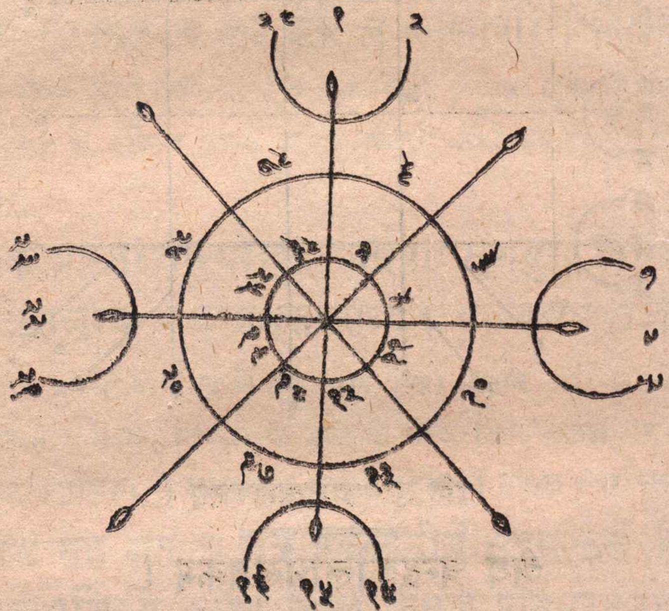
कोणाश्च रेखाद्वितयेन साध्याः पूर्वंत्रिशूले किल मध्यसंस्थम् ॥
चान्द्रं लिखेद्भं तदनुक्रमेण सव्येन धिष्ण्यानि बहिस्तदन्ते २

और कोणों के बीच में दो रेखाएँ आग्नेय से वायव्य तक और नैर्ऋत्य से ईशान तक बनावे और पूर्व के त्रिशूल के मध्य में चन्द्रमा का नक्षत्र स्थापित करे फिर बाईं तरफ से अभिजित् समेत सब नक्षत्र स्थापित करे ॥ २ ॥

कालानलं चक्रमिदं हिचान्द्रं रणप्रयाणादिषु जन्मभं चेत् ॥
त्रिशूलसंस्थं निधनाय नूनमन्तर्बहिस्स्थं तु शुभप्रदं हि ३

यह चन्द्रमा का कालानलचक्र रण में और यात्रा में विचारना चाहिये । जो जन्मनक्षत्र त्रिशूल में पड़े तो मृत्यु होती है तथा बाहर के भीतर के नक्षत्र हैं उनमें पड़े तो श्रेष्ठ फल होता है ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।



इति कालानलचक्रम् ।

अथ गोचरफलम् ।

नृजन्मराशेः खचरप्रचारैर्यद्गोचरे सांहितिकैः प्रणीतम् ॥
स्थूलं फलं तत्किल संप्रवक्ष्मि बालावबोधप्रदमग्रगानाम् १

मनुष्य की जन्मराशि से ग्रहों के संचार द्वारा जो गोचर में स्थूल फल होता है वह संहिताकारों का कहा हुआ ग्रहों का फल, बालकों के हेतु, हम कहते हैं ॥ १ ॥

अथ सूर्यफलम् ।

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीव पीडा ॥

कांतिक्षयोभीष्टवरिष्ठसिद्धिर्लाभो व्ययोर्कस्य फलं क्रमेण २

जन्म के सूर्य्य में यात्रा, दूसरे में भय, तीसरे में लक्ष्मी की प्राप्ति, चौथे सूर्य्य में व्यसन, पांचवें में दीनता, छठवें में शत्रुनाश, सातवें में गमन, आठवें में पीड़ा, नवें में कान्ति की क्षय, दशवें में अभीष्टसिद्धि, ग्यारहवें सूर्य्य में लाभ और बारहवें में खर्च होता है ॥ २ ॥

अथ चन्द्रफलम् ।

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथाङ्कार्यविघातलाभम् ॥
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः ३

जन्म के चन्द्रमा में उत्तम भोजन, दूसरे में धनक्षय, तीसरे में धनलाभ, चौथे में कुक्षि में पीड़ा, पांचवें में कार्यनाश, छठवें में लाभ, सातवें में धन प्राप्ति, आठवें में रोग, नवें में राजा से भय, दशवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में शोक होता है ॥ ३ ॥

पुत्रधर्म्मधनस्थस्य चन्द्रस्योक्तमसत्फलम् ॥
कलाक्षये परिज्ञेयं कलावृद्धौ तु साधु तत् ४

पांचवें, नवें और दूसरे चन्द्रमा का फल अशुभ कहा है; वह क्षीण चन्द्रमा का फल जानना और पूर्णचन्द्रमा का फल दूसरे, पांचवें और नवें का शुभ होता है ॥ ४ ॥

अथ भौमफलम् ।

भीतिं क्षतिं वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम् ॥
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्ययं भूतनयस्तनोति ५

जन्म के मंगल में भय, दूसरे मंगल में क्षति, तीसरे में धनलाभ, चौथे में शत्रुवृद्धि, पांचवें में धन का नाश, छठवें में धन की प्राप्ति, सातवें में धननाश, आठवें में शस्त्रघात, नवें और दशवें में रोग, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में व्यय होता है ॥ ५ ॥

अथ बुधफलम् ।

बन्धं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीडां स्थितिं पीडनमर्थलाभम् ॥
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ६

जन्म के बुध का फल बन्धन, दूसरे में धनलाभ, तीसरे में शत्रु से भय, चौथे में धनप्राप्ति, पांचवें में पीड़ा, छठवें में स्थिति, सातवें में पीड़ा, आठवें में धन का लाभ, नवें में खेद, दशवें में सुख, ग्यारहवें में लाभ और बारहवें में धन हानि होती है ॥ ६ ॥

अथ गुरुफलम् ।

भीतिं वित्तं पीडनं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ॥
सौख्यं दैन्यं मानवित्तं च पीडां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ७

जो जन्मराशि में बृहस्पति आवे तो भय, दूसरे बृहस्पति में धन, तीसरे में पीड़ा, चौथे में शत्रुवृद्धि, पांचवें में सुख, छठवें में शोक, सातवें में राजमान, आठवें में रोग, नवें में सुख, दशवें में दीनता, ग्यारहवें में प्रतिष्ठा और धन तथा बारहवें में पीड़ा होती है ॥ ७ ॥

अथ शुक्रफलम् ।

रिपुक्षयं वित्तमतीवसौख्यं वित्तं सुत प्रीतिमरातिवृद्धिम् ॥
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीडां स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ८

जन्म के शुक्र में शत्रु का नाश, दूसरे में धनलाभ, तीसरे में प्रसन्नता, चौथे में धनलाभ, पांचवें में पुत्र से प्रीति, छठवें में शत्रुवृद्धि, सातवें में शोक, आठवें में धन लाभ, नवें में उत्तमवस्त्र का लाभ, दशवें में पीड़ा, ग्यारहवें में धनवृद्धि और बारहवें में धनलाभ होता है ॥ ८ ॥

अथ शनिफलम् ।

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रात्सौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ॥
पीडां सौख्यं निर्द्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ९

जन्म के शनैश्चर में बुद्धिभ्रंश, दूसरे में क्लेश, तीसरे में सुख, चौथे में शत्रु-वृद्धि, पांचवें में पुत्र से सुख, छठवें में सुख की वृद्धि, सातवें में दोष, आठवें में पीड़ा, नवें में सुख, दशवें में निर्धनता, ग्यारहवें में धनलाभ और बारहवें में नाना प्रकार के अनर्थ-फल देता है ॥ ९ ॥

अथ राहुकेतुफलम् ।

हानिं नैस्स्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम् ॥

वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्य्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् १०

जन्म के राहु में हानि, दूसरे में निर्धनता, तीसरे में धनलाभ, चौथे में वैर, पांचवें में शोक, छठवें में धन, सातवें में कलह, आठवें में पीड़ा, नवें में पापकर्म की वृद्धि, दशवें में वैर, ग्यारहवें में सुख और बारहवें में धनहानि होती है। इसी तरह केतु का भी फल होता है ॥ १० ॥

राशौ राशौ गोचरे खेचराणामुक्तम्पूर्व्वैर्य्यत्फलं जन्मराशेः ॥
तन्मर्त्यानामेकभोत्पत्तिकानां भिन्नं भिन्नन्दृश्यतेऽवश्यमेव ११

राशि-राशि में ग्रहों का गोचरफल जो पूर्वाचार्यों ने कहा है वह एक राशि में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यों के भी अवश्य ही भिन्न २ देख पड़ता है ॥ ११ ॥

यस्मिन् राशौ शीतरश्मिः प्रसूतौ संस्थः प्रोक्तो जन्मराशिः स एव ॥
एवं लग्नेनान्विताः सप्तखेटास्ते किन्नस्युः प्राणिनां जन्मभानि १२

जन्म के समय में जिस राशि में चन्द्रमा हो वही जन्मराशि जानना चाहिए। इसी रीति से जन्मलग्न सहित सूर्य्यादि ग्रहों की राशियां प्राणियों को क्यों नहीं हो सकती हैं? ॥ १२ ॥

पुंसाम्मतोऽष्टौ किल राशयः स्युः शुभाशुभान्यत्र फलानि तेभ्यः ॥
ततश्च रेखामिलनान्तरालात् स्पष्टम्फलञ्चाष्टकवर्ग्गयुक्तम् १३

इसलिये पुरुषों की आठ राशियां निश्चय करके होती हैं इससे एक रेखा और बिन्दु से शुभाशुभ फल अष्टकवर्ग की रीति से होते हैं ॥ १३ ॥

अथ सूर्याष्टकवर्गः ।

स्वान्मन्दात्कुजतो रवेर्मृ तितपो लाभार्थकेन्द्रस्थितः
शुक्रादस्तरिपुव्ययेषु च गुरोर्द्धर्म्मारिपुत्राप्तिषु ॥
चन्द्रात्प्राप्तिरिपुत्रिखेषु शशिजात् पञ्चत्रिनन्दव्यया-
रिप्राप्त्यभ्रगतस्तनोस्त्रिषु सुखोपान्त्यारिरिः फे शुभाः १४

सूर्य्याष्टकवर्ग में जिस राशि में सूर्य्य स्थित हो उससे पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें शुभ रेखा पाता है और चन्द्रमा से तीसरे, छठवें, दशवें और ग्यारहवें सूर्य्य रेखा पाता है तथा मंगल से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें सूर्य्य रेखा पाता है

और बुध से तीसरे, पांचवें, छठवें, नवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें सूर्य्य रेखा पाता है तथा बृहस्पति से पांचवें, छठवें, नवें और ग्यारहवें सूर्य्य रेखा पाता है और शुक्र से छठवें, सातवें और बारहवें सूर्य्य रेखा पाता है और शनैश्चर से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें सूर्य्य रेखा पाता है तथा लग्न से तीसरे, चौथे, छठवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें सूर्य्य शुभ रेखा पाता है। इस क्रम से सूर्य्य की रेखाएँ होती हैं ॥ १४ ॥

अथ सूर्य्याष्टकवर्गाङ्कचक्रम् ।

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११	०	७	१०
८	०	८	१०	०	०	८	११
९	०	९	११	०	०	९	१२
१०	०	१०	१२	०	०	१०	०
११	०	११	०	०	०	११	०
०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्राष्टकवर्गः ।

भौमाद्ग्लौर्नवधीधनोपचयगः षट्त्र्यास्तधीस्थोर्कजा-
ल्लग्नाच्चोपचयोरवेरुपचयाष्टास्तेषु शस्तो बुधात् ॥
धीरन्ध्रेषु चतुष्टयत्रिषु गुरोः केन्द्राष्टलाभे व्यये
स्वादेकोपचयास्तगस्त्रिखभवास्ताम्बुत्रिकोणे भृगोः १५

जिस राशि में चन्द्रमा हो वहां से पहिले, तीसरे, छठवें, सातवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। मंगल से दूसरे, तीसरे, पांचव, छठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। बुध से पहिले, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। बृहस्पति से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। शुक्र से तीसरे, चौथे, पांचव, सातवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। शनैश्चर से तीसरे, पांचवें, छठवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। सूर्य से तीसरे, छठवें, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा रेखा पाता है। तथा लग्न से तीसरे, छठवें, दशवें और ग्यारहवें चन्द्रमा शुभ रेखा पाता है। इस रीति से चन्द्रमा की रेखाएँ होती हैं ॥ १५ ॥

अथ चन्द्राष्टकवर्गाङ्कचक्रम् ।

चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	र.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	२	४	५	६	६
६	५	४	४	५	६	७	१०
७	६	५	७	७	११	८	११
१०	९	७	८	९	०	१०	०
११	१०	८	१०	१०	०	११	०
०	११	१०	११	११	०	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमाष्टकवर्गः ।

स्वाद्भौमोऽष्टचतुष्टयायधनगो जीवात्षडायान्त्यखे

चन्द्रादायरिपुत्रिगो भृगुसुतादष्टान्त्यलाभारिगः ॥
ज्ञात्पञ्चायरिपुत्रिगोऽर्कतनयात्केन्द्राष्टधर्म्मान्त्यगः
सूर्य्याच्चोपचयात्मजेषु तनुतस्त्र्यायारिखाद्यैः शुभः १६

मंगल अपनी राशि से पहले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें रेखा पाता है। बुध से तीसरे, पांचवें, छठवें और ग्यारहवें मंगल रेखा पाता है। बृहस्पति से छठवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें मंगल रेखा पाता है। शुक्र से छठवें, आठवें, ग्यारहवें और बारहवें मंगल रेखा पाता है। शनैश्चर से पहिले, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें मंगल रेखा पाता है। सूर्य से तीसरे, पांचवें, छठवें, दशवें और ग्यारहवें मंगल रेखा पाता है। चन्द्रमा से तीसरे, छठवें और ग्यारहवें मंगल रेखा पाता है। तथा लग्न से पहिले, तीसरे, छठवें, दशवें और ग्यारहवें मंगल रेखा पाता है। इस रीति से मंगल की रेखाएँ होती हैं ॥ १६ ॥

अथ भौमाष्टकवर्गाङ्कचक्रम् ।

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.	र.	चं.
१	३	६	६	१	१	३	३
२	५	१०	८	४	३	५	६
४	६	११	११	७	६	६	११
७	११	१२	१२	८	१०	१०	०
८	०	०	०	९	११	११	०
१०	०	०	०	१०	०	०	०
११	०	०	०	११	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधाष्टकवर्गः ।

शुक्रादासुतधर्म्मलाभमृतिगः सौम्यः कुजार्क्योस्तपः
केन्द्रायाष्टधने स्वतोप्युपचयान्त्यैकत्रिकोणे शुभः ॥
कोणान्त्यारिभवे रवे रिपुभवाष्टान्त्ये गुरोरिन्दुतः
स्वायाष्टारिसुखार्थगः सुखभवाष्टैकाम्बुषट्सूदयात् १७

बुध अपनी राशि से पहिले, तीसरे, पांचवें, छठवें, नवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें रेखा पाता है। बृहस्पति से छठवें, आठवें, ग्यारहवें और बारहवें बुध रेखा पाता है। शुक्र से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवें, और ग्यारहवें बुध रेखा पाता है। शनैश्चर से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें बुध रेखा पाता है। सूर्य से पांचवें, छठवें, नवें, ग्यारहवें और बारहवें बुध रेखा पाता है। चन्द्रमा से दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें बुध रेखा पाता है। मंगल से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें नवें, दशवें और ग्यारहवें बुध रेखा पाता है। लग्न से पहिले, दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें बुध रेखा पाता है। इस रीति से बुध की रेखाएँ होती हैं ॥ १७ ॥

अथ बुधाष्टकवर्गाङ्कचक्रम् ।

बु.	गु.	शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.
१	६	१	१	१	५	४	१
३	८	२	२	२	६	५	२
५	११	३	४	४	९	६	४
६	१२	४	७	६	११	८	७
९	०	५	८	८	१२	१०	८
१०	०	८	९	१०	०	११	९
११	०	९	१०	११	०	०	१०
१२	०	११	११	०	०	०	११
०	०	०	०	०	०	०	०

अथ गुर्वष्टकवर्गः ।

स्वात्स्वायाष्टत्रिकेन्द्रस्वनवदशभवारातिधीस्थश्च शुक्रा-
ल्लग्नात्केन्द्रायधीषट्स्वनवसु च कुजात्स्वाष्टकेन्द्राय ईज्यः ॥
इन्दोर्द्यूनार्थकोणास्तिषु सहजनवाष्टायकेन्द्राष्टगोऽर्का-
ज्ज्ञात्कोणेद्व्यायस्वाद्याम्बुधिरिपुषु शनेस्त्र्यन्त्यधीषट्सु शस्तः १८

बृहस्पति अपने स्थान से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें रेखा पाता है। शुक्र से दूसरे, पांचवें, छठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है। शनैश्चर से तीसरे, पांचवें, छठवें, और बारहवें बृहस्पति रेखा पाता है। सूर्य से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है। चन्द्रमा से दूसरे, पांचवें, सातवें, नवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है। मंगल से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है। बुध से पहिले, दूसरे, चौथे, पांचवें, छठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है तथा लग्न से पहिले, दूसरे, चौथे, पांचवें, छठवें, सातवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें बृहस्पति रेखा पाता है इस तरह बृहस्पति की रेखा होती हैं ॥ १८ ॥

अथ गुरोरष्टकवर्गाङ्कचक्रम् ।

गु.	शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.	बु.
१	२	३	१	१	२	१	१
२	५	५	२	२	५	२	२
३	६	६	४	३	७	४	४
४	६	१२	५	४	६	७	५
७	१०	०	६	७	११	८	६
८	११	०	७	८	०	१०	६
१०	०	०	६	६	०	११	१०
११	०	०	१०	१०	०	०	११
०	०	०	११	११	०	०	०

अथ शुक्राष्टकवर्गः ।

स्वास्तान्त्याहितवर्जितेषु तनुतः शुक्रो विनास्तारिखं
चन्द्रात्स्वान्मदनव्ययारिरहितेष्वर्काद्व्ययाष्टाप्तिषु ॥
मन्दाद्द्व्येकरिपुव्ययास्तरहितेष्वीज्यान्नवायाष्टधी
खे ज्ञात्कोणभवत्रिषट्सु भवधीत्र्यन्त्यारिधमे कुजात् १९

शुक्र अपने स्थान से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें रेखा पाता है। शनैश्चर से तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें शुक्र रेखा पाता है। सूर्य से आठवें, ग्यारहवें और बारहवें शुक्र रेखा पाता है। चन्द्रमा से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवें, ग्यारहवें और बारहवें शुक्र रेखा पाता है। मंगल से तीसरे, पांचवें, छठवें, नवें और ग्यारहवें शुक्र रेखा पाता है। बृहस्पतिसे पांचवें, आठवें, नवें, दशवें और ग्यारहवें शुक्र रेखा पाता है। तथा लग्न से पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवें और ग्यारहवें शुक्र रेखा पाता है। इस रीति से शुक्र की रेखा होती है ॥१९॥

अथ शुक्रस्याष्टकवर्गाङ्कचक्रम ।

शु.	श.	ल.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.
१	३	१	८	१	३	३	५
२	४	२	११	२	५	५	८
३	५	३	१२	३	६	६	९
४	८	४	०	४	९	९	१०
५	९	५	०	५	११	११	११
८	१०	८	०	८	१२	०	०
९	११	९	०	९	०	०	०
१०	०	११	०	११	०	०	०
११	०	०	०	१२	०	०	०

अथ शनैश्चराष्टकवर्गः ।

स्वान्मन्दस्त्रिषडायधीषु रवितोऽष्टायाद्द्विकेन्द्रे शुभो
भौमात्खायषडन्त्यधीत्रिषु तनोः खायाम्बुषट्त्र्येकगः ॥
ज्ञादायारिनवान्त्यखाष्टसुभृगोरन्त्यायषट्संस्थित-
श्चन्द्रादायरिपुत्रिगः सुरगुरोरन्त्यायधीशत्रुगः २०

शनैश्चर अपने स्थान से तीसरे, पांचवें, छठवें और ग्यारहवें रेखा पाता है । सूर्य से पहिले, दूसरे, चौथे, सातवें, आठवें, दशवें और ग्यारहवें शनैश्चर रेखा पाता है । चन्द्रमा से तीसरे, छठवें और ग्यारहवें शनि रेखा पाता है । मंगल से तीसरे, पांचवें, छठवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें शनि रेखा पाता है । बुध से छठवें, आठवें, नवें, दशवें, ग्यारहवें और बारहवें शनि रेखा पाता है । बृहस्पति से पांचवें, छठवें, ग्यारहवें और बारहवें शनि रेखा पाता है । शुक्र से छठवें, ग्यारहवें और बारहवें शनि रेखा पाता है तथा लग्न से पहिले, तीसरे, चौथे, छठवें, दशवें और ग्यारहवें शनि रेखा पाता है । इस रीति से शनि की रेखाएँ होती हैं ॥ २० ॥

अथ शनेरष्टकवर्गाङ्कचक्रम ॥

श.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.
३	१	१	३	३	६	५	६
५	३	२	६	५	८	६	११
६	४	४	११	६	९	११	१२
११	६	७	०	१०	१०	१२	०
०	१०	८	०	११	११	०	०
०	११	१०	०	१२	१२	०	०
०	०	११	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

स्थानानि यानि प्रतिपादितानि शुभानि चान्यान्यशुभानि नूनम् ॥
तयोर्व्वियोगादधिकम्फलं यत्स्वराशितो यच्छति तद्गृहेन्द्रः २१

जो स्थान कहे गये हैं वे सब शुभ हैं और इनसे जो इतर स्थान हैं वे सब निश्चय अशुभ होते हैं। शुभ और अशुभ के वियोग (अन्तर) से जो अधिक फल है उसको अपनी राशि से गृह का स्वामी देता है ॥ २१ ॥

अथ रेखा संख्या ।

भुजङ्गवेदा नवसागराश्च नवाग्नयः सागरसायकाश्च ॥
रसेषवो युग्मशरा नवत्रितुल्या। क्रमेणाष्टकवर्ग्गलेख्याः २२

अड़तालिस रेखाएँ सूर्य की होती हैं, उञ्चास रेखाएँ चंद्रमा की होती हैं, मंगल की उन्तालिस रेखाएँ होती हैं, बुध की चौवन रेखाएँ होती हैं, बृहस्पति की छप्पन रेखाएँ होती हैं, शुक्र की बावन रेखाएँ और शनैश्चर की उन्तालिस रेखाएँ होती हैं उनको क्रम से अष्टकवर्ग में लिखना चाहिये ॥ २२ ॥

विलग्ननाथाश्रितराशितोऽत्र भवन्ति रेखाः खलु यत्र यत्र ॥
विलग्नतस्तत्र च तत्र राशौ संस्थापनीयाः सुधिया क्रमेण २३

लग्न का स्वामी जिस राशि में बैठा हो उस राशि से जहां जहां रेखा होवें वे लग्न से उस-उस राशि में विद्वानों को क्रम से स्थापन करना चाहिये ॥ २३ ॥

अथ प्रत्येकरेखाफलम् ।

क्लेशोऽर्थहानिर्व्यसनं समत्वं शश्वत्सुखं नित्यधनागमश्च ॥
सम्पत् प्रवृद्धिर्व्विपुलामलश्रीः प्रत्येकरेखाफलमामनन्ति २४

एक रेखा में क्लेश, दो रेखा में धनहानि, तीन में व्यसन, चार में समता, पांच में निरन्तर सुख, छः रेखा में धनलाभ, सात में सम्पत्ति की वृद्धि और आठ रेखा में विशेष धनलाभ होता है ॥ २४ ॥

इत्येकखेटस्य हि सम्प्रदिष्टा रेखायुतिश्चाखिलखेटरेखाः ॥
अष्टद्विसंख्यास्तुसमास्ततोऽपियथाधिकोनाःसदसत्फलास्ताः २५

यह एक ग्रह की रेखा का फल कहा है। इसी तरह से सब ग्रहों की रेखाओं का फल अष्टकवर्ग में जान लेना। २८ रेखा सम हैं इससे अधिक रेखा हों तो शुभ और इससे न्यून हों तो अशुभ फल जानना योग्य है ॥ २५ ॥

कः कदा किम्फलं दत्त इत्याशंक्याह ।

इलातनूजश्च पतिर्नलिन्याः प्रवेशकाले फलदः किल स्यात् ॥
राश्यर्द्धभोगे भृगुजामरेज्यौ प्रान्ते शनीन्दू च सदेन्दुसूनुः २६

सूर्य्य और मंगल राशि में जब प्रवेश करते हैं तब ही फल देते हैं तथा बृहस्पति और शुक्र राशि के मध्य में फल देते हैं एवं शनि और चन्द्रमा राशि के अन्त भाग में फल देते हैं और बुध सदा ही फल देता है ॥ २६ ॥

अथाङ्गविभागेन ग्रहारिष्टम् ।

शिरःप्रदेशे वदने दिनेशो वक्षस्स्थले चापि गले कलावान् ॥
पृष्ठोदरे भूतनयः प्रभुत्वं करोति सौम्यश्चरणे च पाणौ २७

शिर और मुख का मालिक सूर्य्य है, ग्रीवा और छाती का चन्द्रमा, पीठ और पेट का मालिक मंगल है तथा हाथ और पैरों का मालिक बुध है ॥ २७ ॥

कटिप्रदेशे जघने च जीवः कविस्तु गुह्यस्थलमुष्कयुग्मे ॥
जानूरुदेशे नलिनीशसूनुश्चारेण वा जन्मनि चिन्तनीयम् २८

कमर और नितम्ब का मालिक बृहस्पति है, गुदा, लिंग व अण्डकोशों का मालिक शुक्र है तथा जंघा और पिंडलियों का मालिक शनैश्चर है । यह ग्रहों के संचार से व जन्म में फल चिन्तन करना चाहिये ॥ २८ ॥

यदा यदा स्यात्प्रतिकूलवर्ती स्वांगे स्वदोषेण करोति पीडाम् ॥
इदन्तु पूर्वम्प्रविचार्य्य सर्व्वं प्रश्नप्रभृत्यादिषु कल्पनीयम् २९

जिस जिस समय में ग्रह प्रतिकूल होता है तब वह जिस अंग का मालिक होता है उसी अंग में पीड़ा और व्यथा उत्पन्न करता है । पहिले यह सब प्रश्नादिकों में विचार करके पीछे फल कहना चाहिये ॥ २९ ॥

इत्यष्टकवर्गाध्यायः ।

अथ द्विग्रहयोगाध्यायः ।

अथ सूर्यचन्द्रयोगफलम् ।

पाषाणयन्त्रक्रयविक्रयेषु कूटक्रियायाञ्च विचक्षणः स्यात् ॥
कामी प्रकामी पुरुषः सगर्व्वः सर्व्वौषधीशेन रवौ समेते १

सूर्य्य चन्द्रमा एक घर में हों तो पाषाण और यन्त्रादिक के क्रय-विक्रय से लाभ करावें और वह पुरुष कूटक्रिया में विचक्षण और कामी, चाहनेवाला तथा अहङ्कारी होता है ॥ १ ॥

अथ सूर्यभौमयोगफलम् ।

भवेन्महौजा बलवान् विमूढो गाढोद्धतोसत्यवचा मनुष्यः ॥
सुसाहसः शूरतरोऽतिहिंस्रो दिवामणौ क्षोणिसुताभ्युपेते २

सूर्य्य मंगल जिसके एक घर में हों वह बड़ा पराक्रमी, बलवान्, मूढ़मति, अत्यन्त उद्धत स्वभाव, सत्यहीन, साहसी, बड़ा शूरवीर और जीवों की हिंसा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ सूर्यबुधयोगफलम् ।

प्रियवचाः सचिवोबहुसेवयार्ज्जितधनश्च कलाकुशलो भवेत् ॥
श्रुतपटुर्हि नरो नलिनीपतौ कुमुदिनीपतिसूनुसमन्विते ३

सूर्य्य और बुध जिसके एक घर में हों वह प्रियवचन बोलनेवाला, राजा का मन्त्री, सेवावृत्ति से धन संचय करनेवाला, कारीगरी की कलाओं में प्रवीण और वेद-शास्त्र में चतुर होता है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यबृहस्पतियोगफलम् ।

पुरोहितत्वे निपुणो नृपाणां मन्त्री च मित्रात्तधनः समृद्धः ॥
परोपकारी चतुरो दिनेशो वाचामधीशेन युते नरः स्यात् ४

जो सूर्य्य बृहस्पति के संग हो तो पुरोहिती कर्म में निपुण, राजाओं का मन्त्री, मित्र से धन पानेवाला, संपन्न, परोपकारी और चतुर होता है ॥ ४ ॥

अथ सूर्यशुक्रयोगफलम् ।

संगीतवाद्यायुधचारुबुद्धिर्भवेन्नरो नेत्रबलेन हीनः ॥
कांतानिमित्तात्तसुहृत्समाजः सितान्विते जन्मनि पद्मिनीशे ५

जो सूर्य्य और शुक्र एक राशि में हों तो गाने बजाने में तथा शस्त्रविद्या में सुन्दर बुद्धिवाला, नेत्र के बल से हीन और स्त्री के निमित्त से मित्रादिकों की समाजवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यशनियोगफलम् ।

धातुक्रियापण्यमतिर्गुणज्ञो धर्म्मप्रियः पुत्रकलत्रसौख्यः ॥
सदासमृद्धोतितरां नरः स्यात्प्रद्योतने भानुसुतेन युक्ते ६

जिसके सूर्य्य और शनैश्चर एक घर में हों वह धातुक्रिया और दुकानदारी में बुद्धिवाला, गुणों का जाननेवाला, धर्म-बुद्धि, स्त्री-पुत्र से सुख पानेवाला और धन का संग्रह करनेवाला होता है ॥ ६ ॥

अथ चन्द्रभौमफलम् ।

आचारहीनः कुटिलः प्रतापी पण्यानुजीवी कलहप्रियश्च ॥
स्यान्मातृशत्रुर्म्मनुजो रुजार्त्तः शीतद्युतौ भूसुतसंयुते वै ७

जो चन्द्रमा और मंगल एक घर में हों तो वह पुरुष आचार-विचार से हीन, कुटिल, प्रतापी, दुकानदारी से जीविका करनेवाला, कलह में प्रीति करनेवाला, माता से शत्रुता करनेवाला और निरन्तर रोगी होता है ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रबुधयोगफलम् ।

सद्वाग्विलासो धनवान् सुरूपः कृपार्त्तचेताः पुरुषोविनीतः ॥
कांतापरप्रीतिरतीव वक्ता चंद्रे सचान्द्रे बहुधर्म्मकृत्स्यात् ८

जिसके चन्द्रमा बुध के साथ हो वह अच्छी वाणी बोलनेवाला, धनी, श्रेष्ठ-रूप, कृपालुचित्त, नम्रस्वभाव, स्त्री से अत्यन्त प्रीति करनेवाला और उत्तम व्याख्या करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

अथ चन्द्रगुरुयोगफलम् ।

सदा विनीतो दृढगूढमन्त्रः स्वधर्म्मकर्म्माभिरतो नरः स्यात् ॥
परोपकारादरतैकचित्तः शीतद्युतौ वाक्पतिना समेते ९

चन्द्रमा और बृहस्पति एक घर में हों तो वह निरन्तर सबसे नम्रता करने वाला, अपना गुप्त अभिप्राय रखनेवाला, अपने धर्म-कर्म में तत्पर और पराया उपकार और आदर करने में दत्तचित्त होता है ॥ ९ ॥

अथ चन्द्रशुक्रयोगफलम् ।

वस्त्रादिकानां क्रयविक्रयेषु दक्षो नरः स्याद्व्यसनीविधिज्ञः ॥
सुगन्धपुष्पोत्तमवस्त्रचित्तो द्विजाधिराजे भृगुजेन युक्ते १०

जो चन्द्रमा शुक्र के साथ हो तो वस्त्रों के क्रय-विक्रय में बड़ा चतुर, व्यसनयुक्त, विधि का जाननेवाला और सुगन्ध, पुष्प तथा उत्तम वस्त्रों में चित्त रखनेवाला होता है ॥ १० ॥

अथ चन्द्रशनियोगफलम्।

नानाङ्गनानां परिसेवनेच्छो वैश्यानुवृत्तिर्गतसाधुशीलः ॥
परात्मजः स्यात्पुरुषार्थहीनमिन्दौ समन्दे प्रवदन्ति सन्तः ११

जो चन्द्रमा शनैश्चर के साथ बैठा हो तो बहुत स्त्रियों के सेवन करने का इच्छुक और वैश्यवृत्ति करनेवाला, दुष्ट स्वभाव, परपुत्र और पुरुषार्थ से हीन होता है ॥ ११ ॥

अथ मंगलबुधयोगफलम्।

बाहुयुद्धकुशलो विपुलस्त्रीलालसो विविधभेषजपण्यः ॥
हेमलोहविधिबुद्धिविभावः संभवे यदि कुजेन्दुजयोगः १२

जिसके मंगल और बुध एक साथ हों वह बाहुयुद्ध में कुशल, बहुत स्त्रियों की लालसावाला, विविध प्रकार की औषधों की जीविका करनेवाला और सुवर्ण तथा लोहा की विधि में बुद्धिवाला होता है ॥ १२ ॥

अथ मंगलगुरुयोगफलम्।

मन्त्रार्थशास्त्रार्थकलाकलापे विवेकशीलो मनुजः किल स्यात् ॥
चमूपतिर्वा नृपतिः पुरेशो ग्रामेश्वरो वा सकुजे सुरेज्ये १३

जिसके मङ्गल और बृहस्पति एक साथ में बैठे हों वह पुरुष मंत्रविद्या में निपुण और शास्त्रार्थ के समूह में विवेकयुक्त, सेनापति, राजा अथवा नगर वा पुर का मालिक होता है ॥ १३ ॥

अथ मंगलशुक्रयोगफलम्।

नानाङ्गनाभोगविधानचित्तो द्यूतानृतप्रीतिरतिप्रपञ्चः ॥
नरः सगर्व्वः कृतसर्व्ववैरो भृगोस्सुते भूस्सुतसंयुते स्यात् १४

जिसके मङ्गल, शुक्र के साथ हो वह बहुत स्त्रियों के साथ भोग करने में चित्तवाला, जुआं खेलने और मिथ्या बोलने में प्रीतिवाला, प्रपंच रचनेवाला, अहंकारी और सबसे वैर करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

अथ मंगलशनियोगफलम् ।

शस्त्रास्त्रवित्संगरकर्म्मकर्त्ता स्तेयानृतप्रीतिकरः प्रकामम् ॥
सौख्येन हीनोतितरां नरः स्याद्धरासुते मन्दयुतेतिनिन्द्यः १५

जिसके मंगल और शनैश्चर एक राशि में बैठे हों वह पुरुष शस्त्र और अस्त्र का जाननेवाला, संग्राम करनेवाला और बहुत चोरी करनेवाला, मिथ्या बोलने में प्रीतिवाला और निरन्तर सुख से हीन होता है ॥ १५ ॥

अथ बुधगुरुयोगफलम् ।

सङ्गीतविन्नीतिपतिर्विनीतः सौख्यान्वितोऽत्यन्तमनोभिरामः ॥
धीरो नरः स्यात्सुतरामुदारः सुगन्धभाग्वाक्पतिसौम्ययोगे १६

जो बुध और बृहस्पति एक राशि में बैठे हों तो गाने बजाने में प्रवीण और नीतिशास्त्र का जाननेवाला, बहुत नम्र, सुख से युक्त, बहुत सुन्दर, बड़ा धीर, उदार चित्त और सुगन्धित पदार्थों में रुचि रखनेवाला होता है ॥ १६ ॥

अथ बुधशुक्रयोगफलम् ।

कुलाधिशाली शुभवाग्विलासः सदा सहर्षः पुरुषः सुवेषः ॥
भर्त्ता बहूनां गुणवान् विवेकी सभार्गवे जन्मनि सोमसूनौ १७

जिसके बुध और शुक्र एक घर में बैठे हों वह अपने कुल का प्रकाश करनेवाला, उत्तम वार्त्ता करनेवाला, सदा प्रसन्न चित्त, श्रेष्ठ वेषवाला, बहुत जनों का स्वामी, गुणी और विवेकी होता है ॥ १७ ॥

अथ बुधशनियोगफलम् ।

चलस्वभावश्च कलिप्रियोऽपि कलाकलापे कुशलः सुशीलः ॥
पुमान् बहूनां प्रतिपालकश्चेद्भवेत्प्रसूतौ मिलनं ज्ञशन्योः १८

जिसके बुध और शनैश्चर एक राशि में बैठे हों वह चंचलस्वभाव, कलहकारी, बहुत कलाओं का ज्ञाता, सुशील और बहुत जनों का पालन करनेवाला होता है ॥ १८ ॥

अथ गुरुशुक्रयोगफलम् ।

विद्यया भवति पण्डितः सदा पण्डितैरपि करोति विवादम् ॥
पुत्रमित्रधनसौख्यसंयुतो मानवः सुरगुरौ भृगुयुक्ते १९

जिसके बृहस्पति और शुक्र एक घर में बैठे हों वह बड़ा विद्यावान्, पण्डित और पण्डितों से शास्त्रार्थ करने में कुशल और पुत्र, मित्र तथा धनादिकों से सुख पानेवाला होता है ।। १९ ।।

अथ गुरुशनियोगफलम् ।

शूरोऽर्थवान् ग्रामपुराधिनाथो भवेद्यशस्वी कुशलः कलासु ॥
स्त्रीसंश्रयप्राप्तमनोरथश्च नरः सुरेज्ये रविजेन युक्ते २०

जिसके बृहस्पति और शनैश्चर एक घर में बैठे हों वह बड़ा शूरवीर, धनी, ग्राम और पुर का मालिक, यशवाला, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल और स्त्री द्वारा मनोरथ पानेवाला होता है ।। २० ।।

अथ शुक्रशनियोगफलम् ।

शिल्पलेखविधिजातकौतुको दारुणो रणकरो नरो भवेत् ॥
अश्मकर्म्मकुशलश्च जन्मनि भार्ग्गवे रविसुतेन संयुते २१

जिसके शुक्र और शनैश्चर एक घर में हों वह कारीगरी में और लिखने में प्रवीण, कठिन संग्राम करनेवाला और पत्थर के काम में कुशल होता है ।।२१।।

इति द्विग्रहयोगफल ।

अथ त्रिग्रहयोगाध्यायः ।

अथ सूर्यचन्द्रभौमयोगफलम् ।

शूराश्च यंत्राश्वविधिप्रवीणास्त्रपाकृपाभ्यां सुतरां विहीनाः ॥
नक्षत्रनाथक्षितिपुत्रमित्रैरेकत्रसंस्थैर्मनुजा भवन्ति १

जिसके सूर्य्य, चन्द्रमा और मंगल एक राशि में हों वह बड़ा शूरवीर, यंत्र और घोड़ों की विधि में प्रवीण तथा लाज व दया से विहीन होता है।। १ ।।

अथ रविचन्द्रबुधयोगफलम् ।

भवेन्महौजा नृपकार्य्यकर्त्ता वार्त्ताविधौ शास्त्रकलासु दक्षः ॥
दिवामणिज्ञामृतरश्मिसंस्थैः प्राणी भवेदेकगृहप्रयातैः २

जिसके सूर्य्य, चन्द्रमा और बुध एक घर में बैठें हों वह बड़ा पराक्रमी, राज्यकार्य करनेवाला और वार्त्तालाप तथा शास्त्र की कलाओं में निपुण होता है ।। २ ।।

अथ रविचन्द्रगुरुयोगफलम् ।

सेवाविधिज्ञश्च विदेशगामी प्राज्ञः प्रवीणश्चपलोतिधूर्त्तः ॥
नरो भवेच्चन्द्रसुरेन्द्रवन्द्यप्रद्योतनानां मिलने प्रसूतौ ३

जिसके सूर्य्य, चन्द्रमा और बृहस्पति एक राशि में बैठे हों वह सेवाविधि का जाननेवाला, परदेश में रहनेवाला, पण्डित, चतुर और धूर्त्त होता है ॥ ३ ॥

अथ रविचन्द्रशुक्रयोगफलम् ।

परस्वहर्त्ता व्यसनानुरक्तो विमुक्तसत्कर्मरुचिर्नरः स्यात् ॥
मृगाङ्कपंकेरुहबन्धुशुक्राश्चैकत्रभावे यदि संयुताः स्युः ४

सूर्य्य, चन्द्रमा और शुक्र जिसके एक राशि में स्थित हों वह पराया धन हरनेवाला, व्यसनयुक्त और निषिद्धकर्म में रुचि करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अथ रविचन्द्रशनियोगफलम् ।

परेंगितज्ञो विधनश्च मन्दो धातुक्रियायां निरतो नितान्तम् ॥
व्यर्थः प्रयासप्रकरो नरः स्यात् क्षेत्रे यदैकत्र रवीन्दुमन्दाः ५

जिसके एक राशि में सूर्य्य, चन्द्रमा और शनैश्चर बैठे हों वह पराया कार्य्य करनेवाला, धनहीन, मन्दबुद्धि, धातुक्रिया में लगा रहनेवाला और व्यर्थ परिश्रम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ रविमंगलबुधयोगफलम् ।

ख्यातो भवेन्मन्त्रविधिप्रवीणः सुसाहसो निष्ठुरचित्तवृत्तिः ॥
लज्जार्थजायात्मजमित्रयुक्तो युक्तैर्बुधार्कक्षितिजैर्नरः स्यात् ६

जिसके सूर्य्य, मंगल और बुध एक राशि में हों वह बड़ा प्रसिद्ध और मंत्र-यंत्र-विद्या की विधि जाननेवाला, बड़ा साहसी, निष्ठुर चित्तवृत्तिवाला और लाज, धन, स्त्री, पुत्र और मित्रादिकों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

अथ रविभौमगुरुयोगफलम् ।

वक्तार्थयुक्तः क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्नीतिविधानदक्षः ॥
महामनाः सत्यवचो विलासः सूर्य्यारजीवैः सहितैर्नरः स्यात् ७

जिसके सूर्य्य, मंगल और बृहस्पति एक राशि में बैठे हों वह बड़ा व्या-

स्थान देनेवाला, धनवान, राजा का मंत्री या सेनापति, न्याय करने में बड़ा निपुण, मनस्वी, सत्यवादी और हास-विलासयुक्त होता है ॥ ७ ॥

अथ रविभौमशुक्रयोगफलम्।

भाग्यान्वितोऽत्यन्तमतिर्विनीतः कुलीनवान् शीलविराजमानः ॥
स्यादल्पजल्पश्चतुरो नरश्चेद्भौमास्फुजित्सूर्य्ययुतिः प्रसूतौ ८

सूर्य्य, मंगल और शुक्र जिसके एक राशि में हों वह बड़ा भाग्यवान्, बड़ा बुद्धिमान्, बड़ा विनीत, कुलीन, उत्तम शील स्वभाव, थोड़ा बोलनेवाला और चतुर होता है ॥ ८ ॥

अथ रविभौमशनियोगफलम्।

धनेन हीनः कलहान्वितश्च त्यागी वियोगी पितृबन्धुवर्गैः ॥
विवेकहीनो मनुजः प्रसूतौ योगो यदार्कारशनैश्चराणाम् ९

जिसके सूर्य्य, मंगल और शनैश्चर एक राशि में हों वह धनहीन, कलह करनेवाला, त्यागी, पिता और बन्धुजनों से जुदा रहनेवाला तथा विवेक से हीन होता है ॥ ९ ॥

अथ रविबुधगुरुयोगफलम्।

विचक्षणः शास्त्रकलाकलापे सुसंग्रहार्थः प्रबलः सुशीलः ॥
दिवाकरज्ञामरपूजितानां योगे भवेन्ना नयनामयार्त्तः १०

जिसके सूर्य्य, बुध और बृहस्पति एक राशि में हों वह शास्त्रकलाओं में बड़ा विचक्षण, धनसंग्रह करनेवाला, बड़ा पराक्रमी, सुशील और नेत्ररोग से दुःखी होता है ॥ १० ॥

अथ रविबुधशुक्रयोगफलम्।

साधुद्वेषी निन्दितोऽत्यंततप्तः कन्ताहेतोर्मानवः संयुताश्चेत् ॥
दैत्यामात्यादित्यसौम्याख्यखेटावाचालः स्यादन्यदेशाटनश्च ११

जिसके सूर्य्य, बुध और शुक्र एक राशि में बैठे हों वह साधुजनों से द्वेष करनेवाला और निन्दितकर्म करनेवाला, स्त्रियों के हेतु से बहुत संतप्त और बहुत बोलनेवाला तथा देशाटन करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

अथ रविबुधशनियोगफलम्।

तिरस्कृतस्स्वीयजनैश्च हीनोऽप्यन्यैर्महद्द्वेषकरो नरः स्यात्॥
षण्ढाकृतिर्हीनतरानुयातश्चादित्यमन्देन्दुसुतैः समेतैः १२

जिसके सूर्य्य, बुध और शनैश्चर एक राशि में हों वह अपमान को प्राप्त, भाई-बन्धुजनों से हीन, अन्य लोगों से वैर करनेवाला, जनाना स्वभाव और हीन वृत्ति करनेवाला होता है॥ १२॥

अथ सूर्यगुरुशुक्रयोगफलम्।

अप्रगल्भवचनो धनहीनोप्याश्रितोऽवनिपतेर्मनुजः स्यात्॥
शूरताप्रियतरः परकार्ये सादरोर्कगुरुभार्गवयोगे १३

सूर्य्य, बृहस्पति और शुक्र जिसके एक राशि में हों वह थोड़ा बोलनेवाला, धन-हीन, राजा के आश्रित रहनेवाला, पराये कार्य में आदरवाला और वीरता करनेवाला होता है॥ १३॥

अथ रविगुरुशनियोगफलम्।

नृपप्रियो मित्रकलत्रपुत्रैर्नित्यं युतः कान्तवपुर्नरः स्यात्॥
शनैश्चराचार्यदिवामणीनां योगे सुनीत्या व्ययकृत्प्रगल्भः १४

जिसके सूर्य्य, बृहस्पति और शनैश्चर एक राशि में बैठे हों वह राजा का प्रिय और नित्य ही मित्र, स्त्री, पुत्रादिकों से युक्त, सुन्दर शरीर, अच्छी नीति से धन खर्च करनेवाला और प्रतिभाशाली होता है॥ १४॥

अथ रविशुक्रशनियोगफलम्।

रिपुभयपरियुक्तः सत्कथाकाव्यमुक्तः
कुचरितरुचिरेवात्यन्तकण्डूयनार्त्तः॥
निजजनधनहीनो मानवः सर्वदा स्या-
त्कविरविरविजानां संयुतिश्चेत्प्रसूतौ १५

जिसके सूर्य्य, शुक्र और शनैश्चर एक राशि में हों वह शत्रुजनों से भय पानेवाला, उत्तम कथा और काव्य से विमुख, निषिद्ध कार्य करनेवाला, कण्डू-रोग से व्यथा पानेवाला तथा धन और अपने बन्धुजनों से हीन होता है॥ १५॥

अथ चन्द्रभौमबुधयोगफलम् ।

भवन्ति दीना धनधान्यहीना नानाविधानात्मजनापमानाः ॥
स्युर्मानवा हीनजनानुयाताश्चेत्संयुताः क्षोणिसुतेन्दुसौम्याः १६

जिसके चन्द्रमा, मंगल और बुध एक राशि में हों वह दीन, धन-धान्य से विहीन और अपने बन्धुजनों में आदर न पानेवाला तथा नीचों की संगति करनेवाला होता है ।। १६ ।।

अथ चन्द्रभौमगुरुयोगफलम् ।

व्रणांकितः कोपयुतश्च हर्ता कांतारतः कांतवपुर्नरः स्यात् ॥
प्रसूतिकाले मिलिता भवंति चेदारनीहारकरामरेज्याः १७

जिसके चन्द्र, मंगल और बृहस्पति एक राशि में हों वह व्रणरोगयुक्त, क्रोधी, पराया धन हरनेवाला, स्त्रियों से प्रीति करनेवाला और सुन्दर शरीर वाला होता है ।। १७ ।।

अथ चन्द्रभौमशुक्रयोगफलम् ।

दुःशीलकांतापतिरस्थिरः स्याद्दुःशीलकांतातनुजोल्पशीलः ॥
नरो भवेज्जन्मनि चैकभावा भौमास्फुजिच्चंद्रमसो यदि स्युः १८

जिसके चन्द्रमा, मंगल और शुक्र एक राशि में बैठे हों वह दुष्टशील स्वभाव वाली स्त्री का पति, चंचल स्वभाव, दुष्ट शील स्वभाववाली माता से उत्पन्न और अल्प शील स्वभाववाला होता है ।। १८ ।।

अथ चन्द्रभौमशनियोगफलम् ।

शैशवे हि जननीमृतिप्रदः सर्वदापि कलहान्वितो भवेत् ॥
सम्भवे रविभवेन्दुभूसुताः संयुता यदि नरोऽतिगर्हितः १९

चन्द्रमा, मंगल और शनैश्चर जिसके एकराशि में हों वह बाल्यावस्था में ही माता को मृत्यु देनेवाला और सर्वदा कलह करनेवाला होता है ।। १९ ।।

अथ चन्द्रबुधगुरुयोगफलम् ।

विख्यातकीर्त्तिर्मतिमान्महौजा विचित्रमित्रो बहुभाग्ययुक्तः ॥
सद्वृत्तविद्योतितरां नरः स्यादेकत्रसंस्थैर्गुरुसोमसौम्यैः २०

जिसके एकराशि में चन्द्रमा, बुध और बृहस्पति बैठे हों वह विख्यातकीर्त्ति, बुद्धिमान्, प्रतापी, विचित्र मित्रोंवाला, बड़ा भाग्यशाली और उत्तम आचरण तथा विद्यावान् होता है ॥ २० ॥

अथ चन्द्रबुधशुक्रयोगफलम् ।

विद्याप्रवीणोपि च नीचवृत्तः स्पर्द्धाभिवृद्ध्यां च रुचिर्विशेषात् ॥
स्यादर्थलुब्धो हि नरः प्रसूतौ मृगांकसौम्यास्फुजितां युतिश्चेत् २१

जिसके चन्द्रमा, बुध और शुक्र एकराशि में बैठें हों वह विद्या में प्रवीण, नीच आचरणवाला, हर मनुष्य की निन्दा-स्तुति करने में रुचि करनेवाला और धन का लोभी होता है ॥ २१ ॥

अथ चन्द्रबुधशनियोगफलम् ।

कलाकलापामलबुद्धिशाली ख्यातः क्षितीशाभिमतो नितान्तम् ॥
नरः पुरग्रामपतिर्विनीतो बुधेन्दुमन्दाः सहिता यदि स्युः २२

जिसके एकराशि में चन्द्र, बुध और शनैश्चर हों वह निर्मल बुद्धि, सम्पूर्ण कलाओं में कुशल, विख्यात, राजा का प्यारा और नगर, पुर, ग्रामादिकों का स्वामी तथा सबसे नम्र स्वभाववाला होता है ॥ २२ ॥

अथ चन्द्रगुरुशुक्रयोगफलम् ।

भाग्यभाग्भवति मानवः सदा चारुकीर्त्तिमतिवृत्तिसंयुतः ॥
भार्गवेन्दुसुरराजपूजिताः संयुता यदि भवन्ति सम्भवे २३

जिसके एकराशि में चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों वह उत्तम कीर्त्तिवाला, उत्तम आजीविकावाला और उत्तम भाग्ययुक्त होता है ॥ २३ ॥

अथ चन्द्रगुरुशनियोगफलम् ।

विचक्षणः क्षोणिपतिप्रियश्च सन्मन्त्रशास्त्राधिकृतोनितान्तम् ॥
भवेत्सुवेषो मनुजो महौजाः संयुक्तमन्देन्दुसुरेन्द्रवन्द्यैः २४

जिसके शनैश्चर, चन्द्रमा और बृहस्पति एकराशि में हों वह पुरुष बड़ा विचक्षण, राजा का प्यारा, उत्तम मन्त्रशास्त्र का जाननेवाला, श्रेष्ठ वेष धारण करनेवाला और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २४ ॥

अथ चन्द्रशुक्रशनियोगफलम्।

पुरोधसां वेदविदांवरेण्याः स्युः प्राणिनः पुण्यपरायणाश्च ॥
सत्पुस्तकालोकनलेखनेच्छाः कवींदुमन्दामिलिता यदि स्युः २५

जिसके एक राशि में चन्द्रमा, शुक्र और शनैश्चर बैठे हों वह पुरोहित और वेद जाननेवालों में उत्तम प्रतिष्ठा पानेवाला और पुण्यकार्य में तत्पर तथा अच्छी पुस्तकों के लिखने-पढ़ने में इच्छावाला होता है ॥ २५ ॥

अथ भौमबुधगुरुयोगफलम्।

क्ष्मापालकः स्वीयकुले नरः स्यात्कवित्व संगीतकला प्रवीणः ॥
परार्थसंसाधकतैकचित्तो वाचस्पतिज्ञावनिसूनुयोगे २६

जिसके एकराशि में बृहस्पति, मंगल और बुध बैठे हों वह अपने कुल का राजा और कविता रचने और गाने बजाने में प्रवीण और परोपकारी होता है ॥ २६ ॥

अथ मंगलबुधशुक्रयोगफलम्।

वित्तान्वितः क्षीणकलेवरश्च वाचालताचञ्चलतासमेतः ॥
धृष्टः सदोत्साहपरो नरः स्यादेकत्रयातैः कविभौमसौम्यैः २७

जिसके मंगल, बुध और शुक्र एकराशि में हों वह धनी, दुर्बल शरीर, बड़ा वाचाल और बड़ा चंचल स्वभाव, हठी और निरन्तर उत्साहवाला होता है ॥ २७ ॥

अथ भौमबुधशनियोगफलम्।

कुलोत्चनः क्षीणतनुर्वनस्थः प्रेष्यः प्रवासी बहुहास्ययुक्तः ॥
स्यान्नोसहिष्णुश्च नरोपराधी मन्दारसौम्यैः सहितैः प्रसूतौ २८

जिसके मंगल, शनैश्चर और बुध एकराशि में हों वह खोटे नेत्रोंवाला, क्षीण-शरीर, वनवासी, दूतपने का कार्य करनेवाला, परदेश में रहनेवाला, हास्ययुक्त, असहनशील और अपराधी होता है ॥ २८ ॥

अथ भौमगुरुशुक्रयोगफलम्।

सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतः क्ष्मापालमान्यः सुजनानुयातः ॥

वाचस्पतिक्षोणिसुतास्फुजिद्भिः क्षेत्रेयदेकत्रगतैर्नरः स्यात् २९

जिसके एकराशि में मंगल, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों वह श्रेष्ठ स्त्री, पुत्रादि सुखवाला, राजा का मान्य और उत्तम जनों से प्रीति करनेवाला होता है ॥ २९ ॥

अथ भौमगुरुशनियोगफलम् ।

नृपाप्तमानं कृपया विहीनं कृशं कुवृत्तं गतमित्रसख्यम् ॥
जन्यां च शन्यांगिरसावनीजाः संयोगभाजो मनुजं प्रकुर्युः ३०

जिसके एकराशि में मंगल, बृहस्पति और शनैश्चर बैठे हों वह राजा से मान पानेवाला, कृपा से विहीन, दुर्बल शरीर, निषिद्ध कर्म करनेवाला और मित्रों से रुखाई करनेवाला होता है ॥ ३० ॥

अथ भौमशुक्रशनियोगफलम् ।

वासो विदेशे जननी त्वनार्या भर्या तथैवोपहतिः सुखानाम् ॥
दैत्येन्द्रपूज्यावनिजार्कजानां योगे भवेज्जन्म नरस्य यस्य ३१

मंगल, शुक्र और शनैश्चर जिसके एक राशि में हों उसका विदेश में वास होता है, उसकी माता नीचकुल की होती है तथा उसकी स्त्री भी नीचकुल की होती है और निरन्तर दुःख भोग करता है ॥ ३१ ॥

अथ बुधगुरुशुक्रयोगफलम् ।

नृपानुकम्पो बहुगीतकीर्त्तिः प्रसन्नमूर्त्तिर्विजितारिवर्गः ॥
सौम्यामरेज्यास्फुजितां प्रसूतौ चेत्संयुतिः सत्त्वपरो नरः स्यात् ३२

बुध, बृहस्पति और शुक्र जिसके एक राशि में हों तो वह राजकृपा का पात्र, प्रसिद्धकीर्त्तिवाला, प्रसन्नचित्त और शत्रुजनों का जीतनेवाला तथा बलयुक्त होता है ॥ ३२ ॥

अथ बुधगुरुशनियोगफलम् ।

स्थानार्थसद्वैभवसंयुतः स्यादनल्पजल्पो धृतिमान् सुवृत्तः ॥
शनैश्चराचार्यशशाङ्कपुत्राः क्षेत्रे यदैकत्रगता भवन्ति ३३

जिसके बुध, बृहस्पति और शनैश्चर एक घर में हों वह स्थान, धन और विभव से संयुक्त, बड़ा वाचाल, धारणा शक्तिवाला और उत्तम कर्म्म करनेवाला होता है ॥ ३३ ॥

अथ बुधशुक्रशनियोगफलम्।

साधुशीलरहितोऽनृतवक्तानल्पजल्पनरुचिः खलु धूर्त्तः॥
दूरयाननिरतश्च कलाज्ञो भार्गवज्ञशनिसंयुतिजन्मा ३४

जिसके बुध, शुक्र और शनैश्चर एक राशि में हों वह दुष्ट-शील स्वभाववाला, मिथ्यावादी, निश्चय धूर्त्त, दूरदेश की यात्रा करनेवाला और अनेक कलाओं का जाननेवाला होता है॥ ३४॥

अथ शनिशुक्रगुरुयोगफलम्।

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा नरः सुकीर्त्तिः पृथिवीपतिः स्यात्॥
सद्वृत्तिशाली परिसूतिकाले मन्देज्यशुक्रा मिलिता यदि स्युः ३५

जिसके शनैश्चर, शुक्र और बृहस्पति एक स्थान में हों तो यदि नीचकुल में भी उत्पन्न हुआ हो तो भी वह राजा और श्रेष्ठ कीर्त्तिवाला तथा उत्तम वृत्तिवाला होता है॥ ३५॥

अथ पापग्रहयुक्तचन्द्रादिफलम्।

पापान्विते शीतरुचौ जनन्या नूनं भवेन्नैधनमामनन्ति॥
तादृग्दिनेशः पितृनाशकर्त्ता मिश्रे विमिश्रं फलमत्र कल्प्यम् ३६

जिसके चन्द्रमा पापग्रह के साथ हो उसकी माता का नाश होता है और जो सूर्य्य पापसमेत हो तो पिता का नाश होता है तथा मिश्र ग्रह हों तो फल भी मिला हुआ ही होता है॥ ३६॥

अथ शुभग्रहयुक्तचन्द्रफलम्।

शुभान्वितो जन्मनि शीतरश्मिर्यशोर्थभूकीर्त्तिविवृद्धिलब्धिम्॥
करोति जातं सकलप्रदीपं श्रेष्ठप्रतिष्ठं नृपगौरवेण ३७

जिसके जन्मकाल में शुभग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो वह बड़ा यशस्वी, धनी, भूमिवाला, बड़ी कीर्त्तिवाला, उत्तम प्रतिष्ठावाला तथा राजा के से गौरववाला होता है॥ ३७॥

अथ त्रिपापग्रहयोगफलम्।

एकालये चेत्खलखेचराणां त्रयं करोत्येव नरं कुरूपम्॥

दारिद्र्यदुःखैः परितप्तदेहं कदापि गेहं न समाश्रयेत्सः ३८

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे

त्रिग्रहयोगाध्यायः ॥ ५ ॥

जिसके तीन पापग्रह एक जगह में हों वह बड़ा कुरूप, दरिद्र-दुःख से संतप्त और पृथ्वी पर घूमनेवाला तथा स्थानसुख से विहीन रहता है ॥ ३८ ॥

अथ त्रिग्रहयोगचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
र चं मं	र चं बु	र चं गु	र चं शु	र चं श	र मं बु	र मं बृ	र मं शु	र मं श	र बु गु	र बु शु	र बु श
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
र शु गु	र गु श	र शु श	चं मं बु	चं मं गु	चं मं शु	चं मं श	चं बु गु	चं शु बु	चं बु श	चं बु शु	चं गु श
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
चं शु श	मं बु गु	मं बु शु	मं बु श	मं गु शु	मं गु श	मं शु श	बु गु शु	बु गु श	बु शु श	गु शु श	० ०

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां

त्रिग्रहयोगाध्यायः ॥ ५ ॥

अथ योगाध्यायः प्रारम्भः ।

मंगलाचरणम् ।

सद्विलासकलगर्जनशीलशुण्डिकावलयकृत्प्रतिवेलम् ॥
अस्तु वः कलितभालतलेन्दुर्मङ्गलाय किल मंगलमूर्त्तिः १

अब श्रीगणेशजी महाराज का स्मरण करते हैं। उत्तम विलास (क्रीड़ा) पूर्वक सुन्दर शब्द से गर्जते हुए बारबार अपनी शुण्डिका को मोड़ते-घुमावते हुए और मस्तक में शोभित चन्द्रमा को धारण किये, मंगलमूर्त्ति, श्रीगणेशजी मंगल को करें अर्थात् विघ्नों को नाश करें ॥ १ ॥

अथ राजयोगा व्याख्यायन्ते ।

भाग्यादिभावप्रतिपादितं यद्भाग्यं भवेत्तत्खलु राजयोगैः ॥
तान्विस्तरेण प्रवदामि सम्यक् तैः सार्थकं जन्म यतो नराणाम् २

भाग्योदय के योग जो शास्त्र में लिखे हैं उन राजयोगों के पढ़ने से विशेष भाग्योदय होता है। उन राजयोगों का हम वर्णन करते हैं जिनसे कि मनुष्यों का जन्म सार्थक होता है ॥ २ ॥

नभश्चराः पंच निजोच्चसंस्था यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौमः ॥
त्रयः स्वतुंगादिगताः स राजा राजात्मजोऽन्यस्य सुतोत्र मंत्री ३

जिसकी कुण्डली में पांच ग्रह अपने अपने उच्च में बैठें हों तो वह सार्वभौम (चक्रवर्ती) राजा होता है, जिसके तीन ग्रह उच्च के स्वराशि आदि में हों वह राजकुल में उत्पन्न हो तो राजा होता है और सामान्यकुल में उत्पन्न हो तो भी राजमन्त्री होता है ॥ ३ ॥

तुङ्गोपगा यस्य चतुर्नभोगा महापगासंतरणे बलानाम् ॥
दंताबलानां किल सेतुबंधाः कीर्त्तिप्रबन्धा वसुधातले ते ४

जिसके चार ग्रह उच्च के होते हैं उसके बड़ी भारी नदी के पार उतरने को बलवान् हाथियों का सेतु बांधा जाता है (अर्थात् रणक्षेत्ररूपी नदी में हस्तियों से विजय पाता है) और उसकी पृथ्वीतल में बड़ी सत्कीर्त्ति होती है ॥ ४ ॥

स्वोच्चे सूर्य्यशनीज्यभूमितनयैर्यद्वा त्रिभिर्लग्नगै-
स्तेषामन्यतमे हि षोडशमिताः श्रीराजयोगाः स्मृताः ॥

तन्मध्ये निजतुङ्गगे ग्रहयुगे यद्वैकखेटे विधौ
स्वर्क्षे तुङ्गसमाश्रितैकखचरे लग्ने परे षोडश ५

अपने-अपने उच्च में सूर्य्य, शनैश्चर, मंगल, बृहस्पति अथवा तीन ग्रह बली होकर लग्न में बैठें अथवा इन चारों में एक ग्रह भी बली होकर लग्न में बैठे तो इस रीति से सोलह राजयोग होते हैं अथवा इनमें से दो ग्रह उच्च राशि में बैठे हों अथवा एक ग्रह बली होकर बैठा हो तथा चन्द्रमा कर्क का अथवा वृष का हो और इसके साथ और भी उच्च ग्रह बैठा हो तो वह भी योगकारक होता है ॥ ५ ॥

वर्गोत्तमेऽमृतकरे यदि वा शरीरे
संवीक्षिते च चतुरादिभिरिन्दुहीनैः ॥
द्वाविंशतिप्रमितया खलु संभवंति
योगाः समुद्रवलयक्षितिपालकानाम् ६

चन्द्रमा जिसके वर्गोत्तम का हो या तनुस्थान में हो और चार या चार से अधिक ग्रह उसको देखते हों तो बाईस राजयोग होते हैं। इनमें उत्पन्न समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का स्वामी होता है ॥ ६ ॥

उदग्वशिष्ठो भृगुजश्च पश्चात्प्राग्वाक्पतिर्दक्षिणतस्त्वगस्त्यः ॥
प्रसूतिकाले स भवेदिलाया नाथो हि पाथोनिधिमेखलायाः ७

जिसके जन्मकाल में उत्तर में वशिष्ठजी बैठे हों और शुक्र पश्चिम में हों तथा पूर्व में बृहस्पति और दक्षिण में अगस्त्य बैठे हों तो वह समस्त समुद्रमेखला वाली पृथ्वी का स्वामी होता है ॥ ७ ॥

स्वोच्चे मूर्तिगतेऽमृतांशुतनये नक्रे सवक्रे शनौ
चापे वागधिपेन्दुभार्गवयुते स्याज्जन्म भूमीपतेः ॥
स्वस्थाने ननु यस्य भूमितुरगो मत्तेभमालामिल-
त्सेनांदोलितभूमिगोलकलनं दिग्दन्तिनः कुर्वते ८

लग्न में जिसके बुध अपनी उच्च राशि में बैठा हो और मकर राशि में शनैश्चर और मंगल बैठे हों तथा धनुर्धरराशि में बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा बैठे हों तो वह

राजा होता है और उसके द्वार पर घोड़े और हाथियों के समूह स्थित रहते हैं और बहुत सेनासमेत पृथ्वीमण्डल पर चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ ८ ॥

दिनाधिराजे मृगाराजसंस्थे नक्रे सवक्रे कलशेऽर्कसूनौ ॥
पाठीनलग्ने शशिना समेते महीपतेर्जन्ममहौजसः स्यात् ९

जिसके सिंह में सूर्य बैठा हो और मकर राशि में मंगल हो और कुम्भ में शनैश्चर तथा मीन लग्न में चन्द्रमा बैठा हो तो वह बड़ा प्रतापी और तेजस्वी राजा होता है ॥ ९ ॥

महीसुते मेषगते तनुस्थे बृहस्पतौ वा तनुगे स्वतुङ्गे ॥
योगद्वयेस्मिन्नृपती भवेताञ्जितारिपक्षौ नृपनीतिदक्षौ १०

जिसके मेषराशिगत मंगल तनुभाव में बैठा हो अथवा कर्कलग्न में जन्म हो और उसमें बृहस्पति बैठा हो इन दोनों योगों में पैदा होनेवाला राजनीति में चतुर और शत्रुजनों का नाश करनेवाला राजा होता है ॥ १० ॥

वाचस्पतिः स्वोच्चगतो विलग्ने मेषे दिनेशः शशिशुक्रसौम्याः॥
लाभालयस्थाः किल भूमिपालं तं भूतलस्याभरणं गृणन्ति ११

जिसके बृहस्पति कर्क राशि के लग्न में बैठा हो और मेष राशि में सूर्य्य बैठा हो तथा चन्द्रमा, बुध और शुक्र यह तीनों ग्यारहें स्थान में बैठे हों तो वह समस्त पृथ्वी का आभूषणरूप राजा होता है ॥ ११ ॥

मन्दो यदा नक्रविलग्नवर्ती मृगेन्द्रयुग्माजतुलाकुलीराः ॥
स्वस्वामियुक्ता जनयन्ति नाथंपाथोनिधिःप्रान्तमहीतलस्य १२

और जिसके शनैश्चर मकरगत तनुभाव में बैठा हो और सिंह, मिथुन, तुला, मेष तथा कर्क ये भाव अपने अपने स्वामियों से संयुक्त हों तो वह समुद्रपर्यंत पृथ्वी का राजा होता है ॥ १२ ॥

द्वंद्वे दैत्यगुरौ निशाकरसुते मूर्त्तौ स्वतुंगे स्थिते
नक्रे वक्रशनैश्चरौ च सफरे चन्द्रामरेज्यौ स्थितौ ॥
योगोयं प्रभवेत्प्रसूतिसमये यस्यावनीशो महान्
वैरिव्रातमहोद्धतेभदलने पञ्चाननः केवलम् १३

जिसके मिथुन में शुक्र बैठा हो तथा कन्या का होकर लग्न में बुध बैठा हो

और मकर में मंगल और शनैश्चर बैठे हों तथा मीन राशि में चन्द्रमा और बृहस्पति बैठे हों तो वह बड़ा प्रतापी, वैरियों के समूहरूप मदोन्मत्त हाथी के दलन करने को सिंह के समान राजा होता है ॥ १३ ॥

सिंहोदयेर्कस्त्वजगोमृगांकः शनैश्चरः कुंभधरे सुरेज्यः ॥
धनुर्द्धरे चेन्मकरे महीजो राजाधिराजो मनुजो भवेत्सः १४

जिसका सिंहलग्न में जन्म हो और उस लग्न में सूर्य्य बैठा हो तथा मेष में चन्द्रमा, कुम्भ में शनैश्चर, धनु में बृहस्पति और मकर में मंगल बैठा हो तो वह राजाओं का राजा (चक्रवर्ती) होता है ॥ १४ ॥

मेषे गतो मूर्त्तिगतः प्रसूतौ बृहस्पतिश्चास्तगतः कलावान् ॥
रसातले व्योमगते सितश्चेन्महीपतिर्गीतदिगन्तकीर्त्तिः १५

जिसका मेषलग्न में जन्म हो और बृहस्पति उसमें बैठा हो और सातवें चन्द्रमा हो तथा चौथे या दशवें शुक्र हो तो वह बड़ा प्रतापी और दिगन्तरों में विख्यात कीर्त्तिवाला राजा होता है ॥ १५ ॥

गुरुः कुलीरोपगतः प्रसूतौ स्मरांबुखस्था भृगुमन्दभौमाः ॥
तद्यानकाले जलधेर्जलानि भेरीनिनादोच्छलनं प्रयान्ति १६

जिसका कर्क लग्न में जन्म हो और उसमें बृहस्पति बैठा हो और सातवें शुक्र, चौथे शनैश्चर और दशवें मंगल बैठा हो तो उसकी सेना के जाने से और डंका के बजने से समुद्र का जल भी उछलने लगता है ॥ १६ ॥

प्रसूतिकाले स्फुरदंशुजालः षड्वर्गशुद्धोऽदितिभे स्वभे वा ॥
तुंगे त्रिकोणे स नभश्चरेन्द्रो नरं प्रकुर्यात्खलु सार्वभौमम् १७

जिसके षड्वर्गशुद्ध चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र का होकर अपनी राशि में बैठा हो या उच्चराशि में होकर नवें अथवा पांचवें स्थान में बैठा हो तो वह चक्रवर्ती नरेन्द्र होता है ॥ १७ ॥

षड्वर्गशुद्धौ खचरद्वयं चेद्यथोक्तरीत्या जनने नरस्य ॥
तस्याधिपत्यं खलु किन्नरेषु द्वीपांतरे चात्र न किं धरायाम् १८

जिसकी कुण्डली में षड्वर्गशुद्ध दो ग्रह पूर्वोक्तरीति से बैठे हों तो वह किन्नर-लोक में और द्वीपान्तरों में राज्य करता हुआ समस्त पृथ्वीमण्डल का स्वामी होता है ॥ १८ ॥

तुङ्गत्रिकोणाद्यधिकारहीनैः षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव मंत्री ॥
राजा चतुर्भिः खलु सार्वभौमः पञ्चादिभिर्वाक्पतिनैकेन १९

जिसके उच्च और मूलत्रिकोणादि अधिकारों से हीन तथा षड्वर्ग में शुद्ध तीन ग्रह बैठे हों तो वह राजा का मंत्री होता है और चार ग्रह हों तो राजा होता है एवं पांच ग्रह हों तो चक्रवर्त्ती राजा होता है और एक ही षड्वर्गशुद्ध बृहस्पति हो तो भी वह राजा होता है ॥ १९ ॥

वृषे शशी लग्नगतोंबुसप्तखस्था रवीज्यार्कसुता भवन्ति ॥
तद्दण्डयात्रासु रजोन्धकाराद्दिनेऽपि रात्रिं कुरुते प्रवेशम् २०

जिसके वृष राशिगत लग्न में चन्द्रमा स्थित हो और चतुर्थ, सप्तम, दशमस्थान में यथाक्रम सूर्य्य, बृहस्पति और शनैश्चर बैठे हों तो उसकी एक घड़ी मात्र की यात्रा में ही सेना के चलने से पृथ्वी की रज आकाश में आच्छादित होकर दिन में रात्रि का भास होने लगता है ॥ २० ॥

गुर्विन्दुसौम्यास्फुजितश्च यस्य मूर्त्तित्रिधर्मायगता भवन्ति ॥
मृगेर्कसूनुस्तनुगोऽत्र नूनमेकातपत्रां स भुनक्ति धात्रीम् २१

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति, चन्द्रमा, बुध और शुक्र ये पहले, तीसरे, नवें और ग्यारहवें यथाक्रम स्थित हों तथा मकर का होकर शनैश्चर लग्न में हो तो वह एक छत्रवाली पृथ्वी का भोग करता है अर्थात् चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ २१ ॥

तुङ्गस्थितौ शुक्रबुधौ विलग्ने नक्रे च वक्रो धनुषीज्यचंद्रौ ॥
प्रसूतिकाले किल तौ भवेतामाखंडलौ भूमितलेपि संस्थौ २२

जिसके शुक्र अथवा बुध उच्चराशि में होकर लग्न में बैठे हों तथा मकर में मंगल और धनुराशि में चन्द्रमा तथा बृहस्पति हों तो वह इन्द्र की तुल्य पृथ्वी का राज्य करता है ॥ २२ ॥

कर्केर्कचंद्रौ सुरराजमंत्री शत्रुस्थितश्चापि बुधः स्वतुङ्गे ॥
कश्चिद्बलीलग्नगतः स राजा राजाधिराजाभिधया समेतः २३

कर्कराशि में चन्द्रमा, सूर्य्य तथा बृहस्पति छठवें और बुध अपनी उच्चराशि में बैठा हो और कोई ग्रह बली होकर लग्न में स्थित हो तो वह राजाधिराज नाम से युक्त राजा होता है ॥ २३ ॥

गुरुर्निजोच्चे यदि केन्द्रशाली राज्यालये दानवराजपूज्यः ॥
प्रसूतिकाले किल तस्य मुद्रा चतुःसमुद्रावधिगामिनी स्यात् २४

जिसके बृहस्पति अपने उच्च राशि का होकर केन्द्र में बैठा हो और दशम स्थान में शुक्र बैठा हो तो उसका सिक्का चारों समुद्र के तटपर्य्यन्त चलनेवाला होता है ॥ २४ ॥

देवाचार्य्यं दिनेश्वरौ क्रियगतौ मेषूरणे क्षोणिजः
पुण्ये भार्गवसौम्यशीतकिरणा यस्य प्रसूतौ स्थिताः ॥
नूनं दिग्विजयः प्रयाणसमये सैन्यैरिला व्याकुला
चिन्तामुद्वहतीति का गतिरहो सर्वं सहाख्या स्थितैः २५

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति और सूर्य्य मेष राशि में बैठे हों और दशम स्थान में मंगल तथा नवें स्थान में शुक्र, बुध और चन्द्रमा बैठे हों तो उसके दिग्विजय की कूच के समय सेना के बल से पृथ्वी व्याकुल हो जाती है और चिन्ता करती है कि अब क्या गति होनेवाली है ॥ २५ ॥

नीचारातिलवोज्झिता बलयुताः संत्यक्तवैराः परं
स्फारस्कांतिधरा भवन्ति खचराः संस्थो वृषे भार्गवः ॥
मातृणां यदि मण्डले समुदितो जीवो भवेत्संभवे
दैवैस्तुल्यपराक्रमः सच नृपः कोपप्रमृष्टाहितः २६

जिसके जन्मकाल में नीच और शत्रु के नवांश से रहित, बलयुक्त, वैर से रहित और पूर्ण कान्ति को धारण करनेवाले ग्रह होवें और वृष में शुक्र बैठा हो तथा बृहस्पति भी अपने मातृमण्डल में उदित हो तो वह देवताओं के सदृश पराक्रमी, क्रोधरहित और राजा होता है ॥ २६ ॥

मेषोदयेऽर्कश्च गुरुः कुलीरे तुलाधरे मन्दविधू भवेताम् ॥
भवेन्नृपालोऽमलकीर्त्तिशाली भूपालमालापरिपालिताज्ञः २७

जिसका मेषलग्न का जन्म हो और उसमें सूर्य्य बैठा हो तथा कर्क में बृहस्पति, तुला राशि में शनैश्चर और चन्द्रमा बैठे हों तो वह बड़ा प्रतापी राजा होता है और उसकी कीर्त्ति जगत् में विख्यात होती है तथा संपूर्ण राजा लोग उसकी आज्ञा मानते हैं ॥ २७ ॥

मीने निशाकरः पूर्णः सर्वग्रहनिरीक्षितः ॥
सार्वभौमन्नरं कुर्य्यादिन्द्रतुल्यपराक्रमम् २८

जिसके मीन राशि में पूर्ण चन्द्रमा बैठा हो और समस्त ग्रह उसको देखते हों तो वह इन्द्र के समान पराक्रमवाला चक्रवर्ती राजा होता है ॥ २८ ॥

धने दिनेशाद्भृगुजीवसौम्या नास्तङ्गता नो रिपुदृष्टियुक्ताः ॥
स्यात्संकटं तत्कटकं रिपूणां यशःपटो दिग्वसनाय नूनम् २९

जिसके जन्म काल में सूर्य्य से धनस्थान में बुध, बृहस्पति और शुक्र ये तीनों बैठे हों परन्तु इनमें से कोई ग्रह अस्त न हो और शत्रु ग्रह उसको कोई देखता न हो तो उसकी फौज का सामना कोई न कर सके और उसका बड़ा यश दिगन्तर में विख्यात हो ॥ २९ ॥

सत्त्वोपेतः शुभजननपः पूर्णचंद्र प्रपश्ये-
द्यस्योत्पत्तौ भवति नृपतिर्निर्जितारातिपक्षः ॥
यात्राकाले गजहयरथात्यन्ततुर्यस्वनानां
ब्रह्माण्डन्नोऽखिलमपि भवेत्तारणार्थं समर्थम् ३०

जिसके जन्मलग्न का स्वामी बलवान् शुभग्रह हो और पूर्ण चन्द्रमा को देखता हो तो वह राजा होता है तथा समस्त शत्रुमण्डल को जीतता है और उसकी यात्रा के समय हाथी, घोड़े, रथ और भेरी के अत्यन्त शब्दों से संपूर्ण ब्रह्माण्ड पूरित होता है ॥ ३० ॥

स्वोच्चेषु वाचस्पतिसूर्यशुक्राः शनीक्षितः शीतरुचिर्निजोच्चे ॥
यद्यानकाले रजसोवितानं रुणद्धि सूर्य्याश्वविलोचनानि ३१

जिसके सूर्य्य, बृहस्पति और शुक्र ये तीनों ग्रह अपने अपने उच्च स्थान में बैठे हों और चन्द्रमा वृषराशि में हो और शनैश्चर उसको देखता हो तो इतनी सेना उसके साथ चलती है कि जिसकी रज का सामियाना सूर्य के घोड़ों के नेत्र भी ढाप लेता है ॥ ३१ ॥

नास्तंयाताः सुतगृहगताः सौम्यशुक्रामरेज्या
नक्रे वक्रो रविरहितगो धर्मगो यस्य मन्दः ॥

यात्राकाले किल कमलिनीपुष्पसंकोचकर्त्ता
श्रीसूर्योऽपि प्रचलितदलोद्भूतधूलीकृतास्तः ३२

जिसके पंचम स्थान में बुध, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों और अस्त न हों तथा मकर में मंगल बैठा हो परन्तु सूर्य उसके साथ न हो और नवें घर में शनैश्चर बैठा हो तो उसके यात्राकाल में सेना के चलने से उठी हुई धूलि से सूर्य अस्त-सा हो जाता है जिससे कमल का पुष्प भी संकुचित होता है ॥ ३२ ॥

कन्यालग्नगते बुधे च विबुधामात्ये च जायास्थिते
भौमार्कौ सहजेऽर्कजोऽरिभवनेम्बुस्थे भृगोर्नन्दने ॥
योगेस्मिन् मनुजस्य यस्य जननं तच्छासनं सर्वदा
राजानः प्रवहन्त्यलं सुविमला मालेव मौलिस्थले ३३

जिसके कन्यालग्न में बुध बैठा हो, सातवें बृहस्पति बैठा हो, सूर्य और मंगल तीसरे बैठे हों, शनैश्चर छठवें भाव में बैठा हो और चतुर्थ भाव में शुक्र बैठा हो तो ऐसे योग में पैदा हुए मनुष्य की आज्ञा को राजा लोग माला की तरह मस्तक में धारण करते हैं ॥ ३३ ॥

मीनोदये दानवराजपूज्यश्चन्द्रामरेज्यौ भवतः कुलीरे ॥
मेषेऽर्कभौमौ नृपतिः किल स्यादाखंडलेनापि तुलां प्रयाति ३४

जिसका मीन लग्न का जन्म हो और उसमें शुक्र बैठा हो तथा कर्क में चन्द्रमा और बृहस्पति बैठे हों तथा मेष राशि में सूर्य्य और मंगल बैठें हों तो वह इन्द्र की तुल्यता को प्राप्त होता है ॥ ३४ ॥

इति निगदितयोगैर्नीचवंशोद्भवोपि
स भवति पतिरुर्व्याः किं पुना राजसूनुः ॥
नरपतिकुलजातो वक्ष्यमाणैश्च योगै-
र्भवति नृपतिरेवं तत्समोऽन्यस्य सूनुः ३५

इन कहे हुए राजयोगों से जो नीचकुल में भी उत्पन्न भया हो वह भी राजा होता है और जो राजवंश में उत्पन्न भये हैं उनका तो कहना ही क्या है, वे तो अवश्य ही राजा होंगे । अब आगे कहे हुए राजयोगों में जो राज-

घर में उत्पन्न होंगे वह अवश्य राजा होवेंगे और नीचकुल में उत्पन्न होंगे वह राजतुल्य फल भोग करनेवाले होंगे ।। ३५ ।।

छायासुतो नक्रविलग्नयातश्चास्ते प्रसूतौ यदि पुष्पवन्तौ ॥
लाभे कुजे वै भृगुजोऽष्टमस्थः स्याद्भूपतिर्भूपकुलप्रसूतः ३६

जिसके मकरलग्न में शनैश्चर बैठा हो और सप्तमभाव में सूर्य्य और चन्द्रमा बैठे हों तथा ग्यारहवें मंगल और अष्टम में शुक्र बैठा हो तो वह राजवंश में उत्पन्न हो तो राजा होता है ।। ३६ ।।

सुरासुरेज्यौ भवतश्चतुर्थेऽत्यर्थं समर्थः पृथिवीपतिः स्यात् ॥
कर्कस्थितो देवगुरुस्सचन्द्रः काश्मीरदेशाधिपतिं करोति ३७

जिसके चतुर्थ भाव में बृहस्पति और शुक्र बैठे हों तो वह बड़ा धनी और प्रतापी राजा होता है तथा कर्क में बृहस्पति और चन्द्रमा हो तो वह काश्मीरदेश का स्वामी (राजा) होता है।। ३७।।

सुरासुरेज्यस्थितदृष्टिरिंदुः स्वोच्चे स्थितो भूमिपतिं करोति ॥
विलोकयंतः परिपूर्णचन्द्रं शुक्रज्ञजीवा जनयन्ति भूपम् ३८

जिसके जन्मकाल में वृषगत चन्द्रमा को बृहस्पति और शुक्र देखते हों तो वह राजा होता है और पूर्ण चन्द्रमा को बुध, बृहस्पति और शुक्र देखते हों तो भी राजयोग जानना चाहिये ।। ३८।।

पश्येन्मृगांकात्मजमिन्द्रमन्त्री विचित्रसम्पन्नृपतिं करोति ॥
एकोपि खेटो यदि पंचमांशे प्रसूतिकाले कुरुते नृपालम् ३९

जिसके जन्मकाल में बुध को बृहस्पति देखता हो तो वह विचित्र सम्पदा समेत राजसुख को भोग करता है और जो जन्मकाल में एक भी ग्रह पञ्चम नवांशा में हो तो वह भी राजयोग करता है।। ३९।।

नक्षत्रनाथोऽप्यधिमित्रभागे शुक्रेण दृष्टो नृपतिं करोति ॥
स्वांशाधिमित्रांशगतोथवा स्याज्जीवेन दृष्टः कुरुते नृपालम् ४०

जो चन्द्रमा अपने अधिमित्र के नवांश में हो और उसको शुक्र देखता हो तो वह राजा होता है अथवा अपने नवांश में या अधिमित्र के नवांश में चन्द्रमा हो और उसको बृहस्पति देखता हो तो भी वह राजा होता है ।। ४० ।।

दिनाधिनाथोप्यधिमित्रभावे चन्द्रेण सम्यक्प्रविलोकितो वा ॥
स्यात्तस्कराणां निचये नृपालः सच्छीलशाली सुतरामुदारः ४१

जिसके सूर्य्य अधिमित्र के भाव में बैठा हो और चन्द्रमा उसको पूर्णदृष्टि से देखता हो तो वह चोरों के समूह में उत्तम शील स्वभाववाला और उदारचित्त राजा होता है ॥ ४१ ॥

स्वोच्चे स्थितः सोमसुतः ससोमः कुर्य्यान्नरं मागधदेशराजम् ॥
कलाधिशाली बलवान्कलावान् करोति भूपं शुभधामसंस्थः ४२

जिसके कन्याराशि में बुध और चन्द्रमा बैठे हों तो वह मगधदेश का राजा होता है और जो पूर्ण चन्द्रमा शुभग्रह की राशि में बली होकर बैठा हो तो भी वह राजा होता है ॥ ४२ ॥

जन्मेश्वरो जन्मविलग्नपो वा केन्द्रे बली नीचकुलेऽपि भूपम् ॥
कुर्य्यादुदारं सुतरां पवित्रं किमत्र चित्रं क्षितिपालपुत्रम् ४३

जिसके जन्मलग्न का स्वामी या चन्द्रराशि का स्वामी केन्द्र में बली होकर बैठा हो तो नीच कुलवाला भी राज्य करता है और बड़ा उदार और पवित्र शरीर होता है और राजकुल में उत्पन्न हो तो उसको राजा होना कोई बड़ी बात नहीं है ॥ ४३ ॥

मेषे दिनेशः शशिना समेतो यस्य प्रसूतौ सतु भूपतिः स्यात् ॥
कर्णाटकद्राविडकेरलान्ध्रदेशाधिपानामनुकूलवर्त्ती ४४

जिसके चन्द्रमा के साथ मेष में सूर्य्य बैठा हो तो वह कर्णाटक, द्राविड़, केरल तथा आन्ध्रदेश के राजाओं के अनुकूल चलनेवाला राजा होता है ॥ ४४ ॥

स्वतुङ्गगेहोपगतौ सितेज्यौ केन्द्रत्रिकोणेषु गतौ भवेताम् ॥
प्रसूतिकाले कुरुते नृपालं नृपालजातं सचिवेन्द्र मान्यम् ४५

जिसके शुक्र और बृहस्पति अपनी-अपनी उच्च राशि में होकर केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हों तो वह राजकुल में उत्पन्न हो तो राजा होता है और अन्य कुलवाला हो तो राजा का मंत्री होता है ॥ ४५ ॥

प्रसूतिकाले मदने धने च व्यये विलग्ने यदि सन्ति खेटाः ॥
ते छत्रयोगं जनयन्ति तस्य प्राक्पुण्यपाकाभ्युदयो हि यस्य ४६

जिसके जन्मकाल में सातवें, दूसरे, बारहवें और लग्न में सब ग्रह बैठे हों तो छत्रनाम योग होता है। इसमें उत्पन्न होनेवाला छत्रधारी राजा होता है जिसके पूर्व का पुण्य बड़ा प्रबल होता है वह पुरुष ऐसे राजयोग में उत्पन्न होता है ॥ ४६ ॥

पापो विलग्ने यदि यस्य सूतौ दृष्टो भवेच्चित्रशिखंडिजेन ॥
कर्के गुरुर्ब्राह्मणदेवभक्तः प्रासादवापीपुरकृन्नरः स्यात् ४७

पापी ग्रह जिसके लग्न में बैठा हो और उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तथा कर्कराशि में बृहस्पति बैठे हों तो वह ब्राह्मण और देवताओं का भक्त तथा कुआँ, बावली और पुर का बनवानेवाला होता है ॥ ४७ ॥

एकोपि शस्तः शुभदः स्वतुङ्गे केन्द्रे पतंगो बलवान्प्रदृष्टः ॥
सुतस्थितेनामरपूजितेन चेन्मानवो मालवनायकः स्यात् ४८

जिसके एक भी कल्याणकारी शुभ ग्रह अपनी उच्च राशि में बैठा हो और केन्द्र में बली होकर सूर्य्य बैठा हो तथा उसको पञ्चमभाव में स्थित बृहस्पति देखता हो तो वह मालवा देश का राजा होता है ॥ ४८ ॥

मृगराशिं परित्यज्य स्थितो लग्ने बृहस्पतिः ॥
करोति पृथिवीनाथं मत्तेभपरिवारितम् ४९

जिसके मकर राशि को छोड़कर अन्य राशि का होकर बृहस्पति लग्न में बैठा हो तो वह मत्त हाथियों से युक्त पृथ्वी का नाथ होता है ॥ ४९ ॥

कलाकलापाधिकृताधिशाली चन्द्रो भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्त्ती ॥
विहाय लग्नं कुरुते नृपालं लीलाविलासाकलितारिवृन्दम् ५०

जिसके जन्मकुण्डली में लग्न को छोड़ कर केन्द्र में पूर्णकलावान् चन्द्रमा हो तो वह लीलाबिलासी और शत्रुओं का जीतनेवाला होता है ॥ ५० ॥

केन्द्रगः सुरगुरुः सशशांको यस्य जन्मनि च भार्गवदृष्टः ॥
भूपतिर्भवति सोतुलकीर्त्तिर्नीचगो न यदि कोपि ग्रहः स्यात् ५१

जिसके केन्द्र में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति बैठा हो और शुक्र उसको देखता हो तथा कोई भी ग्रह नीच राशि में न बैठा हो तो इस योगवाला भी बड़ा प्रतापी राजा होता है ॥ ५१ ॥

धनस्थिताः सौम्यसितामरेज्या मन्दारचन्द्रा यदि सप्तमस्थाः ॥
यस्य प्रसूतौ स तु भूपतिः स्यादरातिदन्तिक्षतिसिंह एव ५२

जिसके धन स्थान में बुध, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों तथा चन्द्रमा, मंगल और शनैश्चर सातवें घर में स्थित हों तो वह शत्रुरूपी हाथियों के जीतने में सिंह की तुल्य पराक्रमी राजा होता है ॥ ५२ ॥

कुम्भाष्टमांशे शशिनि त्रिकोणे मेषेद्रिभागे धरणीसुते वा ॥
द्वन्द्वैकविंशांशगतेऽथवा ज्ञे यस्य प्रसूतौ सतु भूपतिः स्यात् ५३

जिसके त्रिकोण में स्थित चन्द्रमा कुंभराशि के अष्टमांश में बैठा हो और मेष के सप्तमांश में मंगल बैठा हो अथवा मिथुन के इक्कीसवें अंश में बुध बैठा हो तो वह राजा होता हैं ॥ ५३ ॥

कुम्भस्य चेत्पंचदशे विभागे कर्के दशांशोपगतो विधुश्चेत् ॥
तृतीयभागे धनुषीन्द्रवन्द्यः सिंहे शशांकेऽप्यथवापि भूपः ५४

यदि कुम्भ के पन्द्रहें भाग में अथवा कर्क के दशमांश में चन्द्रमा बैठा हो और धन के तीसरे भाग में बृहस्पति बैठा हो अथवा सिंह में चन्द्रमा बैठा हो तो राजा होता है ॥ ५४ ॥

पुष्येश्विभे वाप्यथकृत्तिकासु वर्गोत्तमे पूर्णतनुः कलावान् ॥
करोति जातं खलु सार्व्वभौमं त्रिपुष्करोत्पन्ननरोऽपि भूपः ५५

जिसके पुष्य नक्षत्र में या अश्विनी नक्षत्र में या कृत्तिका नक्षत्र में वर्गोत्तमी पूर्ण चन्द्रमा हो तो वह सम्पूर्ण भूमि का चक्रवर्त्ती राजा होता है अथवा त्रिपुष्कर योग में जो उत्पन्न होता है वह भी राजा होता है ॥ ५५ ॥

तिथिः सुभद्रा विषमांघ्रिभे चेद्वारे गुरुक्ष्मातनयार्कजानाम् ॥
त्रिपुष्करो योग इतिप्रदिष्टो वृद्धौ च हानौ त्रिगुणात्मिकर्त्ता ५६

जिसके जन्मकाल में भद्रातिथि हो और नक्षत्र का विषम (प्रथम-तृतीय) चरण हो तथा बृहस्पति, मंगल और शनिश्चरवार हों तो त्रिपुष्कर योग होता है। यह हानि और वृद्धि में त्रिगुण फल करता है यह भी राजयोगकारक है ॥ ५६ ॥

मैत्रे च दास्रेऽप्यथवात्मतुङ्गे वर्गोत्तमे भूमिसुतः करोति ॥
महीपतिं पार्थिववंशजातं चान्यं प्रधानं धनिनं समृद्धम् ५७

जिसके जन्मकाल में अनुराधा और अश्विनी नक्षत्र में अथवा अपने उच्च में और वर्गोत्तम में मंगल हो तो वह यदि राजकुल में पैदा हो तो राजा होता है अन्य कुल में जन्म हो तो धन-दौलत से संपन्न मंत्री होता है ॥ ५७ ॥

चेद्भार्ग्गवो जन्मनि यस्य पुण्ये मेषूरणे पूर्णतनुः शशाङ्कः ॥
अन्ये ग्रहा लाभगता भवेयुः पृथ्वीपतिः पार्थिववंशजातः ५८

जिसके जन्मकाल में नवें स्थान में शुक्र, दशम स्थान में पूर्ण चन्द्रमा और सब ग्रह ग्यारहवें स्थान में बैठे हों तो जो राजकुल में पैदा हो तो वह समस्त भूमण्डल का राजा होता है ॥ ५८ ॥

उपचयभवनस्थाः सर्व्वखेटाः शशाङ्का-
द्रविगुरुशशिनश्चेद्भूमिसूनोर्भवन्ति ॥
त्रितनयनवमस्थाः कुर्वते ते नरेन्द्रं
गजतुरगरथानां सम्पदा राजमानम् ५९

जिसके चन्द्रमा से उपचय में अर्थात् ३। ६। १०। ११ इन स्थानों में समस्त ग्रह बैठे हों अथवा मंगल से बृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा यह तीनों तीसरे, पांचवें तथा नवें स्थान में बैठे हों तो वह हाथियों तथा घोड़ों और रथों की संपदा से शोभित राजा होता है ॥ ५९ ॥

सुखे सितज्ञौ सहजेंबुजेशस्तिष्ठन्ति खेटाः सुतधाम्नि चान्ये ॥
निजारिराशौ नहि कश्चिदत्र धात्रीपतिश्चैकक्रुतातपत्रः ६०

जिसके चौथे घर में शुक्र और बुध बैठे हों और तृतीयभाव में सूर्य्य तथा सम्पूर्ण ग्रह पांचवें घर में बैठे हों और अपने शत्रु भाव में कोई भी ग्रह न हो तो वह समस्त भूमण्डल का छत्रधारी राजा होता है ॥ ६० ॥

सिंहे कमलिनीभर्त्ता कुलीरस्थो निशाकरः ॥
दृष्टौ द्वावपि जीवेन पार्थिवं कुरुतस्तदा ६१

जिसके सिंह में सूर्य्य और कर्क में चन्द्रमा बैठे हों और इन दोनों को बृहस्पति देखता हो तो वह राजा होता है ॥ ६१ ॥

बुधः कर्क्कटमारूढो वाक्पतिश्च धनुर्द्धरे ॥
रविभूतुतदृष्टौ तौ कुरुतः पृथिवीपतिम् ६२

जिसके बुध कर्कराशि में और बृहस्पति धनुर्धरराशि में बैठे हों और इन दोनों को सूर्य्य तथा मंगल देखते हों तो वह प्रतापी राजा होता है ॥ ६२ ॥

शफरीयुगले चन्द्रः कर्क्कटे च बृहस्पतिः ॥
शुक्रे कुम्भे भवेद्राजा गजवाजिसमृद्धिभाक् ६३

मीन या मेष में चन्द्रमा, कर्क में बृहस्पति और कुम्भराशि में शुक्र बैठा हो तो वह हाथी घोड़ों की समृद्धिवाला राजा होता है ॥ ६३ ॥

सितदृष्टः शनिः कुम्भे पद्मिनीनायकोदये ॥
चन्द्रे जलचरे राशौ यदि राजा तदा भवेत् ६४

कुम्भराशि में शनैश्चर बैठा हो और उसको शुक्र देखता हो तथा सूर्य्य लग्न में और चंद्रमा जलचरराशि में बैठे हों तो भी राजा होता है ॥ ६४ ॥

चेत्खेचरो नीचगृहं प्रयातस्तदीश्वरश्चापि तदुच्चनाथः ॥
केन्द्रस्थितौ तौ भवतः प्रसूतौ प्रकीर्तितौ भूपतिसम्भवाय ६५

जो ग्रह नीचराशि में बैठा हो और उस राशि का स्वामी अथवा उस ग्रह के उच्च का स्वामी ये दोनों केन्द्र में बैठे हों तो राजयोग होता है ॥ ६५ ॥

कृत्तिकारेवतीस्वातौ पुष्यस्थायी भृगोस्सुतः ॥
करोति भूभुजां नाथमश्विन्यामपि संस्थितः ६६

कृत्तिका में, रेवती में, स्वाती में अथवा पुष्य में शुक्र बैठा हो तो वह बड़ा प्रतापी राजाओं का राजा होता है और अश्विनी नक्षत्र में भी जो शुक्र हो तो भी वही पूर्वोक्त फल जानना चाहिये ॥ ६६ ॥

अथ राज्यप्राप्तिकालः ।

राज्योपलब्धिर्दशमस्थितस्य विलग्नगस्याप्यथवादशायाम् ॥
तयोरभावे बलशालिनो वा सद्राजयोगो यदिजन्मकाले ६७

जिसके राजयोग पड़े उसको दशवें भाव में जो ग्रह बैठा हो उसकी दशा में राज्यलाभ होता है अथवा लग्न में जो कोई ग्रह बैठा हो उसकी दशा में राज्यलाभ होता है। यदि लग्न में या दशम स्थान में कोई ग्रह न बैठा हो तो संपूर्ण ग्रहों में जो बली ग्रह हो उसकी दशा में राज्य का लाभ होता है ॥ ६७ ॥

इति राजयोगाध्यायः ॥

अथ राजयोगसांगतिकसामुद्रिकाऽध्यायः।

प्रसूतिकाले प्रबला यदि स्युर्नृपालयोगाः पुरुषस्य यस्य ॥
सद्राजचिह्नानि पदे तदीये भवन्ति वा पाणितलेऽमलानि १

जिस पुरुष के जन्मकाल में प्रबल राजयोग होते हैं उसके हस्तों में अथवा चरणों में राजचिह्न की साफ साफ रेखायें अवश्य होती हैं ॥ १ ॥

अनामिकामूलगता प्रशस्ता सा कीर्त्तिता पुण्यविधानरेखा ॥
मध्यांगुलेर्या मणिबन्धमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोर्ध्वरेखा २

अनामिका अँगुली के मूल से जो रेखा चलती है वह पुण्यविधान नाम की रेखा होती है (उसके होने से धर्मकार्य्य में तत्पर होता है) और मध्यमा अँगुली के मूल से मणिबन्ध तक जो रेखा होती है वह ऊर्ध्वरेखा कहाती है तथा राज्य की देनेवाली होती है ॥ २ ॥

विराजमानं यवलाञ्छनञ्चेदंगुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य ॥
भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेषैः सहितो विनीतः ३

जिस पुरुष के अँगूठे के मध्य में यव का चिह्न हो वह बड़ा यशस्वी और अपने वंश को भूषित करनेवाला और बहुत आभूषण धारण करनेवाला तथा नम्रतायुक्त होता है ॥ ३ ॥

चेद्वारणो वातपवारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा ॥
वीणा च पाणौ चरणे नराणां ते स्युर्नराणामधिपा वरेण्याः ४

जिसके हाथों में या पैरों में हस्ती, छत्र, मत्स्य, पुष्करिणी (तलैया), अंकुश और वीणा के चिह्न हों वह उत्तम पुरुष मनुष्यों का स्वामी होता है ॥ ४ ॥

आदर्शमालाकरवालशैलफलाश्च तत्पाणितले मिलन्ति ॥
स्यान्मण्डलीकोवनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात् ५

जिसके हाथ में दर्पण, माला, खड्ग, पर्व्वत और फल के चिह्न हों वह कुल की परम्परानुसार मंडलाधीश अथवा राजा होता है ॥ ५ ॥

चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रं धनुर्ध्वजाब्जव्यजनासनानि ॥
रथाश्वदोलाकमलाविलासात्तस्यालये स्युर्गजवाजिशालाः ६

जिसके हाथ में या चरण में चक्र, धनुष, ध्वजा, कमल, व्यंजन और आसन

के चिह्न हों तो उसके घर पर रथ, अश्व और पालकी तथा लक्ष्मी का वास होता है और हाथी-घोड़ों के रहने का स्थान होता है ॥ ६ ॥

स्तम्भस्तु कुम्भस्तु तरुः कुरङ्गो गदामृदङ्गोऽङ्घ्रिकरप्रदेशे ॥
दण्डोथवाखण्डितराजलक्ष्म्या स्यान्मण्डितः पण्डितशौण्डको वा ७

जिसके हस्त में या चरण में स्तम्भ, कुम्भ, वृक्ष और कुरङ्ग (मृग), गदा, मृदंग और दंड के समान चिह्न हों तो वह राजलक्ष्मी से शोभित अथवा बड़ा विद्वान् पण्डित होता है ॥ ७ ॥

सुवृत्तमौलिस्तु विशालभालश्चाकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः ॥
आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमंडलाखण्डलमार्यवर्याः ८

जिसका गोल शिर और चौड़ा मस्तक, कान तक फैले कमल के से नेत्र और आजानु (गोड़े तक लम्बी) भुजा हों तो वह समस्त भूमण्डल का राजा होता है ॥ ८ ॥

नरस्य नासा सरला च यस्य वक्षस्स्थलञ्चापि शिलातलाभम् ॥
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेतामारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ९

जिसकी लम्बी नासिका, शिला की तुल्य चौड़ी छाती, गहरी नाभि और कोमल तथा रक्तवर्ण चरण हों तो वह बड़ा प्रतापी राजा होता है ॥ ९ ॥

करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः ॥
पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहनचिह्नसमन्वितः १०

जिसके हाथ में तिल हो वह बड़ा धनी होता है और जिसके पैर के तलुवे में तिल और वाहन का चिह्न हो तो वह राजा होता है ॥ १० ॥

प्रसन्नमूर्त्तिः समुदारचेता वंशाभिमानः शुभवाग्विलासः ॥
अनीतिभीरुर्गुरुसाधुनम्रः साम्राज्यलक्ष्मीं लभते मनुष्यः ११

जो पुरुष प्रसन्न वदन, उदारचित्त, अपने कुल का अभिमान रखनेवाला, प्रियवचन बोलनेवाला, अन्याय से भय करनेवाला तथा गुरु और साधुजनों का भक्त हो वह साम्राज्य लक्ष्मी अर्थात् हाथी, घोड़े तथा पैदल सेना समेत समस्त भूमण्डल का राजा होता है ॥ ११ ॥

एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति ॥
प्रकल्पयेदन्यकुलोद्भवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् १२

यह फल, जो राजकुल में उत्पन्न हुए हैं उन्हीं पुरुषों के वास्ते मुनि लोगों ने कहा है और जो अन्य कुल में उत्पन्न होते हैं उनके फल को कुल के अनुमान से कल्पना करना चाहिये ॥ १२ ॥

चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलप्रदानि ॥
वामेतरेंघ्रौ च करे नराणां धन्यानि वामे खलु कामिनीनाम् १३

जो चिह्न कहे गये हैं वे साफ स्पष्ट हों तो सम्पूर्ण फल के देनेवाले होते हैं। दाहिने हाथ और पैर में पुरुष के और बायें पैर या बायें हाथ में स्त्री के चिह्न पड़ने से सौभाग्य संपदा देनेवाले होते हैं ॥ १३ ॥

इति राजयोगसांगतिकसामुद्रिकाऽध्याय ।

अथ राजयोगभङ्गाऽध्यायः ।

शत्रुक्षेत्रे गतैः सर्व्वैर्वर्गोत्तमयुतैरपि ॥
राजयोगा विनश्यन्ति बहुभिर्नीचगैर्ग्रहैः १

जिसके शत्रु के घर में सब ग्रह बैठे हों और वर्गोत्तमयुक्त भी हों तो भी राजयोग को भंग करते हैं तथा नीच राशि में बहुत ग्रहों के होने से भी राजयोग भंग होता है ॥ १ ॥

चन्द्रं वा यदि वा लग्नं ग्रहो नैकोपवीक्ष्यते ॥
तथापि राजयोगानां भङ्गमाह पराशरः २

लग्न को और चन्द्रमा को कोई भी ग्रह न देखता हो तो भी राजयोग भंग होता है। यह पराशर मुनि कहते हैं ॥ २ ॥

स्वांशे रवौ शीतकरे विनष्टे दृष्टे च पापैः शुभदृष्टिहीने ॥
कृत्वापि राज्यं च्यवते मनुष्यः पश्चात्सुदुःखं लभते हताशः ३

जो सूर्य्य अपने नवांशा में हो और चन्द्रमा क्षीण हो तथा पापग्रह चन्द्रमा को देखते हों और शुभग्रह कोई न देखते हों तो वह राज करके भी राज्यासन से पतित हो जाता है और हताश होकर दुःख पाता है ॥ ३ ॥

उल्काव्यतीपातदिने तथैव नैर्घातिके केतुसमुद्भवे वा ॥
चेद्राजयोगे पि च यस्य सूतिर्नरो दरिद्रोतितराम्भवेत्सः ४

जिसका जन्म उल्कापात के समय में हो अथवा व्यतीपात योग में या आकाश से पत्थर गिरें उस योग में तथा केतु के उदय में पैदा हो तो राजयोग के होने पर भी वह अतिदरिद्री होता है ॥ ४ ॥

तुलायां नलिनीनाथः परमं नीचमाश्रितः ॥
निर्दिष्टराजयोगानां दलनोथ भवेद्ध्रुवम् ५

जिसके तुला राशि में सूर्य्य परमनीच में बैठा हो वह कहे हुए पूर्वोक्त राजयोगों के फल का विनाश करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

मृगलग्ने सुराचार्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
राजयोगोद्भवस्यापि कुरुतेतिदरिद्रताम् ६

मकर के बृहस्पति परमनीच में होकर जिसकी कुण्डली में हो वह राजयोग में उत्पन्न हुआ हो तो भी दरिद्री होता है ॥ ६ ॥

वाचस्पतावस्तगते ग्रहेन्द्रास्त्रयोपि नीचेषु घटो विलग्ने ॥
एकोपि नीचे दशमेपि पापा भूपालयोगा विलयं प्रयान्ति ७

जिसके जन्मलग्न में बृहस्पति अस्त होगया हो और तीन ग्रह नीच राशि में बैठे हों और लग्न में कुंभराशि हो तथा एक ग्रह भी नीचराशि में हो और दशवें पापग्रह बैठे हों तो राजयोग का नाश हो जाता है ॥ ७ ॥

प्रसूतौ दानवामात्यः परमं नीचमाश्रितः ॥
करोति पतनं नूनं मानवानां महापदात् ८

जिसके जन्मकाल में परमनीच में शुक्र बैठा हो वह राजसिंहासन से गिरा दिया जाता है ॥ ८ ॥

यदि तनुभवनस्थो राहुरिन्दुप्रदृष्टः
सहजरिपुग्रहस्था भानुमन्दावनेयाः ॥
शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यै
र्भवति नृपतियोगो व्यर्थ एवेतिचिन्त्यम् ९

जिसके लग्न में राहु बैठा हो और उसे चन्द्रमा देखता हो तथा तीसरे और छठें सूर्य्य, मंगल और शनि बैठे हों तथा केन्द्र में कोई शुभग्रह न हो अथवा सब शुभग्रह सप्तम में बैठे हों तो राजयोग व्यर्थ हो जाता है ऐसा विचारना चाहिए ॥ ९ ॥

केन्द्रेषु शून्येषु शुभैर्नभोगैरस्तंगतैर्नीचगृहस्थितैर्वा ॥
चतुर्ग्रहैर्वाप्यरिमंदिरस्थैर्नृपालयोगाः प्रलयं प्रयान्ति १०

जिसके केन्द्र में कोई शुभग्रह न हो अथवा नीच राशि के ग्रह केन्द्र में बैठे हों या केन्द्र में अस्त ग्रह स्थित हों अथवा चार ग्रह शत्रुभवन में हों तो भी राजयोग का भंग होता है ॥ १० ॥

सर्व्वेपि पापा यदि कण्टकेषु नीचारिगा नो शुभदृष्टियुक्ताः ॥
नीचारिरिःफेषु च सौम्यसंज्ञा राज्ञां हि योगा विलयं प्रयान्ति ११

इति दैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
राजयोगभङ्गाध्यायः ॥ ६ ॥

सम्पूर्ण पापग्रह केन्द्र में बैठे हों अथवा नीच राशि या शत्रु के घर में बैठे हों और उनको शुभग्रह कोई न देखता हो और न कोई साथ हो तथा नीच राशि में या शत्रु राशि में अथवा बारहवें घर में शुभग्रह बैठे हों तो भी राजयोग भंग हो जाता है ॥ ११ ॥

इति दैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
राजयोगभङ्गाऽध्यायः ॥ ६ ॥

—:०:—

अथ पञ्चमहापुरुषलक्षणानि निरूप्यन्ते ।

ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पञ्च पूर्व्वमुनिभिः प्रकीर्त्तिताः ॥
वच्मि तान्सुसरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया १

जो महापुरुष राजाओं के पांच ग्रहों से पांचयोग (रुचक, भद्रक, हंसक, मालव्य और शशक) पूर्वाचार्य मुनिजनों ने कहे हैं उन्हीं सीधे राजयोगों की विधि देखने की इच्छा से बड़ी उक्ति से कहते हैं ॥ १ ॥

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्व्वावनिसूनुमुख्यैः ॥
क्रमेणयोगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः २

जो अपने घर में या अपने उच्चस्थान में अथवा केन्द्र में भौमादि पञ्च ग्रह बैठे हों तो क्रम से रुचक, भद्रक, हंसक, मालव्य और शशक ये पांच योग होते हैं । मंगल केन्द्र में, अपने उच्च का या स्वराशि का होकर बैठा हो तो रुचकयोग होता

है १ और बुध मिथुन या कन्या में स्थित होकर केन्द्र में बैठे तो भद्रकयोग होता है २ इसी रीति से बृहस्पति धन, मीन और कर्क का होकर केन्द्र में बैठे तो हंसकयोग होता है ३ और जो शुक्र वृष, तुला या मीनराशि का होकर केन्द्र में बैठा हो तो मालव्य योग होता है ४ और जो शनैश्चर मकर, तुला या कुम्भ का होकर केन्द्र में बैठा हो तो शशक नाम राजयोग ५ होता है ॥ २ ॥

अथ रुचकयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरबलः साहसाच्चाप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूर्नीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः ॥
रक्तश्यामोतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः
क्रूरोभक्तोमराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजंघः ३

अब रुचकयोग का फल लिखते हैं। दीर्घायु, निर्मलकान्ति और रुधिर की अधिकाई से बलवान् और साहस कर्म करने से कार्यसिद्धि करनेवाला, कोमल भृकुटीवाला, नीले बालोंवाला, समान हाथ-पैरवाला, मन्त्रविद्या में प्रवीण, उत्तम कीर्त्तियुक्त, रक्तमिश्रित श्यामवर्ण शरीर, बड़ा शूरवीर, शत्रुजनों को जीतनेवाला, शंखसमान ग्रीवावाला, बड़ा बलवान्, क्रूरस्वभाव और गुरु-देवताओं का भक्त, गुरु और ब्राह्मणों से नम्रता रखनेवाला और दुर्बल जानु, ऊरु और जंघावाला होता है ॥ ३ ॥

खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवीणो
वज्रांकहस्तचरणः सरलांगुलः स्यात् ॥
मंत्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्र-
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ४

पुरुष के हाथ में व पैर में खट्वांगरेखा, पाशरेखा, वृषरेखा, धनुषरेखा, चक्ररेखा, वीणारेखा और वज्ररेखा का चिह्न हो तो सीधी अँगुली और अभिचार की मन्त्रविद्या में प्रवीण और तोल में हजार पल तथा दीर्घमुख होता है ॥ ४ ॥

सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्तति जीवितोऽसौ ॥
शस्त्राग्निचिह्नो रुचकाभिधाने देवालये तन्निधनं प्रयाति ५

रुचकदेश में जन्म लेनेवाला सह्यपर्वत, विन्ध्यपर्वत और उज्जैन देश का

स्वामी और सत्तर वर्ष की आयुर्दायवाला होता है तथा शस्त्र से या अग्नि के जलने से शरीर में चिह्न होता है और देवता के स्थान में उसका मरण होता है ॥ ५ ॥

इति रुचकयोगफल।

---:o:---

अथ भद्रयोगफलम्।

शार्दूलप्रतिमानवो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्स्थलो
लंबापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ॥
कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगंडस्थलः
प्राज्ञः पंकजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाधिको योगवित् ६

सिंह के समान बली पुरुष, हस्ती की सी चालवाला, मोटी जंघा और वक्षस्स्थलवाला और दोनों भुजा गोल, लम्बी और मोटी, उसी के तुल्य शरीर की ऊँचाईवाला, कामी, कोमल गहरे बालों के समूह से छिपे गंडस्थलवाला, पंडित और कमल के सदृश हाथ-पैरवाला, अधिक पराक्रमी और योगशास्त्र का जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥

शङ्खासिकुंजरगदाकुसुमेषुकेतु-
चक्राब्जलांगलविचिह्नितपाणिपादः ॥
यात्रागजेन्द्रमदवारिकृतार्द्रभूमिः
सत्कुंकुमप्रतिमगंधतनुः सुघोषः ७

जिसके हाथ-पैर में शंख, खड्ग, हाथी, गदा, पुष्प, बाण, केतु, चक्र, कमल, हल इनकी रेखाएँ (चिह्न) हों तो उसकी यात्रा समय में मस्त हाथियों के मद की धारा से भूमि गीली हो जाती है तथा उत्तम केशर की समान सुगन्धित शरीरवाला और गम्भीर शब्दवाला होता है ॥ ७ ॥

सद्रूपगोतिमतिमान् खलु शास्त्रवेत्ता
मानोपभोगसहितोऽतिनिगूढगुह्यः ॥
सत्कुक्षिधर्म्मनिरतः सुललाटपट्टो
धीरो भवेदसितकुंचितकेशपाशः ८

उत्तम रूप, बुद्धिमान्, शास्त्रों का जाननेवाला, मान और भोगों से युक्त,

गुप्त रहस्यवाला, उत्तम कुक्षिवाला, धर्माधिकारी, ऊँचा मस्तकवाला, बड़ा धीर और काले घुंघुवारे केशवाला होता है ॥ ८ ॥

स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनप्रतिमक्षमी ॥
भुज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः ९

सर्वकार्यों में स्वाधीन और स्वजनों की तरह क्षमा करनेवाला होता है और उसका धन अतिथि लोगों से भोगा जाता है ॥ ९ ॥

भालं तुलायां तु भवेत्सुरत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः ॥
भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवेन्नृपालः शरदामशीतिम् १०

जो भद्रयोग में पैदा होता है वह बड़ा भाग्यशाली, रत्नों से तुलित और कान्यकुब्ज देश का स्वामी होता है और स्त्री पुत्रों के सुख से युक्त होकर वह राजा अस्सी वर्ष तक जीवित रहता है ॥ १० ॥

इति भद्रयोगफल ।

अथ हंसयोगफलम् ।

रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसे प्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपोलरक्तकरजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ॥
शंखाब्जांकुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चञ्चत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ११

जो हंसयोग में उत्पन्न होता है उसका मुख रक्तवर्ण, उच्चनासिका, उत्तम चरण, प्रसन्न, गौरवर्ण, पुष्ट शरीर, मोटे गाल, लाल नख, हंस की ऐसी वाणी और कफप्रकृति होता है। उसके हाथ और पैरों में शंख, कमल, अंकुश, मत्स्य, रस्सी, खट्वांग, माला और कलश के चिह्न होते हैं तथा अरुण नेत्र और गोल शिर होता है॥ ११॥

जलाशयप्रीतिरतीवकामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् ॥
उच्चोंगुलैर्वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्षण्णवतिः समानाम् १२

जलाशय से प्रीति रखनेवाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से भोग करने में

अतृप्त और छियासी अंगुल उच्च शरीर तथा छानवे वर्ष की आयुर्दायवाला होता है ।। १२ ।।

बाह्लीकदेशान्तरशूरसेनगांधर्व्वगङ्गायमुनांतरालान् ।।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः १३

बाह्लीकदेश, शूरसेनदेश, गांधर्वदेश और गंगा-यमुना के अन्तरालवर्ती देशों का स्वामी होता है तथा वन में मरता है । पुराने मुनिजनों ने हंसयोग का ऐसा फल लिखा है ।। १३ ।।

इति हंसयोगफल ।

अथ मालव्ययोगफलम् ।

अस्थूलौष्ठोविषमवपुर्नैवरिक्तांगसंधि-
र्मध्येक्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः ।।
सद्दीप्ताक्षः समसितरदो जानुदेशाप्तपाणि-
र्मालव्योयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् १४

जो राजा मालव्ययोग में पैदा होता है उसके पतले ओठ, कठिन शरीर, अंग की संधियों में पुष्टता, मध्य का अंग पतला, चन्द्रमा की ऐसी कान्ति, लम्बी नासिका, सुन्दर कपोल, बड़े नेत्र, बराबर सफेद दांत और जानु पर्य्यंत लम्बे हाथवाला होता है तथा आयुर्दाय उसकी सत्तर वर्ष की होती है ।। १४ ।।

वक्त्रं त्रयोदशमितांगुलमस्य दीर्घं
तिर्य्यग्दशांगुलमितं श्रवणांतरालम् ।।
मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं
लाटांश्च मालवकसिन्धुसुपारियात्रान् १५

जिसका मुख तेरह अंगुल का लम्बा तथा मुख और कानों के बीच का अन्तर दस-दस अंगुल का हो ऐसा मालव्ययोगवाला पुरुष मालवदेश, सिन्धुदेश, लाटदेश और पारियात्रदेश का राजा होता है ।। १५ ।।

इति मालव्ययोगफल ।

अथ शशकयोगफलम् ।

लघुद्विजास्योद्भुतगः सकोपः शठोतिशूरो विजनप्रचारः ॥
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः १६

जिसके जन्मकाल में शशकयोग पड़ता है वह छोटे दांत और मुखवाला, कोपयुक्त, शठ, बड़ा शूरवीर, निर्जन स्थान में घूमनेवाला और वन, पर्व्वत, कोट और नदी के तट में रहनेवाला, अतिथिजनों से प्रीति करनेवाला, मध्यम शरीर और विख्यात होता है ॥ १६ ॥

नानासेनानिचयनिरतो दंतुरश्चापि किंचि-
द्धातोर्वादे भवति कुशलश्चञ्चलः कोलनेत्रः ॥
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजंघो
मध्ये क्षामः सुललितमती रंध्रवेधी परेषाम् १७

नानाप्रकार की सेना संग रखनेवाला, कुछ बड़े दांतोंवाला, धातुवाद में बड़ा प्रवीण, चंचलस्वभाव, गोल उत्तमनेत्र, स्त्रियों में आसक्त, परधन हरनेवाला, माता का भक्त, उत्तम जंघावाला, पतली कमरवाला, उत्तम बुद्धिवाला और दूसरों के छिद्रों को देखनेवाला होता है ॥ १७ ॥

पर्यंकशंखशरशस्त्रमृदंगमाला-
वीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः ॥
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं
सम्यक् शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः १८

तथा उसके हाथ और पैरों में पर्य्यंक (शय्या), शंख, बाण, खड्ग, मृदङ्ग, पुष्पमाला और वीणा की सी रेखा हों तो वह शशकयोगवाला राजा सत्तर वर्ष पर्य्यंत राज्य करता है ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ १८ ॥

इति शशकयोगफल ।

केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवन्ति ॥
कुर्वन्ति नोर्वीपतिमात्मपाके यच्छन्ति ते केवल सत्फलानि १९

इति जातकाभरणे पंचमहापुरुषलक्षणाऽध्यायः ॥ ६ ॥

जिसके केन्द्र में या उच्चराशि में यद्यपि भौमादि पंचग्रह बैठे हों और सूर्य्य तथा चन्द्रमा उनके साथ हों तो भी वे अपनी दशा में राजयोग न करके उत्तम फलों को करते हैं ॥ १९ ॥

इति दैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां पंचमहापुरुषलक्षणाऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ कारकयोगाऽध्यायः।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्था नभश्चराः केन्द्रगता मिथः स्युः ॥
ते कारकाख्याः कथिता मुनीन्द्रैर्विज्ञेय आज्ञाभवने विशेषः १

जो ग्रह अपने मूलत्रिकोण में या अपने क्षेत्र में अथवा अपने उच्च स्थान में स्थित होकर परस्पर केन्द्र में बैठे हों तो उनको मुनीन्द्रलोग कारक कहते हैं। इन चारों केन्द्रों में दशमभाव बलवान् जानना चाहिये ॥ १ ॥

प्रालेयरश्मिर्यदि मूर्त्तिवर्त्ती स्वमंदिरस्थो यदि तुंगयातः ॥
सूर्य्यार्कजारामरराजपूज्याः परस्परं कारकसंज्ञकाः स्युः २

जिसके सूर्य्य मूर्त्ति में सिंहराशि का या मेषराशि का होकर बैठा हो तो सूर्य्य, शनैश्चर, मंगल और बृहस्पति ये परस्पर में कारक होते हैं ॥ २ ॥

शुभग्रहे लग्नगतेम्बराम्बुस्थितो ग्रहः कारकसंज्ञकः स्यात् ॥
तुङ्गत्रिकोणस्वगृहांशयातास्तेपीहमाने तपने विशेषात् ३

शुभ ग्रह जिसके लग्न में हों अथवा चतुर्थ या दशमस्थान में हो तो वह ग्रह कारक होता है और जो ग्रह अपने उच्चस्थान में या स्वक्षेत्र में अथवा मूल-त्रिकोण में हों अथवा दशम में हों तो वे भी कारक होते हैं ॥ ३ ॥

नीचान्वये यद्यपि जातजन्मा मन्त्री भवेत्कारकखेचरेन्द्रैः ॥
राजान्वये यस्य यदि प्रसूतिर्भूमीपतित्वं स कथं न याति ४

जो नीच कुल में उत्पन्न हैं और ग्रह उनके कारक हैं तो वह राजा के मंत्री होते हैं और जो राजा के कुल में उत्पन्न भये हैं वह अवश्य करके राजा होते हैं ॥ ४ ॥

वेशिस्थितो यस्य शुभो नभोगो लग्नं विलग्नं च लवे स्वकीये ॥
केन्द्राणि सर्वाणि शुभान्वितानि तस्यालये श्रीः कुरुते निवासम् ५

जिसके लग्न से धनस्थान में शुभग्रह बैठा हो और जन्मलग्न अपने नवांशा में हो तथा चारों केन्द्रों में शुभग्रह बैठे हों तो उसके घर में लक्ष्मी निरन्तर निवास करती है ॥ ५ ॥

केन्द्रस्थिता गुरुविलग्नपजन्मनाथा
मध्ये वयस्यतितरां वितरन्ति भाग्यम् ॥
शीर्षोदयांम्रयुभयभेषु गता भवेयु-
रारंभमध्यमविरामफलप्रदास्ते ६

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति, लग्नेश और राशि का स्वामी ये तीनों केन्द्र में बैठे हों तो मध्य अवस्था में भाग्योदय करते हैं और शीर्षोदय राशि में हों तो बालअवस्था में और उभयोदय राशि में हों तो मध्य और अन्त अवस्था में फल देते हैं ॥ ६ ॥

इति कारकयोगाऽध्याय ।

अथ नाभसयोगाऽध्यायः ।

सर्व्वे चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवन्ति ॥
क्रमेण रज्जुर्म्मुसलं नलश्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् १

जो समस्त ग्रह चरराशि में बैठे हों अथवा स्थिरराशि में बैठे हों अथवा द्विस्वभाव राशि में बैठे हों तो क्रम से रज्जुयोग, मुशलयोग और नलयोग होते हैं। इन तीनों योगों का नाम आश्रय है अर्थात् यह और के आश्रित रहता है ॥ १ ॥

केन्द्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्यालसमाह्वयः स्यात् ॥
इदन्तु योगे द्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि २

जिसके तीन केन्द्रों में शुभग्रह बैठे हों तो मालायोग होता है और इन्हीं में पापग्रह हों तो व्यालयोग होता है। इन दोनों योगों को दलनाम से पराशर मुनि ने कहा है ॥ २ ॥

आसन्नकेन्द्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थैः शकटः समस्तैः ॥
स्वबन्धुयातैर्विहगः प्रदिष्टः शृङ्गाटकं लग्ननवात्मजस्थैः ३

जो समीप के दो केन्द्रों में ग्रह बैठे हों तो वह गदायोग होता है और लग्न व सप्तम में समस्त ग्रह हों तो शकटयोग होता है और जो दूसरे और चौथे स्थान में ग्रह बैठे हों तो विहगयोग होता है एवं जो लग्न, पञ्चम और नवम में सब ग्रह बैठे हों तो शृंगाटक योग होता है ॥ ३ ॥

धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरन्ध्रव्ययसंस्थितैर्वा ॥
नभस्तलस्थैर्हलनामयोगः किलोदितोयं निखिलागमज्ञैः ४

जो दूसरे, छठवें और दशवें स्थान में सब ग्रह बैठे हों अथवा तीसरे, सातवें और ग्यारहवें सम्पूर्ण ग्रह बैठे हों या चौथे, आठवें और बारहवें समस्त ग्रह बैठे हों तो हलनाम योग होता है ॥ ४ ॥

लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबन्धुयातैः ॥
वज्राभिधस्तैर्विपरीतसंस्थैर्य्यवश्च मिश्रैः कमलाभिधानः ५

जो शुभग्रह लग्न स्थान या सप्तम स्थान में और पापग्रह दशवें और चौथे घर में बैठे हों तो वज्रयोग होता है और इससे विपरीत ग्रह स्थित हों तो यवयोग होता है और शुभग्रह तथा पापग्रह मिश्रित हों तो कमलयोग होता है ॥ ५ ॥

सूर्य्याच्चतुर्थे भवने सितज्ञौ कथम्भवेतामिति नैव युक्तौ ॥
यवाख्यवज्रौ त्विदमामनन्ति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ६

जो सूर्य्य से चतुर्थ स्थान में बुध और शुक्र हों तो यव तथा वज्रयोग मानते हैं परन्तु यह कैसे हो सक्ता है सो उसकी उपपत्ति आगे लिखेंगे ॥ ६ ॥

विलग्नपार्श्वद्वयवर्तिनीने ज्ञशुक्रजीवान्यतमो विलग्ने ॥
कुजार्किचन्द्राः खजलस्मरस्था वज्रं विलोमाच्च यवो न किंवा ७

जन्मलग्न से बारहें और दूसरे सूर्य हो और बुध, बृहस्पति और शुक्र ये लग्न में बैठें हों और मंगल, शनैश्चर और चन्द्रमा दशम, चतुर्थ और सप्तम में बैठे हों तो वज्रयोग होता है और इससे विपरीत यवयोग होता है ॥ ७ ॥

सर्व्वैर्नभोगैर्यदिनाभसाख्यो व्यालाख्यमाख्ये त्रिभिरेव खेटैः ॥
कथम्भवेतामिति चिन्तयन्ति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ८

सम्पूर्ण ग्रहों से यदि नाभसयोग होता है और तीन ग्रहों से व्याल और माला होता है अगर कहो कि यह कैसे होगा तो क्या मुनियों का कहा हुआ व्यर्थ हो जायगा ? ॥ ८ ॥

त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः ॥
वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ९

जो केन्द्र में कोई ग्रह न हो और अन्य स्थानों में सर्वग्रह बैठें हों तो वापीयोग होता है इसे पुरातन पण्डितों ने कहा है ॥ ९ ॥

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः ॥
क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः १०

लग्न से, चतुर्थ से, सप्तम से और दशम से चार-चार स्थानों में सब ग्रह बैठे हों तो क्रम से यूपयोग, शरयोग, शक्तियोग और दण्डयोग होते हैं ऐसा जातकविदों ने कहा है। अर्थात् लग्न से चतुर्थ तक सब ग्रह हों तो यूपयोग होता है व चतुर्थ से सप्तम तक सब ग्रह हों तो शरयोग होता है तथा सातवें से दशम स्थान तक सब ग्रह हों तो शक्तियोग होता है और दशम से लग्न तक सब ग्रह हों तो दण्डयोग होता है ॥ १० ॥

लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगे नौरथ कूटसंज्ञः ॥
छत्रं धनुश्चान्यगृहप्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इहार्द्धचन्द्रः ११

लग्न से, चतुर्थ से, सप्तम से और दशम से सात स्थानों में ग्रह हों तो क्रम से नौकायोग, पर्वतयोग, छत्रयोग और धनुष्योग होते हैं। इनसे जो अन्य राशि में हों तो अर्द्धचन्द्रयोग होता है ॥ ११ ॥

तनोर्द्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः ॥
चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इतीहाकृतिजाश्च विंशत् १२

लग्न से और धनभाव से एक-एक स्थान अन्तर दे करके छः राशियों में सम्पूर्ण ग्रह बैठे हों तो चक्रयोग और समुद्रयोग होते हैं। ग्रहों के बैठने से इसके भेद में विंशति याने २० योग होते हैं ॥ १२ ॥

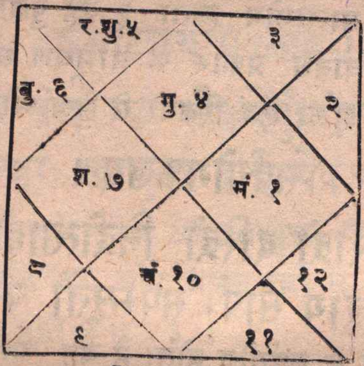
ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवे-
द्गोलैश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलैस्त्रिगेहोपगैः ॥

केदारश्च चतुर्षु सर्व्वखचरैः पाशस्तु पञ्चस्थितैः
षट्स्थैर्दामनिका च सप्तगृहगैर्व्वीणेतिसंख्या इमे १३

सम्पूर्ण राजयोग जो प्राचीन आचार्यों ने कहे हैं इन योगों के अभाव में सब ग्रह एक स्थान में हों तो गोलयोग, दो स्थानों में ग्रहों के बैठने से युगयोग, तीन राशि में ग्रहों के बैठने से शूलयोग, चार घरों में सब ग्रहों के बैठने से केदारयोग, पांच स्थानों में सब ग्रहों के बैठने से पाशयोग, छः राशि में ग्रहों के बैठने से दामयोग और सात स्थानों में सब ग्रहों के बैठने से वीणायोग होता है ॥ १३ ॥

नानाप्रकारैः किल कालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्त्तिता ये ॥
तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिन्तनीयम् १४

अनेक प्रकारों से जो यह सम्पूर्ण योग कालवेत्ताओं ने कहे हैं उन्हीं ग्रहों की दशा में ग्रह के बलानुसार योग का फल विचारना चाहिये ॥ १४ ॥



अथ योगफलानि ।

रज्जुयोगफलम् ।

चञ्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहाः क्रूरकार्ये नितान्तम् ॥
रज्जूयोगोत्पन्नमर्त्याःस्वदेशे अन्यस्मिन्वै संचरन्त्यर्थलब्ध्यै १५

जो रज्जुयोग में पैदा होता है वह पुरुष रूपवाला, निरन्तर दुःखभोगी, उत्साहरहित और क्रूरकार्य करने में निपुण होता है तथा अपने देश में अथवा परदेश में धनप्राप्ति के लिये घूमा करता है ॥ १५ ॥

मुसलयोगफलम् ।

नानामानज्ञानध्यानोपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः ॥

पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षावासिकृन्मौसलेयः १६

जो मुसलयोग में पैदा होता है वह माननीय, ज्ञान-ध्यान से युक्त, धन और पुत्रों से सुखी तथा राजा के आश्रित और हर्षयुक्त होता है ।। १६ ।।

नलयोगफलम् ।

शश्वत्पूर्णापूर्णरत्नैः स्वगेहा राजस्नेहाः पुण्यदेहाश्च मर्त्याः ॥
कीर्त्या युक्ताः सर्वदा ते सदैव दैवाद्येषां जन्मकाले नलश्चेत् १७

जिसके जन्मकाल में नलयोग होता है वह रत्नों से परिपूर्ण गृहवाला, राजा का मित्र, पुण्यशरीर और सत्कीर्त्तियुक्त होता है ।। १७ ।।

मालायोगफलम् ।

पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूषाविशेषैर्नानायानैरन्वितास्ते भवन्ति ॥
येषांपुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलिशीलः १८

जिसके जन्मकाल में मालायोग होता है वह पुत्रों से और मित्रों से सुख पानेवाला होता है और विविध प्रकार के आभूषण धारण करनेवाला, अनेक वाहनों से युक्त तथा हार, झूला एवं स्त्रियों से सुख भोगता है ।। १८ ।।

सर्पयोगफलम् ।

भोक्तान्यस्यान्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहो रुट्समुद्रोप्यभद्रः ॥
दुर्दर्पः स्याच्चापकाराय सार्पः सर्पस्सूतौ यस्य मर्त्यस्य योगः १९

और जिसके जन्मकाल में सर्पयोग होता है वह अन्य पुरुष से जीविका पानेवाला, क्रोधी, दरिद्री, निरन्तर शयन करनेवाला, अनेक रोगों से युक्त, खोटा स्वभाव, अभिमानी और अपकार करने में सर्प की तुल्य होता है ।। १९ ।।

गदायोगफलम् ।

नानाशास्त्रानेकमंत्रोनुरुक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा ॥
रौद्रो द्वेषीवर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणाद्यैर्गदायाम् २०

जिसके गदायोग होता है वह अनेक शास्त्रों का पढ़नेवाला, अनेक मंत्रों का सिद्ध करनेवाला, गानेबजाने में अनुरागी, यज्ञ करनेवाला, प्रचंडरूप, वैर करनेवाला, शत्रुजनों से रहित और स्त्री तथा आभूषणादि से सुख पानेवाला होता है ।। २० ।।

शकटयोगफलम् ।

दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्य्यस्योत्पत्त्यावाप्तकार्शोऽप्यवश्यम् ॥
याति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्त्वा योगे शाकटे यस्य जन्म २१

शकटयोग में जो उत्पन्न होता है वह दीन तथा वैभव, धन और मित्रों से हीन, जन्महीसे कृश शरीर और खोटी स्त्री से प्रीति करके उसे त्याग देता है ॥ २१ ॥

विहंगयोगफलम् ।

येषां सूतौ मानवानां विहंगो भोगो योगोत्पन्नसौख्यं न तेषाम् ॥
याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासे वासोऽर्थानामल्पता जल्पताय्यैः २२

जो विहंगयोग में उत्पन्न होते हैं उनको योगों से उत्पन्न सुख और भोग नहीं मिलते हैं और यात्रा में प्रसन्न, परदेश में निवास करनेवाला और वस्त्र और धनों की कमीवाला तथा बातून होता है ॥ २२ ॥

शृंगाटकयोगफलम् ।

भूयोत्कर्षः साहसी संगरेच्छः सौख्यैर्युक्तोत्यन्तबुद्धिर्नरस्स्यात् ॥
प्रीतिङ्कुर्वेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्या द्रोहं चैव शृंगपूर्वे मुखाटे २३

शृंगाटक योग में होनेवाले पुरुष प्रसन्नतायुक्त, साहस कर्म करनेवाले, युद्ध करने की इच्छावाले, बुद्धिमान् और प्रथम स्त्री से द्रोह रखनेवाले तथा दूसरी स्त्री से प्रीति करनेवाले होते हैं ॥ २३ ॥

हलयोगफलम् ।

प्रेष्योमुक्तः साधुभिर्मित्रवर्ग्गैः कृष्याजीवी दुःखितोत्यन्तभुक्स्यात्
उत्पत्तिं यो लांगलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं निर्धनत्वात्प्रकामम् २४

लांगलयोग में जो उत्पन्न होता है वह पराया कार्य करनेवाला, साधुजन और मित्रजनों से जुदा रहनेवाला और खेती की जीविका करनेवाला, बहुत भोजन करनेवाला और निर्धन होने से अत्यन्त दुःख पानेवाला होता है ॥ २४ ॥

वज्रयोगफलम् ।

आद्ये भागे जीवितस्यांतिमेच सौख्योपेतोभाग्यवान्मानवः स्यात् ॥

मध्ये भागे भाग्यहीनः प्रकामं कामक्रोधैरन्वितो वज्रयोगे २५

वज्रयोग में उत्पन्न मनुष्य आदिवयस् में अर्थात् बाल्यावस्था में और अन्तवयस् में अर्थात् वृद्धावस्था में सुख पानेवाला और मध्यवयस् में अर्थात् युवावस्था में दुःख भोगनेवाला, कामी और क्रोधी होता है ॥ २५ ॥

यवयोगफलम् ।

मध्ये भागे धर्म्मकामार्त्थसम्पत्-
सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदान्यः ॥
नित्योत्साहः सद्व्रते तु प्रशान्तः
शान्तक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये २६

यवयोग में जो उत्पन्न होता है वह मध्य अवस्था में धर्म, काम और धन-संपत्ति तथा सुखों से युक्त और विनीत, दानी, शांतप्रकृति, निरन्तर उत्साह रखनेवाला और अच्छे व्रतों को धारनेवाला होता है ॥ २६ ॥

कमलयोगफलम् ।

नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयांश्चंचत्कांतिर्गीतकीर्त्तिर्मनुष्यः ॥
योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञोवंशे वा भवेद्दीर्घजीवी २७

जो कमलयोग में उत्पन्न होता है वह निरन्तर सुखी, बलवान् और उत्तम कान्तिवाला, कीर्त्तियुक्त तथा राजकुल में उत्पन्न हो तो राजा अन्यथा दीर्घजीवी होता है ॥ २७ ॥

वापीयोगफलम् ।

दीर्घायुः स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यन्तधीरो मनीषी ॥
चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुष्पवापी वापीयोगे यः प्रसूतः प्रतापी २८

जो वापीयोग में उत्पन्न होता है वह दीर्घायु और अपने कुल का शिरोमणि, सुखी, बड़ा धीर, बुद्धिमान् और अच्छे वचन बोलनेवाला, अच्छे मनवाला, पुष्प वाटिका लगानेवाला और बड़ा प्रतापी होता है ॥ २८ ॥

यूपयोगफलम् ।

धीरोदारो यज्ञकर्म्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै ॥

यस्योत्पत्तौ वर्त्तते यूपयोगो योगो लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् २९

जिसके जन्मकाल में यूपयोग होता है वह बड़ा धीर, उदारचित्त, यज्ञादि कर्म करनेवाला, अनेक विद्याओंवाला, उत्तम विचार करनेवाला और निरन्तर लक्ष्मी से युक्त रहता है ॥ २९ ॥

शरयोगफलम् ।

हिंस्रोत्यन्तं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननान्ते शरज्ञः ॥
मर्त्यो योगे यः शरे जातजन्मा जन्मारम्भात्तस्य न क्वापि सौख्यम्

जो शरयोग में उत्पन्न होता है वह अत्यन्त हिंसा करनेवाला, शिल्पकर्म से पैदा हुए दुःखों से संतप्त, वन में आनन्द पानेवाला, बाणविद्या का ज्ञाता तथा हमेशा दुःखी रहता है कहीं भी सुख नहीं मिलता है ॥ ३० ॥

शक्तियोगफलम् ।

नीचरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्वर्जितो निर्म्मलश्च ॥
वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शालासौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ३१

जो शक्तियोग में उत्पन्न होता है वह नीच और उच्चों से प्रीति करनेवाला, आलस्ययुक्त, धन और सुख से विहीन, मलरहित, युद्ध और विवाद में श्रेष्ठ बुद्धिवाला तथा घर के थोड़े सुख से युक्त होता है ॥ ३१ ॥

दण्डयोगफलम् ।

दीनो हीनोन्मत्तसंजातसख्यः प्रेष्यद्वेषी गोत्रजैर्जातवैरः ॥
कान्तापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगाप्तजन्मा ३२

दण्डयोग में जो उत्पन्न होता है वह दीन, हीन और उन्मत्तों से मित्रता करनेवाला, दूतों का विरोधी, अपने कुटुम्बियों से शत्रुभाव रखनेवाला और स्त्री, पुत्र, धन, मित्र और बुद्धि से विहीन होता है ॥ ३२ ॥

नौकायोगफलम् ।

ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः॥
क्लेशी शश्वच्च चलस्वान्तवृत्तिर्वृत्तिस्तेयोद्भूतधान्येन तस्य ३३

जो मनुष्य नौकायोग में उत्पन्न होता है वह बड़ा लोभी, सुखभोग से विहीन, क्लेश पानेवाला, चंचल स्वभाव और चोरी से धान्यवाला होता है ॥ ३३ ॥

कूटयोगफलम् ।

दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लभिल्लप्रीतिर्निर्द्धनो निन्द्यकर्मा ॥
धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ३४

जो कूटयोग में उत्पन्न होता है वह किला तथा वन में रहनेवाला, मल्ल और भिल्लजनों से प्रीति करनेवाला, निर्धन, निन्दितकर्म में प्रीति रखनेवाला और धर्म-अधर्म के ज्ञान से हीन होता है ॥ ३४ ॥

छत्रयोगफलम् ।

प्राज्ञो राज्ञां कार्य्यकर्त्ता दयालुः पूर्व्वं पश्चात् सर्व्वसौख्यैरुपेतः ॥
यस्योत्पत्तौ छत्रयोगोपलब्धिर्लब्धिस्तस्यच्छत्रसच्चामरादेः ३५

जो छत्रयोग में उत्पन्न होता है वह बड़ा चतुर, राजकार्य करनेवाला, सर्व जनों पर दयाभाव रखनेवाला, बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में अधिक सुख पानेवाला तथा उत्तम छत्र और चँवर आदि की प्राप्तिवाला होता है ॥ ३५ ॥

कार्मुकयोगफलम् ।

आद्ये भागे चान्तिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननादिप्रचारः ॥
योगो जातः कार्म्मुके सोऽतिगर्व्वो गर्व्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः

जो कार्मुकयोग में उत्पन्न होता है वह मनुष्य बाल्यावस्था और वृद्धावस्था में अधिक सुखवाला और वन तथा पर्वतों में घूमनेवाला, अहंकारयुक्त, गर्व से उन्मत्त, आपत्ति करनेवाला और धनुष-बाण का धारण करनेवाला होता है ॥ ३६ ॥

अर्धचन्द्रयोगफलम् ।

भूमीपालात्प्राप्तशश्वत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः सेनाभूषणार्थाम्बराद्यैः ॥
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोर्द्धचन्द्रः चन्द्रः साक्षादुत्सवार्थे जनानाम् ३७

जिसके जन्मकाल में अर्द्धचन्द्रयोग होता है वह राजा से हमेशा प्रतिष्ठा पाने वाला और सेवा, वस्त्र तथा आभूषण आदि से श्रेष्ठ लाभयुक्त और उत्सव के लिये सब मनुष्यों को चन्द्रमा के समान होता है ॥ ३७ ॥

चक्रयोगफलम्।

श्रीमद्रूपोऽत्यन्तजातप्रतापो भूयोभूयोपायनैरन्वितः स्यात् ॥
योगे जातः पूरुषो यस्तुचक्रे चक्रे पृथ्व्याः शालिनीतस्यकीर्तिः ३८

जिसके जन्मकाल में चक्रयोग पड़ता है उसकी बड़ी कीर्ति सब जगत् में विख्यात होती है और वह लक्ष्मीवाला, रूपवान्, बड़ा प्रतापी और बारंबार भेंट लेनेवाला होता है ॥ ३८ ॥

समुद्रयोगफलम्।

दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामः ॥
योगे जातो यः समुद्रे सधन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनन्नरेण ३९

जिसके जन्मकाल में समुद्रयोग पड़ता है वह दानी, धीर, शीलयुक्त, दयालु, राजकुल से सुख पानेवाला और धन्यभाग्य होता है तथा अपने वंश को धन्य करनेवाला होता है ॥ ३९ ॥

गोलयोगफलम्।

विद्यासत्यौदार्य्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः ॥
येषां योगः सम्भवे गोलनामा नानासत्यप्रीतयोऽनीतयस्ते ४०

जिसका गोलयोग में जन्म होता है वह पुरुष विद्या, सत्य, उदारता और पराक्रमविहीन, बड़ा परिश्रम करनेवाला, निरन्तर परदेश में रहनेवाला तथा असत्य और अनीति में प्रीतिवाला होता है ॥ ४० ॥

युगयोगफलम्।

पाखण्डेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मप्रयुक्ताः ॥
पुत्रैरर्थैः सर्व्वथा ते वियुक्ता युक्तायुक्तज्ञानशून्या युगाख्ये ४१

जिसके जन्मकाल में युगयोग होता है वह पुरुष पाखण्ड में पूर्ण प्रीति करनेवाला, निर्लज्ज, धर्म-कर्म से विहीन तथा धन-पुत्र से हीन और युक्तायुक्त ज्ञान से शून्य होता है ॥ ४१ ॥

शूलयोगफलम्।

युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराश्चार्ता निष्ठुरा निर्धनाश्च ॥

योगो येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति ४२

शूलयोग में जो उत्पन्न होता है वह युद्ध और कलह करने में तत्पर, बड़ा शूरवीर, क्रूर स्वभाव, दुःखी, निठुर, निर्धन और मनुष्यों को शूल की बराबर दुःखदायी होता है ॥ ४२ ॥

केदारयोगफलम्।

सत्योपेताश्चार्थवन्तो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च ॥
योगे केदारे नरास्तेपि धीरा धीराचाराश्चापि तेषां विशेषात् ४३

जिसके जन्मकाल में केदारयोग पड़ता है वह बड़ा सत्यवादी, धनी, विनीत खेती करनेवाला, उपकारी, सर्वत्र आदर पानेवाला, धीर और विशेष करके आचारयुक्त होता है ॥ ४३ ॥

पाशयोगफलम्।

दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्त्ता भूरितल्पाः सदंभाः ॥
नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः ४४

पाशयोग में जो उत्पन्न होता है वह दीन रूपवाला, अपकार करने में तत्पर, बन्धन से दुःखी, बहुत स्त्रियोंवाला, दम्भयुक्त, अनेक अनर्थकारी और वन में प्रीति करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥

दामिनीयोगफलम्।

जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो विद्वान् भूषाकोशसंजाततोषः ॥
चञ्चच्छीलोदारबुद्धिःप्रशंस्तःशस्तःसूतौ दामिनी यस्य योगः ४५

जिसके जन्मकाल में दामिनी योग पड़ता है वह निरन्तर पुत्रादिकों से आनन्दित, धीर, पण्डित, आभूषण और खजाने से संतोषवाला, उदारबुद्धि और उत्तम शील स्वभाववाला होता है ॥ ४५ ॥

वीणायोगफलम्।

अर्थोपेताः शास्त्रपारङ्गताश्च संगीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम् ॥
नानासौख्यैरन्वितास्तुप्रवीणा वीणायोगेप्राणिनां जन्म येषाम् ४६

जो वीणायोग में उत्पन्न होता है वह बड़ा पण्डित, धनी, संगीतशास्त्र में

बड़ा प्रवीण, बहुत मनुष्यों का पालन करनेवाला, अनेक प्रकार के सुख का भोगनेवाला और कार्य करने में बड़ा प्रवीण होता है ॥ ४६ ॥

प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्व्वेषां प्राणिनां जन्म कामम् ॥
तस्मादेतेत्यन्तयत्नादपूर्व्वाः पूर्व्वाचार्य्यैर्ज्जातके संप्रदिष्टाः ४७

जो नाभसयोग वर्णन किये हैं उनको सब प्राणियों के जन्मकाल में विचार करना चाहिये । ये अपूर्वयोग पूर्वाचार्यों ने बहुत यत्न से जातक ग्रन्थों में वर्णन किये हैं ॥ ४७ ॥

एवं योगानां फलं शालिनीसद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्त निरुक्तम् ॥
तस्मात्प्राज्ञैः सत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ४८

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
नाभसयोगाऽध्यायः ॥ ८ ॥

इस प्रकार शालिनीछन्द में ढुण्ढिराज आचार्य ने योगों का युक्तिसंगत फल प्रकट वर्णन किया है। इसलिये पण्डित इसका विचारपूर्वक कोमल उक्ति से फल कहें ॥ ४८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
नाभसयोगाऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ रश्मिजातकाध्यायः ।

येषां नराणां किरणाः प्रसूतौ एकादितः पञ्च भवन्ति यावत् ॥
ते सर्वथा दुःखदरिद्रभाजो नीचप्रिया नीचकुलाः खलाश्च १

जिन मनुष्यों के ग्रहों की किरणें एक से पांच पर्य्यंत होती हैं वह मनुष्य निरन्तर दुःखी, दरिद्र भोग करनेवाले, नीचजनों से प्रीति करनेवाले और नीचकुल में उत्पन्न तथा दुष्टस्वभाववाले होते हैं ॥ १ ॥

पञ्चादितः खेन्दुमिताश्च यावन्मरीचयस्ते जनयन्त्यवश्यम् ॥
नरान्विदेशाभिरतान् सुदीनान् भाग्येनहीनान् प्रतिपालितांश्च २

जिसके पांच से लेकर दश पर्य्यंत किरणें होती हैं वे पुरुष विदेश में वास करनेवाले, दीन और भाग्य से हीन तथा दूसरों से पालित होते हैं ॥ २ ॥

परं दशभ्यस्तिथयस्तु यावच्चे भानवो मानवमल्पकार्थम् ॥
धर्मप्रियं सञ्जनयन्ति नूनं कुलानुरूपं सुखिनं सुवेषम् ३

जिसके दश से अधिक पन्द्रह पर्य्यन्त किरण होती हैं वह थोड़े धन वाला, धर्मबुद्धि, उत्तम वेष, निरन्तर प्रसन्न और अपने कुलानुसार प्रतिष्ठित होता है ॥ ३ ॥

पञ्चेन्दुतो विंशतिरेव यावद्गभस्तयस्ते मनुजं सुशीलम् ॥
कुर्वन्ति सत्कीर्त्तिकरं सुधीरं वंशावतंसं कुशलं कलासु ४

जिसके पन्द्रह से अधिक बीस पर्य्यन्त जो किरणें होती हैं वह मनुष्य उत्तम शील स्वभाववाला, उत्तम कीर्त्तिवाला, धैर्यवान्, अपने कुल-कमल का प्रकाश करनेवाला और शिल्प में चतुर होता है ॥ ४ ॥

यस्य प्रसूतौ च नखा मयूखास्तद्भाग्यरेखा सुहृदां सुखाय ॥
पञ्चाधिकाविंशतिरत्र यावत्तावत्फलाधिक्यमनुक्रमेण ५

जिसके जन्मकाल में बीस किरणें होती हैं उसकी भाग्यरेखा मित्रों को सुख देनेवाली होती है । और पच्चीस रेखा पर्य्यन्त यथाक्रम से उत्तम फल होता है ॥ ५ ॥

यावत्त्रिंशत्संमिताः पञ्चवर्गा येषां सूतौ चेन्मयूखा नराणाम् ॥
भूमीपालप्राप्तसौख्याः प्रधाना नानासंपत्संयुतास्ते भवन्ति ६

जिसके जन्मकाल में तीस तक किरणों का पंचवर्गी बल होता है वे राजा से सुख पानेवाले, मंत्री और अनेक सम्पदाओं से युक्त रहते हैं ॥ ६ ॥

येषां नूनं मानवानां प्रसूतावेकत्रिंशत्संख्यकाश्चेन्मयूखाः ॥
विख्यातास्ते राजतुल्याः प्रधाना नानासेनास्वामिनः संभवन्ति ७

जिसके जन्मकाल में इकतीस किरणें होती हैं वे राजा के समान विख्यात कीर्त्ति और जगत् में प्रसिद्ध तथा अनेक सेनाओं के स्वामी होते हैं ॥ ७ ॥

प्रसूतिकाले किरणा नराणां द्वित्रिप्रमाणा यदि संभवन्ति ॥
नानापुराणामथवा गिरीणां ते स्वामिनो ग्रामशताधिपा वा ८

जिसके जन्मकाल में बत्तीस किरणें होती हैं वह मनुष्य अनेक पुरों का बसानेवाला अथवा पर्वतों का स्वामी व सौ ग्रामों का मालिक होता है ॥ ८ ॥

रामाग्निभिश्चापि युगाग्निभिर्वा करैर्नरस्य प्रसवो यदि स्यात् ॥
क्रमात्सहस्रन्त्रिसहस्रकञ्च ग्रामान् सपातीति वदन्ति केचित् ९

जिसके जन्मकाल में तेंतीस अथवा चौंतीस किरणें होती हैं वह पुरुष क्रम से हजार ग्राम का रक्षक अथवा तीन हजार ग्राम का पालनेवाला होता है अर्थात् तेंतीस किरण हों तो हजार, चौंतीस हों तो तीन हजार ग्रामों का पति जानना ॥ ९ ॥

पञ्चत्रिसंख्यैः खलु यो मयूखैर्जातो भवेन्मण्डलनायकश्च ॥
विलाससत्त्वामलशीलशाली यशोविशेषाधिककोशयुक्तः १०

जिसके जन्मकाल में पैंतीस किरणें होती हैं वह पुरुष मण्डलाधीश राजा होता है तथा विलासयुक्त, पराक्रमी, उत्तमशील स्वभाव, बड़े यशवाला और खजाने से युक्त (खजाञ्ची) होता है ॥ १० ॥

रसाग्निसंख्यैश्च नगाग्निसंख्यैर्जातो मयूखैः खलु यः क्रमेण ॥
ग्रामान्मनुष्यः सतु सार्द्धलक्षं लक्षत्रयं पाति महत्प्रतापात् ११

जिसके जन्मकाल में छत्तीस किरणें होती हैं तो वह डेढ़ लाख ग्रामों का स्वामी अथवा सैंतीस किरणें होती हैं तो वह तीनलक्ष ग्रामों का स्वामी और बड़ा प्रतापी होता है ॥ ११ ॥

यस्य प्रसूतौ किरणप्रमाणमष्टत्रिसंख्यं स भवेन्महौजाः ॥
भूमीपतिर्लक्षचतुष्टयं हि ग्रामान् प्रशास्तीन्द्रसमानसंपत् १२

जिसके जन्मकाल में अड़तीस किरणें होती हैं तो वह बड़ा प्रतापी राजा हो कर चार लक्ष ग्रामों का शासन करता है और इन्द्र के समान सम्पदावाला होता है ॥ १२ ॥

नवत्रिसंख्या जनने मयूखा विख्यातकीर्त्तिर्नृपतिर्भवेत्सः ॥
प्रौढप्रतापाद् गरुडस्वरूपो गर्वोद्धतारातिभुजङ्गमेषु १३

जिसके जन्मकाल में उन्तालीस किरणें होती हैं वह बड़ी कीर्तिवाला प्रसिद्ध राजा होता है और अपने तेज से गर्वयुक्त शत्रुरूप सर्पों का बल तोड़ने में गरुड़ के तुल्य होता है ॥ १३ ॥

खाब्धिप्रमाणैः किरणैः प्रसूतः क्षोणीपतिस्तद्विजयप्रयाणे ॥
भवन्ति सेनागजगर्ज्जितानां प्रतिस्वनाः खे घनगर्ज्जितानि १४

जिसके जन्मकाल में चालीस किरणों का बल होता है वह बड़ा प्रतापी राजा होता है और जब वह विजय के लिये चलता है तब उसकी सेना के हाथियों की गर्जना का शब्द आकाश में मेघों का सा मालूम होता है ।। १४ ।।

मयूखजालं परिसूतिकाले यस्यैकवेदाह्वयकन्नरस्य ॥
द्व्यम्भोधिवेलामलमेखलाया भवेदिलायाः परिपालकः सः १५

जिसके जन्मकाल में इकतालीस किरणों का बल होता है तो वह दो समुद्र-रूपी मेखलावाली पृथ्वी का पालनेवाला होता है ।। १५ ।।

यमलजलधितुल्यो वा गुणाब्धिप्रमाणो
भवति किरणयोगश्चेन्नराणां प्रसूतौ ॥
अतुलबलविलासत्रासितारातिवर्ग्गा-
स्त्रिजलधिवलयायाः पालकास्ते पृथिव्याः १६

जिसके जन्मकाल में बयालीस अथवा तेंतालीस किरणें हों तो वह पुरुष अपने पराक्रम से शत्रुओं को त्रासित करनेवाला, विलासी और तीन समुद्ररूपी कंकण-वाली पृथ्वी का पालक होता है ।। १६ ।।

सूतौ वेदयुगप्रमाणकिरणाश्चेत्सार्वभौमासना
यत्सेनाजलधौ गलन्मदजला दन्तावला शैलताम् ॥
यान्तिच्छत्रविचित्रिताः कमठतां मीनध्वजा मीनतां
नौकात्वं च रथास्तथा युधि रुचिः कल्लोलमालातुलाम् १७

जिसके जन्मकाल में चवालीस किरणें हों तो वह पुरुष समस्त भूमण्डल का राजा होता है तथा उसी के सेनारूपी समुद्र में मदवाले हाथी पर्वत तुल्य, विचित्र छत्र कच्छप तुल्य, ध्वजायें मछली की तुल्य और रथ नौका की तुल्य होते है तथा युद्ध की रुचि लहरियों की बराबर होती है ।। १७ ।।

पञ्चाब्धितश्चेत्परतो भवन्ति गभस्तयो जन्मनि मानवानाम् ॥
ते देवतानामपि दुर्ज्जयाः स्युर्द्वीपान्तरोद्गीतयशो विशेषाः १८

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
रश्मिजातकाध्यायः ॥ ९ ॥

जिसके पैंतालीस या इससे अधिक किरणों का बल हो तो वह पुरुष देवताओं से भी दुर्जय होता है तथा द्वीपान्तरों में विख्यात कीर्तिवाला होता है ॥ १८ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां रश्मिजातकाऽध्यायः ॥ ९ ॥

--:०:--

अथ ग्रहाणां दीप्ताद्यावस्थाफलम्।

दीप्तस्तुङ्गगतः खगो निजगृहे स्वस्थो हिते हर्षितः
शान्तः शोभनवर्गगश्च खचरः शक्तः स्फुरद्रश्मिभाक् ॥
लुप्तः स्याद्विकलः स्वनीचगृहगो दीनः खलः पापयुक्
खेटो यः परिपीडितश्च खचरैः स प्रोच्यते पीडितः १

जो ग्रह अपनी उच्चराशि में बैठा हो उसकी अवस्था दीप्ता है और जो ग्रह अपने घर में बैठा है उसकी अवस्था स्वस्था है अर्थात् सावधान है। जो मित्र के घर में है वह हर्षित है तथा जो शुभग्रह के षड्वर्ग में हो उसकी शान्तावस्था जानिये और जो उदय को प्राप्त है अर्थात् अस्त नहीं है वह शक्तावस्था में है तथा जो अस्त है वह विकल है और नीच राशि में है वह दीन है अर्थात् दुःखित है। जो पापग्रह के साथ बैठा है वह खल है और जो ग्रहों से पीड़ित है वह पीड़ितावस्था में है ॥ १ ॥

दीप्ते प्रतापादतितापितारिर्गलन्मदालंकृतकुञ्जरेशः ॥
नरो भवेत्तन्निलये सलीलं पद्मालयालं कुरुते विलासम् २

जो ग्रह दीप्तावस्था में है वह अपने प्रताप से शत्रुओं को दुःख देनेवाला तथा मद से शोभित हाथियों का स्वामी होता है एवं उसके गृह में लक्ष्मी निरन्तर निवास व विलास करती है ॥ २ ॥

स्वस्थे महद्वाहनधान्यरत्नविशालशालाबहुलत्वयुक्तः ॥
सेनापतिः स्यान्मनुजो महौजा वैरिव्रजावाप्तजयाधिशाली ३

जिसके जन्मकाल में ग्रह स्वस्थावस्था में हो वह पुरुष बहुत वाहनों से सुख पानेवाला, बड़े उत्तम बहुत स्थानोंवाला और धन, धान्य, रत्नों से युक्त, सेना का स्वामी, बड़ा पराक्रमी और शत्रुजनों का विजय करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

हर्षिते भवति कामिनीजनोऽत्यन्तभूषणमणिव्रजवित्तः ॥
धर्म्मकर्म्मकरणैकमानसो मानसोद्भवचयो हतशत्रुः ४

जिसकी कुण्डली में ग्रह हर्षित होता है वह मनुष्य स्त्रीजनों से बहुत सुख भोग विलास करनेवाला, रत्नादि भूषण का धारण करनेवाला और बड़ा धनवान् होता है तथा उत्तम कर्म करनेवाला, धर्म में नियुक्त और शत्रुओं से रहित होता है ॥ ४ ॥

शान्तेऽतिशान्तो हि महीपतीनां मन्त्री स्वतन्त्रो बहुपुत्रमित्रः ॥
शास्त्राधिकारी सुतरां नरः स्यात् परोपकारी सुकृतैकचित्तः ५

जिसके शान्तावस्था में ग्रह बैठा है वह बड़ा शान्तियुक्त, राजाओं का मंत्री, स्वतंत्र, बहुत पुत्र और मित्रोंवाला, शास्त्रों का पढ़नेवाला, बहुत परोपकारी तथा सुकृत में चित्त लगानेवाला होता है ॥ ५ ॥

शक्तेऽतिशक्तः पुरुषो विशेषात् सुगन्धमाल्याभिरुचिः शुचिश्च ॥
विख्यातकीर्त्तिः सुजनप्रसन्नो जनोपकर्त्तारिजनप्रहर्त्ता ६

जिसके शक्तावस्था में ग्रह बैठा हो वह विशेषकर सब कार्यों के करने में समर्थ, सुगन्ध माल्यादिकों में रुचि रखनेवाला, पवित्रआत्मा, विख्यातकीर्ति, सुजनों में प्रसन्न होनेवाला, जनों का उपकार करनेवाला और शत्रुजनों का मारनेवाला होता है ॥ ६ ॥

हतबलो विकले मलिनः सदा रिपुकुलप्रबलश्च गलन्मतिः ॥
खलसखः स्थलसञ्चलितो नरः कृशतरः परकार्य्यगतादरः ७

जिसके विकलावस्था में ग्रह बैठा हो वह निर्बल, मलिन वेष, सदा प्रबल शत्रुजनोंवाला, निर्बुद्धि, नीचों का संग करनेहारा, स्थल में घूमनेवाला, बहुत दुर्बल और पराये कार्य में निरादरवाला होता है ॥ ७ ॥

दीनेऽतिदीनोपचयेन तप्तः सम्प्राप्तभूमीपतिशत्रुभीतिः ॥
सन्त्यक्तनीतिः खलु हीनकान्तिः स्वजातिवैरं हि नरः करोति ८

जिसके दीनावस्था में ग्रह बैठा हो वह दीन, अवनति से दुःखित, राजा तथा शत्रुओं से भयभीत, नीतिरहित और हीनकांति होकर अपने जनों से वैर का करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

खलाभिधाने हि खलैः कलिः स्यात्कान्तातिचिन्तापरितप्तचित्तः ॥
विदेशयानन्धनहीनता च प्रकोपता लुप्तमतिप्रकाशः ९

जिसके खलावस्था में ग्रह बैठा हो वह खलों से लड़ाई करनेवाला, स्त्री की चिंता से व्याकुल चित्त, परदेश में भ्रमण करनेवाला, धनहीन, क्रोधी तथा प्रकट निर्बुद्धि होता है ॥ ९ ॥

पीडिते भवति पीडितः सदा व्याधिभिर्व्यसनतोऽपि नितान्तम् ॥
याति सञ्चलनतां निजस्थलाद्व्याकुलत्वनिजबन्धुचिन्तया १०

इति ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्थाफलम् ।

जिसके पीड़ितावस्था में ग्रह बैठा हो वह सदा व्याधियों से पीड़ित, व्यसनों से नितान्त दुःखी, परदेश को जानेवाला और अपने बंधुवों की चिंता से व्याकुल आत्मा होता है ॥ १० ॥

इति ग्रहों की दीप्ताद्यवस्थाओं का फल ।

अथ स्थानादियुक्तग्रहफलानि ।

परां विभूतिञ्जनयन्त्यवश्यं बलाधिकत्वम्महतः प्रवृद्धिम् ॥
नानाधनं कौशलगौरवादि कुर्य्यादलं स्थानबलोपपन्नः १

जिसके जन्मकाल में स्थानबल से ग्रह सम्पन्न हो तो वह परम विभूति को अवश्य देता है और अधिक बल तथा महत्त्व की वृद्धि करता है और नाना प्रकार के धनों को देता हुआ अनेक कारीगरियों में प्रवीण करता है ॥ १ ॥

आशाबलं यस्य भवत्प्रकृष्टं खेटाःस्वकाष्ठां नियमेन नीत्वा ॥
विशिष्टलाभं कुरुते दशायां पुंसां निजद्रव्यविमिश्रितं हि २

जिस ग्रह का दिशाबल बड़ा हो वह ग्रह अपनी दिशा को नियम से प्राप्त होकर बड़े भारी लाभ को करता है और पुरुषों को अपनी दशा में अपनी द्रव्य के लगाने से बहुत धन दिलाता है ॥ २ ॥

शत्रुक्षयं भूगजवाजिवृद्धिं शौर्य्यञ्च रत्नाम्बरसम्पदञ्च ॥
लीलाविलासंविमलाञ्चकीर्त्तिं कुर्य्याद् ग्रहः कालबलाधिशाली ३

जो ग्रह कालबल से युक्त हो वह शत्रुओं को क्षय करता हुआ पृथ्वी, हाथी

और घोड़ों की वृद्धि करता है तथा शूरता, रत्न, कपड़े और संपदा को देता है एवं अनेक लीला-विलासों को करता हुआ निर्मल कीर्त्ति को देता है ॥ ३ ॥

आचारशौचशुभसत्ययुताः सुरूपा-
स्तेजस्विनः कृतविदो द्विजदेवभक्ताः ॥
पुष्पाम्बरोत्तमविभूषणसादराश्च
सौम्यग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवन्ति ४

जिसके शुभग्रहों से संयुक्त होकर बली ग्रह हो तो वह पुरुषों को आचार-विचार से युक्त, पवित्रता तथा शुभ सत्य से युक्त करता हुआ सुन्दरता को देता है एवं तेजस्वी, वेद वेदांतों का जाननेवाला, देवता व ब्राह्मणों का भक्त करता है और उत्तम माला, उत्तम वस्त्र तथा अनेक आभूषणों से आदर युक्त करता है ॥ ४ ॥

लुब्धाः कुकर्म्मनिरता निजकार्य्यनिष्ठाः
साधुद्विषः स्वकुलहाश्च तमोगुणाढ्याः ॥
क्रूरस्वभावनिरता मलिनाः कृतघ्नाः
पापग्रहैर्बलयुतैः पुरुषा भवन्ति ५

जिनके पापग्रहों से युक्त ग्रह होते हैं वे पुरुष लोभी, कुकर्म में निरत, अपने कार्य के साधनेवाले, साधुवों से द्रोह करनेवाले, अपने वंश के नाश करनेवाले, तमोगुणी, क्रूरस्वभाव, मैले-कुचैले और कृतघ्नी होते हैं ॥ ५ ॥

द्वौ वा त्रयो वा बलिनो भवन्ति फलप्रदानत्वमिति प्रकल्प्यम् ॥
मन्दारसौम्येज्यसितेन्दुसूर्य्या यथोत्तरं स्युर्बलिनो निसर्गात् ६

जिसके जन्मसमय में दो अथवा तीन ग्रह बली होवें उनके फलप्रदान की कल्पना करना चाहिये । शनैश्चर, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा और सूर्य ये क्रम से स्वभाव ही से उत्तरोत्तर बली होते हैं ॥ ६ ॥

क्वचिद्राज्यं क्वचित्पूजां क्वचिद्द्रव्यं क्वचिद्यशः ॥
ददाति खेचरश्चित्रं चेष्टावीर्य्यसमन्वितः ७

जिसके जन्मसमय में चेष्टा व वीर्य से संयुक्त ग्रह होता है वह कहीं राज्य, कहीं पूजा, कहीं द्रव्य और कहीं यश को देता है ॥ ७ ॥

दुष्टप्रदः सौम्यनिरीक्षितश्चेद् दुष्टम्फलन्नो सकलन्ददाति ॥
क्रूरेक्षितः सत्फलदोऽपि चैवं विचारणेयं किल दृग्बलस्य ८
इति स्थानादियुक्तग्रहफलानि ।

यदि शुभग्रहों से देखा हुआ दुष्टफल का देनेवाला ग्रह हो तो वह संपूर्ण दुष्टफल को नहीं देता है और यदि क्रूरग्रहों से देखा हुआ ग्रह होवे तो अच्छे फल को देनेवाला भी अशुभ फल देता है निश्चयकर दृग्बल का ऐसा विचार करना चाहिये ॥ ८ ॥

इति स्थानादियुक्तग्रहफल ।

अथ सूर्ययोगाध्यायः ।

खेचरादिनमणेर्व्विधुवर्जं द्वादशे च धनभे ह्युभये वा ॥
वोशिवेश्युभयचर्य्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इतियोगाः १

सूर्य से बारहें तथा दूसरे अथवा इन दोनों स्थानों में चंद्रमा को छोड़कर ग्रह बैठे हों तो क्रम से वोशियोग, वेशियोग और उभयचरीयोग होते हैं इनको पुरातन पंडितों ने कहा है ॥ १ ॥

स्यान्मन्ददृष्टिर्बहुकर्म्मकर्त्ता पश्यत्यधश्चोन्नतपूर्व्वकायः ॥
असत्यवादी यदि वोशियोगो भवेद्दयालुर्मनुजस्य यस्य २

जिसके जन्मकाल में वोशियोग होता है वह मंददृष्टि, बहुत कर्मों का करनेवाला, नीचे को देखनेवाला, ऊँचे शरीरवाला, असत्यवादी और दयालु होता है ॥ २ ॥

चेत्संभवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्व्वकायः ॥
स्याद्वाग्विलासालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टेः ३

जिसके जन्मसमय में वेशियोग होता है वह पुरुष दयालु, मोटे शरीरवाला, वाग्विलास और आलस्य से युक्त तथा तिरछी निगाहवाला होता है ॥ ३ ॥

सर्वंसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः
सत्त्वाधिकः समशरीरविराजमानः ॥
नात्युच्चकः सरलदृक्प्रबलामलश्री-
र्युक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ४

जिसके जन्मकाल में उभयचरी योग होता है वह सबके वचनों का सहनेवाला, अत्यन्त स्थिर, बड़ी समृद्धिवाला, सतोगुणी, समान शरीरवाला, बहुत ऊँचा नहीं होता है और सरलदृष्टिवाला, बड़ा बली और उत्तम लक्ष्मी से युक्त होता है ॥ ४ ॥

सूर्य्यस्य वीर्यात्खचरानुसाराद्राश्यंशयोगात्प्रविचार्य्यसर्व्वम् ॥
न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ५

इति सूर्ययोगाध्यायः ।

मनुष्यों के जन्मकाल में सूर्य के बल से और ग्रहों के अनुसार राशि-अंशों के योग से न्यून, समान और अधिक संपूर्ण फल को विचारकर विद्वानों को कहना चाहिये ॥ ५ ॥

इति सूर्ययोगाध्याय ।

—:०:—

अथ चन्द्रयोगाऽध्यायः ।

द्विजपतेर्धनेगः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितैः ॥
दुरधराख्चरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदिता महदादरात् १

जिसके जन्मसमय में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में सूर्य को छोड़कर ग्रह बैठे हों तो सुनफायोग होता है और जो बारहें स्थान में सूर्य को छोड़कर ग्रह बैठे हों तो अनफायोग होता है तथा दूसरे और बारहें (दोनों) घरों में सूर्य को छोड़कर ग्रह बैठे हों तो दुरधरायोग होता है। ये योग मुनिवरों ने बड़े आदर से कहे हैं ॥ १ ॥

निशाकराज्जन्मनि खेचरेन्द्रा धनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः ॥
वदन्ति केमद्रुमनामयोगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् २

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से दूसरे और बारहें कोई ग्रह न हो तो वह केमद्रुम योग होता है । यह योग निश्चयकर लक्ष्मी का वियोग करता है ॥ २ ॥

निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विशदकीर्त्तियुतो मतिमान् सुखी ॥
ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृती कृती ३

जिसके जन्मकाल में सुनफायोग होता है वह मनुष्य अपनी भुजाओं से मान और उन्नति को प्राप्त, बड़ी कीर्त्तिवाला, बुद्धिमान्, सुखी, राजा का मंत्री, पुण्यात्मा और बड़ा प्रवीण होता है ॥ ३ ॥

उदारमूर्त्तिर्गुणकीर्त्तिशाली कन्दर्पकेलिः शुभवाग्विलासः ॥

सद्वृत्तयुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ४

जिसके जन्मकाल में अनफायोग होता है वह उदारमूर्त्ति, बड़ा गुणी, कीर्त्ति-वाला, कामक्रीड़ा से संयुक्त, प्रियवचन बोलनेवाला व अच्छे आचरणवाला, हमेशा विनीत और समर्थ होता है ॥ ४ ॥

द्रविणवाहनवाहवसुन्धरासुखयुतं सततं कुरुते नृपम् ॥
दुरधरातितरां जितवैरिणं सुनयनानयनांचललालसम् ५

जिस मनुष्य के जन्मसमय में दुरधरायोग होता है वह धन और वाहनोंवाला, पृथ्वी का स्वामी, सदा सुखों से युक्त, लड़ाई में वैरियों को जीतनेवाला और अनेक सुन्दरियों के हावभाव-कटाओं की लालसावाला होता है ॥ ५ ॥

विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी ॥
कांतासुहृत्सूनुधनैर्विहीनः केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोपि ६

जिस मनुष्य के केमद्रुमयोग पड़ता है वह उलटी वृत्तिवाला, मलिन, कुत्सित वेष, पराया कार्य करनेवाला, विदेश में वास करनेवाला तथा स्त्री, पुत्र, मित्र और धन से विहीन होता है चाहे राजा का पुत्र भी क्यों न हो ॥ ६ ॥

केंद्रादिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति ॥
विज्ञानमानोन्नतिनैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ७

जो चन्द्रमा केन्द्र में बैठा हो तो विज्ञान, मान, उन्नति और निपुणता को देता है और केमद्रुमयोग भंग करता है। जो सूर्य से चन्द्रमा केन्द्र में हो तो अल्पभाग्य, सूर्य से चन्द्रमा पणफर राशि में हो तो मध्यम भाग्य और जो सूर्य्य से आपोक्लिम राशि में चन्द्रमा हो तो उत्तम भाग्यवाला होता है ॥ ७ ॥

प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः ॥
नरं चिरंजीवितसार्व्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा ८

जिसके जन्म समय में चन्द्रमा को सम्पूर्ण ग्रह देखते हों तो वह पुरुष बहुत काल जीनेवाला और चक्रवर्ती राजा होता है और केमद्रुमयोग को शीघ्र ही भंग कर देता है ॥ ८ ॥

चतुर्षु केंद्रेषु भवंति खेटा दुष्टोपि केमद्रुमयोग एषः ॥
विहाय केमद्रुमतां नितान्तं कल्पद्रुमः स्यात्किल सत्फलाप्त्यै ९

जिसके जन्मकाल में चारों केन्द्रों में ग्रह बैठे हों तो केमद्रुमयोग को भंग करके कल्पद्रुमयोग हो जाता है वह कल्पद्रुमयोग बड़े अच्छे फलों को देता है ॥ ९ ॥

क्षितिसुतयुतजीवे सूतिकाले तुलायां
विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम् ॥
विधुरपि यदि शेषैर्नेक्षितो मेषवर्ती
जनयति नृपतीन्द्रं हन्ति केमद्रुमञ्च १०

इति सुनफाऽनफादियोगाध्यायः।

जो बृहस्पति मंगल के साथ तुलाराशि में बैठा हो और सूर्य्य कन्याराशि में बैठा हो तथा मेषराशि में चन्द्रमा बैठा हो और शेषग्रहों से न देखा जाता हो तो केमद्रुमयोग भंग होता है और वह पुरुष राजाओं का राजा होता है ॥ १० ॥

इति सुनफाऽनफादियोगाध्यायः।

—:o:—

अथ प्रव्रज्याध्यायः।

येषां सूतौ राजयोगा नराणां प्रव्रज्या चेत्तापसास्ते भवेयुः ॥
वक्ष्ये संक्षेपेण तांस्तापसानां योगोत्पन्नान्संमतान्प्राक्तनानाम् १

जिस पुरुष के प्रव्रज्यायोग पड़ता है वह राजा भी हो तो भी राज्यत्याग करके तपस्वी हो जाता है। पूर्वाचार्यों की संमति से उन तपस्वियों के योगों को संक्षेप करके वर्णन करता हूं॥ १॥

ग्रहैश्चतुर्भिर्यदि पञ्चभिर्वा षड्भिस्तथैकालयसंस्थितैश्च ॥
नश्यंति सर्वे खलु राजयोगाः प्रव्राजिको योग इति प्रदिष्टः २

एक स्थान में चार ग्रह अथवा पांच ग्रह अथवा छः ग्रह स्थित हों तो समस्त राजयोगों को भंग करके प्रव्राजिक (संन्यास) योग होता है ॥ २ ॥

अन्यग्रहालोकनवर्जितश्चेज्जन्मेश्वरो नैव शनिं प्रपश्येत् ॥
मन्दोपि नो जन्मपतिं विसत्त्वं दीक्षाविचक्षाप्रचुरो नरः स्यात् ३

और ग्रहों की दृष्टि से रहित जन्मलग्न का स्वामी शनैश्चर को न देखता हो और बलरहित लग्नेश को शनि भी न देखता हो तो वह संन्यास की दीक्षा पाने वाला होता है॥ ३॥

जन्माधिराजो रविजस्त्रिभागे कुजार्कजांशेर्कजवीक्षितश्च ॥
करोति जातं कुटिलं कुशीलं पाखण्डिकं मण्डनतत्परं वा ४

जन्मलग्न का स्वामी शनैश्चर के द्रेष्काण में बैठा हो अथवा मंगल या शनैश्चर के नवांश में बैठा हो और शनैश्चर देखता भी हो तो वह पाखंडी, कुटिल, दुःशील और केवल संन्यासी का वेषधारी होता है ॥ ४ ॥

होराशीतकरामरेन्द्रसचिवाः सौरेण संवीक्षिताः
पुण्यस्थे सुरमंत्रिणि प्रणयकृत्तीर्थाटने मानवः ॥
कोणे पुण्यग्रहाश्रितेन्यखचरैर्नैवेक्षिते दीक्षितः
स्यान्नूनं यदपि प्रसूतिसमये सद्राजयोगोद्भवः ५

जो लग्न, बृहस्पति और चन्द्रमा को शनैश्चर देखता हो और नवम भाव में बृहस्पति बैठा हो तो वह तीर्थाटन करने में प्रीतिवाला होता है तथा त्रिकोण (नवें-पांचवें) में कोई शुभग्रह बैठा हो तथा और कोई ग्रह उसको न देखता हो तो यद्यपि जन्मकाल में राजयोग में भी पैदा हुआ हो तो भी वह अवश्य संन्यासी होता है ॥ ५ ॥

प्राव्राजिकोर्कादिबलक्रमेण वैखानसः खर्परधृक् च लिङ्गी ॥
दंडी यतिश्चक्रधरश्च नग्नस्तत्प्रच्युतो जन्मपतौ जिते स्यात् ६

सूर्य्य आदि ग्रहों के बल के क्रम से निम्नलिखित संन्यासभेद होते हैं। सूर्य बली हो तो वैखानस, चन्द्रमा बली हो तो खर्पर (कपाली) संन्यासी, मंगल बली हो तो लिंगी (गेरुए वस्त्रादि धारण करनेवाला) संन्यासी, बुध बली हो तो दण्डी संन्यासी, शुक्र बली हो तो चक्रधारी परमहंस और शनैश्चर बली हो तो नग्न वेष होता है तथा लग्नेश निर्बल हो तो उस संन्यासपद से प्रच्युत हो जाता है ॥ ६ ॥

एकस्थानस्थितैः खेटैः सर्वैश्च बलसंयुतैः ॥
निरंबरा निराहारा योगमार्गपरायणाः ७

जो एक स्थान में सब ग्रह बैठे हों और बली हों तो वे नग्न वेष, निराहार और योगमार्ग में तत्पर होते हैं ॥ ७ ॥

एकस्थाने खेचराणां चतुर्णां योगश्चेत्स्यान्मानवानां प्रसूतौ ॥

ते स्युर्भूमीपालवंशेपि जाताः कांतारांतर्वासिनः सर्वथैव ८

जिनके जन्मकाल में चार ग्रह एक स्थान में बली होकर बैठे हों तो राजा के वंश में भी उत्पन्न हों तो भी वे वन में निवास करनेवाले होते हैं ॥ ८ ॥

पञ्चखेचरपतिर्यदि सूतौ भूपतेरपि सुतः सच नित्यम् ॥
कन्दमूलफलभक्षणचित्तोऽत्यन्तशान्तिविजितेन्द्रियशत्रुः ९

जिसके जन्मकाल में पांच ग्रह एक स्थान में बैठे हों तो राजा का पुत्र भी हो तो भी कन्दमूल-फलाहार करनेवाला और शान्त चित्त तथा इन्द्रियों का जीतने वाला होता है ॥ ९ ॥

एकत्र षण्णां गगनेचराणां प्रसूतिकाले मिलनं यदि स्यात् ॥
ते केवलं शैलशिलातलेषु तिष्ठन्ति भूपालकुलेषु जाताः १०

जो जन्मकाल में छः ग्रह एकराशि में बैठे हों तो वह पुरुष राजकुल में भी उत्पन्न हो तो भी पर्वतों में निवास करनेवाला होता है ॥ १० ॥

प्राव्राजितानामथ भूपतीनां योगद्वयञ्चेत्प्रबलम्प्रसूतौ ॥
फलं विरुद्धं ह्यनुभूयपूर्व्वं ततो व्रजेद्राजपदाधिकारम् ११

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
प्रव्रज्यायोगाध्यायः ॥ १० ॥

प्रव्रज्यायोग और राजयोग दोनों हों तो पहले तपस्वी वेष धारण करके फिर भी राज्य को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
प्रव्रज्यायोगाध्यायः ॥ १० ॥

अथ रिष्टाध्यायः ।

रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्माद्रिष्टमात्रम्प्रवच्मि ॥
यस्याभावे साधितायुःप्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्सम्भवेत्सर्व्वथैव १

अरिष्ट के आधीन मनुष्यों की आयुर्दाय होती है इस कारण से हम पहिले अरिष्ट योगमात्र वर्णन करते हैं जिसके अरिष्टयोग नहीं होता है उसकी आयु साधन प्रमाण दीर्घ होती है ॥ १ ॥

भौमालयेऽर्कारशनीन्दुदृष्टे गृहेऽष्टमे चित्रशिखण्डिसूनुः ॥
अदृष्टमूर्त्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः २

जिसके अष्टमभाव में मंगल का घर (मेष-वृश्चिक) हो और उसमें बृहस्पति बैठा हो और उसको सूर्य्य, मंगल, चन्द्रमा और शनैश्चर देखते हों तथा लग्न को शुक्र भी न देखता हो तो वह अल्पजीवी होता है ॥ २ ॥

षष्ठेऽष्टमे वापि चतुष्टये वा विलोमगामी कुजमन्दिरस्थः ॥
बलान्वितेनावनिजेनदृष्टो वर्षैस्त्रिभीरिष्टकरः शनिः स्यात् ३

छठे या आठवें अथवा केन्द्र में वक्री होकर शनैश्चर बैठा हो और वह घर मङ्गल का हो तथा बली होकर मङ्गल शनैश्चर को देखता भी हो तो तीन वर्ष में अरिष्ट होता है ॥ ३ ॥

चन्द्रार्कयुग्जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः ॥
मासेन मन्दावनिसूनुसूर्य्याश्छिद्रेरिगेहाश्रितत्तासमेताः ४

जिसके जन्मकाल में सूर्य्य और चन्द्रमा के साथ शनि बैठा हो तो नवें वर्ष में मृत्युयोग होता है तथा शनैश्चर, मङ्गल और सूर्य्य ये तीनों शत्रुभवन में या अष्टमभाव में इकट्ठे बैठे हों तो एक मास में मृत्यु होती है ॥ ४ ॥

एकोऽपि पापोष्टमगोरिगेहे पापेक्षितोऽब्देन शिशुन्निहन्यात् ॥
सुधारसो यद्यपि येन पीतः किमत्र चित्रं नहि येन पीतः ५

एक भी पापग्रह शत्रु के गृह में बैठा होकर अष्टम भाव में पड़ा हो और उसको पापग्रह देखता भी हो तो जिसने अमृत भी पान किया हो उसकी भी मृत्यु हो जाती है जिसने नहीं पिया है उसका तो कहना ही क्या है ॥ ५ ॥

सूर्य्येन्दुगेहे दनुजेन्द्रमन्त्री व्ययाष्टमारिस्थितसौम्यखेटैः ॥
सर्व्वैः प्रदृष्टः खलु षडभिरब्दैर्ज्जातस्य जन्तोर्वितनोति रिष्टम् ६

जिसके जन्मकाल में सूर्य्य या चन्द्रमा के घर में शुक्र बैठा हो और अष्टम भाव में अथवा बारहवें भाव में बैठे हुए शुभग्रह उसको देखते हों तो उसको छठे वर्ष में अरिष्टयोग होता है ॥ ६ ॥

सोमस्य सूनुर्य्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात् ॥
चन्द्रेण दृष्टोऽब्दचतुष्टयेन जातस्य जन्तोः प्रकरोति रिष्टम् ७

जन्मलग्न से छठे या आठवें कर्क में बुध बैठा हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो चौथे वर्ष में अरिष्ट होता है ॥ ७ ॥

केतूदयेभे प्रभवेच्च यस्मिन् तस्मिन्प्रसूतिर्य्यदि यस्य जन्तोः ॥
स्यात्तस्य मासद्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदन्ति पूर्वे ८

जिस नक्षत्र में केतु का उदय आकाश में हो उसी नक्षत्र में बालक का जन्म हो तो वह बालक दो महीने में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। निश्चय करके यह पूर्वाचार्यों का सम्मत है ॥ ८ ॥

मेषूरणेऽर्को धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कात्मजधामसंस्थः ॥
पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ९

जो जन्मलग्न से दशमभाव में, जिसके मंगल के घर में अथवा शनैश्चर के घर में सूर्य बैठा हो और सम्पूर्ण पापग्रह उसे देखते हों तो वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

लग्ने भवन्ति द्रेष्काणाः शृंखलापाशपक्षिणाम् ॥
सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्न संशयः १०

जो जन्मलग्न में पाशद्रेष्काण और शृंखलाद्रेष्काण अथवा पक्षिद्रेष्काण हों और उनमें पापग्रह बैठे हों तो सातवें वर्ष में मरणयोग होता है इसमें संशय नहीं है ॥ १० ॥

राहुर्भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्त्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत् ॥
करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदन्ति वा षोडशभिश्च केचित् ११

जन्मकाल में जो केन्द्र में राहु बैठा हो और उसको क्रूरग्रह देखते हों तो दश-वर्ष में मृत्युयोग होता है। कोई आचार्य कहते हैं कि सोलहें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ११ ॥

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्राः पापास्त्रिकोणे यदि जन्मलग्नात् ॥
क्रूरेक्षितास्ते निधनं विदध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलप्रदृष्टाः १२

जो लग्न से छठवें और आठवें शुभग्रह बैठे हों और पापग्रह त्रिकोणराशि में अर्थात् नवें पांचवें स्थान में बैठे हों और उनको क्रूर तथा पापग्रह देखते हों तो आठवें वर्ष में मृत्युयोग जानना ॥ १२ ॥

सूतिकाले भवेच्चन्द्रः षष्ठो वाष्टमसंस्थितः ॥
बालस्य कुरुते सद्यो मृत्युं पापविलोकितः १३
शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम् ॥
न्यूनाधिकत्वे सुधिया विधेयास्त्रैराशिकैर्नैवविनिश्चयोयम् १४

जिसके जन्मलग्न से छठवें अथवा आठवें चन्द्रमा बैठा हो और उसको पापग्रह देखते हों तो उस बालक की मृत्यु शीघ्र ही होती है ॥ १३ ॥ तथा शुभग्रह और पापग्रह दोनों उस चन्द्रमा को देखते हों तो चौथे वर्ष में मृत्यु जानिये और जो शुभग्रह और पापग्रहों की दृष्टि में न्यूनाधिक हो तो त्रैराशिकगणित से बुद्धिमान् को न्यूनाधिक वर्षों का विचार करना चाहिये ॥ १४ ॥

धनांतगैर्वाऽरिमृतिस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा ॥
क्रूरग्रहैर्योजननं प्रपन्नः षष्ठेष्टमे मासि मृतिं प्रयाति १५

जिसके जन्मकाल में क्रूरग्रह दूसरे और बारहें तथा छठे–आठवें अथवा नवें-आठवें अथवा छठे और बारहवें स्थान में बैठे हों तो छठे अथवा आठवें महीने में उसकी मृत्यु होती है ॥ १५ ॥

षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्रा विलोमगैः पापखगैः प्रदृष्टाः ॥
शुभैरदृष्टा यदि ते भवन्ति मासेन नूनं निधनं तदानीम् १६

जन्म से छठे और आठवें जो शुभग्रह बैठे हों तथा उनको वक्री पापग्रह देखते हों और कोई शुभग्रह भी न देखता हो तो निश्चय करके एकमास में उसकी मृत्यु होती है ॥ १६ ॥

विलग्नजन्माधिपती भवेतामस्तङ्गतावष्टरिपुव्ययस्थौ ॥
जातस्य जंतोर्मरणप्रदौ तौ वदन्ति राशिप्रमितैर्हिवर्षैः १७

जन्मलग्न का स्वामी और जन्मराशि का स्वामी ये दोनों अस्त होकर छठे अथवा बारहें स्थान में बैठे हों तो जिस राशि में हों उसी राशि की संख्या के तुल्य वर्षों में मरण योग होता है ॥ १७ ॥

होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टश्चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः ॥
जन्मेश्वरस्तन्निधने दिनेशः शुक्रेक्षितोऽब्दैर्भवनप्रमाणैः १८

अष्टम स्थान में स्थित लग्नेश को पापग्रह देखते हों तो वह चतुर्थवर्ष में मृत्यु-

कारक होता है। जन्मलग्न का स्वामी जिस स्थान में हो उससे आठवें स्थान में सूर्य स्थित हो और शुक्र उसको देखता हो तो राशि की तुल्य संख्या वाले वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है॥ १८॥

होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य॥
मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापान्वितो रंध्रगृहाश्रितश्च १९

जिसके जन्मलग्न का स्वामी पापग्रहों के साथ सप्तम स्थान में बैठा हो तो उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है और इसी रीति से जन्मलग्नेश पापयुक्त हो अष्टमभाव में बैठा हो तो एक मास में मृत्यु होती है॥ १९॥

युक्तो भवेदारदिवाकराभ्यां निशाकरश्चारुखगैर्न दृष्टः॥
स्वसूनुगेहोपगतो विनाशं करोति वर्षे नवमेऽर्भकस्य २०

सूर्य्य और मङ्गल के साथ चन्द्रमा पञ्चम स्थान में बैठा हो और उसको शुभग्रह न देखते हों तो नवें वर्ष में मृत्युकारक होता है॥ २०॥

लग्नास्तरंध्रांत्यगते शशांके पापान्विते सौम्यग्रहैरदृष्टे॥
केन्द्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति २१

जो चन्द्रमा लग्न या सप्तम में अथवा अष्टम या बारहें घर में पापग्रहों के साथ बैठा हो और उसको शुभग्रह न देखते हों और चारों केन्द्रों में भी कोई शुभग्रह न बैठा हो तो उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है॥ २१॥

रंध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात्॥
कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति यः प्रसूतः २२

सम्पूर्ण पापग्रह अष्टम स्थान में अथवा चारों केन्द्रों में बैठे हों और क्षीण चन्द्रमा लग्न में बैठा हो तो शीघ्र ही मृत्यु होती है॥ २२॥

लग्ने कुलीरेऽप्यथवालिसंगे खलग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः॥
सौम्याः परार्द्धे खलु वज्रमुष्टियोगोयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम् २३

कर्क या वृश्चिक लग्न हो और पापग्रह पूर्वदल (लग्न से सप्तम तक) में बैठे हों और शुभग्रह परदल (सप्तम से बारहवें पर्यन्त) में बैठे हों तो वह वज्रमुष्टिनामा योग अरिष्टकारक होता है॥ २३॥

व्ययारि रंध्रेषु शुभाभिधानास्त्रिकोणकेंद्रेषु भवंति पापाः॥

सरोजबंधोरुदये प्रसूतिर्यस्यान्यलोकं त्वरया स याति २४

जो लग्न से छठे, आठवें और बारहें शुभग्रह बैठे हों और पापग्रह त्रिकोण में और केन्द्र में बैठे हों और सूर्य्य के उदयकाल में जन्म हो तो वह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ २४ ॥

सौरस्यालयसंस्थो देवगुरुर्निधनभावगो लग्नात् ॥
पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशेह्नि तुल्यः स्यात् २५

मकर या कुंभ का बृहस्पति लग्न से अष्टमभाव में बैठा हो और पापग्रह लग्न को देखते हों तो ग्यारहें दिन उसकी मृत्यु होय ॥ २५ ॥

रन्ध्राम्बुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापद्वयमध्ययाते ॥
यस्य प्रसूतिः स तु याति कामं यमस्य धाम प्रवदन्ति पूर्वे २६

सम्पूर्ण ग्रह चौथे, सातवें और आठवें स्थान में बैठे हों और चन्द्रमा दो पापग्रहों के मध्य में बैठा हो तो उसका शीघ्र ही मरण होता है ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ २६ ॥

संध्याद्वये भांत्यगताश्च पापाश्चंद्रस्य होरा यदि जन्मकाले ॥
चतुर्षु केन्द्रेषु शशांकपापाः स याति बालः किल कालगेहम् २७

प्रातःकाल अथवा सायंकाल जिसका जन्म हो और पापग्रह राशि के अन्तभाव में बैठे हों और चन्द्रमा के होरा में जन्म हो तथा चारों केन्द्रों में चन्द्रमा पापग्रहों के साथ हो तो वह बालक मृत्यु को प्राप्त होता है ॥ २७ ॥

स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापेक्षिताः साधुखगैर्न दृष्टाः ॥
करोति रिष्टं त्वरयार्भकस्य साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् २८

जो लग्न से सातवें तथा आठवें पापग्रह बैठे हों और उनको कोई शुभग्रह न देखते हों और पापग्रह देखते हों तो वह मातासमेत बालक को अरिष्ट करते हैं ॥ २८ ॥

निजोपरागे त्वशुभान्वितेन्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतोऽष्टमस्थः ॥
ततोजनन्या सहबालकस्य मृत्युस्तथार्के सति शस्त्रघातः २९

जो चन्द्रमा अपने ग्रहण के समय में पापग्रहों से युक्त होकर जन्मलग्न में बैठा हो और मङ्गल अष्टमस्थान में बैठा हो तो मातासहित बालक का मरण होता है

तथा जो सूर्य्यग्रहण के समय में पापसंयुक्त होकर लग्न में बैठा हो और भौम अष्टम में हो तो शस्त्रघात से मृत्यु होती है ॥ २९ ॥

भूमीसुते वार्कसुते विलग्ने भानौ स्मरस्थानगतेऽन्यथा वा ॥
युक्ते तयोरन्यतमेन चन्द्रे चिरेण मृत्युः परिवेदितव्यः ३०

जिसके जन्मकाल में मङ्गल या शनैश्चर लग्न में बैठे हों और सूर्य्य सप्तमभाव में बैठा हो अथवा सूर्य्य लग्न में हो और मंगल तथा शनैश्चर सप्तम में बैठे हों और चन्द्रमा अन्य स्थान में बैठा हो तो थोड़े काल में मृत्युयोग होता है ॥३०॥

पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते ॥
केन्द्रेषु सौम्या न भवंति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ३१

पापग्रह लग्न में और अष्टमभाव में बैठे हों और क्षीणचन्द्रमा बारहें भाव में हो और केन्द्र में कोई शुभग्रह भी न बैठे हों तो थोड़े ही काल में बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३१ ॥

त्रिकोणकेन्द्रेषु भवंति पापाः शुभग्रहालोकनवर्जिताश्चेत् ॥
लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरे रिष्टसमुद्‌गमः स्यात्३२

जो केन्द्र और त्रिकोण में पापग्रह बैठे हों और उन पापग्रहों को कोई शुभग्रह भी न देखते हों और लग्न में सूर्य्य या चन्द्रमा बैठा हो तो भी थोड़े ही काल में अरिष्ट (रोग) होता है ॥ ३२ ॥

भानुभानुतनयोशनसः स्युश्चेत्प्रसूतिसमये खलयुक्ताः ॥
यद्यपीन्द्रगुरुणा परिदृष्टारिष्टदा तनुभृतां नवमेऽब्दे ३३

जिसके जन्मकालमें सूर्य्य, शनैश्चर और शुक्र ये तीनों पापग्रह के साथ बैठे हों और बृहस्पति यद्यपि इनको देखता भी हो तो भी नवें वर्ष में रोग की उत्पत्ति करते हैं ॥ ३३ ॥

कामिनीभवनगस्तुहिनांशुर्लग्नगो मृतिपतिः शनिदृष्टः ॥
रिष्टदो नवसमाभिरीरितो जातकज्ञमुनिभिः पुरातनैः ३४

जिसके चन्द्रमा सप्तमभाव में बैठा हो और अष्टमभाव का स्वामी लग्न में बैठा हो और उसको शनैश्चर देखता हो तो नवें वर्ष में अरिष्ट होता है यह जातक जानने वाले प्राचीन मुनिजनों ने कहा है ॥ ३४ ॥

दृष्टे रिष्टे नाप्रदृष्टेस्य काले प्रालेयांशौ स्वालयं वा विलग्नम् ॥
वीर्योपेते संगते पापदृष्टे शक्त्यायुक्ते मृत्युकालोऽब्दमध्ये ३५

जिसकी कुण्डली में रिष्टयोग पड़ा हो और उसका समय कल्पित न हो तो चन्द्रमा बली होकर अपने स्थान को तथा लग्न को देखता हो और पापग्रह चन्द्रमा को देखते हों तो प्रथम वर्ष के मध्य में मृत्युयोग होता है ॥ ३५ ॥

लग्नत्रिकोणान्तिमसप्तरंध्रे चंद्रे सपापेऽपचयं प्रयाते ॥
शुभैर्न युक्ते यदि न प्रदृष्टे रिष्टं भवेदत्र किमत्र चित्रम् ३६

जिसके लग्न में, त्रिकोण में, बारहें, सातवें अथवा आठवें स्थान में पापग्रहों के साथ क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और शुभग्रह कोई साथ न हो और कोई शुभग्रह देखता भी न हो तो उसको अरिष्ट होने में क्या आश्चर्य है ॥ ३६ ॥

सूर्यज्ञजीवाः शनिशुक्रभौमाः सूर्यारमंदाश्च यदीन्दुयुक्ताः ॥
प्रसूतिकाले मिलिता यदि स्युर्नाशः शिशोरब्दकपञ्चकेन ३७

जिसके सूर्य्य, बुध तथा बृहस्पति अथवा शनैश्चर, शुक्र और मङ्गल एवं सूर्य्य, मंगल और शनैश्चर ये चन्द्रमा के साथ बैठे हों तो बालक की पांचवें वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ३७ ॥

विलग्ननाथो भवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः ॥
मासैर्दृकाणाधिपतिर्लवेशो दिनैर्मुनीन्द्राः प्रवदंति सर्व्वे ३८

जो लग्न का स्वामी छठे स्थान में बैठा हो तो उस राशि के प्रमाण वर्ष में मृत्यु-योग होता है और द्रेष्काण का स्वामी छठे बैठा हो तो उसके तुल्य मास और नवांश का स्वामी हो तो उसके तुल्य दिनों की संख्या मुनि लोग कहते हैं ॥ ३८ ॥

लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशं खलुषोडशाहात् ॥
करोति मासेन च पापयुक्तः पापैर्वियुक्तः खलु वत्सरेण ३९

जिसके लग्न में शनैश्चर बैठा हो और उसको क्रूरग्रह देखते हों तो सोलह दिन में उस बालक की मृत्यु जानिये और पापग्रह उसके साथ हों तो एक मास में उसकी मृत्यु जानिये तथा जो पापग्रहों से रहित हो तो एक वर्ष में मृत्यु होती है ॥ ३९ ॥

रवीन्दुयुक् पापनिरीक्षितो ज्ञश्चैकादशाब्दैः कुरुते विनाशम् ॥
लग्नेऽर्कमन्दाऽवनिजाः कृशेन्दुः स्मरे षडब्दैरथ सप्तभिर्वा ४०

जिसके सूर्य्य और चन्द्रमा के साथ बुध बैठा हो और उसको पापग्रह देखते हों तो ग्यारहें वर्ष में उसकी मृत्यु होती है और लग्न में सूर्य्य, शनैश्चर और मंगल बैठे हों और क्षीणचन्द्रमा सातवें भाव में बैठा हो तो छठे वर्ष में तथा सप्तम वर्ष में मृत्यु योग होता है ॥ ४० ॥

कृशःशशांकःस्मरगो विलग्ने मंदारशुक्रा गुरुदृष्टिहीनाः ॥
विनाशनं तेऽब्दकसप्तकेन कुर्वन्ति जातस्य विनिश्चयेन ४१

जिसके क्षीणचन्द्रमा सप्तमभाव में बैठा हो और शनैश्चर, मंगल तथा शुक्र ये लग्न में बैठे हों और इनको बृहस्पति न देखता हो तो सातवें वर्ष में निश्चय करके उत्पन्न बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ ४१ ॥

चन्द्रः सचांद्रिर्यदि केन्द्रसंस्थः सूर्यांशुलुप्तः कुजमन्ददृष्टः ॥
वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वशिष्ठादय एवमूचुः ४२

जो बुध के साथ चन्द्रमा केन्द्र में बैठा हो और सूर्य्य की किरणों में लुप्त हो तथा मंगल, शनैश्चर उसे देखते हों तो दूसरे वर्ष में उसको अरिष्ट करते हैं यह वशिष्ठादि मुनिजनों का प्रमाण है ॥ ४२ ॥

निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतांप्रयातः ॥
क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्न दृष्टो वर्षद्वयांते स करोति रिष्टम् ४३

जन्म लग्न के स्वामी से अष्टमभाव में क्षीणचन्द्रमा बैठा हो और क्रूरग्रह उसे देखते हों और शुभग्रह कोई न देखते हों तो दूसरे वर्ष में अरिष्ट (मृत्युयोग) होता है ॥ ४३ ॥

लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चन्द्रस्य चेद् द्वादशगः शशांकात् ॥
पापेक्षितो मारयति प्रसूतौ शिशुं नवाब्दैः खलुकीर्तयन्ति ४४

जो लग्न का स्वामी पापग्रह हो और चन्द्रमा के नवांशा में बैठा हो और चन्द्रमा से बारहें स्थान में बैठा हो तथा उसे पापग्रह देखते हों तो उस बालक की नौ वर्ष में मृत्यु हो जाती है ॥ ४४ ॥

लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमेश्वरेण प्रविलोक्यमानः ॥
रिष्टंकरो राशिसमानवर्षैः प्राज्ञैरुदाहारिनरस्य जन्म ४५

जो लग्नेश अस्त हो और उसको अष्टम का स्वामी देखता हो तो उस राशि के समान वर्ष में मृत्युयोग करता है ऐसा बुद्धिमानों ने कहा है ॥ ४५ ॥

अदृश्यभागे यदि पापखेटा दृश्ये विभागे शुभदा भवन्ति ॥
स्वर्भानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽब्दकसप्तकं हि ४६

जो अदृश्यभाग (लग्न से सप्तम तक) में पापग्रह बैठें हों और दृश्यभाग (सप्तम से द्वादशतक) म शुभग्रह बैठे हों और लग्न मे राहु बैठा हो तो सातवें वर्ष में मृत्युयोग होता है ॥ ४६ ॥

सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थो शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत् ॥
नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादशयः प्रसूताः ४७

जिसके जन्मकाल में राहु सप्तमभाव में स्थित हो और उसको सूर्य्य तथा शनैश्चर देखते हों और शुभग्रह देखते भी न हों तो उसका जीवन बारहवर्ष का होता है ॥ ४७ ॥

सिंहालिकुम्भस्थितसैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्य्यदिस्यात् ॥
वर्षाणि सप्तैव वदंति चायुः प्रकीर्त्तितं जातकशास्त्रविद्भिः ४८

जिसके जन्म काल में राहु सिंह मे, वृश्चिक में या कुम्भ में बैठा हो और क्रूर-ग्रह उसको देखते हों तो उसकी आयुर्दाय सातवर्ष की होती है ऐसा जातक शास्त्र जाननेवालों ने कहा है ॥ ४८ ॥

केतूदयः स्यात्प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवन्ति ॥
यो रौद्रसार्पाख्यमुहूर्त्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममन्दिरं सः ४९

जो जन्म के पहिले केतु का उदय हो चुका हो और उसके बाद निर्घात हो, प्रचण्डवायु चलै और वज्रपात हो तथा रौद्रमुहूर्त्त में या सार्पमुहूर्त्त में जन्म हुआ हो तो उसकी भी शीघ्र मृत्यु हो जाती है ॥ ४९ ॥

चन्द्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा ॥
दिनैः स्वल्पतरैर्बालः कालस्यालयमाव्रजेत् ५०

जिसके क्रूरग्रह के साथ क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और उसे राहु देखता हो तो वह बालक थोड़ ही दिनों में काल के मुख में जाता है ॥ ५० ॥

मातंगैर्नवभिश्च रामनयनै र्नेत्राश्विभिः सायकै-
रेकेनांबुधिभिस्त्रिलोचनमितैर्धृत्या च विंशन्मितैः ॥
भूनेत्रैर्दशभिर्लवैर्यदि भवेन्मेषादिसंस्थो विधु-
र्वर्षैर्भागसमैः करोति निधनं कालोऽयमत्रोदितः ५१

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
रिष्टाध्यायः ॥ ११ ॥

पूर्वोक्त योगों में जो चन्द्रमा मेषराशि में हो तो आठवें वर्ष में, वृषराशि में हो तो नवें वर्ष में, मिथुनराशि में हो तो तेईस वर्ष में, कर्क राशि में हो तो बाईस वर्ष में, सिंहराशि में हो तो पांचवें वर्ष में, कन्याराशि में हो तो प्रथम वर्ष में, तुला राशि में हो तो चतुर्थ वर्ष में, वृश्चिकराशि में हो तो तेईस वर्ष में, धनु राशि में हो तो अठारह वर्ष में, मकर राशि में चन्द्रमा हो तो बीस वर्ष में, कुम्भ-राशि में हो तो इक्कीस वर्ष में और जो मीनराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो दशवें वर्ष में मृत्यु होती है अथवा मेष के ८ अंश, वृष के ९, मिथुन के २३, कर्क के २२, सिंह के ५, कन्या का १, तुला के ४, वृश्चिक के २३, धन के १८, मकर के २०, कुंभ के २१ और मीन के १० अंश में चन्द्रमा हो तो पूर्वोक्त संख्यावाले वर्ष में मृत्युयोग जानना इस प्रकार काल (समय) कहा है ॥ ५१ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुंढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
रिष्टाध्यायः ॥ ११ ॥

अथ चन्द्ररिष्टभङ्गाध्यायः ।

होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदृष्टाः ॥
ते रिष्टभंगे यदि नो समर्थाः स रिष्टभंगोप्यभिधीयते ततः १

यद्यपि होराशास्त्र के जाननेवाले पण्डित जनों ने विस्तार से रिष्टयोग वर्णन किये हैं तथापि वे रिष्टभङ्गयोग के होने पर अरिष्ट करने को समर्थ नहीं होते इसलिये रिष्टभङ्ग योग कहे जाते हैं ॥ १ ॥

पूर्णः कैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा
रिष्टं हंत्यथवा सुहृल्लवगतः सद्वीक्षितोऽतिप्रभः ॥

क्षीणो वापि निजोच्चगः शुभखगैः शुक्रेण चेत्प्रेक्षितो
रिष्टं यः समुपागतं स तु हरेत्सिंहो यथा सिन्धुरम् २

जिसके जन्म काल में पूर्णचन्द्रमा को समस्त ग्रह देखते हों तो अरिष्टभङ्ग होता है अथवा मित्र के नवांशा में बैठे हुए पूर्ण चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो भी अरिष्टभंग होता है अथवा क्षीण चन्द्रमा अपनी उच्चराशि में बैठा हो और उसे शुभग्रह अथवा शुक्र देखता हो तो सब रिष्टयोग ऐसे भंग हो जाते हैं जैसे सिंह से हाथी ॥ २ ॥

रिष्टं निहन्युः शुभदाः शशांकात् पापैर्विना तेऽष्टमशत्रुसंस्थाः ॥
शुभान्विताः साधुदृक्काणवर्त्ती पीयूषमूर्त्तिः शमयेत्सरिष्टम् ३

चन्द्रमा से छठे और आठवें शुभग्रह बैठे हों और उन शुभग्रहों के साथ कोई पापग्रह भी न हों तथा चन्द्रमा शुभग्रह समेत शुभग्रह के द्रेष्काण में बैठा हो तो संपूर्ण अरिष्ट को विनाश करता है ॥ ३ ॥

शुभग्रहैर्द्वादशभावसंस्थः पूर्णः शशी रिष्टहरः प्रदिष्टः ॥
लग्नेशदृष्टः शुभराशियातो नान्येक्षितो रक्षति रिष्टयोगात् ४

शुभग्रह के साथ पूर्ण चन्द्रमा द्वादश स्थान में बैठा हो तो सम्पूर्ण रिष्टों को हर लेता है और जो शुभराशि में चन्द्रमा बैठा हो और उसको लग्नेश देखता हो और कोई ग्रह न देखता हो तो सम्पूर्ण रिष्टों को भङ्ग करके उसकी रक्षा करता है ॥४॥

बलक्षपक्षे यदि जन्मरात्रौ कृष्णं दिवाष्टारिगतोपि चन्द्रः ॥
क्रमेण दृष्टः शुभपापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः ५

जो शुक्ल पक्ष की रात्रि में जन्म हो अथवा कृष्णपक्ष के दिन में जन्म हो और छठे, आठवें भी स्थित चन्द्रमा को क्रम से शुभग्रह और पापग्रह देखते हों तो चन्द्रमा पिता की तरह बालक की रक्षा करता है ॥ ५ ॥

संस्थः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशीश्वरेणापि विलोकितश्च ॥
तद्वर्गयोगो यदि तेन युक्तः कुर्य्यादलं मङ्गलमेव नान्यत ६

जो क्रूरग्रह की राशि में चन्द्रमा बैठा हो और राशि का स्वामी उसे देखता भी हो और लग्नेश के षड्वर्ग में हो तथा लग्नेश के साथ बैठा हो तो सम्पूर्ण रिष्टों को भङ्ग करके मंगल योग करता है ॥ ६ ॥

जन्माधिपालो बलवान् किल स्यात्
सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः ॥
यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो
रिष्टं हि चन्द्रेण कृतं निहन्ति ७

जिसका जन्म लग्नेश बली हो और शुभग्रह तथा मित्रग्रह उसको देखते हों अथवा लग्नेश लग्न में हो और समस्तग्रह उसको देखते हों तो चन्द्रमा का किया हुआ अरिष्टयोग विनाश हो जाता है ॥ ७ ॥

स्वोच्चे स्वभे वा यदि वात्मवर्गे स्थितो हितानाञ्च सतां प्रदृष्टः ॥
शुभैर्न पापारियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्णकलः कलावान् ८

जो पूर्ण चन्द्रमा वृषराशि में या कर्कराशि में बैठा हो अथवा अपने षड्वर्ग में या शुभ मित्रों के घर में बैठा हो और मित्रग्रह तथा शुभग्रह देखते हों और पापग्रह व शत्रुग्रह कोई न देखते हों तो चन्द्रमा अरिष्टयोग को भङ्ग कर देता है ॥८॥

वाचामधीशो दशमे शशांकाद्व्ययेज्ञशुक्रौ च खलाःकिलाये ॥
विलग्नपात्त्र्यम्बु दशान्त्यलाभे शुभेक्षितेन्दुश्च हरेत्सरिष्टम् ९

जो चन्द्रमा से दशमस्थान में बृहस्पति बैठा हो और बारहें घर में बुध और शुक्र बैठे हों और पापग्रह ग्यारहें घर में बैठे हों तथा लग्नेश से तीसरे, चौथे, दशवें, ग्यारहें और बारहें चन्द्रमा बैठा हो और शुभग्रह उसे देखते हों तो चन्द्रमा समस्त अरिष्टों को भङ्ग कर देता है ॥ ९ ॥

प्रसूतिकाले यदि जन्मपालः किलेक्षितो निर्म्मलखेचरैश्च ॥
बलाधिशाली प्रलयङ्करोति रिष्टस्य शीतांशुसमुद्भवस्य १०

जिसके जन्मकाल में जन्मलग्नेश को शुभग्रह देखते हों और लग्नेश बली हो तो चन्द्रमा के अरिष्ट योगों को भङ्ग करके शुभफल को देता है ॥ १० ॥

भवेन्निशाजन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा ॥
तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशाङ्कोनिधनन्निहंति ११

जिस पुरुष का रात्रि में जन्म हो और चन्द्रमा उच्चस्थान में या स्वराशि में बैठा हो तथा शुभग्रह के षड्वर्ग में हो और शुभग्रह उसे देखते हों तो चन्द्रमा मृत्यु योग को भंग करता है ॥ ११ ॥

दास्रेऽग्निभे वा गुरुभे शशाङ्के वर्गोत्तमे पूर्णकलाकलापे ॥
त्रिपुष्करे शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्याशुलयम्प्रयाति १२

जो चन्द्रमा अश्विनी, कृतिका अथवा पुष्य नक्षत्र का हो और वर्गोत्तमी पूर्ण चन्द्रमा त्रिपुष्कर योग में हो तो सम्पूर्ण अरिष्टों का विनाश हो जाता है ॥ १२ ॥

पादेद्वितीये यदि वा तृतीये पुष्यस्य ताराधिपतिर्य्यदिस्यात् ॥
वा रोहिणीनां चरणे द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् १३

जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा पुष्यनक्षत्र के दूसरे अथवा तीसरे चरण का हो अथवा रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का हो और शुभग्रह चन्द्रमा को देखते हों तो चन्द्रमा अपने अरिष्टयोग को भङ्ग करके दीर्घायु योग को करता है ॥१३॥

कुलीरमेषगश्चन्द्रः केन्द्रस्थः शुभवीक्षितः ॥
ग्रस्तोपि रिष्टभङ्गाय भवेदत्र न संशयः १४

जो चन्द्रमा कर्कराशि या मेषराशि का होकर केन्द्र में बैठा हो और शुभग्रह उसको देखते हों तो ग्रस्त भी चन्द्रमा अरिष्टयोग को भङ्ग करता है इसमें संशय नहीं है ॥ १४ ॥

केन्द्रेषु चेदम्बरमार्ग्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगे विलग्ने ॥
क्षीणोपि चन्द्रः स्मरभावसंस्थः संप्राप्तरिष्टं शमयेदवश्यम् १५
इति चन्द्ररिष्टभङ्गाध्यायः ॥

जो शुभग्रह केन्द्रवर्त्ती हो और दो दो शुभग्रह केन्द्र में बैठे हों तथा क्षीण भी चन्द्रमा सप्तमभाव में बैठा हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट योगों को अवश्य भङ्ग करता है ॥ १५ ॥

इति चन्द्ररिष्टभङ्गाध्यायः ॥

—०—

अथ सर्वग्रहरिष्टभङ्गाध्यायः ।

मरीचिमालामलकांतिशाली प्रसूतिकालेप्रबलो यदिस्यात् ॥
बृहस्पतिर्मूर्त्तिगतो निहंति रिष्टानि नूनं मुनयो वन्ति १

जो किरणों की माला से अमल कान्तियुक्त, पूर्ण बली होकर बृहस्पति जन्म लग्न में बैठा हो तो वह सम्पूर्ण ग्रहों के अरिष्टों को भंग करता है ऐसा मुनिलोग कहते हैं ॥ १ ॥

पापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते ॥
निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः संक्षीयते रिष्टमुपागतं वै २

जो पापग्रह निर्बल हों और शुभग्रह बलवान् हों तथा जन्मलग्न का स्वामी शुभग्रह हो और जन्मलग्न को शुभग्रह देखते हों तो सम्पूर्ण अरिष्टयोगों का विनाश हो जाता है ॥ २॥

सौम्यवर्ग्गाश्रितः पापाः सौम्यवर्ग्गाश्रितैः शुभैः ॥
दृष्टाअपि प्रकृष्टन्ते रिष्टन्नाशयितुं क्षमाः ३

जो शुभग्रहों के षड्वर्ग में पापग्रह बैठे हों और शुभग्रह भी शुभषड्वर्ग में बैठे हों तथा उन पापग्रहों को वे शुभग्रह देखते भी हों तो समस्त अरिष्टों को नाश करने में समर्थ होते हैं ॥ ३ ॥

मूर्त्तेस्तु राहुस्त्रिषडायवर्त्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः ॥
शीर्षोदयस्थैर्विकृतिन्नयातैः समस्तखेटैः खलु रिष्टभंगः ४

जो जन्मलग्न से तीसरे, छठे और ग्यारहें राहु बैठा हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो वह सब अरिष्टों को हरता है और शीर्षोदयी राशियों में विकार से रहित समस्त ग्रह बैठे हों तो भी अरिष्ट भंग हो जाता है ॥ ४॥

प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभो हरेद्रिष्टमपापदृष्टः ॥
कश्चिद् ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैरदृष्टः सतुरिष्टभंक्ता ५

जो जन्मकाल में शुभग्रह बली हों और उनको पापग्रह नहीं देखते हों तो वह अरिष्ट भंग करता है तथा कोई ग्रह सूर्य्य मंडल में बैठा (अस्त) हो और उसको कोई क्रूरग्रह नहीं देखता हो तो भी सब ग्रहों के अरिष्टयोग भंग हो जाते हैं ॥ ५ ॥

रजोविहीनं गगनं च खस्थाः स्वस्था भवेयुर्जलदाः सुनीलाः ॥
मन्दानिलाश्चेद्विमला मुहूर्त्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभंगाः ६

जिसके जन्मकाल में गर्द गुब्बार से रहित निर्मल आकाश हो और सब ग्रह स्वस्थ हों तथा नीलेवर्ण वाले बादल आकाश में स्थित हों तथा मन्द मन्द पवन चलती हो और शुभमुहूर्त हो ऐसे समय में जिसका जन्म होता है उसके अरिष्ट भंग हो जाते हैं ॥ ६॥

कुम्भयोनेर्मुनीनां चेदुद्गमे जननं भवेत् ॥

विलीयते तदा रिष्टं नूनं लाक्षेव वह्निना ७

जो अगस्त्य मुनि के उदयकाल में जन्म होवे तो भी सब ग्रहों के अरिष्ट नाश हो जाते हैं जैसे अग्नि से लाख ॥ ७ ॥

वृषाजकर्काख्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेद्रिष्टविनाशकर्त्ता ॥
शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथापि रिष्टं विलयं प्रयाति ८

मेष, वृष और कर्क इन लग्नों में जिसका जन्म हो और राहु लग्न में बैठा हो तो अरिष्टयोग दूर करनेवाला होता है तथा बहुत से शुभयोग हों तो भी अरिष्ट भंग हो जाते हैं ॥ ८ ॥

नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै ॥
परस्परं भार्गवजीवसौम्यास्त्रिकोणगास्तेपि हरन्ति रिष्टम् ९

मकर, कुम्भ और मीन इन राशियों में स्थित केतु तीसरे, छठे अथवा ग्यारहें स्थान में बैठा हो तो मृत्यु को हटाकर दीर्घायुयोग करता है तथा बृहस्पति और शुक्र ये परस्पर नवें पांचवें बैठे हों तो भी अरिष्ट को दूर करते हैं ॥ ९ ॥

सन्ध्याभवा वै धृतिपातभद्रा गण्डान्तयुक्ता अपि जन्मकाले ॥
भवन्ति रिष्टस्य विनाशनार्थं निरन्तरा दृश्यदलेथ सर्वे १०

जिसका जन्म संध्याकाल, वैधृतियोग, व्यतीपातयोग, भद्रा अथवा गंडान्त में हो और सम्पूर्ण ग्रह दृश्यभाग (लग्न से सप्तम तक) में हों तो भी अरिष्ट विनाश हो जाता है ॥ १० ॥

त्र्यायारितुङ्गेषुगतःपतङ्गो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्त्ता ॥
एकर्क्षगाः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेपि रिष्टं शमयंति खेटाः ११

जिसके जन्म काल में सूर्य्य तीसरे, छठे, ग्यारहें और अपनी उच्च राशि में बैठा हो, तथा पाप ग्रहों से युक्त न हो तो अरिष्टों को विनाश करता है तथा सब ग्रह एकही राशि में तीसरे, छठे, दशवें और ग्यारहें बैठे हों तो भी अरिष्ट को भंग करते हैं ॥ ११ ॥

शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयोवाप्यनेकशः ॥
एकांत स्थास्तदारिष्टभंगो भवति निश्चितम् १२

लग्न से या चन्द्रमा से दो ग्रह या तीन ग्रह अथवा अनेक ग्रह एक राशि में बैठें तो भी सब ग्रहों का अरिष्ट निश्चय भंग हो जाता है ॥ १२ ॥

पातालयातः प्रबलेंदुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले ॥
देवेन्द्रमंत्री दलयत्यवश्यममंगलं रिष्टभवं क्षणेन १३

जिसके जन्मकाल में बृहस्पति चौथे स्थान में धन या मीन राशि का होकर बैठा हो और उसको चन्द्रमा देखता हो तो बृहस्पति सब अरिष्टों को क्षणमात्र में अवश्य नष्ट कर देता है ॥ १३ ॥

लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः ॥
तत्कालमुद्भवाः खेटा रिष्टदारण कारिणः १४

लग्न में कोई ग्रह बैठा हो और बारहें तथा दूसरे तीन तीन ग्रह बैठें तो उस समय के वे ग्रह सम्पूर्ण अरिष्टयोगों को भंग कर देते हैं ॥ १४ ॥

केंद्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च ॥
शुभाः संस्थाग्रहाः सर्वे रिष्ट भङ्गकराः स्मृताः १५

जिसके जन्म काल में सम्पूर्ण शुभग्रह केन्द्र में अथवा पणफर या आपोक्लिम में बैठे हों तो वे सब ग्रह अरिष्ट को भंग कर देते हैं ॥ १५ ॥

अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः ॥
स्वर्भानुसंयुताः खेटा रिष्टदोषापहारकाः १६

राहु के साथ चतुर्थ स्थान में स्थित सब ग्रह परस्पर युग्म भाव में बैठे हों तो भी अरिष्ट दोष को नाश करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥

चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित् ॥
त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः १७

जिसके जन्म काल में शुभग्रह केन्द्र में बली होकर बैठे हों और अष्टमभाव में कोई शुभग्रह नहीं बैठा हो तो उसकी तीसवर्ष की आयुर्दाय होती है और शुभ ग्रह उनको देखते हों तो ४० वर्ष की आयु होती है ॥ १७ ॥

निजत्रिभागे स्वगृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात् खलु सप्तविंशत् ॥
बृहस्पतिस्तुङ्गगतो विलग्ने भृगोः सुतः केंद्रगतः शतायुः १८

जो बृहस्पति अपनी राशि में और अपने ही द्रेष्काण में बैठा हो तो उसकी आयुर्दाय सत्ताईस वर्ष की होती है तथा कर्क का बृहस्पति लग्न में और शुक्र केन्द्र में बैठा हो तो उसकी सौ वर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ १८ ॥

लग्नेस्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याःस्वभस्थाः खलुषष्टिरायुः ॥
मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव १९

जो वृष राशि का होकर चन्द्रमा तनुभाव में बैठा हो और शुभग्रह अपनी २ राशियों में बैठे हों तो उसकी साठिवर्ष की आयुर्दाय होती है तथा शुभग्रह अपने मूलत्रिकोण में बैठे हों और बृहस्पति उच्चका होकर लग्न में बैठा हो तो अस्सी वर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ १९ ॥

लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूरास्स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ ॥
बलान्वितावम्बरगौभवेतां जातःशतायुःकथितो मुनीन्द्रैः २०

जो क्रूरग्रह अपनी राशि के होकर चन्द्रमा से युक्त लग्न, छठे और आठवें स्थान में न बैठे हों और दशमस्थान में बल संयुक्त दो ग्रह बैठे हों तो उसकी सौ वर्ष की आयुर्दाय मुनिजन कहते हैं ॥ २० ॥

शून्ये रन्ध्रे केन्द्रगैः सौम्य खेटैर्लग्नेजीवे त्र्यारिलाभेऽशुभाश्चेत् ॥
नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदास्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् २१

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे सर्वग्रहरिष्ट-
भङ्गाध्यायः।

जो अष्टमभाव में कोई ग्रह न बैठा हो और सब शुभग्रह केन्द्र में बैठे हों और लग्न में बृहस्पति बैठा हो तथा तीसरे, छठे और ग्यारहें पापग्रह बैठे हों और इन सबको पापग्रह नहीं देखते हों तो सत्तरिवर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ २१ ॥

इति श्रीजातकाभरणे सर्वग्रहरिष्टभङ्गाध्यायः ॥

—:०:—

अथ सदसद्दशाविचारणा।

राजयोगग्रहभावसंभवं रिष्टयोगजनितं च यत्फलम् ॥
तद्दशाफलगतं यतो भवेत्तेन तत्फलमलं ब्रुवेऽधुना १

राजयोगों के फल और ग्रहों का भावफल और अरिष्ट योगों से उत्पन्न फल ये सब ग्रह दशाओं में होते हैं इसलिये अब दशाफल वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

अथाशीर्वादात्मकं मंगल पद्यम्।

सर्वदेव वरदो वरदो वः शारदापि वरदावदनाब्जे ॥

इंदिरा च खलु मन्दिरसंस्था प्रस्थिताजलनिधीन्प्रतिकीर्त्तिः २

श्रीगणेशजी सर्वदा आपको वरदान देवें, सरस्वती भी मुख कमल में विराजमान होवें और लक्ष्मीजी निश्चय घर में निवास करें तथा समुद्र पर्यंत कीर्त्ति फैल जावे ॥ २॥

स्वोच्चे स्वगेहे यदि वा त्रिकोणे वर्गे स्वकीयेथ चतुष्टये वा ॥
नास्तङ्गतो नो शुभदृष्टियुक्तो जन्माधिपः स्याच्छुभदः स्वपाके ३

जन्म लग्न का स्वामी अपने उच्चस्थान में या अपने घर में अथवा मूलत्रिकोण में या षड्वर्ग में अथवा केन्द्र में बैठा हो और अस्त नहीं हुआ हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी न हो तो वह अपनी दशा में शुभफल देता है ॥ ३॥

त्रिषष्ठलाभेषु गतैः समस्तैः सौम्यैः सुखार्थाश्च भवन्ति बाल्ये ॥
तत्रैव पापैर्वयसोन्त्यभागे जायार्थपुत्रादिसुखानि सम्यक् ४

सम्पूर्ण शुभग्रह तीसरे, छठे और ग्यारहें बैठे हों तो बाल्यावस्था में सुख और धन देते हैं और जो इन स्थानों में पापग्रह बैठे हों तो वृद्धावस्था में स्त्री, धन और पुत्र आदि से सर्वसौख्य प्राप्त होते हैं ॥ ४॥

तुंगे स्वगेहे स्वसुहृद्गृहांशे नीचारिभस्थेपि च खेचरेन्द्रे ॥
मिश्रं फलं स्यात्खलु तस्य पाके होरागमज्ञैः परिकल्पनीयम् ५

जो ग्रह अपने उच्च में या अपने घर में अथवा अपने मित्र की राशि के नवांश में बैठा हो या नीचराशि में और शत्रु के घर में बैठा हो तो उसकी दशा में होराशास्त्र के जानने वालों को शुभाशुभमिश्रित फल कल्पित करना चाहिये ॥५॥

वाचाम्पतिर्लग्नगतः स्वतुंगे स्वर्क्षे दशायत्रिगतश्चसूतौ ॥
करोति राज्यं स्वकुलानुमानान्नानाविधोत्कर्षविशेषयुक्तम् ६

जिसके जन्म काल में कर्कराशि का बृहस्पति लग्न में बैठा हो या उच्च में हो अथवा धनु मीन का होकर लग्न में स्थित हो अथवा तीसरे, दशवें और ग्यारहें बैठा हो तो वह अपनी दशा में अपने कुलानुमान राज्यलाभ आदि विशेष उत्कर्ष को देता है ॥ ६॥

आरोहिणीदशा यस्य खेचरः सत्फलप्रदः ॥
सत्फलापचयं कुर्याद्दशाचेदवरोहिणी ७

जिस ग्रह की आरोहिणी दशा हो वह ग्रह शुभ फल देता है और अवरोहिणी दशा हो तो नेष्ट फल देता है। अपनी उच्चराशि से पांच राशि तक आरोहिणी और अपनी नीच राशि से पांच राशि तक अवरोहिणी दशा होती है ॥ ७ ॥

स्त्रीमित्रपुत्रद्रविणोपलब्धिं कर्के हिमांशुः कुरुते दशायाम् ॥
जायापशूनां हनने प्रवृत्तिं करोति पृथ्वीतनुजस्य गेहे ८

जो कर्कराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री, मित्र, पुत्र और धन का लाभ होता है तथा मंगल के घर में चन्द्रमा स्थित हो तो स्त्री और पशुओं के विनाश की प्रवृत्ति करानेवाली दशा होती है ॥ ८ ॥

सच्छास्त्रमित्राधिगमङ्करोति बुधस्य राशौगुरुधामसंस्थः ॥
नृपप्रसादं विपुलां च लक्ष्मीं शुक्रस्य गेहे फलमेतदेव ९

जो बुध या बृहस्पति की राशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में उत्तम शास्त्र का पठन-पाठन और मित्रों की प्राप्ति कराती है और शुक्र की राशि में बैठा हो तो धनवृद्धि और राजकृपा इत्यादि शुभ फल होते हैं ॥ ९ ॥

तुषाररश्मिः शनिवेशमसंस्थः प्रेष्यं मनुष्यं कुरुते दशायाम् ॥
अरण्यदुर्गस्थितिमाददाति प्रीतिं मरुद्गोगृहनिर्मितौ च १०

जो चन्द्रमा शनैश्चर के घर में बैठा हो तो वह अपनी दशा में मनुष्य को दूतवृत्ति वाला करता है और वन और किलों में निवास कराता है तथा हवादार मकान और गोशाला बनाने में प्रीति कराता है ॥ १० ॥

मित्रोच्चोपचयस्थाने त्रिकोणे सप्तमेपि वा ॥
पाकेश्वरात् स्थितश्चन्द्रः कुरुते सत्फलां दशाम् ११

इति सदसद्दशाविचारणा ॥

जो चन्द्रमा मित्रगृह तथा उच्च में या दशानाथ से (उपचय तीसरे, छठे, दशवें और ग्यारहें) स्थान में बैठा हो या नवें, पांचवें या सातवें बैठा हो तो उसकी दशा पूर्वोक्त श्रेष्ठ फल देती है ॥ ११ ॥

इति सदसद्दशाविचारणा ॥

---:०:---

अथ रविदशाफलविचारः ।

भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननु मानवानाम् ॥
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीव धनागमः स्यात् १

सूर्य्य की दशा में कभी कभी परदेश में वास होता है और पृथ्वी, राजद्वार, अग्नि, श्रेष्ठ ब्राह्मण, शस्त्र और औषधी से बहुत धन की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

मंत्राभिचारैरभिरुचिर्विचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात् ॥
विख्यातकर्माभिरतिर्मतिः स्यादनल्पजल्पे च रणेन चिन्ता २

यंत्र मंत्र में रुचिवाला हो तथा राजाओं से मित्रता हो और अपनी कीर्त्ति बढ़ावने का यत्न करै और वार्त्तालाप करने तथा रण से चिंता हो ॥ २ ॥

व्ययश्च दन्तोदरनेत्रबाधा कान्तासुतेभ्यो वियुतिश्च चिन्ता ॥
नृपाग्निचौराहितबंधुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिःस्यात् ३

सामान्यफलमेतत् ।

धनव्यय अधिक हो और दांत, नेत्रों और उदर में पीड़ा हो; स्त्री और पुत्र से वियोग तथा चिन्ता हो तथा राजा, चौर, अग्नि, शत्रु और अपने गोत्रवाले भाई-बन्धुओं से प्रबल कलह होता है ॥ ३ ॥

यह सामान्य फल है ॥

अथ विशेषफलमुच्यते ।

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वधर्म्मकर्माभिरुचिं करोति ॥
तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः ४
उच्चच्युतस्यातितरामरिष्टं कष्टं च रोगात्स्वजनैर्विरोधम् ॥
रवेर्दशातीव चतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम् ५

जो अपने उच्च (मेषराशि) में सूर्य बैठा हो तो उसकी दशा में धर्मकर्म में प्रीति होती है और पिता का संचय किया हुआ धन और भूमि का लाभ तथा स्त्री पुत्रादिकों से अनेक सुख होते हैं ॥ ४ ॥ और जो सूर्य्य उच्चराशि से च्युत हो गया हो तो उसकी दशा में शरीर में रोग, कष्ट और मित्रजनों से विरोध तथा चतुष्पदों की हानि होती है ॥ ५ ॥

कान्तासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु ॥
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ६

जो सूर्य्य वृषराशि में बैठा हो तो स्त्री पुत्रादिकों को और वाहनों को पीड़ा होती है और खेती का भी नाश होता है तथा मुख और नेत्र में रोग रहता है और अधिकतर हृदय रोग से पीड़ित होता है ॥ ६ ॥

स्यान्मन्त्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्त्ता प्रीतिः पुराण च भवेन्नराणाम् ॥
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम् ७

जो मिथुनराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में मंत्रविद्या व शास्त्र में अधिकार और उत्तम काव्य करने में रुचि तथा पुराण सुनने में प्रीति विशेष और खेती से धनलाभ तथा विविध प्रकार के सुख होते हैं ॥ ७ ॥

ख्यातिर्नृपप्रीतिरतीव नित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महत्प्रकोपः ॥
सुहृज्जने नूनमनूनपीडा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम् ८

जो कर्कराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में कीर्त्ति की वृद्धि, राजा से अत्यन्त प्रीति और स्त्री से निर्जित, अधिक क्रोधी होता है और मित्रों को बहुत पीड़ा होती है ॥ ८ ॥

दुर्गादरण्याच्च कृषिक्रियायां धनान्यनेकानि भवंति नूनम् ॥
स्यात्ख्यातिरुच्चैर्नृपगौरवं च कण्ठीरवस्थार्कदशाप्रवेशे ९

जो सिंह राशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में किला से, वन से और खेती करने से प्रीति और अनेक प्रकार के धन का लाभ होता है तथा उत्तम कीर्त्ति और राजद्वार से सन्मान होता है ॥ ९ ॥

स्यात्कन्यकानां जननं च मानो देवद्विजानामनुपूजनं च ॥
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्यांबुजबांधवस्य १०

जो कन्याराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में कन्या की उत्पत्ति, मान्यता और देवता तथा ब्राह्मणों के पूजन में प्रीति और पशुओं का लाभ होता है ॥ १० ॥

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासु पीडा चौराग्निभीतिश्च विदेशयानम् ॥
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य रवेर्दशायाम् ११

जो तुलाराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में स्थान और धन की हानि,

स्त्री पुत्रादिकों को पीड़ा, चोर और अग्नि से भय तथा विदेशयात्रा और नीचकर्म में प्रवृत्ति होती है ॥ ११ ॥

नीचांशमुक्तस्य रवेर्दशायां सुखेन लाभः परवञ्चनञ्च ॥
जायानिमित्तोद्यतदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिर्नितांतम् १२

जो तुलाराशि में सूर्य बैठा हो और अपने नीच अंश से निकल गया हो तो उसकी दशा में सुख से धन लाभ होता है और दूसरों को ठगनेवाला होता है स्त्रीनिमित्त से दुःख मिलता है और नीचजनों से अत्यन्त मित्रता होती है ॥१२॥

नीचाष्टमस्थस्य रवेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवः स्यात् ॥
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडा पित्रोश्च बाधा बहुधावगम्या १३

जो नीच का सूर्य्य अष्टम बैठा हो तो उसकी दशा में चित्त में उद्वेग, (मन का सन्ताप) पैदा हो जाता है और जो छठे भाव में नीच का सूर्य्य बैठा हो तो उस की दशा में व्रणरोग उत्पन्न होता है और माता पिता को क्लेश होता है ॥ १३ ॥

तेजोविशेषाभियुतो नितान्तं
विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च ॥
पित्रा जनन्या गतचित्तशुद्धिः
स्याद्वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायाम् १४

जो वृश्चिकराशि में सूर्य बैठा हो तो उसकी दशा में अधिक तेज हो और विष, अग्नि से और शस्त्र से पीड़ित हो तथा माता पिता से शुद्ध चित्त नहीं होता है (कपट रखता है) ॥ १४ ॥

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः ॥
सङ्गीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम् १५

जो धनराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और धन आदि से सुख, राजा तथा ब्राह्मणों से गौरवता और गाने-बजाने की विद्या से अधिक सौख्य होता है ॥ १५ ॥

जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्यादनल्पपीडामयतो नितांतम् ॥
भवेत्पराधीनतयातिचिन्ता नक्रोपजातस्य रवेर्दशायाम् १६

जो मकरराशि में सूर्य्य बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और धन का अल्पसुख, रोग से शरीर में बहुत पीड़ा और पराधीन होने से अत्यन्त चिन्तायुक्त रहता है ।। १६ ।।

हृद्रोगबाधा सुतवित्तकांताचिन्ता परान्नादिसुखं न किञ्चित् ।।
शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनतास्याद् घटाधिरूढस्य रवेर्द्दशायाम् १७

जो कुम्भराशि में सूर्य बैठा हो तो उसकी दशा में हृदय रोग की पीड़ा तथा स्त्री, पुत्र और धन की चिन्ता, पराये अन्न आदि के सुख से रहित, शत्रुओं की बढ़तीवाला और अत्यन्त दीन होता है ।। १७ ।।

स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम् ।।
वृथाटनत्वन्नु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाप्रवेशे १८

जो मीनराशि में सूर्य बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री, धन और सुख की वृद्धि, प्रतिष्ठा की प्राप्ति और पुत्रादिकों को ज्वर से पीड़ा तथा वृथा देशाटन कराता है ।। १८ ।।

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशादिनेशस्य च दोषदा स्यात् ।।
षष्ठस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः १९

जो उच्चराशि में स्थित सूर्य अष्टमभाव में बैठा हो तो उसकी दशा में रोग उत्पन्न होता है और जो उच्च का होकर छठे भाव में बैठा हो तो उसकी दशा में व्रणरोग होता है तथा माता पिता को क्लेशकारी होता है ।। १९ ।।

पूर्वं भवेत्सूर्य्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम् ।।
लग्नाद्दशाक्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता २०

इति सूर्य्यदशाफलविचारः ।।

पहिले सूर्य की दशा का प्रवेश हो तो उस समय माता को हर तरह की बाधा होती है और लग्न से दशा विशेष क्लेश देनेवाली होती है और चन्द्रमा की दशा शुभ देनेवाली होती है ।। २० ।।

इति सूर्यदशाफलविचारः ।।

अथ चन्द्रदशाफलविचारः ।

आरोहिणीचन्द्रदशा नराणां सर्व्वार्थसिद्ध्यै कथिता विशेषात् ॥
तथावरोहा कुरुते विलम्बं सर्वेषु कार्य्येषु च बुद्धिमांद्यम् १

चन्द्रमा की आरोहिणी दशा मनुष्यों को सम्पूर्ण अर्द्ध की सिद्धि देनेवाली कही है और अवरोहिणी दशा सब कामों में विलम्ब करती है तथा बुद्धि मन्द कर देती है ॥ १ ॥

नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा ॥
मंत्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भूदेवदेवार्चनताप्रवृत्तिः २

चन्द्रमा की दशा के प्रवेश में मनुष्य बड़ी प्रतिष्ठा पाता है, देवता और ब्राह्मणों के पूजन में प्रवृत्ति और राजा की प्रसन्नता से युक्त तथा मन्त्री होता है ॥ २ ॥

सन्मन्त्रविद्याविविधाधनाप्तिर्नानाकलाकौशलशालिता च ॥
गन्धैस्तिलैश्चापि फलैः प्रसूनैर्वृक्षैरलं वा द्रविणोपलब्धिः ३

उत्तम मन्त्रविद्या की सिद्धि, अनेक प्रकार के धन का लाभ और अनेक प्रकार की कलाओं से कुशलता, उत्तम सुगन्ध से, तिल से, फल-पुष्पादि से और वृक्षों से बहुत धन की प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

ख्यातिः सुकीर्तिर्विनयाधिकत्वं परोपकारायमतिर्यशश्च ॥
इतस्ततः संचलनप्रियत्वं कन्याप्रजासंजननं मृदुत्वम् ४

उत्तम कीर्तिवाला, विख्यात, बहुत नम्र, पराये उपकार में निरन्तर बुद्धि वाला, यशस्वी, कन्याओं की उत्पत्ति करनेवाला और इधर-उधर की यात्रा में प्रीतिवाला और कोमल होता है ॥ ४ ॥

जलस्य कर्म्मण्यतिसादरत्वमालस्यनिद्राकुलताक्षमा च ॥
कृष्यादिकर्म्माभिरुचिः शुचित्वङ्कफानिलाधिक्यमतीव सत्त्वम् ५

जल के कामों में प्रीतिवाला, आलस्य और निद्रा से व्याकुल शरीर, क्षमता युक्त, कृषिक्रिया में निपुण तथा कफ वात की अधिकतावाला और बलवान् होता है ॥ ५ ॥

भवेद्विरोधः स्वजनेन नूनं कलिप्रसङ्गो बहुजल्पता च ॥
चित्तस्थितिर्नैव च साधुकार्य्ये सामान्यतः कीर्तितमेतदत्र ६

क्षीणचन्द्रमा की दशा में सज्जनों से विरोध और निरन्तर कलह और वाग्विवाद रहता है तथा उत्तम कार्य में चित्त नहीं लगता है यह सामान्यफल कहा है ॥ ६ ॥

अथ विशेषफलम् ।

मेषे शशांकस्य दशाप्रवेशे योषात्मजानन्दभरो जनानाम् ॥
विदेशकर्माभिरतिर्व्ययः स्यात्क्रौर्यं शिरोरुक् सहजारिबाधः ७

जो मेषराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री पुत्रादिकों से सुख पानेवाला, विदेश के कामों में प्रीति करनेवाला, खर्च करनेवाला, क्रूर स्वभाव, शिरो रोगी और भ्राता तथा रिपुओं की बाधावाला होता है ॥ ७ ॥

उच्चाधिरूढस्य दशा जडांशोः कुलानुसारं हि ददाति राज्यम् ॥
योषाविभूषात्मजगोतुरंगगजाप्तिसौख्योपचयं जयं च ८

जो अपनी उच्चराशि (वृष) में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में कुलानुसार से राज्यप्राप्ति होती है और स्त्री, भूषण, पुत्र, गौ, घोड़ा और हाथी इनकी प्राप्ति से सुख होता है और विजय मिलती है ॥ ८ ॥

मूलत्रिकोणाश्रितशीतरश्मेर्दशाविदेशाभिगमङ्करोति ॥
कृषेः क्रयाद्विक्रयतोधनाप्तिं कफानिलार्त्तिं स्वजनैर्विरोधम् ९

चन्द्रमा वृषराशि का होकर मूल त्रिकोण में बैठा हो तो विदेश की यात्रा कराता है और खेती से तथा क्रय विक्रय से धन का लाभ होता है और वात तथा कफ से उत्पन्न रोग से व्यथा और स्वजनों से विरोध होता है ॥ ९ ॥

वृषस्य पूर्वार्द्धगतो हिमांशुः पापान्वितः संजनयेज्जनन्याः ॥
मृत्युम्परार्द्धे जनकस्यसौम्यसंगेक्षणान्मृत्युसमानरोगम् १०

चन्द्रमा वृषराशि के पूर्वार्द्ध में पापग्रह के साथ बैठा हो तो माता की मृत्यु कराता है और जो परार्द्ध में हो तो पिता को मारता है और शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो माता पिता को मृत्युसमान कष्ट देता है ॥ १० ॥

द्वन्द्वाधिसंस्थेन्दुदशाप्रवेशे देवद्विजार्चाधनभोगसौख्यम् ॥
स्थलान्तरे संचलनं किलस्यात्सुखेन सम्यङ्मतिवैभवञ्च ११

जो मिथुन में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में देवता ब्राह्मणों का पूजन, धन भोग का सुख, देशान्तर गमन, अच्छी मति और विभवयुक्त होता है ।। ११ ।।

कुलीरसंस्थस्य कलानिधेस्स्यात्पाके पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः ॥
कलाकलापाकलनं च शैले वने रुचिर्गुह्यगदप्रकोपः १२

जो कर्क में चन्द्रमा बैठे तो उसकी दशा में पशु, धन और खेती की बढ़ती होती है और कलाओं की रचना करना, वन और पर्वत में रहने की इच्छा तथा गुप्त रोग होता है ।। १२ ।।

कण्ठीरवस्थस्य निशाकरस्य पाके नरोऽर्थं लभते च नित्यम् ॥
श्रेष्ठां प्रतिष्ठां विकलत्वमंगेऽनङ्गेपि हीनम्मनुजं प्रयाति १३

जो सिंहराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में नित्य धन की प्राप्ति होती है और उत्तम प्रतिष्ठा, शरीर में विकलता और कामदेव से हीन होता है ।।१३।।

कन्याश्रितेन्दोश्च दशाप्रवेशे विदेशयानं वनितोपलब्धिः ॥
कलाकलापामलबुद्धिवृद्धिः स्वल्पार्थसिद्धिश्च भवेन्नराणाम् १४

जो कन्याराशि में चन्द्रमा स्थित हो तो उसकी दशा में विदेश की यात्रा और स्त्री की प्राप्ति होती है और शिल्प में बुद्धि की वृद्धि तथा स्वल्प धन की प्राप्ति होती है ।। १४ ।।

कलानिधेस्तौलिगतस्य पाके लोलं मनः स्याद्वनिताविषादः ॥
वादश्च कैश्चिद्धनहीनता च प्रोत्साहभङ्गः खलु नीचसंगः १५

तुला में चन्द्रमा स्थित हो तो उसकी दशा में मन चंचल, स्त्रीजनों से विषाद, किसी से विवाद, धन की क्षीणता, उत्साह का भंग और नीच जनों का संग होता है ।। १५ ।।

नीचोपयातस्य विधोर्दशायां स्याद्व्याधिवृद्धिर्बहुधानराणाम् ॥
वियोजनं वै स्वजनेन नूनं मानाल्पताऽनल्पविकल्पचिन्ता १६

जो अपने नीच स्थान (वृश्चिकराशि) में चन्द्रमा स्थित हो तो अनेक व्याधि-युक्त शरीर, मान प्रतिष्ठा अल्प और मानसी चिन्ता अधिक तथा स्वजनों से वियोग होता है ।। १६ ।।

विमुक्तनीचोडुपतेर्द्दशायां भवेदवाप्तिः क्रयविक्रयाभ्याम् ॥
धर्म्मेंव्यथाधर्म्मविधानमल्पमल्पं च सख्यञ्जनमित्रवर्गैः १७

जो धनराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में क्रय-विक्रय से लाभ होता है और धर्म कार्य में व्यथा तथा अल्पता और मित्रवर्गों से अल्पसुख होता है ॥ १७ ॥

चापोपयातस्य च शीतरश्मेर्द्दशाप्रवेशे गजवाजिवृद्धिः ॥
पूर्वार्जितार्थोपहृतिर्नितान्तमन्यत्र सौभाग्यसुखानि नूनम् १८

जो चन्द्रमा धनुर्द्धरराशि में बैठा हो तो उसकी दशा में हस्ती और अश्व आदिकों की वृद्धि होती है तथा पूर्वाजित धन का विनाश होता है और दूसरे स्थान में निश्चय सुख-सौभाग्य का लाभ होता है ॥ १८ ॥

हिमकरस्य दशामकरस्थितः सुतसुखानि धनागमनानि च ॥
वितनुते तनुतामनिलात्तनोरनुदिनं गमनागमनानि वै १९

जो मकरराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो उसकी दशा में पुत्रादिकों का सुख और धन का आगम, बादी से शरीर में कृशता और हमेशा आना जाना होता रहता है ॥ १९ ॥

क्रोडे च पीडा व्यसनानि नूनं स्युर्मानवानां तनुता शरीरे ॥
ऋणोपलब्धिश्चलता नितान्तं दशाप्रवेशे कलशस्थितेन्दोः २०

जो कुम्भराशि में चन्द्रमा स्थित हो तो उसकी दशा के प्रवेश में प्राणियों के वक्षस्थल में पीड़ा, अनेक दुःख और शरीर की दुर्बलता, ऋण की प्राप्ति और दूरदेश की यात्रा सदैव होती है ॥ २० ॥

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोर्दशाप्रवेशे बलिभिर्विरोधः ॥
कलत्रमित्रद्रविणात्मजाद्यैर्भवेद्वियोगो दशनास्य पीडा २१

जो वर्गोत्तमी चन्द्रमा कुम्भराशि में स्थित हो तो बलियों से विरोध और स्त्री, पुत्र, धन और मित्र आदिकों से वियोग और दांतों में तथा मुख में पीड़ा होती है ॥ २१ ॥

मीनोपयातस्य च शीतभानोर्दशाप्रवेशे हि जलोद्भवार्थः ॥
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं शत्रुक्षयो बुद्धिविवृद्धिरुच्चैः २२

जो मीनराशि में चन्द्रमा बैठा हो तो जल से उत्पन्न धन का लाभ, स्त्री पुत्रादिकों से सुख, शत्रु का नाश और बुद्धि की बड़ी वृद्धि होती है ॥ २२ ॥

वर्गोत्तमस्थस्य झषे हिमांशोर्दशाप्रवेशे महिषीगजाश्वान् ॥
पुत्रादितोषं रिपुनाशमुच्चैर्लभेन्मनुष्यो हि यशोमनीषाम् २३

और जिस प्राणी के जन्मसमय मीन में वर्गोत्तमी चन्द्रमा स्थित हो तो वह प्राणी महिषी, गज और अश्वादि चतुष्पदों का लाभवाला और पुत्रादिकों से सुखवाला तथा शत्रुओं का नाश करनेवाला और यश व बुद्धि को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

दशाप्रवेशे व्ययभावगेन्दोः पापार्जितद्रव्यसमुद्गमस्स्यात् ॥
क्षीणे रिपुस्थानगते हिमांशौ सम्यक्फलं प्राग्गदितं तथैव २४

जिस प्राणी के जन्मसमय बारहें भाव में स्थित चन्द्रमा की दशा का प्रवेश हो तो पाप से अर्जित धन का लाभ होता है और क्षीण चन्द्रमा शत्रुस्थान में बैठा हो तो पूर्वोक्त फल भली भांति होता है ॥ २४ ॥

नीचस्थितस्याष्टमभावगेन्दोर्दशाप्रवेशे हि गदोद्गमः स्यात् ॥
चेत्पापयुक्तो निधनं तदानीं जातिच्युतं वा लभते मनुष्यः २५

इति चन्द्रदशाफलविचारः ।

और नीचस्थान में स्थित चन्द्रमा अष्टमभाव में बैठा हो और उसी की दशा का प्रवेश हो तो रोगों का आगमन होता है और यदि वही चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त हो तो वह प्राणी मृत्यु अथवा जातिभ्रंश को पाता है ॥ २५ ॥

इति चन्द्रदशाफलविचारः ।

अथ भौमदशाफलविचारः ।

तारा ग्रहाः स्वोच्चगृहादिसंस्था वक्रास्तमानानुगता यदि स्युः ॥
मिश्रं फलं ते निजपाककाले यच्छन्ति नूनं सुधिया विचिन्त्यम् १

जो दशाप्रवेश में भौमादि ताराग्रह अपने उच्च, गृह, नवांश आदि में बैठे वक्री व अस्तग्रहों के संग हों तो सम्पूर्ण फल मिश्रित (शुभाशुभ) होता है यह निश्चयकर विद्वानों को चिन्तवन करना चाहिये ॥ १ ॥

स्यात्पाकक्षितिनन्दनस्य च धनं शस्त्राच्च धात्रीपते-
र्भैषज्याच्च चतुष्पदादपि तथा नानाविधैरुद्यमैः ॥
पित्तासृग्ज्वरपीडनं क्षितिपतेर्भीतिश्च नीतिच्युतिं
मूर्च्छाद्यं च निजालये कलिरिति प्रोक्तं फलं सूरिभिः २

मंगल की दशा में राजा से, शस्त्र से, औषधियों से, चतुष्पदों की वृद्धि से और अनेक उद्यमों से धन की प्राप्ति होती है और पित्तबिकार, ज्वर, रुधिरप्रकोप, राजा से भय, घर में कलह, अन्याय कर्म में प्रवृत्ति और मूर्च्छा होती है। यह फल विद्वानों ने कहा है ॥ २ ॥

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणीसुतस्यात्मजदारसौख्यम् ॥
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणाङ्गणे चारुयशोविशेषात् ३

जो मंगल अपने मूलत्रिकोण में बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य स्त्री-पुत्रादिकों से सुख पाता है और साहस कर्म से धन का लाभ और युद्ध करने में बड़े यश और विजय को पाता है ॥ ३ ॥

अथ विशेषफलम्।

मेषोपजातस्य च भूसुतस्य स्युः पाककाले किल मङ्गलानि ॥
स्यात्सन्ततिःसाहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवास्यात् ४

मेषराशि के मंगल की दशा में अनेक मंगल कार्य होते हैं और संतान होती है, साहस प्राप्त होता है और अग्नि से व शत्रुओं से भय होता है ॥ ४ ॥

वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः ॥
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः ५

जो वृषराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में पुरुष बड़े हर्ष युक्त, बहुत बोलनेवाला, गुरु और देवताओं का भक्त और पराया उपकार आदर समेत करता है ॥ ५ ॥

युग्मस्थितोर्वीतनयस्य पाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः ॥
बहुव्ययःस्यात्स्वजनैर्विरोधी नरः कलाज्ञो नितरां विधिज्ञः ६

जो मिथुनराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में परदेश की यात्रा होती

है और शरीर में वातपित्त रोग से पीड़ा होती है तथा बहुत खर्च और मित्रों से विरोध होता है और अनेक कलाओं में प्रवीण व विधिविधान का जाननेवाला होता है ॥ ६ ॥

कर्कस्थभौमस्य भवेद्दशायामुद्यानवह्निप्रभवार्थयुक्तः ॥
नरो हि दारासुतदूरवर्त्ती क्लेशोपलब्धेर्बलहीनमूर्त्तिः ७

जो कर्कराशि में नीच अंशों का मंगल हो तो उसकी दशा में वन के पदार्थों से और अग्नि के योग से धन का लाभ होता है और स्त्री-पुत्रादिकों से दूर रहनेवाला और क्लेशयुक्त तथा बलहीन होता है ॥ ७ ॥

संत्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान् सर्वगुणोपपन्नः ॥
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात्प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः ८

अपने नीच अंशों को छोड़कर कर्कराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में विख्यातकीर्ति, सम्पूर्ण गुणयुक्त, शरीर में अधिक बलवाला और चतुष्पदों से युक्त तथा गुप्तस्थान में अकस्मात् व्याधिवाला होता है ॥ ८ ॥

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम् ॥
कान्तासुताद्यैश्च वियोगता च बाधा तथा हेतिहुताशजाता ९

जो सिंहराशि में मंगल बैठा हो उसकी दशा में मनुष्य बहुत मनुष्यों का नायक होता है और स्त्री पुत्रों से वियोग और शस्त्र तथा अग्नि से बाधा होती है ॥ ९ ॥

कन्यानुजातावनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात् ॥
यज्ञक्रियायामपि सादरः स्याद्दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यः १०

जो कन्याराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य बड़े आचार-विचार से युक्त होता है और यज्ञादि उत्तम कर्म में प्रवृत्तिवाला तथा स्त्री, पुत्र, भूमि और धन-धान्य से सुख पानेवाला होता है ॥ १० ॥

तुलागतेलासुतपाककाले स्याद्द्रव्यभार्यावियुतो हि मर्त्यः ॥
चतुष्पदाभावकलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वै विकलांगयष्टिः ११

जिसके तुलाराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में वह मनुष्य धन तथा स्त्री से रहित होता है और चतुष्पदों के अभाव और कलह से उत्सव रहित तथा विकल शरीर होता है ॥ ११ ॥

पुमान् भवेद्वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्त्ता ॥
सुसंग्रहे जातमनः प्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च १२

जो वृश्चिकराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य कृषिकर्म करता है और अनेक धन का संग्रही और बहुतों से द्वेषभाव रखनेवाला तथा बहुत बोलनेवाला होता है ॥ १२ ॥

धनुर्द्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तः ॥
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात्कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च १३

जो धनुर्धरराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में देवता व ब्राह्मणों की भक्ति और राजा से मनोरथों की सिद्धि होती है तथा वह प्राणी कलह करने से उदासीन रहता है ॥ १३ ॥

वक्रस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिस्स्वकुलानुमानात् ॥
युद्धे विवादे विजयो नितान्तं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम् १४

जो मकरराशि में भौम बैठा हो तो उसकी दशा में अपने कुल के अनुमान से राज्य का लाभ होता है और युद्ध एवं विवाद में उसकी विजय होती है तथा वह उत्तम रत्न, सुवर्ण और घोड़ों से सुख को प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

उच्चांशमुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः ॥
शस्त्राद्भवेच्छ्वापदतोपि भीतिः सन्तोषजाल्पत्वमहाप्रयासः १५

और जो मंगल उच्चांश से निकल गया हो तो यत्न करने से कार्य्य की सिद्धि होती है और शस्त्र से तथा व्याघ्रादि से भय और अल्पसंतोष तथा बड़ा परिश्रम होता है ॥ १५ ॥

आचारहीनश्च सुतादिचिन्ता बहुव्ययोद्वेगसमाकुलत्वम् ॥
कुम्भोपयातस्य च मंगलस्य स्यात्पाककाले फलमेतदेव १६

जो कुम्भराशि में मङ्गल बैठा हो तो उसकी दशा में आचार-विचार से हीन, पुत्रादिकों की चिन्ता, धन का अधिक व्यय और चित्त की उद्वेगता को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

मीनोपयातावनिनन्दनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिन्ता ॥
व्ययामयत्वे च ऋणोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासाः १७

जो मीनराशि में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में पुत्रादिजनों से चिन्ता, बहुत व्यय, रोग तथा ऋण की प्राप्ति और विर्चचिका और दद्रुरोग से शरीर को व्यथा तथा परदेश में निवास होता है ॥ १७ ॥

संग्रामसम्प्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोऽत्यन्तगुणाभिरामः ॥
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः १८

जो मीनराशि में और मीन ही के नवांशा में वर्गोत्तमी मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में संग्राम में विजय वाला, बलयुक्त, अनेक गुणों से शोभित और नानाप्रकार की वस्तुओं के लाभवाला होता है ॥ १८ ॥

नीचांशसंस्थस्य कुजस्य पाके वृथाटनत्वं मनसोविषादः ॥
फलोन्मुखे कार्यमतीव दूरे नीचत्वमुच्चैर्विगताधिकत्वम् १९

जो नीच अंशों में मङ्गल बैठा हो तो मन को बिषाद और व्यर्थ पृथ्वी का भ्रमण और कार्य्य की सिद्धि के समय विघ्न तथा उच्चपद से नीचे पद पर नियुक्त होता है ॥ १९ ॥

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्म्माधिगतस्य पाके ॥
राज्योपलब्धिर्विजयोरिपुभ्यः सद्वाहनालङ्करणानि नूनम् २०

इति भौमदशाफलविचारः ।

जो अपने मूलत्रिकोण या उच्च राशि में, दशमभवन में मंगल बैठा हो तो उसकी दशा में राज्य का लाभ, शत्रुओं से विजय और अच्छे वाहन तथा अलंकार आदिकों से सुख प्राप्त होता है ॥ २० ॥

इति भौमदशाफलबिचारः ।

अथ बुधदशाफलविचारः ।

विद्याविवेकप्रभुतासमेतः कृषिक्रियायज्ञविधानचित्तः ॥
महोद्यमादाप्तधनश्च नूनं भवेन्मनुष्यः शशिजस्य पाके १

बुध की दशा में विद्या, विवेक और बहुत जनों के स्वामित्व से युक्त होता

है तथा यज्ञविधान और कृषिकर्म्म में चित्त देनेवाला होता है तथा अनेक उद्यमों से धन का लाभ करनेवाला होता है ॥ १॥

शिल्पादिकर्मण्यतिकौशलं स्यान्नित्योत्सवोत्कर्षविशेष एव ॥
सद्वाद्यगीताभिरुचिर्नवीनः सद्भाण्डभूषागृहनिर्मितत्वम् २

अनेक प्रकार की कारीगरी में कुशल, निरन्तर सुखी और हर्ष में काल व्यतीत करनेवाला, उत्तम गान और वाद्य में विशेष प्रीति रखनेवाला, नवीन अच्छे पात्र, आभूषण और स्थानों का निर्माण करने वाला होता है ॥ २ ॥

कुतूहलैर्भाषणहास्यहर्षैः कालक्रमत्वं विनयोपलब्धिः ॥
आचार्य्यविद्वद्गुरुसंमतत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ३

अनेक प्रकार की क्रीड़ा, बातचीत और हास्य में समय बितानेवाला, विनययुक्त, आचार्य और गुरुजनों से संमति करनेवाला और स्त्री पुत्रादिकों से सुख का पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

पीडापि गाढा कफवातपित्तैरसंचयोर्थस्य च सौम्यपाके ॥
बलाबलत्वं प्रविचार्य सर्वं शुभाशुभत्वं सुधिया विचिन्त्यम् ४

जो बुध नीचराशि में या अस्त या निषिद्धभाव में बैठा हो तो उसकी दशा में वात-पित्त-कफों करके कोई विशेष रोग से पीड़ा होती है और संचित धन का नाश होता है। ऐसे बलाबल का विचार करके दशा का फल पंडितजनों को कहना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ विशेषफलम्।

मेषस्थशीतद्युतिसूनुपाके नैकत्रसंस्थानकरो नरः स्यात् ॥
स्तेयानृतद्यूतशठत्वयुक्तो विमुक्तसौजन्यविधिस्तु निस्वः ५

जिसके मेषराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में उस मनुष्य का एक स्थान पर निवास नहीं होता है और वह चोरी, मिथ्याभाषण, द्यूत और शठता से युक्त और सुजनता से रहित तथा दरिद्री होता है ॥ ५ ॥

वृषाधिरूढस्य जडांशुसूनोर्द्दशाप्रवेशे व्ययकृन्मनुष्यः ॥
मातुस्त्वनिष्टश्च कलत्रपुत्रमित्रादिचिंतागलरुक् भयार्त्तः ६

जो वृषराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में धन का अधिक व्यय होता है

और माता को कष्ट तथा स्त्री, पुत्र और मित्रादिकों की चिन्ता, भयभीत चित्त और गल में रोगयुक्त होता है ।। ६ ।।

द्वन्द्वाधिसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेकवार्त्ता बहुजल्पकर्त्ता ॥
दारात्मजज्ञातिसुखोपपन्नो नूनं जनन्याश्च सुखेन हीनः ७

जो मिथुनराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में अनेक बातों के कथन में चित्त लगानेवाला, स्त्री-पुत्रों और ज्ञातिवर्गों से सुखी और माता के सुख से हीन होता है ।। ७ ।।

कर्क्काश्रितस्येन्दुसुतस्य पाके विदेशवासाल्पसुखो विरोधी ॥
मित्रैश्च सत्काव्यकलार्ज्जितार्थोऽत्यर्थं मनुष्यो व्यवसाययुक्तः ८

जो कर्कराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में विदेशवासी, अल्पसुखी, मित्रों का विरोधी, उत्तम काव्यकला से धन प्राप्त करनेवाला और अनेक व्यवसाय से युक्त होता है ।। ८ ।।

सिंहस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके लोलं भवेद्वैभवमेव धैर्य्यम् ॥
स्वमित्रदारात्मजसौख्यहानिः स्यान्मानवानामतिहीनता च ९

जो सिंहराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्यों का वैभव और धैर्य अस्थिर होता है और अपने मित्रों से व स्त्री-पुत्रों से सुख की हानि और बुद्धि की हीनता होती है ।। ९ ।।

उच्चाश्रितस्येन्दुसुतस्य पाके स्यान्मानवो वै बहुवैभवाढ्यः ॥
लेखक्रियाकाव्यकलानुरक्तो जितारिपक्षश्च सुनीतियुक्तः १०

जिसके कन्याराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी धनधान्य संयुक्त बड़ा वैभववाला होता है और लिखने तथा काव्य रचना में अनुरक्त, शत्रु से विजय पानेवाला और नीति से संयुक्त होता है ।। १० ।।

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके विवेकविख्यातगुणैः प्रपूर्णः ॥
विदेशयानानुरतो नरः स्यात्पराक्रमादाप्तधनो विधिज्ञः ११

जो मूलत्रिकोण में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी विवेक, बुद्धि और गुणों से परिपूर्ण, विख्यातकीर्त्ति, परदेश की यात्रा करने वाला और अपने बाहुपराक्रम से धन का लाभ करनेवाला होता है ।। ११ ।।

तुङ्गत्रिकोणक्रमणप्रकर्त्तुर्बुधस्य पाके पशुसौख्यहानिः ॥
स्वबन्धुवैरं विकलत्वमङ्गे कलिप्रसङ्गेतिविहीनता स्यात् १२

जोबुध उच्च व मूलत्रिकोण के अंशों से आगे बढ़ गया हो तो उसकी दशा में पशुओं के सौख्य की हानि, अपने बन्धुजनों से वैर, शरीर में विकलता और कलह करने में हानि होती है ॥ १२ ॥

तुलागतस्येन्दुसुतस्य पाके स्यात्क्षीणता दृङ्मतिवाग्विलासे ॥
शिल्पादिकर्म्मण्यतिनैपुणं च वाणिज्यतोऽर्थःपशुपीडनं च १३

जिस मनुष्य के तुलाराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में उस प्राणी की दृष्टि क्षीण, व्याख्या करने में बुद्धि, कारीगरी के कार्यों में निपुणता, व्यापार से धन का लाभ और पशुओं को पीड़ा होती है ॥ १३ ॥

पाके भवेद्वृश्चिकसंस्थितस्य मृगांकसूनोर्मनुजोल्पतुष्टः ॥
आचारकर्म्मक्रमणानुरक्तो व्ययेन युक्तः स्वजनैर्वियुक्तः १४

जिसके वृश्चिकराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी अल्पसुखी, आचार और कर्म-धर्म में अनुरागवाला, धन का अधिक व्यय करनेवाला और स्वजनों से वियोगवाला होता है ॥ १४ ॥

शरासनाध्यासनतांगतस्य बुधस्य पाके बहुनायकः स्यात् ॥
मैत्री च नामद्वयतासमेतः कृषिक्रियावित्तयुतो मनुष्यः १५

जिसके धनुर्धरराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी बहुत जनों का मालिक होता है और सर्वजनों से मित्रता करनेवाला, दो नामों से प्रसिद्ध और कृषिकर्म से धन का पानेवाला होता है ॥ १५ ॥

मृगांकसूनोर्हि मृगस्थितस्य पाके भवेद्भूरिऋणन्नराणाम् ॥
बह्वादनं वै कपटत्वमुच्चैर्नीचैश्च सख्यं मतिहीनता च १६

जिसके मकरराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी बहुत ऋणी हो जाता है और अधिक भोजन करनेवाला, कपटबुद्धिवाला, नीच जनों से मैत्री करनेवाला और बुद्धि से हीन होता है ॥ १६ ॥

सौम्यस्य कुम्भोपयुतस्य पाके विहीनतेजा मनुजोऽतिनिःस्वः ॥
मित्रादिपीडापरिपीडितात्मा विदेशयानव्यसनानुरक्तः १७

जिसके कुम्भराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी धन और तेज से विहीन होता है और मित्रादिजनों से कष्ट पानेवाला और अनेक व्यसनयुक्त होकर विदेशवासी होता है ॥ १७ ॥

नीचांशसंस्थस्य बुधस्य पाके विवेकसत्योपहितो हि मर्त्यः ॥
स्थानांतरस्थोऽव्यवसायशीलः स्यादल्पलाभः कृशकायकान्तिः १८

इति बुधदशाफलविचारः ।

जिसके नीचराशि के अंश में स्थित होकर मीनराशि में बुध बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी विवेक और सत्य से हीन, स्थानान्तर में रहनेवाला, व्यवसाययुक्त, दुर्बल शरीर और अल्पलाभ से युक्त होता है ॥ १८ ॥

इति बुधदशाफलविचारः ।

—:०:—

अथ गुरुदशाफलविचारः ।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्चितस्य भूपप्रधानाप्तमनोरथः स्यात् ॥
सत्कर्मधर्मागमशास्त्रवेत्ता भवेन्मनुष्यः सततं विनीतः १

बृहस्पति की दशा के प्रवेश में राजा के मंत्री से अनेक मनोवाञ्छित फल का पानेवाला, उत्तम धर्मयुक्त, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, वेद-शास्त्रों का जाननेवाला और सबसे विनीतभाव रखनेवाला मनुष्य होता है ॥ १ ॥

यज्ञादिकर्म्मण्यतिसादरत्वं भवेत्प्रवृत्तिर्द्विजदेवभक्तौ ॥
अत्यर्थमर्थो विभुताविशेषः पुत्रादितोषः पुरुषस्य नूनम् २

यज्ञादि कर्मों में अत्यन्त आदर और देवता व ब्राह्मणों की भक्ति में प्रवृत्ति होती है तथा अत्यन्त धन व विशेष विभुता होती है और निश्चय कर पुरुषों को पुत्रादिकों से संतोष होता है ॥ २ ॥

भूम्यम्बराश्वादिसुखोपलब्धिर्बलोपपन्नः कुलधुर्यता च ॥
गतागतागामिविचारणोच्चैः सत्संगतिश्चारुमतिर्धृतिश्च ३

गुरु की दशा में भूमि व वस्त्रों का लाभ, अश्वादि वाहनों का सुख, बल से युक्त, अपने कुल में श्रेष्ठ, पूर्वापर का विचार करनेवाला, उत्तमजनों का संग करनेवाला और श्रेष्ठ बुद्धिवाला होता है ॥ ३ ॥

दाहादिपीडापि गले कदाचिद्विरुद्धभावस्थितितो विचिन्त्यम् ॥
सामान्यमेतत्फलमुक्तमार्य्यैर्व्वक्ष्येऽधुना यत्प्रतिराशिषूक्तम् ४

और कभी-कभी गले में दाहादि पीड़ा होती है और विरुद्धभाव (नीच राशि या शत्रुगृह इत्यादिकों) में स्थित बृहस्पति दुष्ट फल को देता है। यह सामान्य रीति से फल आर्यों ने कहा है। अब विशेषरीति से प्रति राशिगत गुरु का फल वर्णन करते हैं ॥ ४ ॥

अथ विशेषफलम्।

दशाप्रवेशे त्रिदशार्च्चितस्य मेषोपयातस्य भवेन्नराणाम् ॥
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः ५

मेषराशि में स्थित बृहस्पति की दशा में मनुष्यों को विशेष धन का लाभ होता है और वह बहुत जनों का अधीश होकर स्त्री-पुत्रादिकों से अधिक सुख पाता है ॥ ५ ॥

वृषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोतिदुःखी ॥
विदेशवासी बहुसाहसश्च वित्ताल्पता वित्तगतोत्सवश्च ६

वृषराशि में स्थित बृहस्पति की दशा में मनुष्य अत्यन्त दुःखी, विदेशवासी, बड़े साहसकर्मवाला, धनहीन और आनन्दरहित होता है ॥ ६ ॥

युग्मोपयातस्य बृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषः शुचिः स्यात् ॥
मात्रा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रवादातिविषादतप्तः ७

मिथुनराशि में स्थित बृहस्पति की दशा में प्राणी पवित्र शरीरवाला, माता और कुटुम्बी जनों का विरोधी और स्त्री से कलह करनेवाला तथा विषाद से संतापयुक्त होता है ॥ ७ ॥

वाचस्पतेरुच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराज्यलब्धिः ॥
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवञ्च ८

जो बृहस्पति अपनी उच्चराशि में बैठा हो तो उसकी दशा में कुल के राज्य का लाभ होता है और बड़े नाम से विख्यात, ऊँचे जनों से मित्रता और बहुत वैभव से युक्त होता है ॥ ८ ॥

वाचाम्पतेरुच्चसमुत्थितस्य पाके प्रवेशे पितृमातृदुःखी ॥

पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तश्च नानाव्यसनाभिभूतः ९

जो उच्चांश से विहीन होकर उच्चराशि में बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी माता व पिता से दुःखी और पूर्व संचित द्रव्य के विनाश से चितायुक्त तथा अनेक प्रकार के व्यसनों से युक्त रहता है ॥ ९ ॥

सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः ॥
नृपाप्तमानो ननु मानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः १०

जो सिंहराशि में गुरु बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी धनवान्, दाता, राजा से मान प्रतिष्ठा पानेवाला और स्त्री-पुत्र तथा भ्रातृवर्गों से हर्ष को प्राप्त होता है ॥ १० ॥

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भवेन्मनुष्यो नृपलब्धमानः ॥
कान्तासुतावाप्तसुखः कदाचिच्छूद्रादिनीचैः कलहप्रसक्तः ११

जो कन्याराशि में बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी राजद्वार में मान व प्रतिष्ठा पानेवाला और स्त्री-पुत्रादिकों से सुखी तथा नीच शूद्र आदि मनुष्यों से कलह करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

तुलास्थदम्भोलिभृदीज्यपाके विवेकहीनः प्रमितान्नभोक्ता ॥
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात् १२

जो तुलाराशि में गुरु बैठा हो तो उसकी दशा में वह मनुष्य विवेकहीन, अल्पभोजन करनेवाला, स्त्री-पुत्रों से शत्रुता करनेवाला और उत्साहहीन होता है ॥ १२ ॥

बृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान् समर्थः ॥
प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणी भवेन्ना नियमेन हीनः १३

जो वृश्चिकराशि में बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी बुद्धिमान्, सब कार्य्यों के करने में समर्थ, बड़ा विद्वान्, पुत्रों के उत्साह से युक्त, सबसे विनीत भाव रखनेवाला, ऋण से रहित तथा नियम से हीन होता है ॥ १३ ॥

मूलत्रिकोणांशगतस्य पाके गुरोर्दशायां मतिमान् मनुष्यः ॥
स्यान्माण्डलीकोयदि वा प्रधानः पित्रान्वितः स्त्रीवचनानुपक्तः १४

जो मूलत्रिकोण के अंश में बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशा में वह

मनुष्य बुद्धिमान्, मंडलाधीश राजा अथवा राजा का मंत्री, पिता से युक्त और स्त्री के वचनों का पालन करनेवाला होता है ।। १४ ।।

नखांशकेभ्यः परतश्च चापे संस्थस्य देवेन्द्रगुरोर्दशायाम् ॥
कृषिक्रियायज्ञचतुष्पदेषु भवेन्मनुष्यस्य मनःप्रवृत्तिः १५

जो धनुर्धरराशि में बीस अंशों से अधिक अंशों में बृहस्पति हो तो उसकी दशा में वह प्राणी कृषिकर्म में मन लगानेवाला, यज्ञादि उत्तम कर्मों का करने वाला और चतुष्पदों से सुखी होता है ।। १५ ।।

नीचांशसंस्थस्य मृगान्वितस्य गुरोर्दशायां परकर्मकर्त्ता ॥
मर्त्यो भवेज्जाठरगुह्यरोगी सार्द्धं वियोगी धनबन्धुभिश्च १६

जो नीच नवांश से संयुक्त होकर मकर में बृहस्पति बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी पराये कार्य का करनेवाला होता है और उदर में व गुप्तस्थान में रोगी होकर बन्धुजनों से वियोगी होता है और उसके धन की क्षीणता होती है ।। १६ ।।

वाचस्पतेर्नीचलवोज्झितस्य पाके निषादात्कृषितो धनाप्तिः ॥
भूमीरुहेभ्यो धनवंचनाद्वा क्लेशोपलब्धिर्नन्तु मानवस्य १७

जिसके नीच अंश को त्यागकर बृहस्पति मकर में बैठा हो तो उसकी दशा में उस मनुष्य को निषादगणों से और कृषिकर्म से धन का लाभ होता है और वह प्राणी वृक्षादिकों तथा धन के छल से क्लेश को प्राप्त होता है ।। १७ ।।

पाकप्रवेशे कलशस्थितस्य वाचामधीशस्य नरः कलाज्ञः ॥
विद्याप्रसादार्थमहामतिः स्यात्कान्ताविलासानुरतो नितान्तम् १८

जिसके कुम्भराशि में गुरु बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी अनेक कलाओं से परिपूर्ण, विद्या से प्रसन्न होनेवाला, धनी, बुद्धिमान् और निरन्तर स्त्री से हास-विलास करनेवाला होता है ।। १८ ।।

झषोपयातस्य च गीष्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषो मनीषी ॥
सम्मानसूनुप्रमदादिसंपद्राजान्वयोपात्तमहासुखश्च १९

इति गुरुदशाफलविचारः ।

जिसके मीनराशि में गुरु बैठा हो तो उसकी दशा में वह प्राणी बुद्धि से युक्त, सन्मान पानेवाला, पुत्र-स्त्री आदि से सुख पानेवाला और राजपक्ष से बहुत सुख पानेवाला होता है ॥ १९ ॥

इति गुरुदशाफलविचारः ।

—:o:—

अथ शुक्रदशाफलविचारः ।

दैत्यामात्यः स्वीयपाकप्रवेशे योषाभूषारत्नवस्त्रोपलब्धिम् ॥
नानामानं मानवानां प्रकुर्य्यात्कन्दर्पस्याभ्युदगमात्सौख्यमुच्चैः १

शुक्र की दशा में मनुष्यों को स्त्री, भूषण, रत्न और वस्त्रों की प्राप्ति, राजद्वार से संमानित और कामचेष्टा से अधिक सुखवाला होता है ॥ १ ॥

गीते नृत्येऽत्यन्तसंजातहर्षो विद्याभ्यासप्रीतिकृच्चारुशीलः ॥
विद्याधिक्यश्चान्नदानप्रवृत्तिर्दक्षो मर्त्यो विक्रये वा क्रये वा २

विद्या में अभ्यास करनेवाला, गीत और नृत्य से हर्षित होनेवाला, अच्छे स्वभाववाला, विद्याओं में निपुण, अन्न के दान में रुचिवाला और क्रय-विक्रय में चतुर होता है ॥ २ ॥

गोवाहनेभ्यो ननु नन्दनेभ्यः सौख्यम्भवेन्नन्दननन्दनेभ्यः ॥
पूर्वार्जितस्य द्रविणस्य लब्धिः कलिः कुले स्याच्चलनं स्थलाच्च ३

शुक्र की दशा में गौ तथा वाहनों से, पुत्रों से और पौत्रों से सुख होता है और पूर्व संचित धन का लाभ होता है । (निर्बल शुक्र की दशा में) कुल में कलह और अपने स्थान से चलायमान होती है ॥ ३ ॥

कफानिलाभ्यां किल निर्ब्बलं स्यात् कलेवरन्नीचतरैश्च वैरम् ॥
मित्रादिचिन्तापरितप्तमेव चित्तं च सख्यं कुजनैः कदाचित् ४

वात और कफ के प्रकोप से शरीर की निर्बलता, नीच मनुष्यों से वैर, मित्र आदि की चिंता, चित्त को संताप और कभी नीचजनों से प्रीति भी होती है ॥ ४ ॥

सामान्यतः प्रोक्तमिदं सितस्य दशाफलं पूर्व्वमुनिप्रणीतम् ॥
अथोच्यतेऽत्र प्रतिराशिजातं फलं प्रयोज्यम्बलतारतम्यात् ५

मुनिजनों का रचा हुआ यह शुक्रदशा का फल सामान्य रीति से कहा है। अब प्रत्येक राशिस्थ शुक्र के फल को कहते हैं उसको बल के अनुसार कहना चाहिये ॥५॥

अथ विशेषफलम्।

शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणाम् ॥
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगता चञ्चलचित्तवृत्तिः ६

जिसके मेषराशि में शुक्र बैठा हो उस मनुष्य के स्त्री, धन और सुख का नाश होता है और सदा भ्रमण करनेवाला, व्यसनों से युक्त तथा चित्त की उद्वेगता और मन की चंचलतावाला होता है ॥ ६ ॥

वृषोपयातोशनसो दशायां कृषिक्रियासत्यसुसौख्यवृद्धिः ॥
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतरां विचित्रा दातृत्वकन्याजननप्रसादः ७

जो वृषराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में कृषिक्रिया, सत्य और उत्तम सुख की वृद्धि होती है तथा शास्त्रों में विलक्षण बुद्धिवाला, दानी और कन्याओं की संततिवाला होता है ॥ ७ ॥

युग्मगामिभृगुजस्य दशायां मानुषो भवति काव्यकलाज्ञः ॥
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचित्तः ८

जो मिथुन राशि का शुक्र हो तो उसकी दशा में मनुष्य काव्य-कला का ज्ञाता होता है और हास-विलास वाला, कथाश्रवण में रुचिवाला और परदेश जाने में उत्सुक चित्त होता हैं ॥ ८ ॥

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्य्यदक्षः ॥
भार्यान्तरावाप्तिसमुत्सुकोपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः ९

जो कर्कराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य अपने कार्य्य में दक्ष होता है और अन्य स्त्री की प्राप्ति करने में उत्सुक तथा अनेक प्रकार के उद्यम करनेवाला और कृतज्ञ होता है ॥ ९ ॥

दैत्येन्द्रवंद्यस्य मृगेन्द्रगस्य पाकप्रवेशे वनिताप्तवित्तः ॥
नूनं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखी मनुष्यः १०

जो सिंहराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्रियों से धन का लाभ होता है और पराये धन से जीवनवाला तथा पुत्रों से और चतुष्पद जीवों से थोड़ा सुख होता है ॥ १० ॥

पाके भवेद्दानववंदितस्य कन्यास्थितस्यापचयः सुखानाम् ॥
विचाल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलम्मनः स्वस्थलतश्चलत्वम् ११

जो कन्याराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में सुखों का नाश, धन की कमी, मनोरथ का नाश, मन में चंचलता और अपने स्थान से चलायमान होता है ॥ ११ ॥

तुलाधरस्थासुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः ॥
विशिष्टमानो धनवाहनाढ्यः स्वज्ञातिसंप्राप्तमहासुखः स्यात् १२

जो तुलाराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य खेती करनेवाला, धन-वाहनों से युक्त और जाति से बड़ा सुख पानेवाला तथा अधिक मान-प्रतिष्ठा-वाला होता है ॥ १२ ॥

भवेद्भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी ॥
परस्य कार्य्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः १३

जो वृश्चिकराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में विदेशवासी, परोपकार में निरत, बड़ा प्रतापी, ऋण से युक्त और कलह करनेवाला होता है ॥ १३ ॥

चापोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं नृपतेः प्रतिष्ठा ॥
कलाकलापाकलनं किल स्यात् क्लेशाधिकत्वंद्विषतां प्रवृद्धिः १४

जो धनुर्धरराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में राजद्वार से यथेष्ट सम्मान प्रतिष्ठा पानेवाला, शिल्पकला में निपुण, बहुल दुःखी तथा शत्रुजनों की वृद्धिवाला होता है ॥ १४ ॥

नक्रस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पुरुषः शत्रुविनाशदक्षः ॥
श्लेष्मानिलाभ्यां निबलः कदाचित्कुटुम्बचिन्तासहितस्सहिष्णुः १५

जो मकरराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य शत्रुओं का विनाश करने में चतुर, कफ और वात से निर्बल और कुटुम्बीजनों की चिंता से युक्त सहनशील होता है ॥ १५ ॥

उशनसः कलशस्थितिकारिणो यदि दशा पुरुषोऽव्यसनाकुलः ॥
गदयुतो वियुतः शुभकर्म्मणा व्रतहतोप्यनृतोक्तिरतो भवेत् १६

जो कुम्भराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में अनेक व्यसनों से व्याकुल, रोग से युक्त शरीर, श्रेष्ठकर्मों से रहित, हतव्रत और मिथ्यावादी होता है ॥ १६ ॥

दशाप्रवेशे भृगुनन्दनस्य मीनाधिसंस्थस्य नृपप्रधानः ॥
स्यान्मानवोऽत्यन्तधनप्रसन्नः कृषिक्रियाभोगपरोपपन्नः १७

जो मीनराशि में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में राजा का प्रधान, अत्यन्त धन से प्रसन्न, कृषि से लाभ और अनेक सुखों से युक्त होता है ॥ १७ ॥

स्वोच्चांशभाजो भृगुजस्य पाके विलग्नकर्मोपगतस्य मर्त्यः ॥
क्षोणीहिरण्योत्तमवारणाद्यैर्युतो भवेद्वै निजवंशनाथः १८

इति शुक्रदशाफलविचारः ।

जो अपने उच्च नवांश या लग्न या दशमभाव में शुक्र बैठा हो तो उसकी दशा में पृथ्वी और धन का लाभ तथा हाथी-घोड़े इत्यादि वाहनों से युक्त और अपने कुल में प्रधान होता है ॥ १८ ॥

इति शुक्रदशाफलविचारः ।

अथ शनिदशाफलविचारः ।

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरग्रामकृताधिकारः ॥
धीमांश्च दानाधिकतातिशाली नानाकलाकौशलसंयुतश्च १

बलवान् शनैश्चर की दशा में नगर, पुर और ग्राम का अधिकारी, बुद्धिमान्, बड़ा दानी और अनेक प्रकार की कलाओं में कुशल होता है ॥ १ ॥

तुरङ्गहेमाम्बरकुञ्जराद्यैः सम्पन्नतां याति विनीततां च ॥
देवद्विजार्चाभिरतो विशेषात् पुरातनस्थानकलब्धसौख्यः २

हाथी-घोड़े इत्यादि चतुष्पदों की वृद्धिवाला, स्वर्ण और वस्त्रों से संपन्न, सब से विनयभाव रखनेवाला, देवता व ब्राह्मणों का पूजन करनेवाला और प्राचीन स्थान के लाभ से बड़ा सुखी होता है ॥ २ ॥

देवद्विजेन्द्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्त्तिः स्वकुलावतंसः ॥
आलस्यनिद्राकफवातपित्तज्वराङ्गनादद्रुविचर्चिकार्त्तः ३

ब्राह्मण व देवताओं के स्थान का निर्माण करनेवाला, बड़ा सुशील, उत्तम कीर्त्तिवाला और अपने कुल का प्रकाश करनेवाला होता है तथा नीचादि स्थानगत निर्बल शनैश्चर हो तो उसकी दशा में अधिक आलस्य, निद्रा और

कफ, वात तथा पित्त से शरीर में रोग, ज्वरपीड़ा और स्त्री-संग से रोगोत्पत्ति, दद्रु और विर्चिकादि रोगों से पीड़ा को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

सामान्यमेतत्फलमुक्तमत्र शनेर्दशायां गदितं हि पूर्वैः ॥
अथाभिधास्ये प्रतिराशिजाते फलं सुधीभिर्बलतो विचिन्त्यम् ४

यह सामान्यरीति से शनैश्चर की दशा का फल पूर्वाचार्य्यों के मत से वर्णन किया। अब प्रत्येक राशि का फल लिखते हैं। पण्डितों को चाहिये कि बलाबल विचार कर फल कहें ॥ ४ ॥

अथ विशेषफलम् ।

मेषोपयातस्य शनैश्चरस्य दशाप्रवेशे पुरुषो विशेषात् ॥
क्लेशाभिभूतः पतनाप्तदुःखो विचर्चिकाद्यामयतः कृशाङ्गः ५

जो मेषराशि में शनि बैठा हो तो उसकी दशा में अनेक दुःखों से शरीर को पीड़ा और रुधिर-प्रकोप से अनेक विर्चिकादि रोगों की उत्पत्ति और ऊंचे से गिरने पर व्यथा होती है ॥ ५ ॥

वृषोपयातस्य दिनेशसूनोः पाकप्रवेशे मतिमान्मनुष्यः ॥
नरेन्द्रसन्मानविराजमानः संग्रामसंप्राप्तयशो विशेषः ६

जो वृषराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य बुद्धिमान्, राजद्वार से सन्मान प्राप्त और संग्राम में यश पानेवाला होता है ॥ ६ ॥

शनेर्दशायां मिथुनाश्रितस्य नरो भवेच्चारुविलासशीलः ॥
चौराच्च दारादिजनाद्धनाप्ती रणप्रसङ्गाच्च परोपकारी ७

जो मिथुनराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में अनेक हास-विलास वाला, चोरी से और स्त्रीजनों से धन के लाभवाला, पराया उपकार करनेवाला तथा कलह करने से धन के लाभवाला होता है ॥ ७ ॥

कर्कस्थिताकर्तिमजपाककाले लोलम्मनःपुत्रकलत्रमित्रैः ॥
श्रोत्रे च नेत्रे परिपोडनं स्यात्कलेवरं निर्बलतां प्रयाति ८

कर्क राशि में जो शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में स्त्री, पुत्र और मित्रादिकों से मन चंचल, नेत्रों और कर्णों में व्यथा और शरीर में निर्बलता होती है ॥ ८ ॥

पञ्चाननस्थस्य शनेर्दशायां बाधा भवेद्वै विविधा नराणाम् ॥
दारात्मजाद्यैः कलहप्रसंगस्तुरङ्गगोदासजनेष्वसौख्यम् ९

जो सिंहराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य को अनेक बाधायें होती हैं तथा स्त्री-पुत्रादिकों से कलह तथा घोड़ा, गौ और दास-दासीजनों को कष्ट होता है ॥ ९ ॥

कन्योपयातस्य शनेर्दशायां भवेत्क्रमेण द्रविणोपलब्धिः ॥
जलाच्च भूमीरुहतस्तथोच्चप्रदेशतश्चापि महाप्रमोदः १०

जो कन्याराशि में शनि बैठा हो तो उसकी दशा में क्रम से जल से, वृक्षों से और उच्चप्रदेश से धन का लाभ तथा बड़ा आनन्द होता है ॥ १० ॥

काले दशायां नलिनीशसूनोस्तुलागतस्योत्तमराज्यलक्ष्मीः ॥
गजाश्वहेमाम्बररत्नपूर्णा भवेन्नराणाङ्करुणाधिकत्वम् ११

जो तुलाराशि में शनि बैठा हो तो उसकी दशा में उत्तम राज्यलक्ष्मी का लाभ तथा हाथी, घोड़ा, सुवर्ण, उत्तम वस्त्र और रत्नों का लाभ एवं चित्त में दयाभाव होता है ॥ ११ ॥

सरीसृपस्थस्य शनश्चरस्य पाके नरः साहसकर्म्मयुक्तः ॥
वृथाटनो वै कृपणोऽनृतश्च नीचानुरक्तश्च दयाविहीनः १२

जो वृश्चिकराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य साहस के कर्म करनेवाला, फिजूल घूमनेवाला, कृपणस्वभाव, झूठ बोलनेवाला, नीचों से संग करनेवाला और निर्दयी होता है ॥ १२ ॥

धनुर्द्धरस्थस्य शनैश्चरस्य पाके नरः स्यात्सचिवो नृपाणाम् ॥
संग्रामधीरश्चतुरंघ्रियुक्तः कान्तासुतानन्दविनोदयुक्तः १३

जो धनुर्धरराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य राजा का मंत्री, संग्राम में बड़ा धीर एवं चतुष्पदों से युक्त होता है तथा स्त्री-पुत्रादिकों से अनेक सुख पाता है ॥ १३ ॥

शनेर्दशायां मकराश्रितस्य बहुश्रमोत्पन्नधनं नराणाम् ॥
नपुंसकस्त्रीजनसेवनत्वं विश्वासघातेन धनक्षतिश्च १४

जो शनैश्चर मकरराशि में बैठा हो तो उसकी दशा में बहुत परिश्रम से धन

लाभ होता है और स्त्री-नपुंसकादि जनों का सेवन होता है तथा विश्वासघात से धन का क्षय होता है ।। १४ ।।

शनेर्दशायां कलशाश्रितस्य सुखानि नूनं महती प्रतिष्ठा ॥
श्रेष्ठत्वमुच्चैः स्वकुले नरस्य कृषिक्रियापुत्रधनादिलब्धिः १५

जो कुम्भराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में अनेक सुख व बहुत प्रतिष्ठा होती है और अपने कुल में प्रधान होता है तथा कृषि से लाभ और सन्तान सुख होता है ।। १५ ।।

भवेद्दशायां ननु भानुसूनोर्मीनोपयातस्य च मानवस्य ॥
नानापुरग्रामधनांगनाभ्यः सुखं तथोत्साहविहीनता च १६

इति शनिदशाफलविचारः ।

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
दशाफलाध्यायः ॥ १३ ॥

जो मीनराशि में शनैश्चर बैठा हो तो उसकी दशा में मनुष्य अनेक नगर, पुर का स्वामी होता है और स्त्री तथा धन से सुख होता है एवं उत्साह भंग होता है ।।१६।।

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
दशाफलाध्यायः ।। १३ ।।

अथ महादशाफलानि ।

दशा दृकाणैश्च तनोः क्रमेण स्यादुत्तमा मध्यतमाधमा च ॥
स्थिरे च कष्टा शुभदा च मध्या मिश्रे समा मध्यतमोत्तमा च १

लग्नदशा का फल द्रेष्काणाधीन होता है जो जन्मलग्न चर हो और प्रथम द्रेष्काण हो तो उत्तम फल जानिये, द्वितीय द्रेष्काण का मध्य फल और तृतीय द्रेष्काण का अधम फल होता है और स्थिर लग्न में प्रथम द्रेष्काण का कष्टफल, द्वितीय द्रेष्काण का श्रेष्ठफल और तृतीय द्रेष्काण का मध्यमफल होता है । द्विस्वभाव लग्न में प्रथम द्रेष्काण का समफल, दूसरे द्रेष्काण का मिश्रित और तृतीय द्रेष्काण का फल उत्तम होता है ।। १ ।।

शुभानि मध्यानि च निन्दितानि फलानि लग्नेशदशोदितानि ॥
तान्येव कल्प्यानि सुधीभिरत्र बलानुमानात्तनुनायकस्य २

जो लग्नाधीश की दशा का शुभ, मध्यम या निन्दित फल कहा है वह पण्डितजन लग्नेश का बलाबल विचार कर कहें ॥ २ ॥

संशालते यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा ॥
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम् ३

जो ग्रह दिग्बल में बली हो वह अपनी दशा में, अपनी दिशा में पुरुष को ले जाकर बड़ी प्रतिष्ठा कराता है और अनेक प्रकार के धन का लाभ कराता है ॥ ३ ॥

विलोमगामिग्रहपाककाले स्थानार्थसौख्यान्यतिचंचलानि ॥
प्रवासशीलत्वमतीवजंतोर्लोके महत्त्वापचयत्वमेव ४

जो ग्रह वक्री हो तो उसकी दशा में स्थान और धन का क्षणस्थायी सुख होता है और विदेश में निवास और महत्त्व का ह्रास होता है ॥ ४ ॥

ऋजुप्रयातद्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः ॥
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेभिमतार्थसिद्धिः ५

और मार्गी ग्रह की दशा में लोक में सन्मान, सुख, धन और यश की वृद्धि होती है और जो ग्रह छठे, आठवें और बारहें स्थानों से रहित स्थान में बैठा हो तो संपूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं ॥ ५ ॥

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः ॥
विदेशवासो निजबन्धुवर्गैस्त्यक्तो भवेदाग्रहताभियुक्तः ६

जो ग्रह अपनी नीचराशि में या शत्रु के घर में हो अथवा वक्री हो तो उसकी दशा में उस मनुष्य की पापकर्म में रुचि होती है और परदेश में वास होता है और बन्धुजनों से त्यागा हुआ हठी होता है ॥ ६ ॥

स्वर्भानुयुक्तस्य च खेचरस्य दशावरिष्ठाप्यतिरिष्टदा स्यात् ॥
पाकावसाने ननु मानवानां दुःखानि हानिश्च विदेशयानम् ७

राहु के साथ स्थित ग्रह बैठे हों तो उसकी उत्तम दशा में भी निषिद्ध फल होता है तथा दशा के अन्त में हानि, परदेश का वास और अनेक दुःखों का भोग भी करता है ॥ ७ ॥

जननराशिजनुस्तनुनाथपो रिपुदशासमये मतिविभ्रमः ॥
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतिः खलजनैः कलहो बलहीनता ८

जन्म लग्न और जन्मराशि के स्वामी शत्रुग्रह की दशा में मतिभ्रम, शत्रुओं से भय, राज्यनाश, दुष्टों से कलह और शरीर का बल क्षय होता है ॥ ८ ॥

लग्नेश्वरस्याष्टमभावगस्य भवेद्दशायामतिपीडनं हि ॥
दशावसानेऽपि च मानवानां भवेत्समाप्तिः खलु जीवितस्य ९

जो लग्नेश अष्टमभाव में बैठा हो तो उसकी दशा में बहुत पीड़ा होती है और दशा के अन्त में बड़ा कष्ट या निर्धन होता है ॥ ९ ॥

क्रूराख्यखेटस्य दशांतराले क्रूरग्रहस्यान्तरजा दशा चेत् ॥
शत्रूद्गमोऽर्थस्य परिक्षयः स्यादायुःक्षयो वेति वदेन्नराणाम् १०

यदि क्रूरग्रह की दशा में क्रूरग्रह ही की अंतर्दशा हो तो उस समय में शत्रुओं की उत्पत्ति, धन का नाश या आयुर्दाय का क्षय होता है ॥ १० ॥

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्नाः कार्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत् ॥
लग्नत्रिखायारिगतोऽथ लग्ने तन्मित्रवर्गः शुभदा दशा सा ११

दशा के प्रवेशकाल में लग्न सहित सातों ग्रहों को स्पष्ट करना चाहिये वहां दशा का मालिक ग्रह जन्मलग्न में तीसरे, छठे, दशवें या ग्यारहें स्थान में बैठा हो अथवा मित्र के षड्वर्ग में हो तो उस ग्रह की दशा शुभदायक होती है ॥ ११ ॥

श्रेष्ठप्रदिष्टेष्टफलाधिकस्य दुष्टा दशा कष्टफलाधिकस्य ॥
यस्येष्टकष्टे भवतः समाने फलं विमिश्रं किल तस्य पाके १२

जिस ग्रह का इष्टबल अधिक होता है उसकी दशा में श्रेष्ठफल होता है और जिस ग्रह का कष्टबल अधिक होता है उसमें अशुभ फल होते हैं और जिसमें इष्टबल और कष्टबल समान होते हैं उस दशा में मिश्रित फल होता है ॥ १२ ॥

दशाप्रवेशे खचरः स्वतुङ्गे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे ॥
शुभेष्टवर्गस्थितिकृच्छुभैर्दृष्टे दशारिष्टहरो भवेत्सः १३

इति महादशफलानि।

दशा प्रवेशकाल में जो ग्रह अपने उच्चराशि में या अपने घर में अथवा अपने मूलत्रिकोण या शुभ ग्रह के या मित्र के षड्वर्ग में बैठा हो तो उसकी दशा श्रेष्ठ फल देनेवाली होती है और जिसको शुभग्रह देखते हैं उसकी भी दशा शुभ होती है ॥ १३ ॥

इति महादशाफलानि।

अथान्तर्द्दशाफलानि।

अथ प्रवक्ष्ये खलु खेचराणामन्तर्द्दशा सूक्ष्मफलप्रसिद्धयै ॥
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन १

अब सूक्ष्मफल जानने के लिये अन्तर्दशाओं के फल वर्णन करते हैं। कही हुई विधि से विचारपूर्वक ग्रहों का शुभाशुभ फल पण्डितजन अपनी बुद्धि से कल्पना करें ॥ १ ॥

अन्तर्द्दशा चेदशुभग्रहणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव ॥
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यन्धनस्यापचयं विशेषात २

एक स्थान में स्थित पापी ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा हो तो उस अन्तर्दशा में राजभय, शत्रुविवाद और शरीर में रोग तथा दीनता और धन का नाश होता है ॥ २ ॥

अन्तर्दशायाम्मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्याः ॥
रोगः कुभोगः कलहादिभंगः संगश्च निद्यैर्हरणं धनस्य ३

सप्तमस्थान में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में स्त्री का विनाश, शरीर में रोग, निन्दित भोग, सब से कलह, धन की हानि और नीचजनों का संग होता है ॥३॥

खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्द्दशा संजनयेदरिष्टम् ॥
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम् ४

जो अन्तर्दशानाथ अष्टमभाव में बैठा हो तो उसकी अन्तर्दशा में दुःख होता है और धन का नाश, अनेक व्यसन होते हैं और जो अन्तर्दशानायक छठे घर में बैठा हो तो उसकी अन्तर्दशा में रोग की वृद्धि होती है ॥ ४ ॥

त्रिकोणमेषूरणवेश्मगानामन्तर्द्दशा सौख्यमतीव नित्यम् ॥
करोति लाभं विविधं नराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिञ्च ५

जो नवें, पांचवें और दशवें अन्तर्दशानाथ बैठा हो तो उसकी अन्तर्दशा में विशेष धन का लाभ, मान-प्रतिष्ठा और संपूर्ण सुख होते हैं तथा शरीर को सुख होता है ॥ ५ ॥

अथ सूर्यान्तर्दशाफलानि।

करोति चन्द्रस्तरणेर्दशायां सुवर्णभूषाम्बरविद्रुमाप्तिम् ॥

समुन्नतिं मानसुखाभिवृद्धिं विरोधिवर्गापचयं जयं च १

सूर्य्य की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो सुवर्ण, आभूषण, वस्त्र और मूंगा आदि की प्राप्ति, मान और सुख की वृद्धि, विरोधियों का नाश और विजय होती है ॥ १ ॥

पङ्केरुहेशस्य चरन्विपाके कुर्य्यान्मृगांको यदि लाभमुच्चैः ॥
प्रमादवद्भ्यो ग्रहणीं च पांडुं केषांचिदेतन्मतमत्र चोक्तम् २

सूर्य्य की महादशा में पूर्णचन्द्रमा का अन्तर हो तो विशेष लाभ होता है और क्षीण चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो तो संग्रहणी और पाण्डुरोग होता है यह किसी किसी आचार्य का मत है ॥ २ ॥

सत्प्रवालकलधौतसुचैलं मंगलानि विजयश्च विधत्ते ॥
मङ्गलः कमलिनीशदशायां भूमिपालकुलतः किल मानम् ३

सूर्य्य की महादशा में जो मंगल की अन्तर्दशा आवे तो श्रेष्ठ प्रवाल और उत्तम वस्त्रों का लाभ तथा मंगल के कार्य और विजय तथा राजद्वार में विशेष प्रतिष्ठा होती है ॥ ३ ॥

विचर्चिकादद्रुविकारपूर्वैः पामामयैर्देहनिपीडनं स्यात् ॥
धनव्ययश्चापि हतोत्सवश्च विधोः सुते भानुदशाम्प्रयाते ४

सूर्य्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो रुधिरप्रकोप से दद्रु, विचर्चिका, पामाआदि रोगों से शरीर को पीड़ा होती है और धन का अधिक व्यय और उत्सवभंग होता है ॥ ४ ॥

सद्वस्त्रधान्यादिषु संग्रहेच्छा स्वच्छामतिर्विप्रसुरार्चनेषु ॥
भूपालसम्मानधनानि नूनं भानोर्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ५

सूर्य्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो उत्तम वस्त्रों का धारण और धन-धान्य संचय की इच्छा हो और निर्मल बुद्धि, देवता व ब्राह्मणों की भक्ति और राजद्वार से सन्मान और बहुत धन की प्राप्ति होती ॥ ५ ॥

विदेशयानं कलहाकुलत्वं शूलं च मौलिस्थलकर्णपीडाम् ॥
गाढज्वरं चापि करोति नित्यं दैत्यार्चितो भानुदशाम्प्रयातः ६

सूर्य्य की महादशा में जो शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो विदेश गमन,

घर में कलह, शूलरोग, मस्तक में तथा कान में पीड़ा और प्रबल ज्वररोग होता है ॥ ६ ॥

नीचारिभूमीपतिभीतिरुच्चैः कण्डूयनाद्यामयसंभवः स्यात् ॥
मित्राण्यमित्राणि भवन्ति नूनं शनैश्चरे भानुदशान्तरस्थे ७

इति सूर्यान्तर्दशाफलानि ।

सूर्य्य की महादशा में शनैश्चर की अन्तर्द्दशा आवे तो नीच और वैरी से विवाद, राजा से भय और कण्डूरोग से पीड़ा तथा मित्रों से विरोध होता है ॥ ७ ॥

इति सूर्य्यान्तर्दशाफलानि ।

—:o:—

अथ चन्द्रान्तर्दशाफलानि ।

नरेश्वराद् गौरवमर्थलाभं क्षयामयार्त्तिम्प्रकृतेर्विकारम् ॥
चौराग्निवैरिप्रभवां च भीतिं शीतांशुपाके कुरुते दिनेशः १

चन्द्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो तो राजा से गौरव और धन का लाभ, क्षयीरोग तथा चित्त में विकार; चोर, अग्नि तथा शत्रु से भय होता है ॥ १ ॥

कोशभ्रंशं रक्तपित्तादिदोषं रोषोत्पत्तिं स्थानतः प्रच्युतिं च ॥
कुर्यात्पीडां मातृपित्रादिवर्गैर्भूमीसूनुर्यामिनीनाथपाके २

चन्द्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आवे तो संचित धन का नाश, रुधिर और पित्त का प्रकोप, अनेक रोगों की उत्पत्ति, स्थान का त्याग तथा माता और पिता के कुल में पीड़ा होती है ॥ २ ॥

उदारनामान्तरलब्धिमुच्चैर्ललामगोभूमिगजाश्ववृद्धिम् ॥
विद्याधनैश्वर्य्यसमुन्नतित्वं कुर्याद् बुधश्चन्द्रदशान्तराले ३

चन्द्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा हो तो उदारता से उत्तमस्थान प्राप्ति; सुन्दर गौ, पृथ्वी, हाथी और घोड़ों की वृद्धि विद्या और धन का लाभ तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्य की वृद्धि होती है ॥ ३ ॥

विशिष्टधर्म्मो धनधान्यभोगानन्दाभिवृद्धिर्गजवाजिसम्पत् ॥
पुत्रोत्सवश्चापि भवेन्नराणां गुरौ सुराणां शशिपाकसंस्थे ४

चन्द्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो धर्म की वृद्धि, धन-धान्य का लाभ, भोग और आनन्द की वृद्धि तथा हस्ती-अश्वादि वाहन का सुख और पुत्र का उत्सव होता है ॥ ४ ॥

नानांगनाकेलिविलासशीलो जलोद्भवैर्धान्यधनैश्च युक्तः ॥
मुक्ताफलाद्याभरणैरपि स्यादिन्दोर्दशायां हि सिते मनुष्यः ५

चन्द्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो अनेक स्त्रियों से खेल और हास-विलास करनेवाला, जल से उत्पन्न धन और धान्य से युक्त तथा मुक्ताफल इत्यादि रत्नों का लाभवाला होता है ॥ ५ ॥

नरेन्द्रचौराहितवह्निभीतिं कलत्रपुत्रात्सुखरुक्प्रवृद्धिम् ॥
करोति नानाव्यसनानि पुंसां शनिर्निशानाथदशां प्रविष्टः ६

इति चन्द्रान्तर्दशाफलानि ।

चन्द्रमा की महादशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आवे तो राजा, अग्नि और चोर से भय, स्त्री पुत्रादिकों से सुख और रोग की बृद्धि तथा अनेक प्रकार के व्यसनों से युक्त होता है ॥ ६ ॥

इति चन्द्रान्तर्दशाफलानि ।

अथ भौमान्तर्दशाफलानि ।

नानाधनाभ्यागमनानि नूनं सन्मानवृद्धिम्मनुजानुराजात् ॥
चण्डत्वमाजौ विजयं विदध्याद्धानुर्द्धरासूनुदशान्तरस्थः १

दुर्ग्गशैलवनसंचलनेच्छा बंधुतातजनितातिविरोधः ॥
मानवो भवति भूतनयान्तर्भास्करे चरति केऽपि वदन्ति २

मंगल की महादशा में सूर्य्य की अन्तर्दशा आवे तब अनेक धन का लाभ, राजद्वार में सन्मान और संग्राम में उग्रता तथा सर्वत्र विजय का लाभ होता है ॥ १ ॥ मंगल की महादशा में सूर्य्य का अन्तर हो तो वन-पर्वतादिक्षेत्रों में जाने की इच्छा करे और बन्धुवर्गों में और पिता के कुल में वैरभाव करे ऐसा कोई २ कहते हैं ॥ २ ॥

नित्योत्सवानन्दमहापदानि मुक्ताफलद्रव्यविभूषणानि ॥
मित्रोद्गमं श्लेष्मविकारमिन्दुर्भौमस्य पाके विचरन्करोति ३

मंगल की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आवे तो निरन्तर उत्सव, आनन्द और बड़े पद की प्राप्ति, मुक्ताफलादि रत्नों का संचय, धन और भूषणों का लाभ, मित्रसमागम और श्लेष्म (कफ) से उत्पन्न रोग भी होता है ।। ३ ।।

अरातिभूपामयतस्करेभ्यः पीडां वियोगं सुतदारमित्रैः ॥
स्वल्पोत्सवं यच्छति चन्द्रसूनुर्भौमस्य पाके यदि संप्रविष्टः ४

मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो शत्रु से, चोर से और राजा से पीड़ा तथा स्त्री-पुत्रादिकों से वियोग और थोड़ा सा उत्सव भी होता है ।। ४ ।।

कलाधिकत्वं नृपतेर्धनाप्तिं कलत्रमित्रात्मजवाहसौख्यम् ॥
सत्कर्म्मधर्मानुरतत्वमुच्चैर्बृहस्पतिर्भौमदशां प्रविष्टः ५

मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो तेज की वृद्धि, राजा से धन का लाभ और स्त्री, पुत्र, मित्र तथा वाहनों का सुख एवं उत्तम धर्म और श्रेष्ठकर्म करने में मन की प्रवृत्ति होती है ।। ५ ।।

विदेशयानव्यसनामयाद्यैः कुटुम्बवादद्रविणव्ययैश्च ॥
नानाप्रवासैश्चलचित्तवृत्तिर्भौमान्तरे दानवराजपूज्ये ६

मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो विदेशयात्रा, अनेक रोग, अनेक व्यसन तथा कुटुम्बीजनों से विवाद और धन का अधिक व्यय होता है और विदेश में रहने से मन चंचल रहता है ।। ६ ।।

कलत्रपुत्रात्मजनेषु बाधा प्राणप्रयाणान्तशरीरपीडा ॥
स्वस्थानयानं यदि भानुसूनोरन्तर्दशाभौमदशान्तराले ७

इति भौमान्तर्दशाफलानि ।

मंगल की महादशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आवे तो स्त्री, पुत्र और स्वजनों को बाधा तथा मरणप्राय शरीर में कष्ट और स्वस्थान की यात्रा होती है ।। ७ ।।

इति भौमान्तर्दशाफलानि ।

अथ बुधान्तर्दशाफलानि ।

तुरङ्गहेम्नां च सुविद्रुमाणां सदम्बराणामपि वारणानाम् ॥
भवेदवाप्तिर्बहुवैभवानां सौम्यस्य पाके तपने प्रपन्ने १

स्वस्थानतः संचलनं कदाचिद्‌गदप्रकोपात्मजजन्मवित्तम् ॥
धर्म्मे प्रवृत्तिं कुरुते ज्ञपाके पङ्केरुहेशः प्रवदन्ति केचित् २

बुध की महादशा में सूर्य्य की अन्तर्दशा आवे तो मुक्ता-विद्रुमादि रत्नों का लाभ, गजाश्व-शिबिकादि वाहनों से सुख, निरन्तर उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति और वैभवों का लाभ होता है। किसी आचार्य के मत से बुध की दशा में सूर्य का अंतर होता है तब स्थान से संचलन और रोगयुक्त शरीर, पुत्र का जन्म, धन की प्राप्ति और धर्मकार्य्य में मन की प्रवृत्ति होती है ॥ १ । २ ॥

पामादिनानामयसंभवः स्यान्मृतप्रजासंजननं विवादः ॥
पित्तप्रकोपः खलु यानपीडा यदा जडांशुर्ज्ञदशां प्रपन्नः ३

जो बुध की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आवे तो पामा (खुजली) आदि अनेक रोगों की उत्पत्ति, मृतप्रजा का जन्म, अनेक विवाद, पित्त का प्रकोप और वाहनों से पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

गुह्यामयार्थव्ययसंयुतः स्यात् कान्तासुतप्रीतिविमुक्तचित्तः ॥
विमुक्तधर्म्मो मनुजः प्रविष्टे बुधस्य मध्ये वसुधातनूजे ४

बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आवे तो गुदास्थान में रोग, धन का अधिक व्यय और स्त्री-पुत्रादिकों की प्रीति से विरक्त चित्त और धर्म से रहित होता है ॥ ४ ॥

कान्तासुतानन्दयुतोऽरिहन्ता सत्कर्मकृच्चारुमतिर्विनीतः ॥
मंत्री नरः स्यात् पितृमातृदुःखी बृहस्पतौ ज्ञस्य दशां प्रयाते ५

बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो उत्तम कर्मकर्ता, स्त्री-पुत्रों से आनन्दयुक्त, वैरियों का नाशक, श्रेष्ठ बुद्धि, नम्र, राजा या मंत्री होता और माता-पिता से क्लेश पाता है ॥ ५ ॥

विबुधसाधुजनातिथिसादरः सुकृतकर्मसमुत्सुकमानसः ॥
विविधवस्त्रविभूषणभाङ्नरो बुधदशान्तरगे सति भार्गवे ६
नानाप्रयासैश्च निरोधनैर्वा शिरोरुजावापि शरीरभाजाम् ॥
करोति बाधां विबुधान्तराले सितः प्रयातः प्रवदन्ति केचित् ७

बुध की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो पण्डित, साधु और अतिथि

जनों का आदर-सत्कार, सत्कर्म करने में मन की प्रवृत्ति और वस्त्र तथा आभूषणों का लाभ होता है। किसी आचार्य के मत से बुध की अन्तर्दशा में शुक्र आवे तो अनेक परिश्रम से, वेग रोकने से या शिरोरोग से मनुष्यों को दुःख होता है ॥ ६।७॥

सत्कर्म्मधर्म्मद्रविणानुकम्पा कन्दर्पहीनो मनुजः प्रलापी ॥
वातामयार्त्तोतिमृदुस्वभावः सौम्यान्तराले नलिनीशसूनो ८

इति बुधान्तर्दशाफलानि।

जो बुध की दशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आवे तो धर्म, कर्म, धन, दया और कामदेव से हीन, प्रलापी, बातव्याधि से पीड़ित और कोमलस्वभाव होता है ॥ ८॥

इति बुधान्तर्दशाफलानि।

—:०:—

अथ गुर्वन्तर्दशाफलानि।

सुतार्थनानाविधवस्तुलाभं विशिष्टनामान्तरमाधिपत्यम् ॥
मानं नरेशात्कुरुते दिनेशो वाचामधीशस्य दशां प्रपन्नः १

जो बृहस्पति की दशा में सूर्य्य की अन्तर्दशा आवे तो पुत्र, धन और वस्तुओं का लाभ, द्वितीयनाम से प्रसिद्धि और राजपक्ष से अधिकार तथा मान का लाभ होता है ॥ १॥

नानाङ्गनाक्रीडनजातचित्तः श्रीराजचिह्नैश्च विराजमानः ॥
विद्यानवद्यार्थयुतो नरः स्याज्जीवान्तरे शीतकरप्रचारे २

बृहस्पति की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आवे तो अनेक स्त्रियों के संग से मन को आनन्द और राजचिह्नों से विराजमान तथा उत्तम विद्या से युक्त होता है ॥ २॥

रणाङ्गणप्राप्तयशो विशेषः सद्भोगसौख्यार्थसमन्वितश्च ॥
प्रौढप्रतापोऽतितरां नरः स्याद्धरासुते जीवदशां प्रयाते ३
शीर्षे गुदे वापि भवेत्कदाचित्पीडा नराणामरिभीतिरुक्ता ॥
बलक्षयः संचलनं कुजस्य जीवान्तराले प्रवदन्ति केचित् ४

बृहस्पति की महादशा में जो मंगल की अन्तर्दशा आवे तो संग्राम में विजय और यश की प्राप्ति, धन करके श्रेष्ठभोगों का सुख और प्रतापोदय होता है। किसी २ का मत है कि जब बृहस्पति की महादशा में भौम की अन्तर्दशा आती है तो कभी २ शिर में और गुदा में पीड़ा, शत्रुओं का भय और शरीर का बल क्षय हो जाता है॥ ३। ४॥

सद्बुद्धिकौशल्यसुरार्चनानि सदिन्दिरामन्दिरवाहनानि॥
कलत्रपुत्रादिसुखानि नूनं कुर्याद् बुधो जीवदशां प्रपन्नः ५
विदेशयानं चलचित्तवृत्तिर्जलात्प्रमादः शिरसि प्रपीडा॥
गुरोर्दशायां चरतीन्दुपुत्रे केषांचिदेवात्र मतं निरुक्तम् ६

बृहस्पति की दशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो उत्तम बुद्धि की कुशलता से देवताओं का पूजन; लक्ष्मी, श्रेष्ठमन्दिरों और अनेक बाहनों से सुख तथा स्त्री-पुत्रादि से सुख होता है। किसी २ आचार्य के मत से गुरु की दशा में बुध का अन्तर हो तो बिदेश की यात्रा, चंचल चित्त की बृत्ति, जल से उन्माद तथा शिर में पीड़ा होती है॥ ५। ६॥

निजैर्वियोगोर्थविनाशनं च श्लेष्मानिलश्चापि कलिप्रसङ्गः॥
स्यान्मानवानां व्यसनोपलब्धिर्भृगोः सुते जीवदशां प्रयाते ७
धर्म्मक्रियायां निरतत्वमुच्चैर्विद्याम्बरान्नादिकसंग्रहश्च॥
द्विजाश्रयः स्याद्गुरुपाकयाते सिते वदन्तीति फलन्तु केचित् ८

बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो मित्रों से वियोग, धन का नाश, वायु और कफ से उत्पन्न शरीर में रोग, कलह और अनेक व्यसनों में मन की प्रवृत्ति होती है। और किसी २ आचार्य के मत से गुरु की दशा में शुक्र का अन्तर आवे तो धर्मक्रिया में मन की प्रबृत्ति और उत्तम विद्या, उत्तम वस्त्र और उत्तम अन्नों का संग्रह तथा पण्डितजनों के सत्संग से सुख होता है॥ ७। ८॥

वेश्यासवद्यूतकृषिक्रियाद्यैर्विलुप्तधर्मार्थयशाः कृशांगः॥
खरक्रमेलादियुतो नरः स्याद्गुरोर्दशायां चलितेऽर्कसूनौ ९

इति गुर्वन्तर्दशाफलानि।

जो बृहस्पति की दशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आवे तो वेश्याप्रसंग, द्यूत-

क्रिया, मद्यपान तथा कृषिक्रिया से धर्म, धन और यश का नाश और दुर्बल शरीर तथा गधे तथा ऊंटों से युक्त होता है ॥ ९ ॥

इति गुर्बन्तर्दशाफलानि ।

अथ शुक्रान्तर्दशाफलानि ।

भूपभीतिरपि बन्धुनिर्मितं वित्तनाशनमरात्युदयः स्यात् ॥
क्रोडगंडनयनेष्वपि पीडा भार्गवे यदि रवेर्विनिवेशः १

जो शुक्र की महादशा में सूर्य्य की अन्तर्दशा आवे तो राजा से भय, बन्धुजनों से कलह और धन का नाश, शत्रु की वृद्धि या छाती, कपोल और नेत्रों में पीड़ा होती है ॥ १ ॥

शीर्षदन्तनखपीडनमुच्चैः कामलप्रबलता किल पित्तम् ॥
श्वापदादपि भयं च नराणां भार्गवान्तरगते हिमरश्मौ २
भूदेवदेवाग्निमनःप्रवृत्ती रणांगणे स्याद्विजयो नराणाम् ॥
मातङ्गकार्य्याद्वनिताश्रयाद्वा लाभः सिते चन्द्रदशेति केचित् ३

शुक्र की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आवे तो शिर और नखों में पीड़ा, पित्तकोप से कामलादि रोग और व्याघ्र आदि जीवों से भय होता है । और कोई २ कहते हैं कि शुक्र की दशा में चन्द्रमा का अन्तर हो तो अग्निहोत्रादि उत्तमकर्म, देवता व ब्राह्मणों का पूजन, संग्राम में विजय और हाथियों से या स्त्री-पक्ष से धन का लाभ होता है ॥ २ । ३ ॥

पित्तात्क्षताद्रक्तविकारतो वा वैकल्यमंगे प्रभवेन्नराणाम् ॥
उत्साहहीनत्वमतीव याते भूमीसुते दैत्यगुरोर्द्दशायाम् ४

शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आवे तो पित्तरोग, व्रणरोग या रुधिरप्रकोप से शरीर को विकलता और उत्साह का भंग होता है ॥ ४ ॥

सन्माननानाविधवस्तुसौख्यं भूमीपतेः स्यात्खलु भूमिलाभः ॥
अमारके भार्गवपाकसंस्थे केषांचिदेवं मतमस्ति शस्तम् ५
वृक्षैः फलैश्चापि चतुष्पदाद्यैर्वित्तं भवेत्सख्यविधिर्नृपेण ॥
दुरन्तकार्याभिरतिर्नितान्तं भृगोर्द्दशायां चरतीन्दुसूनौ ६

जो शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो सन्मान, विविध वस्तु का लाभ और राजा के सकाश से पृथ्वी का लाभ होता है । किसी के मत में यह फल होता है शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो अनेक वृक्षों से, फलों से और चतुष्पदों से धन का लाभ, राजा से मित्रता और कठिन कार्य में प्रीति होती है ॥ ५ । ६ ॥

यज्ञादिसत्कर्म्मणि सादरत्वं गतार्थसिद्धिः सुतदारसौख्यम् ॥
महापदानेकविभूषणाप्तिर्भृगोर्द्दशायां चरतीन्द्रवन्द्ये ७

शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो यज्ञादि उत्तम कर्म में मन की प्रवृत्ति, अनेक कार्यों की सिद्धि, स्त्री-पुत्रादिकों से सुख तथा विशेष अधिकार और अनेक आभूषणों की प्राप्ति होती है ॥ ७ ॥

मित्रोन्नतिर्ग्रामपुराधिपत्यं वृद्धांगनाकेलिरतीव नित्यम् ॥
स्याद्वैरिनाशो ह्युशनोदशायां शनैश्चरस्यान्तरजा दशा चेत् ८

इति शुक्रान्तर्दशाफलानि ।

शुक्र की महादशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आवे तो मित्रों की उन्नति और ग्राम या पुर का अधिपति होता है और नित्य वृद्धा स्त्री से प्रसंग तथा वैरियों का नाश होता है ॥ ८ ॥

इति शुक्रान्तर्दशाफलानि ।

—:०:—

अथ मन्दान्तर्दशाफलानि ।

धनांगनानन्दनबन्धुपीडा गाढापि बाधात्मकलेवरे स्यात् ॥
रिपूद्गमः संचलनं नलिन्याः पत्यौ स्थिते मन्ददशांतराले १

शनैश्चर की महादशा में सूर्य्य की अन्तर्दशा आवे तो स्त्री-पुत्र-बन्धु आदिकों को पीड़ा, अपने शरीर को क्लेश, धन की हानि और शत्रुओं की उत्पत्ति होती है ॥ १ ॥

नित्यं कलिर्बन्धुजनैर्वियोगो हृतिर्मृतिर्वापि भवेद्गृहिण्याः ॥
उत्साहसौख्योपहतिर्नितांतं शीतद्युतौ मन्ददशान्तराले २

शनैश्चर की महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा आवे तो निरन्तर कलह, बन्धुजनों से वियोग, स्त्री का हरण या स्त्री की मृत्यु तथा सब तरह उत्साह और सुख की हानि होती है ॥ २ ॥

स्वस्थानयानं विकलत्वमङ्गे धनाङ्गनासूनुवियोजनं स्यात् ॥
सन्मानहानिर्ननु सूर्यसूनोर्दशान्तरे भूमिसुतप्रचारे ३

शनैश्चर की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आवे तो अपने स्थान की यात्रा, शरीर में विकलता और धन, स्त्री और पुत्रादिकों का वियोग तथा प्रतिष्ठा की हानि होती है ॥ ३ ॥

धनांगनासूनुसुखोपपन्नः सद्राजमानेन विराजमानः ॥
विद्वज्जनानंदकरः कफार्त्तो मर्त्यो भवेज्ज्ञे शनिपाकसंस्थे ४

शनैश्चर की महादशा में बुध की अन्तर्दशा आवे तो धन, स्त्री और पुत्र से सुख और राजद्वार में प्रतिष्ठा अधिक होती है तथा विद्वज्जनों से आनन्द पाने वाला और कफ के रोग से युक्त होता है ॥ ४ ॥

कलाकलापे कुशलो विलासी पद्मालयालंकृतचारुशीलः ॥
भूपालभूलाभयुतो नरः स्याद् बृहस्पतौ मंददशां प्रयाते ५

शनैश्चर की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा आवे तो शिल्पकला में बड़ा प्रवीण, अनेक हास-विलासयुक्त, लक्ष्मी (धन) से शोभित, उत्तम शील स्वभाव युक्त तथा राजा के सकाश से पृथ्वी पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

योषाविभूषासुतसौख्यलब्धिः श्रीग्रामदेशाधिकृतत्वमुच्चैः ॥
यशःप्रकाशोरिकुलस्य नाशः शनेर्दशायामुशनः प्रवेशे ६

शनैश्चर की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा आवे तो स्त्री से सुख, आभूषणादि का लाभ, पुत्र से सुख, ग्राम या देशों का लाभ, यश का प्रकाश और शत्रुकुल का नाश होता है ॥ ६ ॥

अन्तर्दशा चेन्नलिनीशसूनोर्दशान्तराले किल मङ्गलस्य ॥
भवेत्तदानीं निधनं नराणां यद्यप्यहो दीर्घमवाप्तमायुः ७

जब मंगल की महादशा में शनैश्चर की अन्तर्दशा आती है तो मनुष्यों की अवश्य मृत्यु होती है चाहे पूर्ण दीर्घायुवाला भी क्यों न हो ॥ ७ ॥

लग्ननाथरिपुर्लग्नदशायां प्रविशेद्यदि ॥
अकस्मान्मरणं कुर्य्यात्प्राणिनां सत्यसंमतम् ८

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणेऽन्तर्दशाध्यायः ॥ १४ ॥

लग्नेश की दशा में और लग्नेश के शत्रुग्रह की अन्तर्दशा में अकस्मात् मरण होता है पुराने आचार्य्यों का यह सम्मत है ।। ८ ।।

इति श्रीढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायामन्तर्दशाध्यायः ।। १४ ।।

अथ दानाध्यायः ।

ये खेचरा गोचरतोऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभा भवन्ति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवच्मि १

जो ग्रह गोचर विचार में अथवा अष्टकवर्ग में तथा दशादिफल में अशुभ करनेवाले होते हैं उस अशुभ की शान्ति दान, जप इत्यादि से होती है । इस हेतु से ग्रहों के दान वर्ण न करते हैं ।। १ ।।

अथ सूर्य्यप्रीतये दानम् ।

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुम्भवासो गुडहेमताम्रम् ॥
आरक्तकं चन्दनमम्बुजं च वदन्ति दानं हि विरोचनाय २

माणिक्य, गोधूम, सवत्सा धेनु, कुसुंभ वस्त्र, गुड़, सुवर्ण, ताम्र, रक्तचन्दन और लाल कमल यह सूर्य्य का दान है ।। २ ।।

अथ चन्द्रप्रीतये दानम् ।

सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥
युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद् घृतपूर्णकुम्भम् ३

तंडुलपूर्ण वंशपात्र, कर्पूर, मोती, श्वेतवस्त्र, गौ तथा बैल, चांदी और घृत से पूर्ण कुंभ चन्द्रमा के लिये देवे ।। ३ ।।

अथ भौमप्रीतये दानम् ।

प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् ॥
आरक्तवस्त्रङ्करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदन्ति दानम् ४

गुड़, गोधूम, सुवर्ण, रक्तवस्त्र, प्रवाल (मूंगा), मसूरान्न, रक्तवृषभ और कनैर का पुष्प यह दान मंगल के लिये है ।। ४ ।।

अथ बुधप्रीतये दानम् ।

चैलं च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मकसर्वपुष्पम् ॥
दासी च दन्तो द्विरदश्च नूनं वदन्ति दानं विधुनन्दनाय ५

हरितवस्त्र, स्वर्ण, चांदी, कांसपात्र, मूंग, घृत, सब तरह के पुष्प, हस्तीदन्त, पन्ना और दासी यह दान बुध के लिये कहा गया है ॥ ५ ॥

अथ गुरुप्रीतये दानम् ।

शर्कराचरजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमम्बरम् ॥
पुष्परागलवणे च कांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ६

शक्कर, हल्दी, घोड़ा, चने की दाल, पीला कपड़ा, पुष्परागमणि अर्थात् पुखराज, लवण और सोना ये वस्तुयें बृहस्पति की प्रसन्नता के लिये देनी चाहिये ॥ ६ ॥

अथ शुक्रप्रीतये दानम् ।

चित्राम्बरं शुभ्रतरस्तुरङ्गो धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् ॥
सुतण्डुलाज्योत्तमगन्धयुक्तं वदन्ति दानं भृगुनन्दनाय ७

विचित्र वस्त्र, श्वेत घोड़ा, श्वेतवर्ण गौ, हीरा, सुवर्ण, अच्छे चावल और उत्तम घृत सुगन्ध युक्त यह दान शुक्र के लिये कहा है ॥ ७ ॥

अथ शनिप्रीतये दानम् ।

माषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलस्तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम् ॥
सदक्षिणं चेति वदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनन्दनाय ८

उड़द, तैल, नीलमणि, तिल, कुलथी, महिषी (भैंस), लोह और दक्षिणा यह अरिष्ट शनैश्चर के लिये दान है ॥ ८ ॥

अथ राहुप्रीतये दानम् ।

गोमेदरत्नं च तुरङ्गमश्च सुनीलचैलानि च कम्बलश्च ॥
तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदन्ति ९

गोमेदक रत्न, घोड़ा, नीला कपड़ा, कम्बल, तिल, तैल और लोह यह दान राहु के लिये कहा है ॥ ९ ॥

अथ केतुप्रीतये दानम् ।

वैदूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकम्बलञ्चापि मदोमृगस्य ॥
शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोरुदीरितं दानमिदं मुनीन्द्रैः १०

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
दानाध्यायः ॥ १५ ॥

वैदूर्यमणि (लसुनियां) तिल, तैल, श्याम कम्बल, कस्तूरी और खड्ग यह दान केतु की प्रसन्नता के लिये मुनियों ने कहा है ॥ १० ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
दानाध्यायः ॥ १५ ॥

अथ नष्टजातकाध्यायः ।

आधानकालोप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् ॥
प्रसूतिकालं प्रवदन्ति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च १

जिस पुरुष का गर्भाधान समय तथा जन्मसमय मालूम न हो तो उसका नष्टजातक से प्रसूति काल कहते हैं ॥ १ ॥

तज्जातकं येन शुभाशुभाप्तिर्जातस्य जंतोर्जननोपकालात् ॥
तस्मिन्प्रनष्टे सति जन्मकालो येनोच्यते नष्टकजातकं तत् २

वह जातक है जिसके द्वारा उत्पन्न प्राणी का जन्मकाल से संपूर्ण शुभाशुभ फल सूचित होते हैं। उस जन्मकाल के भूल जाने पर जिससे जन्मकाल जाना जाय वह नष्टजातक है ॥ २ ॥

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः
काय्याः क्रमात्ता मुनिभिः ७ खचन्द्रैः १० ॥
गजैश्च ८ वेदै ४ र्दशभिश्च १० बाणैः ५
शैलै ७ र्भुजंगैः ८ खचरैः ९ शरै ५ श्च ३
शिवैः ११ पतंगै १२ र्निहताः पुनस्ता
विलग्नगाश्चेद् भृगुभौमजीवाः ॥

तदा तुरंगैः ७ करिभिः ८ खचन्द्र १०
गुंण्याः शरै ५ रन्यखगा यदि स्युः ४

प्रश्नसमय में जो लग्न हो उसको कलात्मक करके पिंड बनाना जो वह मेष लग्न हो तो पिंड को सात से, वृष लग्न हो तो दश से, मिथुन लग्न हो तो आठ से, कर्क हो तो चार से, सिंह लग्न हो तो दश से, कन्या लग्न हो तो पांच से, तुला लग्न हो तो सात से, वृश्चिक लग्न हो तो आठ से, धनुर्धर लग्न हो तो नौ से, मकर लग्न हो तो पांच से, कुम्भ लग्न हो तो ग्यारह से और मीन लग्न हो तो बारह से गुणा करना चाहिये। यदि उस प्रश्नलग्न में शुक्र बैठा हो तो उस गुणकांक को फिर सात से, मंगल बैठा हो तो आठ से, बृहस्पति बैठा हो तो गुणकांक को दश से और इन ग्रहों से व्यतिरिक्त और कोई ग्रह बैठा हो तो उस अंक को पांच से गुणा करना चाहिये ॥ ३।४॥

ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा तदीयैर्गुणकैश्च गुण्याः ॥
एवंकृते कर्मविधानयोग्यो राशिः पृथक्स्थः परिरक्षणीयः ५

यदि प्रश्नलग्न में दो ग्रह अथवा बहुत ग्रह बैठे हों तो उन उनके गुणकों से गुणना चाहिये। ऐसा करने पर उस कर्मविधान योग्य राशि के अंक को पृथक् स्थापित करे और उसको रक्षित रक्खे ॥ ५॥

अथ नक्षत्रानयनम्।

पृथक्स्थराशिर्मुनिभिर्विनिघ्नस्त्वाद्ये दृकाणे नवयुक्द्वितीये ॥
यथास्थितोयं नववर्जितोऽन्त्ये भसंज्ञयाप्तोह्यवशेषमृक्षम् ६

उस अलग स्थापित राशि को सात से गुणा करे जो प्रश्नलग्न का प्रथम द्रेष्काण हो तो उस गुणित पिंडांक में नौ और जोड़ देवे और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो उसमें कुछ न जोड़े वैसा ही रहने दे और जो तृतीय द्रेष्काण हो तो उसमें नौ घटा देवे फिर उसमें सत्ताईस का भाग देकर शेष अश्विन्यादि नक्षत्र जाने ॥ ६॥

अथ स्त्रीपुत्रादीनां नष्टजातकमाह।

स्त्रीपुत्रमित्रारिनिमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं ऋतुभिश्च वेदैः ॥
त्रिभिः शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेयाः ७

लग्नस्य राशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य ॥
पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्याः प्रागुक्तवद्धं परिवेदितव्यम् ८

यदि स्त्री, पुत्र, मित्र और शत्रु के नष्टज्ञान के लिये प्रश्न हो तो उसमें यह क्रम है कि स्त्रीजातक के प्रश्नपिण्ड में छः, पुत्र जातक के प्रश्न में चार, मित्र के प्रश्न में तीन और शत्रु के नष्ट जातक प्रश्न में पांच और जोड़े फिर लग्न की कला स्पष्ट करे ॥ ७ ॥ और लग्न की राशि के गुणक से उसको गुणा करे फिर जो लग्न में ग्रह बैठा हो उसी ग्रह के गुणक से गुणा करे जो पूर्व में बारहों राशि के गुणक वर्णन करि आये हैं । पूर्व रीति से नौ घटा कर या बढ़ा कर सत्ताईस का भाग देने से नक्षत्र का ज्ञान होता है ॥ ८ ॥

अथ वर्षज्ञानप्रकारः ।

दशाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
खार्कैर्हृते शेषमिताब्दसंख्यामायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ९

पृथक् स्थापित कर्मविधान राशि में पूर्व रीति से ९ घटा कर या ९ बढ़ा कर उसको दश से गुणा करे और उसमें एक सौ बीस का भाग दे जो बचे वही उस पृच्छक की आयु के गत वर्ष जाने ॥ ९ ॥

अथ ऋतुज्ञानम् ।

षड्भिर्विभक्ते ऋतवो भवंति शेषांकतुल्याः शिशिरादयः स्युः ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं पूर्वापरौ तद्दतुजौ च मासौ १०

उस दश गुणित कर्मविधान राशि में छः के भाग देने से जो शेष बचे उसी की तुल्य १ शिशिर, २ वसन्त, ३ ग्रीष्म, ४ वर्षा, ५ शरत्, ६ हेमन्त इस क्रम से ऋतु जानना और फिर उसमें दो का भाग देने से पूर्वापर क्रम से, एक शेष से पूर्वमास और दो शेष से द्वितीय मास ज्ञातव्य है ॥ १० ॥

अष्टाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रतुल्येस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्तः ११

और वह पृथक् स्थापित कर्म योग्य पिंड है उसको आठ से गुणकर पूर्वरीति से उसमें नौ घटाकर या जोड़कर उसमें दो का भाग दे फिर शून्य शेष में कृष्ण-पक्ष का जन्म और एकशेष में शुक्लपक्ष का जन्म जानना चाहिये ॥ ११ ॥

अथ तिथ्यानयनम् ।

पञ्चेन्दुभक्ते सति शेषतुल्याः पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवन्ति ॥
नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्वारविचारणात्र १२

उस कर्मविधान राशि में पन्द्रह का भाग देने से जो शेष बचे उसकी तुल्य जन्मतिथि जानना चाहिये । तिथ्यानयन और नक्षत्रानयन के साधन में अहर्गण से वार का विचार होता है ॥ १२ ॥

अथ दिवारात्रिज्ञानम् ।

सप्ताहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
द्विभाजिते शेषकमेकमात्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् १३

कर्मविधान राशि को सात से गुणा करके उसमें पूर्वरीति से नौ घटाकर या जोड़कर फिर दो का भाग देने से दिन और रात्रि का जन्म मालूम होता है । एक बचे तो दिन का जन्म और शून्य बचे तो रात्रि का जन्म जानना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ इष्टकालज्ञानम् ।

पञ्चाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् ॥
दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेवशिष्टं दिनरात्रिनाड्यः १४

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
नष्टजातकाध्यायः ॥ १६ ॥

अब कर्मविधान राशि को पञ्चगुणित करके उसमें पूर्व रीति से नौ ऊन अथवा अधिक करके फिर पूर्वरीति से जो दिन का जन्म हो तो दिनमान से भाग लेवे और रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान से भाग ले इससे दिन की इष्ट घटी या रात्रि की इष्टकाल की गत घटी प्राप्त होती हैं ॥ १४ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
नष्टजातकाऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ निर्याणाध्यायः ।

दिनकरप्रमुखैर्निधनस्थितैर्भवति मृत्युरिति प्रवदेत्क्रमात् ॥

अनलतो जलतः करवालतो ज्वरभवो गदतः क्षुधया तृषा १

जन्मलग्न से अष्टमस्थान में स्थित सूर्य्यादि ग्रहों से मृत्यु का हेतु कहना चाहिये। जैसे—सूर्य्य अष्टमस्थान में हो तो अग्नि से, जो चन्द्रमा अष्टमस्थान में हो तो जल से, मङ्गल अष्टम में हो तो खड्गादि शस्त्र के द्वारा, बुध मृत्यु स्थान में हो तो ज्वर से, बृहस्पति अष्टमभाव में हो तो रोग से, शुक्र अष्टमस्थान में हो तो क्षुधा से और जो शनैश्चर अष्टमभाव में बैठा हो तो पिपासा से मृत्यु होती है ॥ १ ॥

स्थिरश्चरोद्व्यंगसमाह्वयश्च राशिर्यदा जन्मनि चाष्टमस्थः ॥
स्वकीयदेशे विषयांतरे च मार्गे प्रकुर्यान्मरणं क्रमेण २

जो अष्टमभाव में चरराशि हो तो परदेश में मृत्यु होती है और जो अष्टमभाव में स्थिरलग्न हो तो स्वदेश में मृत्यु होती है और जो अष्टमभाव में द्विस्वभाव राशि हो तो मार्ग में मृत्यु होती है ॥ २ ॥

आयुर्गृहं खेटविवर्जितं चेद्विलोकयेद्वा बलवान् ग्रहेन्द्रः ॥
तद्धेतुजातं प्रवदन्ति मृत्युं बहुप्रकारं बहवो बलिष्ठाः ३

जो अष्टमभाव में कोई ग्रह न हो तो जो बली ग्रह अष्टमभाव को देखता हो उसकी समान देश में और उसी रोग से मृत्यु जानना चाहिये और जो बहुत ग्रह बलवान् होकर अष्टम भाव को देखते हों तो अनेक रोगों से निधन होता है ॥ ३ ॥

पित्तं कफः पित्तमथ त्रिदोषः श्लेष्मानिलौ वाप्यनिलः क्रमेण ॥
सूर्य्यादिकेभ्यो मरणस्य हेतुः प्रकल्पितः प्राक्तनजातकज्ञैः ४

यदि अष्टमस्थान में सूर्य्य हो तो पित्त से, चन्द्रमा हो तो कफ से, मंगल हो तो पित्त से, बुध हो तो त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) से, बृहस्पति हो तो कफ से, शुक्र हो तो वायु से और शनैश्चर हो तो वात से मृत्यु कहना। यह पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ ४ ॥

युक्तं नैवालोकितं खेचरेन्द्रैर्मृत्युस्थानं यो विलग्ने दृकाणः ॥
द्वाविंशोस्मात्सोपित स्यापि भर्त्ता कुर्य्यान्मृत्युं हेतुना स्वेन नूनम् ५

जो अष्टमस्थान में कोई ग्रह न बैठा हो और न कोई देखता हो तो जन्मलग्न

में जो द्रेष्काण हो उस से बाइसवें द्रेष्काण का स्वामी जो ग्रह हो उसी के हेतु से निश्चय मृत्यु होती है ॥ ५ ॥

अनलतो जलतो यदुदीरितं भवति तत्रिलवाधिपहेतुकम् ॥
अथ दृकाणफलानि सविस्तरं मुनिवरैरुदितानि वदाम्यहम् ६

अग्नि-से-जल से इत्यादि जो निर्याण हेतु सूर्य्यादि ग्रहों से वर्णन किया है वह द्रेष्काण के हेतु से कहना योग्य है । अब द्रेष्काणफलों का निर्णय विस्तारपूर्बक लिखते हैं ॥ ६ ॥

मेषस्य पूर्वत्रिलवे न दृष्टे शुभग्रहैः पापनिरीक्ष्यमाणे ॥
प्लीहोद्भवो वा विषपित्तजो वा मृत्युस्तदानीं परिवेदितव्यः ७

मेष का प्रथम द्रेष्काण हो और उसे शुभग्रह कोई न देखता हो तथा पापग्रह देखते हों तो प्लीहरोग से या विष से अथवा पित्तरोग से मृत्यु जानना चाहिये ॥ ७ ॥

मेषे द्वितीये जलजो वनान्ते तृतीयके कूपतडागजातः ॥
वृषस्य पूर्वत्रिलवे खराश्वक्रमेलकादिप्रभवो हि मृत्युः ८

मेषराशि का मध्य द्रेष्काण हो तो जल से या वनवास से और तृतीय द्रेष्काण हो तो नदी, कूप और तड़ागादि से मृत्यु होती है और वृषराशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो अश्व, गर्दभ और ऊँट आदि से मृत्यु होती है ॥ ८ ॥

द्वितीयके पित्तहुताशचौरैरुच्चस्थलाश्वादिभवस्तृतीये ॥
आद्ये दृकाणे मिथुने च वातश्वासैर्द्वितीये वृषगे त्रिदोषैः ९

जो वृषराशि का द्वितीय द्रेष्काण हो तो पित्तप्रकोप से, अग्नि से, अथवा चोर से मृत्यु होती है और वृष का तीसरा द्रेष्काण हो तो उच्चस्थल से गिर कर या घोड़े आदि से मृत्यु होती है । और मिथुन का प्रथम द्रेष्काण हो तो वातरोग से या कास-श्वास रोग से और द्वितीय द्रेष्काण हो तो वात-पित्त कफ इनके दोष से मृत्यु होती है ॥ ९ ॥

गजादितः पर्वतपाततो वा भवेदरण्ये मिथुनान्तदृक्के ॥
अपेयपानादपि कण्टकाच्च स्वप्राच्च कर्कप्रथमे दृकाणे १०

जो मिथुन का तृतीय द्रेष्काण हो तो गजादि वाहन के पतन से या

पहाड़ के पतन से वन में निधन जानना । कर्क का प्रथम द्रेष्काण हो तो जो पदार्थ पीने के योग्य नहीं हैं उनके पान करने से, कण्टक (कांटे) से या दुष्ट स्वप्न देखने से निधन होता है ॥ १० ॥

विषाददोषादतिसारतो वा कर्कस्य मध्यत्रिलवे मृतिः स्यात् ॥
महाभ्रमप्लीहकगुल्मदोषैः कर्कान्त्यदृक्के निधनं निरुक्तम् ११

जो कर्क का द्वितीय द्रेष्काण हो तो विषाद करने से या अतीसार रोग से मरण होता है और जो कर्क का तृतीय द्रेष्काण हो तो भ्रमरोग से या प्लीहरोग से अथवा गुल्मरोग से मृत्यु होती है ॥ ११ ॥

विषाम्बुरोगैः श्वसनाम्बुरोगैरपानपीडाविषशस्त्रकैश्च ॥
क्रमेण सिंहस्य दृकाणकेषु नूनं मुनीन्द्रैर्मरणं प्रदिष्टम् १२

जो सिंह का प्रथम द्रेष्काण हो तो विष से या जल से और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो कास-श्वास रोग से अथवा जलरोग से और जो तृतीय द्रेष्काण हो तो गुदा में पीड़ा (अर्शरोग) से, विष से या शस्त्रघात से मृत्यु होती है ॥ १२ ॥

कन्याद्यदृक्केनिलमौलिरुग्जोदुर्गाद्रिपाताच्च नृपैर्द्वितीये ॥
खरोष्ट्रशस्त्राम्बुनिपातकान्तानिमित्तजातं निधनं तृतीये १३

जो कन्या का प्रथम द्रेष्काण हो तो वातव्याधि से और मस्तकपीड़ा से तथा द्वितीय द्रेष्काण हो तो दुर्ग या पर्व्वत पर से गिरने या राजा से और तृतीय द्रेष्काण हो तो खर, ऊँट, जल अथवा स्त्री के हेतु से मृत्यु होती है ॥ १३ ॥

तुलादृकाणे प्रथमे निपातात्कलत्रतो वा पशुतोऽपि मृत्युः ॥
नूनं द्वितीये जठरामयैश्च व्यालाज्जलाच्चापि भवेत्तृतीये १४

जो तुला का प्रथम द्रेष्काण हो तो ऊँचे से पतन से अथवा स्त्री के हेतु से अथवा पशु से तथा द्वितीय द्रेष्काण हो तो उदररोग से और जो तृतीय द्रेष्काण हो तो सर्प से या जल से मृत्यु होती है ॥ १४ ॥

पूर्वे दृकाणे खलु वृश्चिकस्य मृत्युर्विषान्नास्त्रभवोऽवगम्यः ॥
भारश्रमाद्वा कटिबस्तिरोगैर्भवेद् द्वितीये त्रिलवे तु मार्गे १५

जो वृश्चिक का प्रथम द्रेष्काण हो तो विषरोग से मृत्यु होती है अस्त्र से नहीं और जो द्वितीय द्रेष्काण हो तो भारवाहकता से या अत्यन्त श्रम से अथवा कटि-

स्थान में पीड़ा होने से या बस्तिस्थान में पीड़ा होने से मार्ग में मृत्यु होती है ॥ १५ ॥

जंघास्थिभंगाश्मकलोष्टकाष्ठैर्भवेत्तृतीये त्रिलवेऽलिराशेः ॥
आद्ये दृकाणे धनुषोमृतिः स्याद् गुदामयैश्चापि मरुद्विकारैः १६

जो वृश्चिक का तृतीय द्रेष्काण हो तो जंघा में रोग होने से या अस्थिभंग होने से अथवा पत्थर, लोह या काष्ठप्रहार से मृत्यु होती है। धन का प्रथम द्रेष्काण हो तो बवासीर से या वातव्याधि से मृत्यु होती है॥ १६ ॥

विदाहतो वा विषतः शराद्वा नाशो दृकाणे धनुषो द्वितीये ॥
भयेज्जलाद्वा जलचारिणो वा क्रोडामयाद्वा धनुषस्तृतीये १७

धन का द्वितीय द्रेष्काण हो तो दाह से या विष से या बाण लगने से मृत्यु होती है और धन का तृतीय द्रेष्काण हो तो जल से या जलचारी जीवों से या छाती के रोग से निधन होता है ॥ १७ ॥

पूर्वे दृकाणे मकरस्य सिंहाद्व्याघ्राद्वराहाद् वृकतो द्वितीये ॥
यादो भुजङ्गैश्च तथा तृतीये चौराग्निशस्त्रज्वरतोहि मृत्युः १८

जो मकर का प्रथम द्रेष्काण हो तो व्याघ्र, सिंह या भेड़िया से और द्वितीय द्रेष्काण हो तो जलचारी जीवों से या सर्प से और तृतीय द्रेष्काण हो तो चौर, अग्नि, शस्त्र अथवा ज्वर से मृत्यु होती है ॥ १८ ॥

कुम्भस्य पूर्वत्रिलवेम्बुपत्नीसुतोदरव्याधिकृतो द्वितीये ॥
गुह्यामयात्पर्वतपातनाद्वा विषात्तृतीये मुखरुक्पशुभ्यः १९

कुम्भ का प्रथम द्रेष्काण हो तो स्त्री-पुत्रों के हेतु से अथवा उदररोग से और द्वितीय द्रेष्काण हो तो गुदपीड़ा (अर्श) से या पर्वत पर से गिरने से तथा तृतीय द्रेष्काण हो तो विष से, मुखरोग से या पशुओं से मृत्यु होती है ॥ १९ ॥

मीनादिदृक्के गृहणीप्रमेहगुल्मांगनाभ्यश्च भवेद् द्वितीये ॥
जलोदराद्यैश्च गजग्रहैर्वाजलस्य मध्येपि च नौप्रभेदात् २०
प्रांत्ये दृकाणे पृथुरोमसंस्थे मृत्युः कुरोगैः परिवेदितव्यः ॥
एवं तदानीं निधनं नियुक्तं नैव प्रदिष्टं गगनेचरेन्द्रैः २१

जो मीन का प्रथम द्रेष्काण हो तो संग्रहणी, प्रमेह और गुल्मरोग से अथवा

स्त्रियों से और द्वितीय द्रेष्काण में जलोदरादिरोग से, हस्ती से, ग्रह से या जल में मग्न होने से अथवा नौका के हेतु से मृत्यु होती है ॥ २० ॥ और जो मीन का तृतीय द्रेष्काण हो तो कुत्सितरोग से मृत्यु होती है यदि अष्टम भाव में कोई ग्रह बैठा न हो और किसी ग्रह की दृष्टि भी न हो तो पूर्वोक्त प्रकार से मृत्यु कही है ॥ २१ ॥

पापान्तरे शीतकरे कुमार्य्यां शोषान्मृतिर्वा रुधिरप्रकोपात् ॥
शुभान्तरे शीतकरेऽष्टमस्थे पातेन पाशेन हुताशनेन २२

जो चन्द्रमा कन्याराशि में पापग्रहों के बीच में बैठा हो तो शोषरोग से या रुधिरकोप से मृत्यु होती है और चन्द्रमा आठवें बैठा हो और सप्तमभाव में और नवमभाव में शुभग्रह बैठे हों तो उच्चस्थान से पतन होने से या फांसी से अथवा अग्नि से मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

पापेक्षितौ पापखगौ त्रिकोणे यद्वाष्टमे बंधुभुजंगपाशात् ॥
दृकाणकाः स्युर्जनने हि यस्य कारागृहे स्यान्मरणं हि तस्य २३

दोनों त्रिकोण (नवम-पञ्चम) में पापग्रह बैठें हों और उनको पापग्रह देखते भी हों अथवा अष्टमभाव में पापग्रह बैठें हों और उनको पापग्रह देखते भी हों तो फांसी या सर्प से या बन्धन से मृत्यु होती है और जो भुजङ्ग द्रेष्काण अष्टमभाव में हो तो उसका मरण कारागार में होता है ॥ २३ ॥

मीनोदयेऽर्केस्तगते मृगाङ्के सपापके चास्फुजिति क्रियस्थे ॥
भार्याकृतं स्यान्मरणं स्वगेहे वदन्ति सर्वे मुनयः पुराणाः २४

जो मीन लग्न हो और उसमें सूर्य बैठा हो और चन्द्रमा पापग्रह के साथ सप्तम में हो तथा शुक्र मेष में हो तो अपने घर में स्त्री के हेतु से मरण होता है यह प्राचीन मुनिजनों ने कहा है ॥ २४ ॥

क्षीणेन्दुमन्दौ गगने चतुर्थे दिनाधिनाथोऽवनिजोथवा स्यात् ॥
मूर्तित्रिकोणोपगताः खलाख्याः शूलस्य मौलौ प्रलयं प्रयान्ति २५

क्षीणचन्द्रमा और शनैश्चर दशमभाव में या चतुर्थभाव में बैठे हों अथवा सूर्य्य और मंगल चतुर्थ या दशम में स्थित हों और जन्म लग्न और नवम-पञ्चम में पापग्रह बैठें हों तो शूलरोग से या शिरःपीड़ा से उसकी मृत्यु होती है ॥ २५ ॥

मेषूरणस्थे धरणीतनूजे दिवामणौ भूतलभावसंस्थे ॥
क्षीणेन्दुमन्दप्रविलोक्यमाने काष्ठाभिघातेन वदन्ति मृत्युम् २६

दशमभाव में मङ्गल और चतुर्थ भाव में सूर्य बैठे हों और उनको क्षीणचन्द्रमा और शनैश्चर देखते हों तो काष्ठ के लगने से मरण होता है ॥ २६ ॥

क्षीणेन्दुभौमार्किदिवाकरैः स्यादायुः खलग्नाम्बुगतैर्गदादेः ॥
मृत्युः स्वपुण्योदयपञ्चमस्थैस्तैरेव नानाविधकुट्टनेन २७

क्षीणचन्द्रमा, मङ्गल, शनैश्चर और सूर्य्य ये आठवें, लग्न में, चतुर्थभाव में या दशमभाव में बैठे हों तो अनेक रोगों से मृत्यु होती है और जो वे ही ग्रह दूसरे, नवें, लग्न में या पञ्चमस्थान में स्थित हों तो अनेक प्रकार से कूटने आदि से मृत्यु होती है ॥ २७ ॥

भूसूनुसूर्य्यार्क्कसुता यदि स्युश्चतुर्थजामित्रनभोगृहस्थाः ॥
कुर्वन्ति ते शस्त्रहुताशभूपप्रकोपजातं नियमेन मृत्युम् २८

मङ्गल, सूर्य्य और शनैश्चर ये चतुर्थ, सप्तम या दशमभाव में बैठें हों तो शस्त्र से या अग्नि से अथवा राजा के कोप से निबमद्वारा मृत्बु होती है ॥ २८ ॥

कुजेन्दुमन्दाः खजलद्विसंस्थाः कृमिक्षतैस्ते मरणं प्रकुर्युः ॥
मेषूरणस्थै रविभौमसोमैर्भवेत्प्रवासेऽनलवाहनाद्यैः २९

चन्द्रमा, मङ्गल और शनैश्चर बे लग्न से दूसरे या चौथे अथवा दशवें बैठे हों तो कृमिरोग से और क्षतरोग से मरण होता है। जो दशमस्थान में सूर्य्य, चन्द्रमा और मङ्गल बैठें हों तो परदेश में अग्नि से या वाहन आदि से मृत्यु होती है ॥ २९ ॥

क्षीणेन्दुमन्दार्कयुते विलग्ने भूमीसुते सप्तमभावसंस्थे ॥
विनाशनं यंत्रनिपीडनेन भवेदवश्यं परिवेदितव्यम् ३०

जो लग्न में क्षीणचन्द्रमा, सूर्य्य और शनैश्चर बैठें हों और मङ्गल सप्तमभाव में हो तो अवश्य करके यंत्रपीड़न से (पेच आदि में पिस जाने से) मरण जानिये ॥ ३० ॥

भौमे तुलायां च यमे च कर्के प्रालेयरश्मौ रविजालयस्थे ॥
विण्मूत्रतासंकुलितप्रदेशेऽवश्यं विनाशः परिवेदितव्यः ३१

मङ्गल तुला में और शनैश्चर कर्क में हो और चन्द्रमा शनैश्चर के घर में बैठा हो तो विष्ठा-मूत्रादि से युक्त देश (अशुद्धस्थान) में मृत्यु जानना चाहिये॥ ३१॥

मेषूरणास्ताम्बुगृहैः क्रमेण क्षीणेन्दुमन्दावनिपुत्रयुक्तैः॥
दुर्गान्तराले च शिलोच्चये वा वनान्तराले प्रलयः किल स्यात् ३२

दशवें क्षीणचन्द्रमा, सप्तमभवन में शनैश्चर और चतुर्थभाव में मंगल बैठा हो तो कोट के भीतर या वन में अथवा पर्वत पर मृत्यु होती है॥ ३२॥

बलोपपन्नावनिसूनुदृष्टे क्षीणे विधौ रन्ध्रगतेर्क पुत्रे॥
गुह्यामयाद्वा कृमिहेतुतो वा भवेदवश्यं मरणं रणाद्वा ३३

क्षीणचन्द्रमा और शनैश्चर अष्टमभाव में बैठे हों और बलवान् मंगल उनको देखता हो तो गुदारोग (बबासीर) से या कृमिरोग से अवश्य करके मरण होता है॥ ३३॥

मित्रे कलत्रोपगते सभौमे मन्देष्टमस्थे च विधौ चतुर्थे॥
विहङ्गमश्वापदकारणेन निर्याणमाहुर्मुनयः पुराणाः ३४

सूर्य्य और मंगल सप्तमभाव में हों, शनैश्चर अष्टमस्थान में हो और चन्द्रमा चतुर्थभाव में हो तो पक्षियों से या हिंसकजीवों से पुराणचार्यों ने निधन कहा है॥ ३४॥

लग्नाष्टमत्रिकोणेषु भानुभौमार्कजेन्दुषु॥
पार्वतीयो भवेन्मृत्युर्भित्तिपातभवोऽथवा ३५

लग्न में तथा अष्टमभाव में अथवा नवम में या पंचम में सूर्य्य, मंगल, शनैश्चर और चन्द्रमा हों तो पर्वत पर से गिरने से या भीति (दिवाल) के गिरने से मृत्यु होती है॥ ३५॥

सौम्येष्टमस्थे शुभदृष्टियुक्ते धर्मेश्वरे वा शुभखेचरेन्द्रे॥
तीर्थे मृतिः स्याद्यदि योगयुग्मे तीर्थेहि विष्णुस्मरणेन मृत्युः ३६

आठवें बुध हो और शुभग्रह उसको देखते हों अथवा नवमस्थान का स्वामी शुभग्रह हो तो तीर्थपर मृत्यु होती है। यदि ये दोनों योग हों तो हरिस्मरण-पूर्वक तीर्थ पर मृत्यु होती है॥ ३६॥

धर्म्मस्वामी धर्म्मगो धर्म्मसंस्थौ सूर्य्यक्ष्माजौ चेत्तदाग्निप्रवेशम्॥

कुर्य्यात्पत्नी लग्नजामित्रनाथौ मित्रे स्यातां नान्यथा सद्भिरुक्तम् ३७

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
निर्याणाध्यायः ॥ १७ ॥

नवम का स्वामी नवमस्थान में हो और उसी नवमभाव में सूर्य्य और मंगल भी बैठे हों तो अग्नि में प्रवेश करने से मृत्यु होती है और लग्न तथा सप्तमभाव के स्वामी दोनों हों तो उसकी स्त्री सती होती है अन्यथा नहीं ॥ ३७ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
निर्याणाध्यायः ॥ १७ ॥

अथ चन्द्रकृतनिर्याणाध्यायारम्भः ।

इतिप्रणीतं निर्याणं प्राचीनमुनिसम्मतम् ॥
यवनैरुदितं यत्र सविस्तरमथोच्यते १

इस प्रकार (पूर्वोक्ताध्याय में) प्राचीन मुनिजनों का सम्मत निर्याण कहा गया (अब) यवनाचार्यों के मत से विस्तारपूर्वक चन्द्रनिर्याण वर्णन किया जाता है ॥ १ ॥

अथ मेषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणे रतः ॥
सर्व्वकर्मसमायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः २

जिसके मेषराशि में चन्द्रमा हो वह धनी, पुत्रवान्, तेजयुक्त, परोपकारी, सब प्रकार के उत्तम कार्य्य करनेवाला, सुशील और राजा का प्रिय होता है ॥ २ ॥

गुणाभिरामस्सततं देवब्राह्मणपूजकः ॥
कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ३

बड़ा गुणी और देवता व ब्राह्मणों का पूजक, किंचित् गर्म शाक और थोड़ा भोजन करनेवाला और तांबे से बड़े नेत्रोंवाला होता है ॥ ३ ॥

शूरः शीघ्रप्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः ॥

शिरोव्रणयुतो दाता कुनखी सेवकप्रियः ४

बड़ा शूरवीर, जल्दी प्रमादयुक्त होनेवाला, कामी, दुर्बल जंघावाला और शिर स्थान में व्रण तथा कुत्सित नखवाला और सेवकजनों से प्रसन्न होनेवाला होता है ॥ ४ ॥

द्विभार्य्यः संगरे भीरुश्चपलोतितराम्भवेत् ॥
प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ५

दो स्त्रियोंवाला, संग्राम में डरपोक और चपलचित्त होता है । प्रथम, सप्तम, अष्टम और तेरहें वर्ष में ज्वर से पीड़ा होती है ॥ ५ ॥

षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विसूचिका ॥
तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ६

सोलहें और सत्रहें वर्ष में विसूचिका रोग से पीड़ा तथा तीसरे और बारहें वर्ष में जल से भय होता है ॥ ६ ॥

पञ्चविंशमिते वर्षे सन्तानश्च निशान्धता ॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ७

पच्चीसवें वर्ष में संतान हो और निशान्धरोग अर्थात् रतौंधी और बत्तीसवें वर्ष में शस्त्रघात होता है ॥ ७ ॥

कार्यारम्भप्रलापी च विदेशगमने रतः ॥
कृशाङ्गः शीघ्रगो मानी शुभलक्षणसंयुतः ८

कार्य के आरंभ में प्रलाप करनेवाला और विदेश में रहनेवाला, दुर्बल शरीर, शीघ्र चलनेवाला, अभिमानयुक्त और शुभलक्षणों से युक्त होता है ॥ ७ ॥

वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवतिसम्मितम् ॥
आयुस्तस्य विनिर्देश्यं कार्त्तिकस्य सितेतरे ९
पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा ॥
निधनं जायते नूनं जन्मनीन्दावजस्थिते १०

इति मेषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

वातरोग की आधिक्यता होती है । जो चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो उसको

नब्बे ९० वर्ष की आयुर्दाय कहना चाहिये। कार्त्तिकमास के कृष्णपक्ष में नौमी तिथि और बुधवार को आधीरात्रि के समय शिर में पीड़ा होने से मरण होता है यदि जन्मकाल में मेष का चन्द्रमा हो॥ ९। १०॥

इति मेषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

अथ वृषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

अल्पतेजा नरस्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः॥
सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः १

जिसके वृष में चन्द्रमा हो वह अल्पतेज, आलसी, श्रेष्ठकर्म से वर्जित, सत्यवादी, धनी, कामी और स्त्री की आज्ञा पर चलनेवाला॥ १॥

चिरायुरल्पकेशी च परोपकरणे रतः॥
पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः २

बड़ी आयुवाला, थोड़े बालोंवाला, परोपकार में तत्पर तथा माता, पिता और गुरु का भक्त एवं राजा का प्रिय मित्र होता है॥ २॥

सभार्यां चतुरो नित्यं सन्तुष्टो येन केनचित्॥
पीडा स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत् ३

सभा चातुर, निरन्तर किसी तरह संतुष्ट रहता है। प्रथम वर्ष में उसको पीड़ा होती है और तीसरे वर्ष में अग्नि से भय होता है॥ ३॥

विसूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा॥
दशमे रुधिरोद्गाराद् द्वादशे पतनं तरोः ४

सातवें वर्ष में विसूचिका रोग, नवें वर्ष में व्यथा, दशवें वर्ष में रुधिर का कोप और बारहें वर्ष में वृक्ष से पतन होता है॥ ४॥

सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके॥
पंचविंशमिते तोयाद्भयम्भवति निश्चितम् ५

सोलहें वर्ष में सर्प से भय, उन्नीसवें वर्ष में पीड़ा और पचीसवें वर्ष में निश्चय करके जल से भय होता है॥ ५॥

त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेपि च॥
श्लेष्मलः शन्तिभाक् शूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः ६

नब्बे ९० वर्ष की आयुर्दाय कहना चाहिये । कार्त्तिकमास के कृष्णपक्ष में नौमी तिथि और बुधवार को आधीरात्रि के समय शिर में पीड़ा होने से मरण होता है यदि जन्मकाल में मेष का चन्द्रमा हो ॥ ९ । १० ॥

इति मेषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ वृषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अल्पतेजा नरस्तब्धः कर्मशुद्धिविवर्जितः ॥
सत्यवागर्थवान्कामी कामिनीवचनानुगः १

जिसके वृष में चन्द्रमा हो वह अल्पतेज, आलसी, श्रेष्ठकर्म से वर्जित, सत्यवादी, धनी, कामी और स्त्री की आज्ञा पर चलनेवाला ॥ १ ॥

चिरायुरल्पकेशी च परोपकरणे रतः ॥
पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः २

बड़ी आयुवाला, थोड़े बालोंवाला, परोपकार में तत्पर तथा माता, पिता और गुरु का भक्त एवं राजा का प्रिय मित्र होता है ॥ २ ॥

सभार्यां चतुरो नित्यं सन्तुष्टो येन केनचित् ॥
पीडा स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्निभयं दिशेत् ३

सभा चातुर, निरन्तर किसी तरह संतुष्ट रहता है । प्रथम वर्ष में उसको पीड़ा होती है और तीसरे वर्ष में अग्नि से भय होता है ॥ ३ ॥

विसूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा ॥
दशमे रुधिरोद्गाराद् द्वादशे पतनं तरोः ४

सातवें वर्ष में विसूचिका रोग, नवें वर्ष में व्यथा, दशवें वर्ष में रुधिर का कोप और बारहें वर्ष में वृक्ष से पतन होता है ॥ ४ ॥

सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके ॥
पंचविंशमिते तोयाद्भयम्भवति निश्चितम् ५

सोलहें वर्ष में सर्प से भय, उन्नीसवें वर्ष में पीड़ा और पचीसवें वर्ष में निश्चय करके जल से भय होता है ॥ ५ ॥

त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेपि च ॥
श्लेष्मलः शन्तिभाक् शूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः ६

और तीसवें तथा बत्तीसवें वर्ष में पीड़ा, कफ प्रकृतिवाला, शान्तचित्त, शूर-वीर, सहनशील और बुद्धिमान् होता है ॥ ६ ॥

सौम्यग्रहेक्षिते चन्द्रे षणवत्यष्टसंख्यकम् ॥
आयुर्जन्तोर्विनिर्देश्यमवश्यं वचनात्सताम् ७

जो चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो छानबे वर्ष की आयुर्दाय कहना चाहिये ॥ ७ ॥

माघमासे नवम्यां च शुक्लपक्षे भृगोर्दिने ॥
रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते ८

इति वृषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

माघमास के शुक्लपक्ष में नौमीतिथि, शुक्रवार और रोहिणी नक्षत्र में निधन होता है । यह बृषराशि के चन्द्रमा का फल है ॥ ८ ॥

इति वृषराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ मिथुनराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

ग्रामण्यां चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः ॥
मिष्टान्नाशी सुशीलश्च छिन्नवाक् चललोचनः १

जिसके जन्म काल में मिथुन का चन्द्रमा हो वह ग्रामीण स्त्रियों में बड़ा चतुर, पण्डित, दृढ़ मित्रता करनेवाला, मिष्टान्न भोजन में प्रीतिवाला, उत्तम शील स्वभाव, अल्पवाक्य और चञ्चल नेत्रोंवाला होता है ॥ १ ॥

कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहलरतिप्रियः ॥
वयसःपूर्वभागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः २

कुटुम्ब का पालक, कामी, अनेक कौतुक देखनेवाला, स्त्रीप्रसंग में अधिक प्रीति करनेवाला और बाल्यावस्था में अतिसुखी और मध्यावस्था में अल्पसुख वाला होता है ॥ २ ॥

चरमेतितरांदुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः ॥
स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम् ३

वृद्धावस्था में अति दुःखी, दो स्त्रियों से युक्त, गुरुभक्त और अल्पसन्तान तथा बड़ा गुणी होता है ॥ ३ ॥

वृक्षाद्धीःपञ्चमे वर्षे षोडशेऽरिकृतम्भयम् ॥
अष्टादशप्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम् ४

पाँचवें वर्ष में वृक्ष से और सोलहें वर्ष में शत्रु से भय होता है तथा अठारहें वर्ष में कर्ण में पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

विंशतिप्रमिते वर्षे पीडात्यन्तं प्रजायते ॥
अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यान्मृत्युना समा ५

बीसवें वर्ष में अत्यन्त पीड़ा और अरतीसवें वर्ष में मृत्यु समान कष्ट होता है ॥ ५ ॥

भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्मपरायणः ॥
शुभगो विषयासक्तो गीतनृत्यप्रियः सुधीः ६

भोगी, दानी, सत्यधर्म में परायण, उत्तम शरीर, विषय में आसक्त और नृत्य व गान में प्रीतिवाला तथा चतुर होता है ॥ ६ ॥

शास्त्रज्ञः शुभवाग् जीवेदशीतिः शरदां नरः ॥
वैशाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे ७
मध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत् ॥
इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ ८

इति मिथुनराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

शास्त्र को जाननेवाला और उत्तम वचन कहनेवाला होता है तथा अस्सी वर्ष की आयुर्दाय होती है। वैशाखमास के शुक्लपक्ष में द्वादशीतिथि तथा बुधवार को मध्याह्न समय में और हस्तनक्षत्र में मृत्यु कहना चाहिये। मिथुन के चन्द्रमा का यह फल है ॥ ७। ८ ॥

इति मिथुनराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

अथ कर्कराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

परोपकृतिकर्त्ता च सर्वसंग्रहतत्परः ॥
पुत्रवान्गुणवान् साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रियाजितः १

जिसके कर्कराशि में चन्द्रमा हो वह परोपकारी, सर्ववस्तु के संग्रह करने में

तत्पर और पुत्रों से युक्त, गुणी, साधुओं का तथा माता-पिता का भक्त और स्त्री के वशीभूत होता है ।। १ ।।

अल्पायुः प्रथमे भागे निस्स्वो मध्ये सुखी भवेत् ।।
तृतीये धर्मसंसक्तस्तीर्थयात्रापरायणः २

अल्प आयुवाला, पहली अवस्था में धन से हीन और मध्य अवस्था में सुखी तथा वृद्धावस्था में धर्म में तत्पर होकर तीर्थयात्रा में दत्तचित्त होता है ।। २ ।।

रेखा तस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी ।।
वामांगेग्निभयं विद्याच्छीर्षरुक्परिपीडितः ३

ललाट के मध्य में उसके रेखा का चिह्न होता है और बायें अङ्ग में अग्नि से भय तथा मस्तकपीड़ा से व्यथित होता है ।। ३ ।।

बांधवैर्बहुभिर्युक्तो बहुभार्यः प्रजायते ।।
भग्रहस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः ४

बहुत बान्धवों तथा अनेक स्त्रियोंवाला, ज्योतिषशास्त्र में प्रवीण, बहुत मित्रोंवाला और प्रियवादी होता है ।। ४ ।।

रोगी स्यात्प्रथमे वर्षे तृतीये लिङ्गपीडनम् ।।
एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत् ५

प्रथम वर्ष में रोगी, तीसरे वर्ष में लिंगस्थान में पीड़ा और इकतीसवें वर्ष में सर्प से भय होता है ।। ५ ।।

द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत् ।।
पञ्चाशीतिमितं ब्रूयादायुः षण्णवतिश्च वा ६

बत्तीसवें वर्ष में अधिक रोग से पीड़ा होती है। पचासी वर्ष की अथवा छानबे वर्ष की आयुर्दाय कहना चाहिये ।। ६ ।।

माघे मासिसिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे ।।
रोहिणीनामनक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम् ७

माघ का महीना, शुक्लपक्ष, नौमी तिथि, शुक्रवार और रोहिणीनक्षत्र में आयुर्दाय की पूर्णता होती है ।। ७ ।।

प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति ॥
पुराणैर्मुनिभिः प्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम् ८
इति कर्कराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

जन्म काल में कर्कराशि स्थित चन्द्रमा का यह फल पुरातन मुनियों ने कहा है ॥ ८ ॥

इति कर्कराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

--:०:--

अथ सिंहराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम्।

धनधान्यसमायुक्तः श्रीमांश्च समरप्रियः ॥
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो विदेशगमने रतः १

जिसके सिंहराशि का चन्द्रमा हो वह धन-धान्य से युक्त, लक्ष्मीवान्, संग्राम का प्रेमी, विद्यावान्, सर्वकलाओं का जाननेवाला और विदेश यात्रा में प्रीति-वाला होता है ॥ १ ॥

विशालपिंगलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः ॥
सगर्वः शत्रुहंता च शिरोरुक् निष्ठुरो महान् २

विशाल और पीले नेत्र, क्रोधयुक्त, अल्पसन्तानवाला, अहङ्कारी, शत्रुओं का नाश करनेवाला, शिरस्थान में रोगी और बड़ा निष्ठुर होता है ॥ २ ॥

भूताद्बाधादिमे वर्षे पंचमेब्देऽग्नितो भयम् ॥
सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम् ३

प्रथम वर्ष में प्रेत पिशाचादि बाधा और पांचवें वर्ष में अग्नि से भय और सातवें वर्ष में ज्वर से अवश्य पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

विसूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम् ॥
विंशन्मिते भयं सर्प्पादेकविंशे प्रपीडनम् ४

निश्चय करके विसूचिका रोग से भी पीड़ा होती है तथा बीसवें वर्ष में सर्प से भय और इक्कीसवें वर्ष में भी पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

अष्टाविंशमिते वर्षे चापवादभयान्वितः ॥
द्वात्रिंशत्प्रमिते नूनं वत्सरे परिपीडनम् ५

अट्ठाईसवें वर्ष में अपवाद (कलंक) का भय और बत्तीसवें वर्ष में निश्चय पीड़ा होती है ॥ ५ ॥

उदरे सव्यभागे तु वातगुल्मादिसंभवः ॥
सुशीलः कृपणोऽत्यन्तं सत्यवादी विचक्षणः ६

पेट के वाम भाग में वात-गुल्म से पीड़ित, बड़ा सुशील, कृपण, बड़ा सत्यवादी और पण्डित होता है ॥ ६ ॥

शुभग्रहेक्षिते चन्द्रे शतायुर्जायते नरः ॥
फाल्गुनस्यासिते पक्षे पञ्चम्यां भौमवासरे ७
मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः ॥
सिंहराशिस्थिते चन्द्रे निर्याणमिदमीरितम् ८
इति सिंहराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

शुभग्रह चन्द्रमा को देखते हों तो सौ वर्ष की आयु होती है । फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष में, पंचमी तिथि और मंगलवार के दिन, मध्याह्न समय में जल के अन्दर मृत्यु होती है । यह सिंहराशि के चन्द्रमा का फल है ॥ ७ । ८ ॥

इति सिंहराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ कन्याराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

स्वजनानन्दकृन्नित्यं धनवान् बहुसेवकः ॥
प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः १

जिसके कन्याराशि में चन्द्रमा हो वह अपने जनों (कुटुम्बी और मित्रों) को आनन्द देनेवाला, धनवान्, बहुत सेवकोंवाला और परदेश में रहनेवाला, अनेक कलाओं का जाननेवाला, गुरुभक्त और प्रियवाणी बोलनेवाला होता है ॥ १ ॥

देवताद्विजवर्य्याणां भक्तो तत्परमानसः ॥
धर्म्मकर्मसमायुक्तो जनानामतिदुर्ल्लभः २

देवता और ब्राह्मणों की भक्ति में दत्तमानस होता है और श्रेष्ठ कर्म तथा धर्म में परायण इसकी बराबर मनुष्यों में कोई दुर्लभ होता है ॥ २ ॥

कन्याल्पकत्वमापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः ॥
शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत् ३

थोड़ी कन्या और बहुत पुत्रों वाला और लिंगस्थान में अथवा कण्ठ में निश्चय तिलक चिह्न होता है ॥ ३ ॥

वह्निपीडातृतीयेब्दे पञ्चमे लोचनव्यथा ॥
नवमे द्वारबाधा च त्रयोदशमितेपि च ४

तीसरे वर्ष में अग्नि से भय, पांचवें वर्ष में नेत्रों में पीड़ा और नवें तथा तेरहवें वर्ष में द्वार में बाधा (दरवाजा गिर जाने आदि से जोखिम) होती है ॥४॥

तथा पञ्चदशे वर्षे सर्प्पतो भयमादिशेत् ॥
एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः ५

पन्द्रहें वर्ष में सर्प से भय और इक्कीसवें वर्ष में वृक्ष से या दीवाल से पतन होता है ॥ ५ ॥

अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम् ॥
अशीत्यब्दं भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ६

तीसरे वर्ष में वन में शस्त्र से घात होता है । यदि चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो अस्सी वर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ ६ ॥

चैत्रे कृष्णत्रयोदश्यां निधनं रविवासरे ॥
शीतद्युतौ स्थिते सूतौ कन्यायामिति संस्मृतम् ७

इति कन्याराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

चैत्रमास के कृष्णपक्ष में, तेरसि तिथि तथा रविवार को उसकी मृत्यु होती है । कन्याराशि के चन्द्रमा का यह फल है ॥ ७ ॥

इति कन्याराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ तुलाराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रहतत्परः ॥
भोगी धर्म्मपरः श्रीमान् बहुभृत्यो विचक्षणः १

जिसके जन्म समय में तुलाराशि हो वह सर्वजनों से मान पानेवाला, वस्तु-संग्रह करनेवाला, भोगी, धार्मिक, धनवान् और बहुत सेवकों का स्वामी तथा चतुर होता है ॥ १ ॥

वापीकूपतडागादिनिर्मितो सादरः सदा ॥
प्राज्ञः सर्व्वकलाभिज्ञो नृपाणामतिवल्लभः २

वापी, कूप, तडाग आदि का बनानेवाला, बुद्धिमान्, सर्वकलाओं का ज्ञाता और राजाओं से प्रीति करनेवाला होता है ॥ २ ॥

मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्य्यः पितृभक्तिकृत् ॥
स्वल्पापत्योल्पबन्धुश्च कृषिकर्म्मविचक्षणः ३

मीठे अन्न और रसों से प्रीति करनेवाला, दो स्त्रियों से युक्त, पिता की सेवा करनेवाला, अल्पसंतान तथा अल्पबन्धुओंवाला और कृषिकर्म करने में चतुर होता है ॥ ३ ॥

क्रयविक्रयसंप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजकः ॥
भार्य्यावचोनुगामी च सप्तमेब्देग्निजं भयम् ४

क्रय-विक्रय में लाभ और देव ब्राह्मणों का पूजक तथा स्त्री की आज्ञा का पालक होता है और सातवें वर्ष में अग्नि से पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम् ॥
तरोस्तुरङ्गतः पातः सर्प्पभीर्वापि विंशके ५

आठवें वर्ष में ज्वर से पीड़ा, बारहें वर्ष में जल से भय, बीसवें वर्ष में वृक्ष से अथवा अश्वादि वाहन से पतन तथा सर्प से भय होता है ॥ ५ ॥

एकविंशन्मिते पीडा चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते ॥
पञ्चाशीतिर्भवेदायुर्वैशाखस्याद्यपक्षके ६
सार्पेष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्वयामके ॥
तुलाराशिस्थिते चन्द्रे निर्याणमिति सूचितम् ७

इति तुलाराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

इक्कीसवें वर्ष में पीड़ा होती है । जो चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो पचासी वर्ष की आयुर्दाय होती है । वैशाखमास के शुक्लपक्ष में अष्टमी तिथि, शुक्रवार,

आश्लेषा नक्षत्र और प्रथम प्रहर में निधन होता है। यह तुलाराशि के चन्द्रमा का फल है ॥ ७ ॥

इति तुलाराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ वृश्चिकराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

परतापकरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः ॥
विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः १

शत्रुओं को संतापकारक, क्रोधयुक्त, वैर करनेवाला, कलह में प्रीतिवाला, विश्वासघाती, मित्रद्रोही और चतुर होता है ॥ १ ॥

असन्तुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्त्ताऽन्यकर्मणि ॥
शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमी २

संतोषहीन, राजाओं से पूज्य, सबके कार्य में विघ्न करनेवाला, शुभ लक्षणों से युक्त, गुप्त पाप करनेवाला और पराक्रमी होता है ॥ २ ॥

बहुभृत्यश्चतुर्बन्धुर्द्विभार्य्यो जायते पुमान् ॥
प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः ३

बहुत सेवकोंवाला, चार भाइयोंवाला तथा दो स्त्रियोंवाला होता है। प्रथम वर्ष में ज्वर से पीड़ा और तृतीय वर्ष में अग्नि से भय होता है ॥ ३ ॥

पञ्चमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पञ्चदशेऽपि च ॥
पञ्चविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम् ४

फिर पांचवें वर्ष में ज्वर से पीड़ा और पन्द्रहें वर्ष में भी पीड़ा होती है तथा पच्चीसवें वर्ष में अधिक पीड़ा होती है ॥ ४ ॥

चन्द्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति ॥
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ५
हस्तनक्षत्रसंयुक्ते मध्यरात्रे गते सति ॥
चन्द्रे वृश्चिकराशिस्थे निर्याणमितिकीर्त्तितम् ६

इति वृश्चिकराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

यदि चन्द्रमा को शुभग्रह देखते हों तो नब्बे वर्ष की आयु होती है। ज्येष्ठ-

मास के शुक्ल पक्ष में, दशमी तिथि को, बुधवार को हस्तनक्षत्र और अर्द्धरात्रि में मरण होता है। वृश्चिक राशि के चन्द्रमा का यह फल है ॥ ५ । ६ ॥

इति वृश्चिकराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ धनूराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

प्राज्ञो धर्म्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः ॥
द्विजदेवार्च्चनप्रीतिर्वस्तुसंग्रहतत्परः १

बड़ा पण्डित, धार्मिक, श्रेष्ठ पुत्रोंवाला, राजा का मान्य, सर्वजनों का प्रिय, देवता व ब्राह्मणों का पूजनेवाला और अनेक पदार्थों का संग्रह करनेवाला होता है ॥ १ ॥

सभार्यां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः ॥
स्थूलदन्ताधरग्रीवः काव्यकर्त्ता प्रगल्भकः २

सभा में व्याख्या करनेवाला, अच्छे नखोंवाला, श्रेष्ठ, पवित्र रहनेवाला, स्थूल दन्त, होठ और गर्दनवाला, काव्यकर्त्ता और ढीठ होता है ॥ २ ॥

कुलशाली वदान्यश्च सभाग्यो दृढसौहृदः ॥
निम्नपादतलः क्लेशी साहसी विनयान्वितः ३

कुल को शोभित करनेवाला, दानी, भाग्यवान् और दृढ़मैत्री करनेवाला होता है तथा छोटे चरणतलवाला, क्लेशयुक्त, साहसवाला और सब से विनीत-भाव रखनेवाला होता है ॥ ३ ॥

शान्तः क्षिप्रप्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ्नरः ॥
स्वल्पापत्यः सुबंधुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ४

शान्तस्वभाव, शीघ्र कोप करनेवाला, तपस्वी, अल्पभोजन करनेवाला, थोड़ी संतानवाला और श्रेष्ठबन्धुवोंवाला तथा बाल्यावस्था में अधिक धनवान् होता है ॥ ४ ॥

सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे ॥
अष्टषष्टिमितं प्राहुरायुर्वा पञ्चसप्ततिः ५

प्रथम वर्ष में शरीर को बाधा और तेरहें वर्ष में महादुःख होता है और अरसठ वर्ष की आयुर्दाय होती है अथवा पचहत्तर वर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ ५ ॥

चन्द्रे सर्वंशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जीवति ॥
आषाढस्यासिते पक्षे पञ्चम्यां भृगुवासरे ६
निशायां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत् ॥
निर्याणमिति संप्रोक्तं चन्द्रे सूतौ धनुस्स्थिते ७

इति धनूराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

जो चन्द्रमा को सम्पूर्ण शुभग्रह देखते हों तो सौ वर्ष का जीवन होता है। आषाढ़मास के कृष्णपक्ष में, पञ्चमी तिथि, गुरुवार, रात्रि के समय, हस्त नक्षत्र में अवश्य निधन होता है। धनुर्धरराशि के चन्द्रमा का यह फल है ॥ ६ । ७ ॥

इति धनूराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ मकरराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्रवान् नृपतिप्रियः ॥
कृपालुः सत्यसम्पन्नो वदान्यः सुभगोऽलसः १

जन्म समय मकरराशि में जो चन्द्रमा हो तो वह पुरुष धीर, विद्वान्, क्लेश-युक्त, पुत्रोंवाला, राजा का प्रिय, दयावान्, सत्यवक्ता, दानी, उत्तमस्वरूप और आलसी होता है ॥ १ ॥

कृष्णकेशः पुमान्नूनं विस्तीर्णकटिरुद्भवेत् ॥
पञ्चमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम् २

श्यामकेश और उन्नत कटिवाला होता है। पांचवें वर्ष में पीड़ा और सातवें वर्ष में जल से भय होता है ॥ २ ॥

दशमे पतनं वृक्षाद् द्वादशे शस्त्रपीडनम् ॥
विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पंचविंशके ३

दशवें वर्ष में वृक्ष से पतन, बारहें वर्ष में शस्त्र से भय, बीसवें वर्ष में ज्वर से बाधा और पच्चीसवें वर्ष में हाथ-पैरों में पीड़ा होती है ॥ ३ ॥

पंचत्रिंशत्समाकाले वामांगेऽग्निभयन्दिशेत् ॥
अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्त्तितम् ४

पैंतीसवें वर्ष में बायें अंग में अग्नि से भय होता है । और उसकी अवश्य ही नब्बे वर्ष की आयुर्दाय होती है ॥ ४ ॥

श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे ॥
ज्येष्ठायां निधनं नूनं चन्द्रे मकरसंस्थिते ५
इति मकरराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ॥

श्रावणशुक्ल, दशमी तिथि, मंगल वार और ज्येष्ठा नक्षत्र में निधन होता है । मकरराशि के चन्द्रमा का यह फल है ॥ ५ ॥

इति मकरराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ कुम्भराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्म्मकार्येषु सत्वरः ॥
प्रियवक्तृत्वसंयुक्तो नरः क्षीणकलेवरः १

जिसके जन्मसमय कुम्भराशि में चन्द्रमा हो तो वह पुरुष दानी, मिष्टान्न भोजी, धर्मकार्यों में जल्दी करनेवाला, प्रियवचन बोलनेवाला और दुर्बल शरीरवाला होता है ॥ १ ॥

स्वल्पापत्यो द्विभार्य्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः ॥
वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे २

अल्प संतान और दो स्त्रियोंवाला, कामी, धनहीन और बायें हाथ में लहसुन का चिह्न होता है । प्रथम वर्ष में पीड़ा होती है ॥ २ ॥

पञ्चमेग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे ॥
व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः ३
चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम् ॥
भाद्रे मास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ४
भरणीनामनक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम् ॥
एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चन्द्रे जन्मनि कुम्भगे ५
इति कुम्भराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

पांचवें वर्ष में अग्नि से भय तथा द्वादशवर्ष में सर्प से अथवा जल से भय

और अट्ठाईसवें वर्ष में चोरों से धन की हानि होती है तथा नब्बे वर्ष की आयुर्दाय होती है। भाद्रमास के शुक्लपक्ष में, चतुर्थी तिथि तथा शनिवार को भरणी नक्षत्र में अवश्य मरण होता है। ऐसा मुनिवरों ने कुम्भराशि के चन्द्रमा का फल कहा है ।। ३ । ४ । ५ ।।

इति कुम्भराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

अथ मीनराशिस्थचन्द्रकृतनिर्याणम् ।

धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः ॥
पितृमातृसुराचार्य्यगुरुभक्तिपरो नरः १

धनी, मान्यतायुक्त, नम्रस्वभाव, भोगों से युक्त, प्रसन्नचित्त तथा माता, पिता, देवता, आचार्य और गुरु का भक्त होता है ।। १ ।।

उदारो रूपवान् श्रेष्ठो गन्धमाल्यविभूषणः ॥
पञ्चमेऽब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् २

उदारचित्त, उत्तमस्वरूप और उत्तम सुगन्धित मालाओं से भूषित होता है पांचवें वर्ष में जल से भय और आठवें वर्ष में ज्वर से पीड़ा होती है ।। २ ।।

द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके ॥
पूर्वाशां गमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ३

बाईसवें वर्ष में महती पीड़ा तथा चौबीसवें वर्ष में पूर्व देश की यात्रा होती है और नब्बे वर्ष की आयुर्दाय होती है ।। ३ ।।

आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने ॥
कृत्तिकानामनक्षत्रे सायम्मृत्युर्न संशयः ४

आश्विनमास के कृष्णपक्ष में, द्वितीया तिथि, गुरुवार को सायंकाल के समय में और कृत्तिकानक्षत्र में मरण होता है ।। ४ ।।

इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्य्यसम्मतम् ॥
मीनस्थे यामिनीनाथे भवेदत्र न संशयः ५

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
निर्याणाध्यायः ॥ १८ ॥

इस प्रकार मीनस्थ चन्द्रमा का निर्याण फल यवनाचार्य्य के सम्मत से कहा गया इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ ५ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां निर्य्याणाध्यायः ॥ १८ ॥

अथ स्त्रीजातकाध्यायः।

यज्जन्मकालादुगदितन्नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव ॥
स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु चेदयोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् १

ज्योतिःशास्त्र में प्रवीण ऋषियों ने जो फल जन्मकाल से मनुष्यों के लिये कहा है वही फल स्त्रियों को भी होता है। जो फलकि स्त्रियों के अयोग्य होता है वह फल उस स्त्री के पति को होता है ऐसा जानना चाहिये ॥ १ ॥

लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैभवानि ॥
सुताख्यभावे प्रसवोऽवगम्यो वैधव्यमस्याः किल कालगेहे २

लग्न से और चन्द्रमा से शरीर का विचार जानना चाहिये तथा लग्न और चन्द्रमा से जो सातवाँ घर है उससे पति के विभव का विचार करना चाहिये और पंचमभाव से सन्तान का तथा अष्टमभाव से वैधव्ययोग का विचार करना चाहिये ॥ २ ॥

लग्ने च चन्द्रे समराशियाते कांतानितांतं प्रकृतिस्थिता स्यात् ॥
सद्रत्नभूषासहिताथ सौम्यैर्निरीक्षितौ तौ यदि चारुशीला ३

जो स्त्री के लग्न में चन्द्रमा हो और समराशि हो तो वह स्त्री अपनी प्रकृति में स्थित रहती है अर्थात् साधारण स्त्री होती है। और जो चन्द्रमा को तथा लग्न को शुभग्रह देखते हों तो वह स्त्री अच्छे रत्नों से युक्त आभूषणों से आभूषित और उत्तम शीलस्वभाववाली होती है ॥ ३ ॥

तयोः स्थितिश्चेद्विषमाख्यराशौ नारी नराकारधरा कुरूपा ॥
पापग्रहालोकनयोगयातौ तौ चेत्कुशीला गुणवर्जितालम् ४

जो जन्मलग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों तो वह स्त्री पुरुषाकृति तथा कुत्सितरूपवाली होती है और जो लग्न को और चन्द्रमा को पापग्रह देखते हों तो कुशीला व गुणों से वर्जित होती है ॥ ४ ॥

लग्नेन्दोर्बलवान् कुजस्य भवने शुक्रस्य खाग्न्यंशके
कन्या स्यादतिनिन्दिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् ॥
दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी
दासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशे फलानि क्रमात् ५

लग्न से तथा चन्द्रमा से बलवान् मंगल के घर में और शुक्र के त्रिशांश में जिस कन्या का जन्म हो तो वह अत्यन्त निन्दिता होती है और जो बृहस्पति के त्रिशांश में जन्म हो तो वह कन्या साध्वी (शुभशीलयुक्त) होती है और मंगल के त्रिशांश में जन्म हो तो दुष्टा और बुध के त्रिशांश में जन्म हो तो मायाविनी तथा शनैश्चर के त्रिशांश में जन्म हो तो दासी होती है। इस प्रकार क्रम से फल जानना ॥ ५ ॥

तारानायकपुत्रभेवनिसुतस्त्रिशल्लवे कापटा
शौक्रे हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ॥
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वी नितांतं तथा
खाग्न्यंशेर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीबस्य भार्य्या बुधैः ६

बुध के भवन में और मंगल के त्रिशांश में जन्म हो तो कपटयुक्ता और जो शुक्र के त्रिशांश में हो तो काम से हीन, बुध के त्रिशांश में जन्म हो तो बहुगुण-युक्ता, बृहस्पति के त्रिशांश में जन्म हो तो साधु स्वभावा और शनैश्चर के त्रिशांश में जन्म हो तो नपुंसक पुरुष की भार्य्या होती हैं ॥ ६ ॥

देवाचार्य्यगृहे मृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशके
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ॥
तारास्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्य चाल्पसुरता कांता बुधैः कीर्त्तिता ७

जो बृहस्पति के घर में चन्द्रमा हो अथवा जन्मलग्न हो और मंगल के त्रिशांश में जन्म हो तो बहुत गुणों से युक्त होती है और जो बृहस्पति के त्रिशांश में जन्म हो तो बहुत गुणों से प्रसिद्ध और बुध के त्रिशांश में बड़ी विभववाली होती है तथा शुक्र के त्रिशांश में जन्म हो तो साध्वी, गुणवती और शनैश्चर के त्रिशांश में अल्पकामवती होती है। यह पण्डितजनों ने कहा है ॥ ७ ॥

दैत्याचार्य्यगृहे सुरेन्द्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
लग्ने वाप्युडुनायको गुणवती भौमस्य दौष्ट्याधिका ॥
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चञ्चद्गुणै-
र्युक्ताद्यैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ८

शुक्र के घर में लग्न या चन्द्रमा हो तथा बृहस्पति के त्रिशांश में लग्न या चन्द्रमा हो तो वह कन्या गुणवती होती है और मंगल के त्रिशांश में दुष्टा, बुध के त्रिशांश में अनेक कारीगरी की कला में निपुण, शुक्र के त्रिशांश में गुणवती और शनैश्चर के त्रिशांश में जन्म हो तो दूसरे पतिवाली होती है ॥ ८ ॥

मन्दालये खाग्निलवे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला ॥
बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता सा बन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ९

शनैश्चर का घर हो और मङ्गल का त्रिशांश हो तो दासी होती है और बुध के त्रिशांश में हो तो दुष्टा, बृहस्पति के त्रिशांश में पतिव्रता और शुक्र के त्रिशांश में बन्ध्या तथा शनैश्चर के त्रिशांश में जन्म हो तो नीच पुरुष में अनुरक्त होती है ॥ ९ ॥

लग्ने वा विधुरर्कमन्दिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यताशशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ॥
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरता शनेरतितरां पुंवत्प्रगल्भांगना १०

जो जन्म का सिंहलग्न हो अथवा चन्द्रमा सिंहराशि में हो और मंगल का त्रिशांश हो तो वह स्वेच्छाचारिणी, बुध के त्रिशांश में अतीव दुष्टा, बृहस्पति के त्रिशांश में राजपत्नी, शुक्र के त्रिशांश में पुंश्चली अर्थात् अनेक पुरुषों से भोग करनेवाली और शनैश्चर के त्रिशांश में पुरुषों की तरह ढीठ होती है ॥ १० ॥

चन्द्रागारे खाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्यस्य शिल्पे प्रवीणा ॥
वाचांपत्युः सद्गुणाभार्गवस्य साध्वी मन्दस्य प्रियप्राणहन्त्री ११

लग्न में चन्द्रमा का घर हो और मंगल का त्रिशांश हो तो स्वेच्छारिणी और शिल्पविद्या में प्रवीण होती है और बृहस्पति के त्रिशांश में श्रेष्ठ गुणवती,

शुक्र के त्रिशांश में साध्वी और शनैश्चर के त्रिशांश में अपने पति के प्राण हरनेवाली होती है ॥ ११ ॥

अन्योन्यभागेक्षणगौ सितार्की यद्वासितर्क्षे तनुगे घटांशे ॥
कन्दर्पशान्ति कुरुते नितान्तं नारीनराकारकराङ्गनाभिः १२

शुक्र और शनैश्चर की दृष्टि परस्पर में या शुक्र शनैश्चर के त्रिशांश में और शनैश्चर शुक्र के त्रिशांश में हो अथवा लग्न में शुक्र की राशि वृष या तुला हो और तुला का नवांश हो तो वह स्त्री पुरुषाकार स्त्रियों से अर्थात् कृत्रिम इन्द्रिय वाली स्त्रियों से निरन्तर काम की शान्ति करती है ॥ १२ ॥

शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले
बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापूरुषः कीर्त्तितः ॥
जामित्रम्बुधमन्दयोर्यदि गृहं षंढो भवेन्निश्चितं
राशौ तत्र चरे विदेशनिरतो द्व्यंगे च मिश्रस्थितिः १३

जिस स्त्री के जन्मलग्न से सप्तम में कोई ग्रह न हो और कोई शुभ ग्रह भी न देखता हो तथा सप्तमभाव निर्बल हो तो उस स्त्री का पति कातर होता है अथवा सप्तमभाव में बुध या शनैश्चर की राशि हो अर्थात् मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ इनमें से कोई राशि हो तो उसका पति नपुंसक होता है और जो सप्तम भाव में चर राशि हो तो उसका पति विदेशी (परदेश में रहनेवाला) होता है और जो द्विस्वभावराशि सप्तम में हो तो उसका पति कभी स्वदेश में और कभी विदेश में वास करता है ॥ १३ ॥

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ॥
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवतिर्जरती स्यात् १४

जिसके जन्मलग्न से सातवें सूर्य हो तो उसको उसका पति त्याग देता है और जो मंगल सातवें हो तो बाल्यावस्था में विधवा होती है अथवा सातवें स्थान में शनैश्चर बैठा हो और उसको पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री कुँवारी ही वृद्धा हो जाती है ॥ १४ ॥

खलैः कलत्रे च गतालका स्यात्कान्ताविमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः ॥
कलत्रसंस्थे विबले खलाख्ये सौम्यैरदृष्टे विभुना विमुक्ता १५

जिस स्त्री के सातवें पाप ग्रह हों तो वह स्त्री अलकावली (मांग) से रहित अर्थात् रण्डा होती है और जो मिश्रित ग्रह (शुभ-पाप) दोनों सप्तम में हों तो दूसरे पतिवाली होती है और जो सातवें निर्बल पापग्रह बैठा हो और उसको शुभ ग्रह कोई भी न देखता हो तो उसका पति उसको त्याग देता है ॥ १५ ॥

अन्योन्यांशावस्थितौ भौमशुक्रौ
स्यातां कान्तासंगतान्येन नूनम् ॥
चन्द्रोपेतौ शुक्रवक्रौ स्मरस्था-
वाज्ञैव स्यात्स्वामिनश्चामनन्ति १६

जिस स्त्री के मंगल शुक्र के नवांशा में और शुक्र मङ्गल के नवांशा में बैठा हो वह अन्य पुरुष से सङ्ग करती है और चन्द्रमा, मङ्गल और शुक्र सप्तमभाव में बैठे हों तो वह स्त्री पति की आज्ञा से पर-पुरुष से रमण करती है ॥ १६ ॥

लग्ने सितेंदू कुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता निरुक्ता ॥
स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे १७

लग्न में शुक्र और चन्द्रमा बैठे हों और वह घर मङ्गल का हो अर्थात् मेष या वृश्चिक हो और उसको क्रूरग्रह देखते हों तो वह स्त्री अन्य पुरुष से भोग करती है तथा जिसके सातवें घर में मङ्गल हो और उसे शनैश्चर देखता हो तथा अशुभ या शुभग्रहों के नवांश में हो तो वह स्त्री विनष्टयोनिवाली होती है ॥ १७ ॥

भानोर्भं यदि वा लवः स्मरगृहं सम्भोगमन्दः पति-
श्चन्द्रस्यातिमदो मृदुः क्षितिसुतस्य स्त्रीप्रियः क्रोधयुक् ॥
विद्वान् ज्ञस्य गुरोर्वशीगुणयुतः शुक्रस्य भाग्यान्वितो
मंदस्य प्रवयास्तु गूढमतिरत्युक्तो बुधैर्होरिकैः १८

सातवें घर में सिंहराशि या सिंह का नवांशा हो तो उसका पति अल्पभोगी होता है और जो चन्द्रमा की राशि हो तो उसका पति अत्यन्त मदयुक्त कोमल स्वभाव होता है। जो मंगल की राशि हो तो उसका पति स्त्रीप्रिय और क्रोधी होता है। बुध की राशि सप्तम में हो तो उसका पति विद्वान् होता है। बृहस्पति का

क्षेत्र सप्तम भाव में हो तो उसका पति वशीकरण के गुण से युक्त होता है। जो शुक्र की राशि सप्तम में हो तो उसका स्वामी भाग्यशाली होता है और जो सप्तम भाव में शनैश्चर की राशि हो तो उसका पति गूढ़मति होता है यह होरा शास्त्र में प्रवीण पण्डितजन कहते हैं ॥ १८ ॥

शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरतः सेर्ष्यां सुखेनान्वितां
सौम्येन्दू च कलासुखोत्तमगुणां शुक्रेन्दुपुत्रावथ ॥
चश्चद्भाग्यकला ञ्चताभिरुचिरां सौम्यग्रहेन्द्रास्तनौ
नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखां पापग्रहैस्त्वन्यथा १९

जिसके शुक्र और चन्द्रमा सप्तमभाव में बैठे हों वह स्त्री ईर्ष्यासहित सुख सौभाग्य संयुक्त रहती है और जिसके सप्तमभाव में बुध और चन्द्रमा बैठे हों तो वह अनेक कलावाली, उत्तम गुणों से संयुक्त और सुख भोग करनेवाली होती है। जो बुध तथा शुक्र सप्तमभाव में हों तो उत्तम भाग्यशालिनी, शिल्प में दक्षा और सुन्दर स्वरूपवाली होती है तथा जिसके शुभग्रह लग्न में बैठे हों तो वह अनेक प्रकार के आभूषणों से युक्त, उत्तम गुणोंवाली तथा उत्तम वस्त्र धारनेवाली होती है और जो पापग्रह लग्न में हों तो दुर्भगा व दुष्टा होती है ॥ १९ ॥

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रन्ध्रस्वामीसंस्थितो यस्य चांशे ॥
मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि २०

जिस स्त्री के आठवें पापग्रह बैठा हो तो वह विधवा होती है और जो अष्टम-भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवांशा में बैठा हो उस ग्रह की दशा में उस स्त्री की मृत्यु होती है और जो दूसरे घर में शुभग्रह बैठे हों तो वह अपने आप मर जाती है ॥ २० ॥

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृति-
र्भौमेन्द्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥
सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बन्धना-
त्तौ चेद्द्व्यंगविलग्नसंस्थितकरौ तोये विलग्नाः स्वतः २१

जिसके दशवें घर में सूर्य्य और चतुर्थभाव में मंगल बैठे हों तो उसका मरण पर्वत के पतन से होता है। जिसके मंगल दूसरे घर में, चन्द्रमा सप्तम घर में और शनैश्चर चतुर्थभाव में बैठे हों तो वह कूप या वापी आदि में गिर कर मरती है।

सूर्य्य और चन्द्रमा पापग्रह के साथ या पापावलोकित कन्याराशि में बैठे हों तो कारागार में मृत्यु होती है और अन्य द्विस्वभावराशि में वहीं दोनों ग्रह हों अर्थात् सूर्य्य और चन्द्रमा हों तो जल में मृत्यु होती है ॥ २१ ॥

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ॥
किल जलोदरसञ्जनिता तदा विधनतावनितासु च कीर्तिता २२

जिस स्त्री के शनैश्चर कर्क राशि में हो और चन्द्रमा मकरराशि में हो तो जलोदर रोग से उसकी मृत्यु होती है ॥ २२ ॥

निशाकरः पापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥
पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति २३

मेष या वृश्चिक में स्थित चन्द्रमा पापग्रहों के बीच में बैठा हो तो शस्त्र से अथवा अग्नि से मृत्यु होती है और सप्तमभाव में पापग्रह बैठें हों और नवमस्थान में शुभग्रह बैठे हों तो वह स्त्री अवधूतिनी हो जाती है अर्थात् गृहस्थाश्रम को त्याग कर देती है ॥ २३ ॥

कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु साल्पपुत्रा ॥
पुत्रालयं चेत्खलु खेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम् २४

कन्या या वृश्चिक या सिंह में चन्द्रमा हो तो उस स्त्री के अल्प पुत्र होते हैं और जो पंचमभाव में शुभग्रह बैठे हों या उस पर बहुत ग्रहों की दृष्टि हो तो बहुत पुत्र होते हैं ॥ २४ ॥

शुक्रेन्दुसौम्या विबला भवेयुः शनैश्चरो मध्यबलो यदि स्यात् ॥
शेषाः सवीर्या विषमे च लग्ने योषा विशेषात्पुरुषप्रगल्भा २५

जिस स्त्री के शुक्र, चन्द्रमा और बुध निर्बल हों और शनैश्चर का मध्यम बल हो तथा शेष ग्रह बलवान् हों और जन्मलग्न विषम हो तो वह बड़ी प्रगल्भा और पुरुषों के ऐसे काम करनेवाली होती है ॥ २५ ॥

समे विलग्ने यदि संस्थिता स्युर्बलान्विता शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना २६

जिस स्त्री के जन्म समय सम लग्न हो और उसमें शुक्र, बुध, चन्द्रमा और बृहस्पति ये बली होकर बैठे हों तो वह स्त्री ब्रह्मविद्या में निपुण और वेदान्त का विचार करनेवाली होती है ॥ २६ ॥

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्त्तितं
सम्यग्ज्ञाप्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम् ॥
योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा
पाणिप्रग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेपि च २७

जो फलादेश पूर्वाचार्य्यों ने स्त्री जातक में कहा है उसको ग्रहों का बल जानकर शुभ अथवा अशुभ पण्डितजन कहें अथवा प्रश्न लग्न से यही फल विचारकर कहें और विवाह के लग्न में भी इन्हीं सब योगों का विचार करें और कन्यावरण समय में अथवा जन्मकाल में इस तरह फल कहना योग्य है ॥ २७ ॥

अथ नारीचक्रम् ।

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम् ॥
प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः २८
नाभौ देयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चन्द्रधिष्ण्यावधीत्थम् ॥
सत्सन्तापःशीर्षभेवक्त्रसंस्थे नित्यम्मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धिः २९
कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षो देशावस्थितेऽत्यन्तहर्षः ॥
पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ३०

नारीचक्र का वर्णन करते हैं जिससे स्त्रियों का विशेष फल जाना जाता है । स्त्री की आकृति का चक्र लिखे और उसके अङ्गों में नक्षत्रों को स्थापित करे । तीन नक्षत्र मस्तक में, सात मुख में, चार २ स्तनों में और तीन नक्षत्र हृदय में स्थापित करे ॥ २८ ॥ तथा नाभिस्थान में तीन नक्षत्र स्थापित करे और तीन गुदास्थान में स्थापित करे । सूर्य्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने और क्रम से फल जाने । जो शिर में नक्षत्र पड़े तो संताप और मुख में पड़े तो मिष्टान्न भोजन तथा सुख का लाभ होता है ॥ २९ ॥ और जो स्तन में वह जन्मनक्षत्र पड़े तो स्त्री पुरुष से प्रीति बढ़े और जो हृदय में जन्मनक्षत्र पड़े तो बड़ा हर्ष होता है तथा नाभि में जन्मनक्षत्र पड़े तो पति की अधिक चिंता होती है और गुदास्थान में जन्म नक्षत्र पड़े तो काम की अधिकाई होती है ॥ ३० ॥

अथ ग्रन्थकारपरिचयः ।

गोदावरीतीरविराजमानं पार्थाभिधानं पुटभेदनं यत् ॥

सद्गोलविद्यामलकीर्त्तिभाजां मत्पूर्वजानां वसतिस्थलं तत् ३१

गोदावरी के निकट विराजमान जो पार्थ नामक शहर है वह उत्तम समस्त गोलविद्या के जाननेवाले, सिद्धान्तवेत्ता हमारे पूर्वजों का निवासस्थान है ॥ ३१॥

तत्रत्यदैवज्ञनृसिंहसूनुर्गजाननाराधनजाभिमानः ॥
श्रीढुण्ढिराजो रचयाम्बभूव होरागमेऽनुक्रममादरेण ॥ ३२ ॥

इतिदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे
स्त्रीजातकाध्यायः ॥ १९ ॥

वहां नृसिहदैवज्ञ के पुत्र, श्रीगणपति के उपासक, ढुंढिराजनामक आचार्य ने इस जातकाभरण ग्रंथ की रचना की है। समस्त जन्मपत्र लिखने का क्रम इस होरा ग्रंथ में गर्भित किया है ॥ ३२ ॥

इति श्रीदैवज्ञढुण्ढिराजविरचिते जातकाभरणे भाषाटीकायां
स्त्रीजातकाध्यायः ॥ १९ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

सर्वार्थचिन्तामणौ ।

राहोः कन्यागृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतम् ॥
एतत्सप्तमराशिस्तु केतोश्चैव तथैव च १

राहु का क्षेत्र कन्या है और राहु का उच्च मिथुन है तथा केतु का क्षेत्र मीन है और धनुर्धर केतु का उच्च है ॥ १ ॥

राहोर्वृषं च केतोस्तु वृश्चिकं तुंगसंज्ञितम् ॥
मूलत्रिकोणं कर्कं च क्रियमित्रभमुच्यते ॥
एतत्सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणकम् २

अथवा राहु का उच्च वृष है और केतु का उच्च वृश्चिक है तथा कर्क उसका मूल त्रिकोण है और मेष मित्रभवन है इससे (राहु से) सातवीं राशि केतु का मूल त्रिकोण होती है यह वेङ्कटेश का मत है ॥ २ ॥

	रा०	के०
स्व०	६	१२
उ०	३	९
तु०	२	८
मू० त्रि०	४	१०
मि०	१	७

अथ जन्मलग्ननिर्णयः ।

चन्द्रलग्नाधिपो यत्र तत्त्रिकोणमथापि वा ॥
तत्सप्तमं त्रिकोणं वा भवेल्लग्नस्य निर्णयः १

चन्द्रराशि का स्वामी जहां बैठा हो उससे त्रिकोण राशि जन्म लग्न होती है अथवा चन्द्रलग्नाधीश जहां बैठा हो उसकी सप्तमराशि से त्रिकोण अर्थात् नवम पंचम जन्म लग्न की राशि होती है ॥ १ ॥

इति जन्मलग्ननिर्णयः ।

अथ रिष्टशान्त्युपायः ।

सुरार्च्चनेन दानेन साधूनां संगमेन च ॥
शुश्रूषया हि विप्राणामपमृत्युर्विनश्यति २

इति श्रीजातकाभरणं समाप्तिमगमत् ।

देवार्चन से और दान देने से तथा साधुजनों का संग करने से और ब्राह्मणों की शुश्रूषा करने से अल्पमृत्यु का विनाश होता है ॥ २ ॥

अङ्काद्रिनन्दचन्द्रेब्दे श्रावणे सितपक्षके ॥
दशम्यां बुधवारे च मैत्रभे ब्रह्मयोगके १
जातकाभरणस्येयं भाषा मूलार्थबोधिनी ॥
संपादिता वर्धिता च खूबचन्द्रेण शर्मणा २

इति जातकाभरणं समाप्तिमगमत् ॥

—:०:—

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि० लखनऊ में मुद्रित ।